अव्यक्त सन्देश

(अव्यक्त वतन से प्राप्त अव्यक्त सन्देशों का संग्रह)

ब्रह्माकुमारी दादी हृदयमोहिनी जी एवं मोहिनी बहन द्वारा अव्यक्त वतन से बापदादा ने जो दिव्य सन्देश समय प्रति समय दिये है, यहाँ उसी का संकलन है।

(अगस्त 1994 से अप्रैल 2004 तक)

06.08.94

आत्मा को शक्तिशाली बनाने के लिए मन-बुद्धि की एक्सरसाइज करो

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज आप सबका सन्देश लेकर अमृतवेले बाबा के पास पहुँची, तो बाबा के पास बहुत बड़ा सुन्दर फूल रखा हुआ था, फूल में बहुत सी पत्तियां थी और एक-एक पत्ते पर विदेश के भिन्न-भिन्न सेन्टरों व गीता पाठशालाओं के नाम लिखे थे और फूल की डंडी पर लिखा था यू.के, फूल के बीच में जो बूर होता है, उसमें यू.के, के विशेष निमित्त दादी जानकी, जयन्ति बहन, सुदेश बहन व जो भी निमित्त हैं, उन सभी के छोटे-छोटे फोटो थे। बाबा एक-एक पत्ते को प्यार से दृष्टि दे रहे थे और जो बीच में थे उन्हें भी दृष्टि दे रहे थे, तो साकार रूप में फरिश्ते रूप में सभी इमर्ज होते गये। पहले तो सिर्फ नाम थे फ़िर साकार रूप में जब इमर्ज हुए तो एक चन्द्रमा फ़िर दूसरा, तीसरा, चौथा चन्द्रमा, अर्ध चन्द्रमा के रूप में बहुत बड़ा संगठन बाबा के सामने इकठ्ठा हो गया।

हम बाबा के साथ ही खड़ी थी, यहाँ चन्द्रमा की लाइट इतनी नहीं होती परन्तु वहाँ 5-6 चन्द्रमा एक दूसरे के पीछे बड़े सुन्दर लग रहे थे। बाबा प्यार से सभी को दृष्टि भी दे रहे थे और सभी के मस्तक पर वरदान का हाथ घुमा रहे थे। बाबा ने कहा क्या समाचार लाई हो? मैंने सुनाया इस समय का विदेश का चक्कर यू.के. में आकर सम्पन्न हो रहा है, अभी हम मधुबन जा रहे हैं। बाबा ने कहा बच्ची, देखा मेरे अमूल्य रत्न कोने-कोने में कहाँ छिप गये थे, बिछुड़कर। बाबा ने कोने-कोने में छिपे हुए रत्नों को इकठ्ठा किया है और रत्नों की कितनी सुन्दर रिमझिम हो गई है। डबल विदेशी भाई व बहनों को पूछना कि बाबा का कौन सा नाम विदेश सेवा से प्रैक्टिकल में सिद्ध हुआ है? बाबा ने कहा विश्व-कल्याणकारी। पहले तो सिर्फ भारत की सेवा हुई। बाबा को भारत कल्याणकारी नहीं, विश्व-कल्याणकारी कहा जाता है। बच्चे विदेशी बच्चे जहाँ भी जाते उन्हें उमंग रहता कि बाबा का सन्देश देना है, स्थान ज़रूर बनाना है। यह बच्चों का उमंग विश्व-कल्याण कर रहा है और आगे भी विश्व-कल्याण का कार्य होता रहेगा, जैसे साइंस वाले जहाँ भी जाते अपने देश का झण्डा लहराते उसी प्रकार बाबा के बच्चे बाबा का झण्डा लहराते हैं। इसलिए डबल विदेशी बच्चों को बापदादा पदमगुणा से भी ज़्यादा विशेष सेवा के रिटर्न में यादप्यार दे रहे हैं। बाबा ने सभी लाड़ले बच्चों को प्यार से नयनों व हृदय में समा लिया।

बाबा ने कहा-बच्ची देश-विदेश में कौन सी बात चल रही है? संसार में कौन सी बात आवश्यक समझते हैं? बाबा ने बताया आज संसार में सभी मानते हैं कि एक्सरसाइज़ बहुत ज़रूरी है। दवा छूटती जायेगी, एक्सरसाइज़ बढ़ती जायेगी।

तुम बच्चों की एक्सरसाइज कौन सी हैं? मन की एक्सरसाइज तुम लोगों को आती है? मन की एक्सरसाइज उसी प्रकार इजी हो जाए जैसे शरीर की। जैसे हाथ को जहाँ इशारा देंगे वहाँ टिक जायेगा, उसी प्रकार मन व बुद्धि ऐसी एक्सरसाइज़ के अनुभवी हो जाएं तो जहाँ भी जिस स्थिति में जितना समय स्थित होना चाहे हो जाओ—कभी बीजरूप, कभी फ़रिश्ता रूप, कभी कर्मयोगी। जब भी फुर्सत मिले मन की एक्सरसाइज़ करते रहो तो आत्मा शक्तिशाली हो जायेगी। यह एक्सरसाइज़ आती है? करते हो? अच्छा अभ्यास हो गया है या नहीं? जब भी मन या बुद्धि फ्री हो तो यह एक्सरसाइज़ करो इसके लिए स्थान ढूंढने की भी ज़रूरत नहीं है।

बाबा ने सभी बच्चों को आकार रूप में इमर्ज किया तथा कहा डबल विदेशी, राजऋषि, वरदान के अधिकारी बच्चे–ऐसे कहते बाबा ने सभी बच्चों को यादप्यार दिया। आप सबकी सेवा व उमंग-उत्साह पर बाबा खुश थे। उमंग-उत्साह में सदा उड़ते रहो और दूसरों को भी उमंग-उत्साह के पंख देकर उड़ाओ। ओम शान्ति्।

22-10-94

सेवा का प्रोग्राम और स्व प्रोग्रेस दोनों के बैलेन्स से ब्लैसिंग की प्राप्ति

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज बापदादा के पास गई तो सामने से ही बापदादा मधुर मुस्कान से स्नेही मूर्त से बोले, आओ बच्ची क्या-क्या नया समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आजकल तो बहुत अच्छी मीटिंग चल रही है। सभी को ज्ञान सरोवर की ओपनिंग का बहुत ही उमंग-उत्साह, खुशी है। बापदादा बोले – यह ज्ञान सरोवर तीन विशेषताओं सम्पन्न त्रिवेणी सरोवर है।

1. एक तो ब्राह्मण बच्चों की स्व-उन्नति और एसलम का स्थान है।

2. दूसरा विश्व सेवा के सर्व प्रकार की आत्माओं की सेवा में सदा बिज़ी रहने के साधन का स्थान है।

3. तीसरा अनेक सहयोगी आत्माओं की जन्म भूमि का स्थान है। इसलिए आदि से हर ब्राह्मण की बूंद-बूंद के सहयोग से सरोवर बना है। बच्चों ने प्रोग्राम भी अच्छा बनाया है। तेकिन प्रोग्राम वा प्लैन को सदा प्लेन बुद्धि बन प्रैक्टिकल में लाने से अर्थात् प्रोग्राम और स्व-प्रोग्रेस के बैलेन्स से ही सर्व की, बाप की ब्लैसिंग से सहज सफ़ल होना है। आजकल समय के परिवर्तन की गति तीव्र देख रहे हो तो ब्राह्मणों को भी संस्कार मिलन से संसार परिवर्तन की गति को तीव्र करना पहली सेवा है।

बापदादा हर्षित हो रहे है कि सब बच्चे विघ्न-विनाशक बन उमंग-उत्साह से सम्पन्नता की ओर उड़ रहे हैं और उड़ते रहेंगे। दोनों मीटिंग के बच्चें को सेवा के सहयोगी बनने, स्नेह शक्ति से समाप्ति की मुबारक हो। एरारेडी बनने की मुबारक हो। उसके बाद बाबा बोले, बच्चे विदेश में भी जो वैल्यूज़ की टॉपिक पर स्व प्रति और औरों के प्रति प्रोग्राम्स चल रहे हैं, यह सेवा भी अच्छी दोनों की उनति का साधन है। बापदादा देख रहे हैं कि सब अथक बन उमंग से कर रहे हैं। इसलिए सब बच्चों को नाम और विशेषता सहित मुबारक हो। आगे भी स्व और सेवा का बैलेन्स रखते, संगठन को शक्तिशाली बनाए एक दो को हिम्मत देते एक दो के विचारों के समीप आना है क्योंकि ब्राह्मणों के संगठन की समीपता ही सफ़लता का साधन है। तो डबल विदेशी बच्चों को बापदादा विशेष बाप के स्नेह और सेवा के स्नेह का रिटर्न दिलाराम रूप से दिल का अविनाशी स्नेह दे रहे हैं। सदा मर्यादा पुरूषोत्तम बन संगठन को परिपक्व करते चलो।

इसके बाद बाबा ने भारत के बच्चों को याद किया। बाबा बोले भारत के बच्चों का भी जो परिवर्तन का कार्य चला उसको देख बाप खुश हैं। मैजारिटी टीचर्स और विद्यार्थियों ने आज्ञाकारी बनने का पार्ट अच्छा बजाया और लाभ किया और लिया। साथ-साथ हर बच्चे को अपनी मनोवृत्ति का चार्ट देखने का दर्पण भी मिला कि कितना सेवा स्थान वा सेवा के साथियों, साधन के लगाव से उपराम वृति में स्थित रह सकते हैं। फ़िर भी आज्ञाकारी बन परिवर्तन कर लिया, इस वरदान के अधिकारी बन गये और बनते रहेंगे।

इसके बाद बापदादा ने सर्व मधुबन निवासियों को याद किया। उसमें भी विशेष ज्ञान सरोवर वालों को याद देते बाबा बोले निमित्त बनी हुई आत्माओं को तो बापदादा अथक और तीव्रगति के कार्य के मदद की मालिश सदा करते रहते हैं। बच्चों ने भी हिम्मते बच्चे मददे बाप का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाया है इसलिए पदमगुणा स्नेह सम्पन्न मुबारक हो। साथ में मधुबन निवासी तो बैकबोन हैं ही और 4 भुजायें– सेवाधारी, हॉस्पिटल, तलहटी, आबू निवासी सबके सहयोंग से सफ़लता है और रहेगी। हर एक अपने नाम सहित विशेष यादप्यार स्वीकार करें।

लास्ट में बाबा ने दादी जी, जानकी दादी और अन्य दादियों को विशेष भाईयों को भी बड़े स्नेह से दुबारा याद दी और कहा निमित्त आत्माओं के उमंग और स्नेह, सम्मान के आधार से ही सफलता समीप आनी है। विजय तो निश्चित है ही। खास दादी और दादी जानकी को इमर्ज करके स्नेह की दृष्टि दी और कहा कि निमित्त बनने के कारण दुआओं की पात्र आत्मायें हैं। ऐसे रूहरूहान करते मिलन मनाते मैं स्थूल वतन पहुँच गई।

23-01-95

सेवा करना अर्थात् प्रत्यक्षफल का अनुभव करना

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज विशेष बापदादा के पास अपनी मीठी दादी जानकी का सन्देश लेकर गई और बापदादा को लंदन के म्युज़ियम की ओपनिंग की खुशखबरी सुनाई। बापदादा बहुत मीठा-मीठा मुस्कराये और ऐसे लगा कि बापदादा कुछ समय के बाद लंदन ही पहुँच गये। बाबा के नयनों में बच्चे समाये हुए थे और सबको बहुत-बहुत स्नेह और मुबारक की दृष्टि दे रहे है। उसके बाद बाबा बोले, बच्चों ने हिम्मते बच्चे मददे बाप का अच्छा एग्जाम्पल दिखाया है बापदादा यह देख रहे हैं कि बच्चों ने दिल से सेवा का साधन बनाया है। जैसा नाम है "इण्टरनेशनल इन्फारमेशन सेन्टर" वैसे ही विश्व में बाप की प्रत्यक्षता की इन्फॉरमेंशन देने के लिए यह म्यूज़ियम निमित्त बनेगा। अनेक आत्माओं के टेन्शन समाप्त हो अपने बाप की तरफ अटेन्शन जायेगा। अनेक सुख-शान्ति-खुशी के लिए भटकने वाली आत्माओं को सच्चा सहारा मिलेगा। अनेक आत्माओं के भाग्य का सितारा चमकेगा। साथ-साथ बच्चों को भी सन्देश देने का गोल्डन चांस मिलेगा क्योंकि सेवा करना अर्थात् प्रत्यक्षफल अनुभव करना। यह रूहानी खज़ाना बाँटना अर्थात् बढ़ाना है। इसलिए सर्व बच्चों को बापदादा इनएडवांस सेवा की मुबारक दे रहे हैं। साथ में सर्व बच्चों ने सहयोग दिया है तो सर्व को यादप्यार दे रहे हैं क्योंकि बाप देख रहे हैं कि हर एक बच्चे ने अपना सहयोग दिया है। कोई ने तन से, कोई ने धन से, कोई ने मन की शुभ भावना से, कोई ने सहयोंग के भाव अर्थत् मन की वृत्ति वा दृष्टि द्वारा दिया है। इसलिए सर्व के सहयोग से सेवा का साधन बनना है और सेवा तो होनी ही है। सभी विदेश के सेन्टर्स के बच्चों को भी शुभ भावना के सहयोग की मुबारक हो।

24-06-95

''प्रत्यक्षता होना अर्थात् संगमयुग की समाप्ति होना"

(मीठी जगदम्बा माँ के स्मृति दिवस पर – अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश)

आज बापदादा के पास विशेष आप सबकी यादप्यार और साथ में हमारी मीठी सर्व की प्यारी बड़ी दादी का और सबके दिल का

संकल्प मीठी मम्मा के प्रति यादप्यार लेकर वतन में गई। बापदादा ने दूर से ही बहुत मीठा मुस्कराया और कहा आओ मेरे मीठी मम्मा के आदि साथी स्थापना के आदि रत्न और ऐसे कहते ही हमारी पुरातन दादियां इमर्ज हों गई। बाबा बीच में बैठे थे और एक तरफ़ मम्मा थी, दूसरी तरफ दीदी और सामने दादी जी, दादी जानकी और सब दादियां थी। मम्मा सबसे मीठी-मीठी मुस्कान से मिलन मना रही थी और बोली आफरीन है आप मीठे साथियों की जो साकार रूप में शक्तियों की प्रत्यक्षता में हीरो पार्ट बज़ा रही हूँ। दीदी बोली - बाबा हमारा पार्ट भी आपने आदि (ओम मण्डली) में गुप्त चतुर-सुजान रूप से रखा। इन सखियों के समान प्रत्यक्ष नहीं रखा तो अब अन्त में भी ये प्रत्यक्ष स्टेज पर हैं और हम गुप्त पार्ट बजा रहे हैं। ऐसे आपस में सखियों की मीठी रूहरूहान चल रही थी और बापदादा मुस्कराते हुए हर एक को दृष्टि दे रहे थे। यह दृश्य चलते दादी और दादी जानकी ने बड़े हुज्जत से बाबा को कहा ''बाबा, अब कब तक ये गुप्त रहेंगे?" इन्हों का प्रत्यक्ष तो होना चाहिए! बाबा मुस्कराये और बोले बच्चे इन्हों को भी उमंग बहुत आता है कि अब कुछ करें लेकिन प्रत्यक्षता होना अर्थात् संगमयुग की समाप्ति होना, तो बोलो अभी समाप्ति के लिए आपके सर्विस साथी सम्पन्न बने है? सर्व राज्य-अधिकारी, राज्य-परिवार, प्रजा सब रेडी हैं? बापदादा तो सेकण्ड में ताली बजायेगा और पर्दा खुल जायेगा लेकिन अभी तो बच्चे कभी हलचल की लहरों में, कभी आराम से, कभी तीव्रगति से भिन्न भिन्न रूप से चल रहे हैं। अचल अडोल बने हैं? क्योंकि सभी बच्चों की नम्बरवार सम्पन्न स्थिति ही समाप्ति की घण्टी बजायेगी। जैसे घड़ी की घण्टी सुईयों के आधार पर खुद ही समय पर बज जाती है, ऐसे बेहद ड्रामा की घड़ी में सम्पन्नता की सुई समाप्ति की सैटिंग है। तो बोलो, सैटिंग हो गई है? क्योंकि प्रत्यक्षता, चाहे आप साकार रूप में हो व एडवांस सेवा अर्थ जाने वाले बच्चे, दोनों की एक ही समय साथ में होने वाली है। अब आप कहो हाँ जी बाबा, और सेकण्ड में कमाल देखो, ऐसे रूहरूहान कर रहे थे तो सभी बच्चे हँसते-हँसते कह रहे थे कि बाबा, आप तो हो ही चतुर सुजान। बहुत होशियारी से अपने को छुड़ा लेते हो, हमारे ऊपर ही रख देते हो। बाबा बोले-बच्चे, आप ही बताओ कि इस बेहद घड़ी की सुईयां कौन हैं– बाबा या बच्चे? तो आप सुईयां जब तक सम्पन्नता के 12 बजे तक नहीं आती तो समाप्ति की घण्टी कैसे बजे? बाबा तो बार-बार आपसे ही पूछते हैं कि कब घण्टी बजाते हो? ऐसे ही मम्मा और सब मुख्य अलौकिक सेवाधारी एडवांस पार्टधारी आत्मायें और सब दादियां बहुत रमणीक रूप से एक दो से मिल रहे थे और चिटचैट कर रहे थे, जो दृश्य बहुत ही प्यारा था और उसके बाद सभी ने बापदादा के साथ बहुत अच्छी पिकनिक की और ये दृश्य समाप्त हो गया।

उसके बाद बाबा दादी जानकी की तरफ से लण्डन के सेवा की खुशखबरी सुनाई कि त्रिमूर्ति सेवाकेन्द्र बहुत अच्छी सेवा कर रहे हैं। बाबा बोले, त्रिमूर्ति बाप द्वारा मास्टर त्रिमूर्ति बच्चों तीनों सेवा स्थान त्रि-वरदान सम्पन्न मिले हैं। इसलिए तीनों स्थानों के सेवा के वृद्धि की मुबारक हो, मुबारक हो। हर एक स्थान की विशेषता अपनी–अपनी है। ग्लोबल हाउस, ग्लोब की आत्माओं को ज्ञान की गुह्यता और योग की महीनता तरफ आकर्षित कर रहा है और करता रहेगा। साथ-साथ बच्चों को भी नये नये प्लैन मनन करने और याद सहित सेवा में मग्न रहने का अनुभव करा रहा है। ब्रह्माकुमारियां भी हाइएस्ट अथारिटी हैं ये प्रत्यक्ष कर रहा है - रिट्रीट हाउस जो आत्माओं को आत्मिक मन की रेस्ट, मन के अन्तमुर्खता का और बाप के समीप सम्बन्ध में आने की अनुभूति करा रहा है। अनुभव कराने का अनुभूति स्थल है। दो वर्ष की रिजल्ट को देख बापदादा सेवा के निमित्त बच्चों को सेवा की मुबारक दे रहे हैं। नये-नये रत्न जो पैदा हुए हैं उन्हों को भी पद्मापद्म भागयवान बनने की बर्थ डे मुबारक दे रहे हैं। सदा उड़ते रहो और उड़ाते रहो - इस विधि से वृद्धि करते रहो। बाकी छोटा सा लेकिन सेवा में बड़ा निमित्त बना हुआ म्यूज़ियम भी चेतन सन्देश वाहक है। परिचय और प्रत्यक्षता के निमित्त है। नाम फैलते-फैलते नाम बाला हो ही जायेगा। वहाँ के छोटे और अति सिकीलधे लाड़ले बच्चों को अविनाशी भव के साथ स्नेह सम्पन्न मुबारक हो। सदा फास्ट और फर्स्ट आने के लक्ष्य को सदा याद रखना। ऐसे सभी बाबुल के नये-नये खुशबूदार फूलों को बापदादा ने बहुत-बहुत यादप्यार दी। बाद में सभीं लण्डन के सेवाधारी बच्चों को भी खास याद दी और बोले लंदन वालों ने हिम्मत है वहाँ बाप की मदद का वरदान सदा सहज मिला है और मिलता रहेगा। साथ में सर्व विदेश के भाई बहिनों को बहुत-बहुत यादप्यार दी और बोले – सभी उमंग-उत्साह सें डायमण्ड बनने और डायमण्ड हुबली मनाने में आगे बढ़ रहे हैं। एक दो से कम नहीं हैं, एक-दो से आगे हैं। इसलिए सब अपना-अपना नाम विशेष जान विशेष याद स्वीकार करना जी। साथ में भारत के बचें को भी बापदादा ने दिल व जान सिक व प्रेम से याद किया और कहा कि भारत में भी योग शिविर की अच्छी सेवा द्वारा अच्छे-अच्छे सहयोगी स्नेही आत्मायें बना रहें हैं। और भारत से ही शिव शक्तियों का झण्डा लहराने का अच्छा लक्ष्य रख प्लैन और प्रैक्टिकल कर रहे हैं। भारत के चारों ओर के खुशनुम: खुशनसीब बच्चों को खुशी के सर्व खज़ानों सम्पन्न यादप्यार और नमस्ते।

07-08-95

''विश्व–रक्षक मेरा साथी है - इसी रूहानी फ़खुर में रहो"

(रक्षाबन्धन प्रति अव्यक्त बापदादा का दिव्य सन्देश)

विश्व-कल्याणकारी बापदादा के सर्व लाडले, राईट हैण्डस बच्चों को त्रिमूर्ति बाप की त्रिमूर्ति रूप से सेवा करने की राखी राखी मुबारक हो।

पहली स्व-रक्षक,दूसरी विश्व की आत्माओं के रक्षक, प्रकृति के रक्षक साथ में आप सबके रक्षक तो डायरेक्ट बापदादा हैं ही हर

समय हर कर्म में यही अनुभव करो कि विश्वरक्षक बाप की रक्षा का हाथ सदा हमारे मस्तक पर है ही है और इसी रूहानी फ़कुर में रहो कि "विश्व-रक्षक ही मेरा सदा साथी है"। बोलो, जहाँ सदा रक्षक बाप है वहाँ और कुछ विघ्न नज़दीक आ सकते हैं? इसीलिए निर्विघ्न बन रक्षक के साथ उड़ते चलो और बापदादा की समय प्रति समय कराई हुई प्रतिज्ञाओं को प्रत्यक्ष रूप में लाते चलो।

सभी बच्चों को डायमण्ड जुबली मनाने का उमंग-उत्साह तो है ही। तो अवश्य बापदादा के दिलपसन्द डायमण्ड बन स्वयं को भी और विश्व को भी चमकाते रहो। बाप के सर्व श्रेष्ठ आशाओं के दीप जगाते चलों, अच्छा हर बच्चे को विशेष बाप के सहयोग की दुआओं सहित यादप्यार और मुबारक। 21-09-95

हिम्मत रखने से हिम्मत के फल की प्रत्यक्ष प्राप्ति

(अव्यक्त बापदादा का मधुर दिव्य सन्देश)

आज बापदादा के पास गई तो बापदादा बहुत रमणीक रहस्ययुक्त मुस्करा रहे थे और मैं भी मुस्करा रही थी कि बाबा ने कितने समय के बाद अपने पास बुलाया। बापदादा तो सब दिल की बात जानते हैं लेकिन जानते भी हैं लेकिन जानते भी भोलानाथ बन पूछते बच्ची, क्या सोच रही हो? ड्रामा में आज ही मिलना था तो मिल रहे हैं। मैं तो कुछ बोल न सकी, मुस्कराती रही। फिर बाबा ने समाचार पूछा, मैने सुनाया – बाबा डायमण्ड जुबली के निमित्त देश-विदेश के बच्चों ने मिलकर मधुबन में कान्फ्रेन्स, डायलाग आदि के सब प्रोग्राम बहुत उमंग-उत्साह से बनाए हैं। तो बाबा बोले, बापदादा बच्चों को देख हर्षित हो रहे थे कि बाप से और बाप की श्रीमत से कितना स्नेह है! सबने हिम्मत और हुल्लास से प्लैन बनाया यह देख बाप भी दिल से शाबास दे रहे हैं।

अब बोलो, चतुर-सुजान बाप से क्या बोलें। चुप रह मुस्कराती रही। उसके बाद फिर बाबा को सुनाया कि दादी जी, मोहिनी बहन, ईशू बहन विदेश यात्रा पर जा रहे हैं। तो बाबा बोले, ये त्रिमूर्ति विशेष सबको तीन अनुभव करायेंगी। दादी शक्ति और बापदादा के स्नेह के समीपता का अर्थात् शक्ति और स्नेह के बैलेन्स की ब्लैसिंग का अनुभव करयेंगी, वरदान देंगी। मोहिनी बच्ची तो है ही रमणीक बच्ची, तो सबको सदा हर्षित रहने का राज़ बताए खुशी का विशेष अनुभव करायेगी और ईशू बच्ची तो सदा ज्ञान रत्नों में तथा सम्पत्ति में भरपूर रहती है। इसीलिए सभी को सम्पन्नता का और साथ-साथ बाप से और सेवा से कान्फ़ीडेंशियल रहने का अनुभव करायेगी। यह सर्टिफ़िकेट तो साकार बाप द्वारा भी बच्ची को मिला हुआ है। तो तीनों अपनी-अपनी विशेषता से सब तरफ उमंग-उत्साह में उड़ायेंगी, दिल से नचायेंगी।

बापदादा सर्व डबल विदेशी बच्चों के सेवा के उमंग से बहुत खुश हैं कि सबने यथा शक्ति वैरायटी रमणीक रूप से मौरल-वैल्युज़ (Moral values) का कार्य बहुत अच्छा किया।

अमेरिका वालों ने भी विशेष प्यार से हिम्मत रखी और हिम्मत दिलाई है इसलिए सेवा का प्रत्यक्ष फल स्वरूप ये त्रिमूर्ति विदेश यात्रा पर पहुंच रही है।

भारतवासी बच्चे भी चारों ओर भिन्न-भिन्न सेवा के स्थानों से आगे बढ़ते जा रहे हैं और आगे बढ़ते जयेंगे। उसके बाद चीन में जो सभी नें बहुत लग्न से और युक्ति से सेवा की है उसके लिए खास उन बच्चों को बाबा ने मीठी दृष्टि द्वारा यादप्यार दी। और कहा कि कोरिया में भी निमित्त बच्ची ने अच्छा चांस लिया और जगदीश बच्चे ने भी थोड़े समय में सर्विस में सफ़लता का अनुभव किया और कराया। ऐसे बाबा एक एक बच्चे को इमर्ज कर याद दे रहे थे।

उसके बाद हमारी तबियत का समाचार पूछा – हमने कहा बाबा मधुबन में सभी बच्चों ने स्नेह से आपके साकार में आने का आह्वान किया है, सभी ने विशेष योग है।

बाबा बोले, बच्ची बाबा जानते हैं कि मधुबन निवासी व सभी बच्चों का बाप से मिलन मनाने का कितना स्नेह है। बापदादा के पास सबका संकल्प और दिल का प्यार अवश्य पहुँचता है इसलिए देश विदेश के चारों ओर के बच्चों को अलग-अलग नाम सहित बापदादा यादप्यार दे रहे हैं। 18-07-96

एक बाप दूसरा न कोई - इस अनुभव से सेवाओं का विस्तार
(हृदयपुष्पा दादी के निमित्त भोग तथा दिव्य सन्देश)

आज जब दादी हृदयपुष्पा के प्रति विशेष भोग लेकर वतन में पहुंची तो क्या देखा कि दादी हृदयपुष्पा बाबा के साथ बैठी कुछ बातचीत कर रही थी, मैं भी जब सामने जाकर पहुँची तो दोनों (बाबा और दादी) ने मुझे देखा और बाबा बोले, देखो बच्ची, आपके लिए मधुबन से यह बच्ची ब्रह्मा भोजन लेकर आई है। तो दादी ने देखा और मुस्कराई। मैं भी जाकर दोनों के पास बैठ गई। मैने कहा मधुबन से सभी दादियों ने, सभी भाई बहिनों ने आपको बहुत-बहुत यादप्यार दिया है और ब्रह्मा भोजन भेजा है। तो दादी (हृदयपुष्पा) मुस्कराई और कहा दादी ठीक हैं? हमने कहा हाँ दादी तो बिल्कुल ठीक हैं। आप कैसे हो? तो कहा मैं तो अभी बिल्कुल ठीक हूँ। बाबा के पास बैठी हूँ। मैने कहा दादी आप बहुत जल्दी आ गई। तो बोली मैं तो तैयार बैठी थी कि जब बाबा बुलाये तब आ जाऊं, मेरी यही दिल थी कि मैं एक बार बड़ी दादी से जरूर मिलूं तो दादी मेरे से मिलने आई, सब लेन-देन की। फ़िर तो मैं तैयार बैठी थी, बाबा के बुलाने का ही इंतजार कर रही थी।

फ़िर मैंने कहा अभी आप बाबा से क्या बातें कर रही थी? तो मुस्कराने लगी। कहा बाबा से पूछो। मैंने बाबा से पूछा तो बाबा ने कहा इनसे ही पूछो। तो फिर मुस्कराने लगी। मैंने कहा दादी क्या प्राइवेट बात कर रही थी। बोली हाँ प्राइवेट बात है। बाबा से ही पूछो। तो बाबा ने कहा बच्ची कहती है - बाबा अभी मैं कहीं नहीं जाऊँगी, जैसे आप ऊपर बैठकर सेवा करते हो, ऐसे मैं भी यहाँ से सेवा करूँगी। यही विशेष मेरे से मीठी चिटचैट कर रही थी कि हमें अभी यहाँ ही रहकर सेवा करनी है। और बाबा कहते कि बच्ची तुम तो आदि रत्न हो, तुमको तो एडवांस पार्टी में जाकर बहुत बड़ी सेवा करनी है। बाबा तो आपका साथी है ही, बाबा ऊपर से सेवा करेंगे, बाकी आपको अभी नीचे जाकर सेवा करनी है। बाबा तो अभी तन ले नहीं सकते, तो कह रही है कि मैं क्यों तन लूं! बाबा ने कहा बच्ची अभी तो तुम्हारा सब हिसाब-किताब चुक्तू हो गया, बाकी तुम्हें अभी सिर्फ निमित्त नई दुनिया की स्थापना में मददगार बनना है। तो बोली बाबा छोटा बच्चा क्या सेवा करेगा। बाबा ने कहा छोटे बच्चे तो बहुत सेवा करते हैं, आप आँख खोलेंगी, मुस्करायेंगी तो लोगों को साक्षात्कार होगा।

फिर हमने कहा दादी, आपको तो बाबा बहुत बड़ी सेवा के लिऐ भेज रहे हैं। तो बोली अच्छा जैसे बाबा कहे, उसमें ही मैं राज़ी हूँ।

बाबा ने कहा यह बच्ची बहुत भोली है। इस बच्ची का शुरू से ही सिवाए बाबा के कुछ नहीं रहा। बाबा, बाबा ही था। इसने अपने जीवन में शिवबाबा को ही प्रत्यक्ष किया, देखो कितना बड़ा शिवलिंग बनाया। दूर से जो देखेगा उसे शिव बाबा ही दिखाई देगाा। जैसे बच्ची ने शिवबाबा को अपने अन्दर रखा ऐसे यादगार भी शिवबाबा का बनाकर आई। यह बहुत सयानी बच्ची है जो केवल बाबा का ही यादगार नहीं बनाया, इसने तो बाप-दादा और अपनी सखियों का भी यादगार बना दिया। यह है बाप से प्रीत, दादा से प्रीत और परिवार से प्रीत। इसी की निशानी राजयोग भवन में बनाकर आई है। यह है राजयोगी, राजऋषि आत्मा, इसने एक बाबा दूसरा न कोई, यह सबूत दिया जो आज इतनी सरलता, सहजता से कर्नाटक ज़ोन में सेवाओं का विस्तार हुआ। जिससे कितने बच्चे ज्ञान में आ गये। इनकी ही शुभ भावना, शुभ कामना से इतनी सेवा की वृद्धि हुई है। विस्तार हुआ है। तो यह सुनते हुए बोली, कि बाबा मैने थोड़ेही कुछ किया, यह तो आपने कराया। तो बाबा बोले ऐसे ही अभी भी सेवा पर भेज रहा हूँ। तो फ़िर बोली बाबा, अभी योग भवन कौन सम्भालेगा। तो बाबा ने कहा अच्छा आप ही बताओ किसको भेजें। तो बोली नहीं बाबा आप ही बताओ कि योग भवन किसको सम्भालने के लिए देंगे? बाबा ने कहा बच्ची, अच्छा फ़िर बतायेंगे। ऐसे बहुत हर्षित मुख होकर आपस में चिटचैट चल रही थी।

फ़िर बाबा ने कहा देखो मधुबन से ब्रह्मा भोजन आया है, हमने कहा खास दादी ने यादप्यार दिया है और भोग भेजा है। तो कहने लगी दादी ने भेजा है.... फिर बाबा ने उसे बहुत प्यार से दृष्टि देते हुए गिट्टी खिलाई, जल पिलाया। तो दादी जैसे प्यार में खो गई और कहा सभी को हमारी बहुत-बहुत याद देना। फ़िर बाबा दृष्टि देने लगे और दादी एकदम सूक्ष्म होते दूर-दूर जैसे लाइट में बिन्दू स्वरूप होते समाती गई। फ़िर बाबा ने हमें भी वही साइलेन्स की दृष्टि देते हुए नीचे भेज दिया। 08-11-96

दीपावली–तीन स्मृतियों का यादगार
(अव्यक्त बापदादा का दिव्य सन्देश)

आज विशेष बापदादा ने बुलाया और मिलन मनाते पूछा, बच्ची शान्तिवन का क्या समाचार है? हमने बोला बाबा सब निमित्त बने हुए बच्चे तलहटी वाले, मधुबन वाले सब बहुत जोर-शोर से तैयारी में लगे हुए हैं। बाबा बोले, बच्ची बापदादा भी चक्कर लगाते रहते हैं और जो भी अलग-अलग डिपार्टमेंट सम्भालने वाले हैं उन सबको प्यार और दिल से मुबारक देते रहते हैं कि हर एक कितना उमंग-उत्साह और निश्चयबुद्धि बन कार्य में लगे हुए हैं। बापदादा ने खास आज उन बच्चों को याद कर अज़ेन्ट बुलाया।

बाबा देख रहे हैं कि बच्चे छोटी-छोटी बातों से न्यारी स्थिति में और बाप की प्यारी स्थिति से तैयारी कर रहे हैं। ऐसे बच्चों को बापदादा आफरीन दे रहे हैं कि सदा ऐसे न्यारी प्यारी स्थिति में रहो और तैयारी करते आगे बढ़ते चलो। "निश्चय की विजय है ही"। साथ-साथ बापदादा बच्चों को दीपावली सो यज्ञ स्थापना की भी बधाईयाँ दे रहे थे। बाबा ने कहा देखो, बच्ची दीपावली तीन स्मृति की यादगार है —

1. वर्तमान संगम पर ज्योति जगाने की
2. फिर भविष्य ताजपोशी की और
3. भक्ति मार्ग के लक्ष्मी पूजा व लक्ष्मी आह्वान की।

तो तीन यादगार का कम्बाइण्ड दिन है। त्रिमूर्ति बाप भी विशेष एक-एक बच्चे को ऐसे उत्सव की नाम सहित याद-प्यार दे रहे हैं। अगर एक-एक का नाम लें तो अनगिनत बच्चे हैं। ऐसे कहते बाबा के नयनों में जैसे एक-एक बच्चा समाया हुआ था और बापदादा सबको बहुत मीठी-मीठी याद प्यार दे रहे थे। ऐसे शान्तिवन वालों को याद-प्यार देते बापदादा ने साकार वतन में भेज दिया। ऐसे लग रहा था जैसे अर्जेन्ट काल जल्दी समाप्त हो गई। साथ में स्थापना के समय पर आई हुई दादियों को भी खास न्यारे अलौकिक बर्थ डे की याद प्यार और बधाईयाँ दी।

13-03-97

"अचानक के हर दृश्य में एवररेडी रहो"

(11मार्च 1997 दादी चन्द्रमणि जी ने पुराने शरीर का त्याग किया, उनके निमित्त विशेष भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश)

आज अपनी दादी चन्द्रमणि जी के प्रति वतन में उनसे मिलने जाना हुआ। जैसे ही मैं वतन में पहुँची तो बाबा अकेले ही देखा, बाबा बहुत ही रहस्ययुक्त मीठा मुस्करा रहे थे और बाबा ने दूर से ही नयनों से स्वागत करते हुए कहा, आओ बच्ची आओ। बेहद के खेल में खेल देखते सोच रही हो क्या? तो मैंने कहा बाबा आपने तो वण्डरफुल ड्रामा दिखा दिया। जो स्वप्न में भी नहीं था, वह आपने साकार में कर लिया। तो बाबा मुस्कराये और कहा कि बच्ची अभी समय प्रमाण बाबा ने दो-तीन बार इशारा दिया है - कि अभी ऐसे ही जो भी दृश्य होंगे, वह अचानक ही होंगे। जब समय पूछकर नहीं आना है, समाप्ति पूछकर नहीं आनी है तो जो भी दृश्य होंगे, चाहे सेवा में, चाहे जो भी ब्राह्मण परिवार में वह सब अचानक होंगे। तो यह जो बच्ची का पार्ट चला, यह दो बातों का सिम्बल है।

एक तो अचानक में हर आत्मा को कैसे एवररेडी रहना है। बाबा ने कहा देखो, सेवा में भी आपने देखा कि दिल्ली के प्रोग्राम में सब अचानक ही सफलता हुई और तब से बाबा के इशारे प्रमाण जो भी बातें हो रही हैं वह अचानक ही हो रही हैं और आगे चलकर भी अचानक ही होनी है। तो एक सिम्बल बच्ची का अचानक एवररेडी का देखा। अन्त में उसको कोई सेवा का भी याद नहीं आया। नहीं तो सेवा स्थान पर थी और दिन तक सेवा करती रही, सेवा के संस्कार ले गई लेकिन अन्त घड़ी में अपने योगबल से शरीर का थोड़ा बहुत जो हिसाब था, उसे चुक्तू करने में और याद में एवररेडी के पार्ट में पास हो गई। तो बाबा ने कहा एक तो बच्ची का सिम्बल है – अचानक एवररेडी रहने का और यह एग्जाम्पल है कि अन्त में कोई भी बात याद नहीं आवे।

दूसरी बात – बाबा ने कहा कि यह बच्ची का एग्जाम्पल, समय की समीपता की लाल झण्डी दिखा रहा है। समय अभी समीप तो है लेकिन अचानक ही होना है। तो एक अचानक एवररेडी का और दूसरा समय के समीपता की लाल झण्डी ने दिखाई। साथ में बाबा ने यह भी कहा कि बच्ची, अच्छी सह पास होकर मेरे पास आई। जब यह बाबा बोल रहे थे – तो ने कहा बच्ची आओ, तुम्हारी सखी मिलने आई है, आओ। पहले दादी बाबा के साथ नहीं थी लेकिन जैसे ही बाबा ने कहा आओ बच्ची, तुम्हारी सखी आई है, तो फौरन ही दादी को बाबा के साथ देखा। तो दादी ऐसे मुस्करा रही थी, जैसे साकार में मुस्कराने की सूरत सदा ही थी, लेकिन ऐसे मुस्करा रही थी जो उनके चेहरे से लग ही नहीं रहा था कि मैं कोई ऐसे शरीर से अलग होकर आई हूँ। जैसे यहाँ कहती थी ना गुल्ज़ार तुम कैसे हो! ऐसे ही बात की। मैं गम्भीर थी और वह मुस्करा रही थी। तो उसने कहा देखा गुल्ज़ार, मैं सोचती थी कि यह वतन में कैसे जाती हैं, प्रैक्टिकल में बाबा से कैसे मिलती हैं – हम भी योग में तो जाती थी। लेकिन अभी मैं भी वतन का अनुभव कर रही हूँ। बाबा ने बुलाया, आ जाओ बच्ची, मैं आ गई। मुझे तो बड़ा मजा आ रहा है। वह ऐसे बोल रही थी जो जरा भी उसकी शक्ल में, बुद्धि में नहीं था कि मैं एडवांस पार्टी में आ गई हूँ। इसी रूप से दादी हमसे मिली। जो जब हम आपस में हम रूहरिहान कर रहे थे, तो बाबा यह रूहरिहान सुनते मुस्करा रहे थे। तो मैंने बाबा को कहा कि यह अचानक ही क्यों बुलाया! तो बाबा ने कहा कि ब्रह्मा बाबा को जब बुलाया था या दूसरों को बुलाया तो क्या बताकर बुलाया था! सभी अचानक आये हैं। अभी तो बाबा इशारा दे रहा है कि जितना आगे बढ़ेंगे उतना अचानक ही असम्भव से सम्भव होना है। जो ख्याल में भी नहीं होगा, वह अचानक होना है।

मैने दादी को कहा कि सभी आपको याद कर रहे हैं, तो दादी ने कहा मेरी भी सबको याद दे देना, मै बड़े मजे में हूँ। तो मैंने देखा कि उसको यह संकल्प ही नहीं है कि मैं कोई शरीर छोड़कर आई हूँ। बार-बार कहे तुमको वतन में क्यों मज़ा आता है, अभी मैंने समझा। बाबा ने भी उसे याद नहीं दिलाया।

तो बाबा ने ऐसे मुलाकात कराई और लास्ट में कहा कि देखो बच्ची पेपर दो प्रकार के होते हैं एक प्रैक्टिकल एक्ज़ाम्पल बनने और दूसरा देखने सुनने में। यह प्रैक्टिकल पेपर है। तो यह बच्ची प्रैक्टिकल पेपर का एक्ज़ाम्पल है और एक्ज़ाम्पल बनने वाले को एक्स्ट्रा मार्क्स मिलती है। इसीलिए इस बच्ची का पहले भी बहुत जमा है और अभी एक्ज़ाम्पल बनने में इसने एक्स्ट्रा मार्क्स ले ली। ऐसे कहते ही बाबा ने दादी को अपनी गोदी में लिया। जैसा ही बाबा ने उसको गोदी में लिया तो वह मर्ज हो गई और मैं बाबा से छुट्टी लेकर आ गई।

10.05.97

हर परिस्थिति में अचल-अडोल रहने के लिए मास्टर त्रिकालदर्शी बनो

आज अमृवेले बापदादा के पास जाना हुआ, जाते ही क्या देखा? बापदादा दूर से ही बहुत पावरफुल लाइट माइट हाउस स्वरूप में खड़े थे और बहुत पावरफुल दृष्टि और स्नेह रूप से मिलन मना रहे थे। मैं भी उस मिलन में लवलीन हो गई। कुछ समय के बाद बाबा बोले - आओ मेरे विश्व-कल्याणकारी बच्चे - आओ, बोलो साकार संसार का क्या हाल है? मैं मुस्कराई और नयनों से ही उत्तर दे रही थी कि बाबा तो सब जानते ही हैं। बाबा बोले - बच्ची, आजकल क्या-क्या नज़ारे देख रहे हैं...? ये सब नज़ारे आपको सूचना दे रहे हैं कि अब अति के बाद अन्त समीप आना ही है। इसीलिए सारे विश्व में हलचल बढ़ती है क्योंकि हलचल के बाद ही अचल-अटल आपका राज्य आना है तो बोलो बच्चे, हलचल को देख, 'क्या होगा"? यह क्वेश्चन तो नहीं उठता? जब त्रिकालदर्शी हो तो त्रिकालदर्शी सीट पर सेट रहो तो 'क्या होगा"! ये नहीं आयेगा लेकिन स्पष्ट आयेगा - जो होगा हमारे लिए अच्छा होगा क्योंकि आप बच्चों के लिए तो अभी कल्याणकारी संगमयुग है। बच्चों को सदा याद रखना है कि हमारा बाप भी कल्याणकारी है, समय कल्याणकारी है, हमारा टाइटल भी विश्व-कल्याणकारी है, कर्त्तव्य भी विश्व-कल्याण करना है। अब तो हर तरफ अलग-अलग परिस्थिति द्वारा हलचल होनी ही है इसीलिए ''सदा हर हालत में अचल-अडोल रहना है" - यही

मास्टर त्रिकालदर्शी है। इसके बाद बाबा ने कहा विशेष क्या समाचार लाई हो?

मैने कहा बाबा हांगकांग की हालतों को देख हांगकांग वाले बच्चों ने खास यादप्यार दी है। आबू के भी चारों तरफ के स्थानों का समाचार लाई हूँ और सर्व बच्चों ने भी बहुत-बहुत यादप्यार दी है।

तो बाबा मुस्कराते बोले - क्या हांगकांग के बच्चे सोचते हैं क्या, कि आगे क्या होगा? बाबा ने तो पहले से ही बता दिया है कि आश्चर्यवत बातें होंगी लेकिन बच्चों को आश्चर्य व क्वेश्चन मार्क न लगाए, सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने का अभ्यास पक्का करना है। ये तो विश्व-परिवर्तन का सूचक है। हांगकांग वालों को और स्पीड में आगे बढ़ाने का साईन है। बच्चे आदि से लाड-प्यार से चले हें और बापदादा भी गोल्डन-डॉल कहते हैं। अभी डॉल को परिस्थिति नचाती है या बाप के श्रीमत की अंगुली पर नाच रहे हैं। बापदादा कहते हैं ड्रामा की हर सीन को साक्षी हो कल्याण की भावना से देखो। देश में क्या भी हो हमारे लिए बेहद के वैराग्य की सूचना है।

उसके बाद बाबा को मधुबन का समाचार सुनाया कि दादी जी ने चारों ओर 'क्रोध-मुक्त' पर रूहरिहान का प्रोग्राम रखा है। बाबा बोले-बहुत अच्छा है। समय प्रमाण अब बच्चों को बाप के प्यार का रिटर्न बाप समान बनना ही है। समय प्रमाण अब बच्चों को प्रैक्टिकल में लाने की हिम्मत की मुबारक दे रहे हैं। बाप ने सभी बच्चों को प्रैक्टिकल में लाने की हिम्मत की मुबारक दे रहे हैं। बाप ने सभी बच्चों को समय भी दिया है कि देखेंगे कि कौन-कौन बाप समान क्रोधमुक्त स्टेज का अनुभव करता और कराता है क्योंकि बच्चे लक्ष्य बहुत अच्छा रखते हैं लेकिन लक्ष्य और प्रैक्टिकल को समान बनाने में नम्बरवार हैं। अभी सभी को नम्बरवन का रिजल्ट देना है। बापदादा का तो सदा हर बच्चे के लिए पद्मगुणा से भी ज्यादा प्यार है। अभी सिर्फ स्नेह और शक्ति-स्वरूप को समान बनाना है।

ऐसे कहते बाबा ने डबल विदेशियों को भी यादप्यार दिया और कहा कि बच्चे दिलाराम बाप की याद और सेवा में सफलता के तरफ आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ते रहेंगे। अभी दिन प्रतिदिन छोटी-छोटी बचपन की बातें छोड़ नालेजफुल, अनुभवी मूर्त, मैच्योर (mature) बन रहे हैं और पुरूषार्थ की तरफ़ भी अटेन्शन है। ये देखकर बापदादा खुश हैं। भारत में भी जो वर्ग वाईज़ सेवा चल रही है वो भी अच्छी हिम्मत-उल्लास से कर रहे हैं और राजस्थान वाले बच्चों ने भी हिम्मत-उल्लास से अच्छी सेवा की है। मुहब्बत से मेहनत सफलता स्वरूप बन जाती है। बापदादा राजस्थान के सेवाधारी बच्चों को विशेष मुबारक और यादप्यार दे रहे हैं। साथ-साथ चारों ओर के बच्चों को नाम और विशेषता स्वरूप से दिल के दुलार से यादप्यार दे रहे हैं। उसके बाद बाबा ने बड़ी दादी और जानकी दादी को इमर्ज किया और दोनों को दोनो बाहों में समा लिया और कहा कि दोनों बाप को प्रत्यक्ष करने की सेवा में और बाप समान बनाने की सेवा में अच्छी तरह से लगे हुए हैं। बापदादा पद्म-पद्म गुणा यादप्यार दे रहे हैं। साथ में और भी सभी मुरब्बी बच्चों को यादप्यार दे रहे हैं। ऐसे याद प्यार लेते मैं अपने साकार वतन में पहुँच गई। ओम शान्ति्।

06-06-97

हदों को समाप्त कर सर्वंश त्यागी और बेहद के वैरागी बनो

आज बाबा के पास जाना हुआ तो जाते ही बापदादा बहुत मीठा मुस्करा रहे थे और उसी ही मीठी मुस्कराहट से मिलन मनाया। जैसे ही मैं आगे बढ़ती गई तो बाबा के बहुत मीठे बोल सुनती गई। बाबा ने कहा - "आओ मेरे स्वराज्य-अधिकारी राज़े बच्चे आओ", तो मैं भी मुस्करा रही थी, ऐसे ही नयनों की मुलाकात होते फिर बाबा ने पूछा कि आपके स्वराज्य दरबार का क्या समाचार है? तो मैं मुस्कराती रही। फिर बाबा ने कहा - बोलो बच्ची, आप क्या समाचार लाई हो? तो मैंने कहा - बाबा आप तो जानते ही हैं। बाबा ने कहा - नहीं, सुनाओ। मैने कहा बाबा सभी के मन में बहुत उमंग है कि बस जो बाबा चाहता है वह हम अभी करके ही दिखायें। तो बाबा एक सेकण्ड के लिए जैसे अन्दर ही अन्दर कुछ सोच रहा था लेकिन जैसे सोचते हुए कोई बहुत मीठा मुस्कराता है, ऐसे लग रहा था। फिर बाबा ने कहा कि बच्चों का जब संकल्प श्रेष्ठ है फिर स्वरूप और संकल्प में अन्तर क्यों? चाहना और करना, चाहना के रूप में तो बहुत अच्छा है और करना, उसमें अन्तर पड़ जाता है। तो बाबा ने कहा बच्ची, इसका कारण समझती हो कि इतना अन्तर क्यों? बाबा ने बताया इसकी दो ही बातें हैं। एक बात - बच्चे त्यागी तो बने हैं लेकिन सर्वन्श त्यागी, यह बनना है और दूसरा - बेहद के वैरागी। यह दो बातें अगर बच्चों की समान हो जाएं, इन्हीं दो बातों पर अटेन्शन दें तो यह सहज हो सकता है। ऐसे बोलते हुए बाबा जैसे एक सेकण्ड के लिए एकदम वहाँ नहीं थे। मैं बाबा के नयनों में देखती रही। फिर बाबा ने कहा बच्ची मैं स्वराज्य दरबार का चक्र लगाकर आया हूँ। मैने कहा बाबा आपने क्या देखा? तो बाबा मुस्कराये और कहा कि एक बात बाबा को बहुत बार आती हैं लेकिन..... ऐसे कहकर बाबा चुप हो गया। मैंने कहा बाबा लेकिन क्या? कहा, सेवा में बच्चे बाबा की दिल पूरी कर रहे हैं। जो सोचते हैं वह समय अनुसार करके भी दिखाते हैं लेकिन बाबा की एक आशा अभी तक बच्चों ने पूरी नहीं की है। वह कौन-सी आशा?

बाबा ने कहा - बाबा हमेशा निमित्त बने हुए बच्चों को कहते हैं कि ऐसा कोई ग्रुप बनाओ जो यह एक पान का बीड़ा उठाये - जैसे सेवा के प्रोग्राम करने होते हैं तो बीड़ा उठाते हैं ना। तो बाबा को अब ऐसा ग्रुप चाहिए जो बाबा कहता व चाहता है, उसी प्रमाण उनकी वृत्ति, दृष्टि, मन्सा, वाचा, सम्बन्ध-सम्पर्क हो। उसके लिए दो बातें जो बाबा ने कही, एक तो जो भी बुराईयां हैं - वह वंश सहित त्याग हो जाएँ और दूसरा - बेहद के वैरागी हो जाएँ।

तो बाबा अब ऐसा ग्रुप चाहते हैं जो अपने को हद में नहीं समझें। मैं यहाँ की हूँ, यहाँ का हूँ, नहीं। सब मेरे हैं और मैं सबकी हूँ। जैसे बड़ी दादियां हैं। तो यह अपने को एक स्थान की नहीं समझती, सारे वर्ल्ड की जिम्मेवारी समझती हैं। ऐसे नहीं मधुबन में रहते मधुबन के हैं नहीं, मधुबन में रहते भी सारे वर्ल्ड की हैं। तो जैसे दादियों से भासना आती है कि यह सबके हैं। तो ऐसा ग्रुप बाबा को चाहिए। बाबा ने कहा - यह जो बाबा की आशा है - बस, हम सबके हैं। बेहद के वैरागी भी हैं और बेहद के हैं, बेहद हमारा है। अब यही आश बच्चों को पूरी करनी है।

तो बाबा ने कहा - बच्ची, बाबा से प्यार तो सभी का है। प्यार की जब बात निकलती है तो बापदादा भी बच्चों का प्यार देखकर जैसे पानी हो जाता है। आंखों में जैसे आंसू भर आते हैं कि इन बच्चों का प्यार बहुत है। लेकिन प्यार का रिटर्न नहीं दिया है। और रिटर्न क्या है? अपने को टर्न करना। जो बाबा चाहते हैं उसी प्रमाण अपनी अवस्था को रचाना, यही बाबा को प्यार का दिटर्न करना है। तो बाबा ने कहा सभी बच्चों को कहना कि अब दृढ़ संकल्प करें। बाते तो कई आयेंगी लेकिन उन सब बातों को तय (पार) करके मुझे बाबा को रिटर्न करना हैं। अपने को टर्न करना है। सर्वंश त्यागी और बेहद के वैरागी स्थिाति में रहना है। ऐसा दृढ़ संकल्प अगर बच्चे इस बारी हिम्मत से करें तो बाबा उन बच्चें को दिल से तो मुबारक देंगे ही लेकिन सभी के सामने बाबा उन्हों से विशेष मिलन मनायेंगे। और बहुत दिल का प्यार वा रिटर्न देने वाले बच्चों को बाबा भी रिटर्न देंगे - जीते रहो बच्चे, सदा उड़ते रहो बच्चे।

उसके बाद बाबा ने और भी समाचार पूछे। तो हमने ज्ञान सरोवर की सेवाओं का सुनाया। बाबा ने कहा इसमें तो बाबा खुश है कि हर एक बच्चें को बाप का नाम बाला करने का उमंग है और आगे भी बड़ता रहेगा। इस ज्ञान सरोवर को वरदान है और वरदान होने के कारण वह आत्माओं को आकर्षित करता है। बच्चों को मेहनत कम करनी पड़ती है। समय प्रति समय जैसे आगे बढ़ते जाते हैं, तो पहले मेहनत से आते थे अभी मुहब्बत से अपनी इच्छा से आते हैं कि हम जायें यह वरदान भूमि को मिला हुआ है, इसकी आकर्षण है और बच्चों की हिम्मत है। लेकिन अभी बाबा की जो आशा है इसमें बाबा देखेंगे कि कौन पान का बीड़ा उठाते हैं। भल कुछ भी हो, क्या भी करना पड़े, ल्याग करना पड़े लेकिन बाबा की आश पूरी करके ही दिखायेंगे। ऐसे दृढ़ संकल्प वाला ग्रुप बाबा देखने चाहते हैं।

फिर सभी को बाबा ने याद दी। दोनों दादियों को भी याद दी और कहा कि अभी दादियों को भी काम देता हूँ कि ऐसा ग्रुप बाबा को इस सीजन में सौगात देवें। जैसे वर्गीकरण की रिजलट बहुत अच्छी है, वैसे यह सौगात बाबा को देने का कार्य निमित्त दादियों को और सभी को बाबा दे रहा है।

फिर बाबा को विदेश तथा देश के सभी बच्चों की याद दी तो बाबा ने कहा, वह तो बाबा चारों ओर के बच्चों की सेवा देखकर खुश है, सभी में उमंग-उत्साह भी है। पुरूषार्थ भी कर रहे हैं। लेकिन आप जो निमित्त हैं उन्हों के वायब्रेशन से उन्हों में और हिम्मत आयेंगी और आगे बढ़ते जायेंगे। ऐसे सबके प्रति याद-प्यार लेते हुए मैं साकार वतन में आ गई। ओम् शान्ति।

11-06-97

स्वराज्य-अधिकारी बनो तो विश्व-अधिकारी और पूज्यनीय बन जायेंगे

आप सभी का स्नेह भरा यादप्यार और बाबा के प्रति सम्मुख आने का संकल्प लेते हुए मैं बाबा के पास जब पहुँची तो बाबा थोड़ा-सा दूर में थे और जैसे सूर्य जब अस्त होने पर होता है तो बादल गोल्ड-गोल्ड हो जाते हैं और गोल्ड बादलों के बीच में सूर्य बहुत सुन्दर लगता है। ऐसे ही बाबा का फेस बादलों के बीच में दिखाई दे रहा था और बाबा के मस्तक में जैसे शिवबाबा बहुत चमक रहा था। तो यह सीन बहुत अच्छी लग रही थी। हम भी जैसे आगे बढ़ते बाबा को देखती गयी। तो बाबा ऐसे मुस्करा रहे थे जेसे कि बाबा के अन्दर कोई खास बात है और पता नहीं क्या कहना चाहते हैं। बाबा की ऐसी राज़युक्त मुस्कराहट थी। तो जब मैं बाबा के सम्मुख पहुंची तो जैसे कोई स्विच आन होता है और सामने कुछ प्रगट हो जाता है, ऐसे ही कोई स्विच दिखाई नहीं दिया लेकिन जैसे संकल्प के स्विच से अर्ध चन्द्रमा के रूप में तीन लाईनों में आप सभी मीटिंग वाले सम्मुख में इमर्ज हो गये और बाबा बादलों के बीच में जैसे चमक रहा था। तो मैं यह सीन देखती रही। उसमें पहली लाइन में लिखा था "स्वराज्य सभा" और उसके ऊपर लाइन थी उसमें लिखा था "विश्व-राज्य सभा" और जो उसके ऊपर लाइन थी उसमें लिखा था "पूज्यनीय सभा।" तो एक एक के यह तीनों रूप इमर्ज थे। और जो पूज्यनीय रूप था, वह जैसे मन्दिर की मूर्तियां फूलों से सज़ी हुई होती हैं ऐसे एक-एक देवी के चारो ओर सफेद-सफेद फूलों का जैसे चार पांच लड़ियों का बार्डर था। यह सीन बड़ी अच्छी लग रही थी और बाबा जैसे साक्षी होकर देख रहा था, बता कुछ नहीं रहा था। तो मैंने मुस्कराते हुए कहा कि बाबा आपने कुछ बताया नहीं कि यह कहाँ से आई, कैसे आई?

फिर बाबा ने बताया कि अभी आवश्यकता है तुम लोगों को इन तीनों रूपों के स्मृति की। पहले चाहिए स्वराज्य-अधिकारी। बभी आप बच्चे जो भी पुरूषार्थ करते हो, इसका लक्ष्य और प्रैक्टिकल रूप है- "स्वराज्य-अधिकारी बनना।" अगर स्वराज्य-अधिकारी बन गये तो यह विश्व-अधिकारी और पूज्यनीय रूप तो आपका साथ-साथ है ही। तो बच्चे स्वराज्य-अधिकारी कहाँ तक बने हैं, वह बाबा आपको दिखा रहे हैं। तो आप बच्चे जो सेल्फ रियलाइज़ेशन का सोच रहे हो, उसमें यह सोचो।

फिर बाबा ने कहा कि आप बच्चें को याद है, शुरू-शुरू में ब्रह्मा बाबा ने इसका कितना पुरुषार्थ किया था! ब्रह्मा बाबा की डायरी आप

लोगों ने देखी थी, याद है? हमने कहा, हाँ बाबा, हमने देखी थी। बाबा ने उसमें शुरू का पुरूषार्थ लिखा था। बाबा रोज़ रात में अपनी दरबार लगाते थे - जैसे आत्मा राजा बैठा है और सभा बुलाई है। मन मन्त्री, बुद्धि मन्त्री सभी सामने बैठे हैं और बाबा उनसे पूछते हैं बोलो - फलाना मंत्री, तुम्हारी सारे दिन की कारोबार कैसे चली? तो बाबा रोज स्वराज्य की दरबार लगाते थे और उसमें मन-बुद्धि और एक-एक कर्मेन्द्रिय को चेक करते थे। और मालिक होकर, राजा होकर पूछते थे कि कारोबार कैसे चली? तुमने यह क्यों किया? तुमको यह नहीं करना है, ऐसा नहीं करना है। तो बाबा ने कहा अभी जो आप सेल्फ रियलाज़ेशन का सोचते हो उसमें ऐसे स्वराज्य की दरबार लगाओ। और मन-बुद्धि को अगर आपने ठीक किया, उसकी कारोबार ठीक चली तो सारी कारोबार ठीक चलेगी। लेकिन दरबार में सफलता के लिए चाहिए - कण्ट्रोलिंग पावर नहीं है तब तक न चाहते हुए भी छोटी-बड़ी गलतियां हो जाती हैं। तो रोज़ रात को अपनी कण्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर को चेक करो और प्रैक्टिकल में इस पावर को यूज़ करो।

तो बाबा ने कहा कि आप सबने जो भी बातें निकाली हैं - लगाव होता या क्रोध होता या एकता नहीं होती है या सभी ने जो बाबा को पत्र लिखाकर दिये हैं, उसमें मैजॉरिटी ने जो भी प्वाइंटस लिखी हैं कि हम यह करेंगे, यह नहीं करेंगे। एकता में रहेंगे.... आदि। तो बाबा ने कहा कि एक-एक प्वाइंट को क्या बैठकर देखेंगे? बस, कण्ट्रोलिंग पावर यूज़ करो तो यह सब बातें सहज हो जायेंगी। ऐसे बाबा से रूहरूहान चल रही थी फिर सभा सामने से गायब हो गई।

फिर मैने कहा कि बाबा आपने पत्र तो देखे, फिर उसकी रिज़ल्ट क्या हुई? जब मैंने यह पूछा- तो जैसे कोई खुशबू सेंट या अगरबत्ती की बहुत अच्छी मीठी आती है, ऐसे अचानक एक अलौकिक खुशबू सारे वतन में छा गई। बाबा ने कहा यह है रिज़ल्ट। तो मैंने कहा रिज़ल्ट माना आपके पास अच्छी खुशबू आई! तो कहा - हाँ बच्ची, खुशबू बहुत अच्छी है क्योंकि बाबा ने एक विशेषता देखी कि हिम्मत सबने रखी है और जहाँ हिम्मत बच्चों ने रखी है वहाँ बापदादा की मदद और ब्राह्मणों की दुआयें, दों चीजें इन्हों को स्वत: प्राप्त होंगी। जो अन्दर संकल्प है कि हम ऐसा ब्राह्मणों का संगठन बनायेंगे तो जरूर ब्राह्मणों की भी दुआयें मिलेंगी और ब्राह्मण आत्माओं की दुआयें भी कोई कम नहीं हैं क्योंकि ब्राह्मणों की ही माला बननी है, ब्राह्मणों का राज्य होता है तो ब्राह्मणों की दुआयें सहज आपको आगे बढ़ाती रहेंगी। अब इस हिम्मत को कायम रखने के लिए सिर्फ रोज़ रात को यह सेल्फ रियलाइज करो और सारा दिन उसी प्रमाण चलो तो आपको सर्व की दुआयें और बाबा की जो मदद मिलेगी उससे बहुत सहज पुरूषार्थ होगा। पुरूषार्थ करना नहीं पड़ेगा लेकिन यह मदद और दुआयें बहुत सहज ऊँचा-ऊँचा उठाती रहेंगी।

फिर मैंने कहा कि सभी ने कहा है कि बाबा सम्मुख मिलने आये तो बहुत खुशी की बात है। तो जब मैंने यह कहा तो जैसे ब्रह्मा बाबा कभी-कभी सोच में पड़ जाता है और ऐसी शक्ल कर लेता, ऐसे करते कहा कि बस इतने में बाबा आ जाए.... तो मैंने कहा कि बाबा हिम्मत की खुशबू तो आई फिर बाकी क्या चाहिए। कहा - नहीं बच्ची, मासी का घर नहीं है। जैसे ब्रह्मा बाबा कभी-कभी हंसी में कहता था - क्या समझा है - इतने में! ऐसे जैसे बाबा होमली रूप में बोल रहे थे। कहा-बस, अभी तो सिर्फ एक संकल्प का पेपर दिया है, अभी स्वरूप का पेपर जाकर देंगे। अभी तो आपके सामने प्रलोभन बहुत आयेंगे क्योंकि वायदा पक्का किया है तो माया भी पक्की होगी ना। तो प्रलोभन, बाते सब आयेंगी लेकिन जब बाबा देखेगा कि यह स्वरूप के पेपर में पास हो गये फिर बाबा जरूर सामने सम्मुख मिलन मनायेगा।

फिर मैंने कहा - बाबा, दोनों दादियों ने बहुत मेहनत की है और ऐसी मेहनत की है जो सबके दिल में एक संकल्प आ गया है - बस, हमको करना ही है। यह सबके मुख से निकलता है - 'बस बदलना है, करना है।' तो बाबा ने कहा - यह तो मेरे मुरब्बी बच्चे हैं। इन्हों के ऊपर ही तो मेरा जिम्मेवारी का छत्र (ताज) पड़ा हुआ है। तो यह दोनों दादियां तो स्वराज्य ताजधारी हैं ही। इसलिए स्वराज्य ताज अधिकारी मेरे राजे बच्चों को बहुत-बहुत मुबारक देना। ऐसे खास दादियों को और आप सभी को याद दी। अच्छा ओम शान्ति्।

20.07.97

दृढ़ संकल्प रूपी धागा बांध बाप की आशाओं को पूरा करो

(रक्षा-बन्धन निमित्त अव्यक्त बापदादा का विशेष सन्देश)

आज बापदादा से मिलन मनाने गई। बापदादा ने मीठी दृष्टि देते हुए मिलन मनाया और बोले, "आओ मेरी विश्व-कल्याणकारी बच्ची आओ" , ऐसे कहते ही बाबा ने हमें अपनी बांहों में समा लिया। बस कुछ समय तो उसी अति प्यारी और न्यारी अनुभूति में लवलीन थी, बोलो, आप सब भी उस अनुभूति में खो गये हो ना! कितना अतिन्द्रिय सुख है उन अलौकिक दिव्य बांहों में... अस्तु।

उसके बाद बाबा फिर बोले बच्ची, क्या समाचार लाई हो? मैं तो उसी अनुभव में लवलीन थी। कुछ समय बाद मैं बोली बाबा आज चारों ओर का समाचार लाई हूँ। चारों ओर के बच्चों में बहुत अच्छी लहर है कि अब बापदादा की आशायें सब प्रैक्टिकल में पूर्ण करनी हैं, सब तरफ भट्ठियाँ और तीव्र पुरूषार्थ की लहर अच्छी है। मधुबन में भी बहुत अच्छी रूहानी लहर है। वायुमण्डल बहुत पावरफुल है। साथ में क्रोधमुक्त का भी सब तरफ अच्छा अटेन्शन है।

बापदादा मुस्कराते हुए बोले - संकल्प तो अच्छा है। बाप के पास भी वायुमण्डल पहुंचता है। बाबा मुबारक भी देते हैं लेकिन इस संकल्प को सदा प्रैक्टिकल में लाने के लिए बच्चों को अब अपने मुख्य "मन-बुद्धि के मालिकपन की अथारिटी में सेंट परसेन्ट रहना आवश्यक

है।" क्योंकि मन-बुद्धि ही सदाकाल अचल बनने में विघ्न डालती है वा सदा एवररेडी बनने नहीं देती। अब तो प्रकृति भी अपने नज़ारे रिहर्सल रूप में दिखा रही है और समय भी सूचना दे रहे हैं, तो अब पावरफुल लहर संगठन में बढ़ती रहनी चाहिए।

उसके बाद मैने कहा बाबा अब तो राखी बंधन आने वाला है। सभी सन्देश को याद कर रहे हैं। बाबा बहुत स्नेह रूप में बोले, बाप तो सदा बच्चों के लिए हाँ जी, हज़ूर हाजिर है। और कुछ समय बाद स्नेह के सागर बाप बोले, इस बारी की राखी बच्चों को साधारण रूप में नहीं मनानी है लेकिन पावरफुल बन्धन में अपने को बांधना है। अन्य आत्माओं को तो पवित्रता के बन्धन में बांधते हो, अब पहले स्व को बन्धन में बांधना है। स्व रक्षक बनना है जो भी बाप से वायदे किये हैं और जो बाप की शुभ आशायें हैं वह सम्पूर्ण करने का दृढ़ संकल्प रूपी धागा मन से बांधना है। हर एक बच्चा एक दो को और अपने को उमंग-उत्साह की राखी बांधे कि "मुझे सम्पूर्ण बाप समान बनना ही है।" कोई भी सरकमस्टांश बड़े ते बड़ा विघ्न आवे लेकिन वायदा निभाना है। क्या, क्यों, कैसे, कब यह बोल वा संकल्प मन की डिक्शनरी से ही समाप्त करना है। अब तो प्रकृति, समय आप सबका आह्वान कर रहा है – आओ हमारे मालिक आओ, समाप्ति का घण्टा जल्दी बजाओ। सर्व आत्मायें भी आप विश्व रक्षक आत्माओं को - रक्षा करो, रक्षा करो, शान्ति देवा दया करो.... ऐसे दिल से पुकार रही हैं। बोलो बच्चा- यह आवाज सुनने नहीं आता? ओ आशाओं को पूर्ण करने वाले आशाओं के दीपकों अब सबकी आशायें पूर्ण करो। सदा यही अटल निश्चय रखो कि करना ही है, होना ही है। हुआ ही पड़ा है। यही मन और कर्म की राखी बांधो और बंधवाओ। ऐसे कहते बाबा जैसे सभी बच्चों के बीच चले गये और सबको देख-देख बहुत स्नेह और शक्ति की दृष्टि दे मिलन मना रहे थे।

कुछ समय बाद हमने विदेश वालों की याद दी। बाबा बोले, बच्चे अच्छे याद और सेवा की लगन से उड़ते रहते हैं, उड़ते रहेंगे। सबको यही कहना कि सदा बाप के नयनों में समायें हुए नूरे रत्न जहान के नूर बच्चे हो। सभी को राखी की इनएडवांस मुबारक है।

इसके बाद मैंने शान्तिवन का समाचार सुनाया कि वायदे प्रमाण तैयारी कर रहे हैं। बाबा बोले जो बाप के प्यार में दिन रात लगन से सेवा करते, उन्हों को बापदादा हिम्मत का प्रतयक्षफल रोज़ खिलाते हैं। अच्छी मुहब्बत से मेहनत का सबूत दे रहे हैं। फ़िर मैंने वर्गीकरण के सेवा की रिजल्ट सुनाई कि प्रोग्रामस सब बहुत अच्छे चल रहे हैं। बाबा बोले वर्गीकरण के सेवा की विधि बनी बनाई विशेष आत्माओं के लाने की विधि है, इसलिए सिद्धि सहज मिल रही है। जो सेवा के निमित्त बने हैं उन्हों को आपसे पहले बापदादा दिलखुश मिठाई खिलाते रहते हैं। मधुबन वाले भी अच्छे मन-वचन-कर्म से सेवा कर रहे हैं। ज्ञान सरोवर, हास्पिटल वाले सब बच्चों को विशेष यादप्यार देना और सबसे ज्यादा मेरी सिरताज निमित्त दादी को बाहों में समाने का प्यार देना, जो निमित्त बन सबको उमंग-उत्साह द्वारा आगे बढ़ा रही है। साथ में सभी दादियों, मुख्य पाण्डवों को भी याद देना। 07.08.97

"पावरफुल योग के कवचधारी बनना ही सेफ़्टी का साधन"

(अफ्रीका निवासी भाई बहिनों प्रति अव्यक्त बापदादा का दिव्य सन्देश)

परमप्रिय बापदादा के स्नेही, सहयोगी केनिया निवासी सर्व बाबुल के लाडले, सिकीलधे बच्चों को बापदादा का यादप्यार स्वीकार हो।

आपकी तरफ से समाचार मिला। बापदादा को सुनाया। बापदादा ने मुस्कराते हुए सुनते ही आप सभी को सूक्ष्म में इमर्ज किया और आप सबके ऊपर अति स्नेह का हाथ छत्रछाया समान रखते हुए बोले बच्चे, "हिम्मते बच्चे मददे बाप" तो है ही। आप सभी बच्चे भी अच्छी हिम्मत से अब तक वायुमण्डल का सामना करते आये हो।

बापदादा ने तो पहले ही सुनाया है कि दिन-प्रतिदिन ये सब बातें व ये हालातें तो अति में जानी ही हैं। ऐसे समय पर तो आप ब्राह्मण बच्चों को पावरफुल योग के कवचधारी बनना ही सेफ़्टी है। जैसे वी.आई.पी. लोग चारों ओर सिक्यूरिटी के घेरे में रहते हैं। ऐसे बच्चों को अब समय अनुसार शक्तिशाली योंग द्वारा चारों ओर लाईट के कार्ब में चलना है। इसमें ही सेफ्टी है। साथ-साथ शरीर की सिक्युरिटी भी रखना ज़रूरी है। लाईट के कार्ब में रहने से डरेंगे नहीं, लेकिन चारों ओर का अटेन्शन भी रखना ज़रूरी है और धीरे-धीरे जब जैसे सहज हो तो अपने को भारत में सेट करते चलो। जल्दबाजी में नुकसान में नहीं आना है। सदा त्रिकालदर्शी की स्टेज पर बैठ नथिंगन्यु की नालेज से फ़िकर से फ़ारिग रहने वाली आत्मायें हो। बोलो, ऐसे अनुभव करते हो ना?

अच्छा हर बच्चे को नाम सहित सिर पर बाप के स्नेह का हाथ और साथ सहित यादप्यार स्वीकर हो। अन्त में बापदादा ने वेदान्ती बहन ओर सर्व साथी बहिनों को खास यादप्यार दी। 27.08.97

बालक और मालिकपन के बैलेन्स से सफ़लतामूर्त बनो

(मीटिंग के प्रति अव्यक्त बापदादा का सन्देश)

आज विश्व समाचार की मीटिंग का समाचार सुनाने बापदादा से मिलन मनाने गई तो क्या देखा, आज बापदादा विश्व के ग्लोब पर खड़े हुए सारे विश्व के चारों ओर की ब्राह्मण आत्माओं को बहुत पावरफुल लाइट, माइट की दृष्टि दे रहे हैं। बापदादा के नयनों से एक तरफ अति स्नेह, दूसरे तरफ लाइट माइट का बहुत सुन्दर अनुभव हो रहा था। कुछ समय बाद बापदादा मुस्कराते हुए बोले, बच्ची क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आज विश्व समाचार की मीटिंग का समाचार लाई हूँ। बाबा बोले, बच्ची बापदादा जानते हैं कि दोनों तरफ के बच्चों ने स्नेह सम्पन्न

बहुत अच्छा पार्ट बजाया। अपने-अपने विचार स्पष्ट रखने का सबको अधिकार है। लेकिन यह पाठ पक्का है और सदा रहना चाहिए कि "राय देने के समय मालिक बन राय देना और फाइनल होने के समय बालक बन स्वीकार करना" – यही मीटिंग की विधि और सिद्धि है। बापदादा जानते हैं कि विदेश वा देश के बच्चों को सेवा को बढ़ाने के लक्ष्य से उमंग-उत्साह बहुत है। ऐसे लक्ष्य से सोचते हैं लेकिन सेवा के साथ-साथ इस पुरानी दुनिया के दोंनों तरफ के लॉज़ (कानून) भी ध्यान में रखना पड़ता है।

बापदादा जानते हैं कि विदेश के बच्चों की दिल में सेवा की ही भावना है क्योंकि सेवा की उछल बहुत आती है। बाप और सेवा से बहुत-बहुत प्यार है इसलिए सेवा का लव और दोनों तरफ़ के लॉज़, दोनों का बैलेन्स रखना आवश्यक है, इससे ही सेवा में ब्लैसिंग मिलती है। बच्चे समझदार हैं। बापदादा के इशारे को दूरादेश बुद्धि से समझने वाले हैं। ऐसे बोलते बाबा जैसे मधुबन में और विदेश में चक्र लगाने चले गये और कुछ समय बाद बोले, बापदादा ने डायरेक्ट दोनों तरफ के बच्चों को स्नेह सम्पन्न यादप्यार की दृष्टि दे दी है। और मैं भी मिलन मनाते साकार दुनिया में आ गई। 10-10-97

शान्तिवन उड़ती कला का एयरपोर्ट

आज बापदादा के पास पहुंचते ही बापदादा बहुत रमणीक रूप से मुस्करा रहे थे और बहुत मीठी दृष्टि से समीप बुला रहे थे। बाबा के मुस्कान से ऐसे लग रहा था जैसे पहले से ही कोई बात को जानते हुए मुस्करा रहे हों। मैं भी मुस्कराती रही। कुछ समय के बाद बाबा बोले - बच्ची, तुम्हारी दादी को विशाल शान्तिवन देख बहुत नये-नये संकल्प चलते हैं ना! बच्ची को कहना कि बहुरूपी बाप ने बनवाया है तो बहुत अच्छे-अच्छे बहु कार्य में लगना ही है।

☐ ये शान्तिवन ब्राह्मणों के उड़ती कला का एयरपोर्ट बनेगा।

☐ ब्राह्मणों के आपसी मिलन, रूहरिहान, रिफ्रैश होने का रूहानी मौज मनाने का रमणीक विहार बनेगा।

☐ ये शान्तिवन ब्राह्मणों को नम्बरवन में ले जाने का तपस्या स्थान बनेगा।

☐ ये शान्तिवन सम्बन्धियों और सहयोगियों को स्नेह में समीप लायेगा।

☐ ब्राह्मणों के श्रेष्ठ साधना अर्थात् एकान्तवास का साधन बनेगा।

☐ भिन्न-भिन्न वर्गों के बड़े-बड़े सेमीनार्स, स्नेह मिलन द्वारा एक धक से अनेक आत्माओं को सन्देश मिलेगा।

☐ आबू रोड के लिए दर्शनीय स्थान बनेगा। जैसे ओम् शान्ति भवन दूरिस्ट स्थान बना है, ऐसे ये भी बनेगा।

☐ आईवेल के समय एशलम बनेगा।

उसके बाद बाबा बोले - बच्ची (दादी जी) को बहुत-बहुत मुबारक देना कि समय पर सबको उमंग-उत्साह में लाते शान्तिवन तैयार कराया। बापदादा बच्ची को सदा अमृतवेले से पहले मिलन मनाते, प्रेरणा देते रिफ्रेश करते रहते हैं और दृष्टि से मीठी-मीठी एक्स्ट्रा शक्ति का वरदान भी देते हैं। साथ में सर्व साथी जो निमित्त हैं उन्हों को भी बाबा विशेष स्नेह की दुआयें देते रहते हैं। अच्छा - ओम शान्ति्।

24.10.97

बीती को परिवर्तन करो और प्रत्यक्ष प्रमाण बन बाप को प्रत्यक्ष करो

आप सभी का यादप्यार लेते हुए आज जब हम वतन में पहुँची तो आज का दृश्य कुछ न्यारा ही था। हमको याद आता, ऐसा दृश्य 27 वर्षो के बाद हमने देखा। जब बाबा अव्यक्त हुआ था तब ऐसा दृश्य देखा था। तो आज जब वतन में पहुँची तो वतन में चारों ओर लाइट ही लाइट थी। बाबा जैसे बहुत सूक्ष्म लाइट रूप में दिखाई दे रहा था। ऐसे लग रहा था जैसे कोई पर्दे के पीछे है, लेकिन पर्दा था नहीं। बाबा का हाथ वरदान देने के रूप में था। जितना मैं आगे जाना चाहती थी कि बाबा से मिलूं, वह नहीं हुआ। थोड़ा आगे जाकर खड़ी हो गई। थोड़े टाइम के बाद फिर उसी लाइट में अक्षर आये - "बीती को परिवर्तन करो और प्रत्यक्ष प्रमाण बन बाप को प्रत्यक्ष करो"। यह जैसे स्लोगन की रीति से लाइट के ही शब्द लिखे हुए थे। उसके बाद बाबा गुम हो गया। मैं कुछ समय तो देखती रही। फिर साकार वतन में आ गई।

(गुल्जार दादी के शब्दों में) हमें तो ऐसे लगता - जैसे अब बाबा कुछ भी मुख से कहना नहीं चाहता। लेकिन हम बच्चों को अब तक जो इतनी शिक्षायें दी हैं, उन सबका प्रत्यक्ष स्वरूप देखने चाहता है। ओम शान्ति्

26.10.97

लॉ और लव का बैलेन्स रखने वाली दादी

(दादी जी के अमृत-महोत्सव के उपलक्ष्य में)

आज विशेष प्यारी दादी जी की यादप्यार लेकर अमृत-महोत्सव का समाचार सुनाने वतन में गई। तो क्या देखा, हमारे जाने के पहले ही बापदादा गद्दी पर बैठे हैं और दादी जी के गले में बाहों का हार डालते हुए बहुत मीठा मिलन मना रहे हैं। जैसे साकार में बाबा गद्दी पर बैठते थे, हूबहू ऐसे दृश्य था, मैं जब सामने गई तो बापदादा बहुत मीठी दृष्टि देते हुए बोले - बच्ची, तुम्हारे पहले ही दादी को बुला लिया है। मैं तो यह दृश्य देखते ही खो गई। फिर बाबा बोले बच्ची, सब बच्चे दादी के आगे दिल से अपने स्नेह को प्रत्यक्ष कर रहे हैं। बच्ची तो अमृतधारा बरसाने

वाली अलौकिक जीवन में अमर भव की वरदानी है। बापदादा भी बच्ची को दिल से बार-बार याद करता, शक्ति देता और पदमगुणा प्यार देता क्योंकि साकार में बापदादा का निमित्त स्वरूप बन इतने वर्ष सर्व ब्राह्मणों को और विश्व सेवा को सम्भालने में योग्य बनी है। इसलिए बापदादा मुरब्बी बच्चों को देख खुश होते हैं और बापदादा भी बधाई देते हैं। ऐसे कहते बाबा के पास एक बाक्स रखा था, वह खोला तो उसमें बहुत चमकीले रंग-बिरंगी हीरों की मालायें थी जो बहुत सुन्दर लग रही थी। बाबा ने अपने हाथों से दादी को एक-एक करके मालायें पहनाई लेकिन हर एक माला में अलग-अलग बहुत सुन्दर शब्द हीरों से लिखे हुए थे। पहली माला में अलग-अलग बहुत सुन्दर शब्द हीरों से लिखे हुए थे। पहली माला में था -

☐ विश्व कल्याण की सेवा करने कराने में सफल मूर्त

☐ ब्राह्मणों की स्नेह-युक्त पालना से सर्व को आगे बढ़ाने वाली।

☐ सदा उमंग-उत्साह में रहने और सर्व को उमंग में लाने की सेवाधारी

☐ सदा गुण सम्पन्न स्वभाव, मिलनसार, निर्माण संस्कारों द्वारा सेवा।

☐ सर्व हमशरीक साथियों को साथी बनाए स्नेह और सम्मान देने की सेवा।

☐ लगातार मुरली और मुरलीधर बाप का महत्व रखना और दूसरो को भी महत्व रखाने की सेवा।

ऐसे 6 मालायें बापदादा ने पहनाई दादी जी का ह्रदय ऐसे चमक रहा था मालाओं से, जो देखने वाला दृश्य ही था। और दादी जी बापदादा में समा गई।

कुछ समय के बाद बाबा बोले - बच्ची, और क्या समाचार सुनाती हो? मैने कहा बाबा मीटिंग चल रही है। बाबा बोले- सभी बच्चों को यादप्यार और मुबारक देना। बहुत विधिपूर्वक लॉ और लव का बैलेन्स रख सोचा है। अब हर एक की यही जिम्मेवारी है - लॉ मेकर बन औरों को भी साथी बनावें। उमंग-उत्साह अच्छा है और सबने समय भी दिया है। इसलिए हर एक बच्चे को बापदादा बांहों में समाते हुए अनगिनत यादप्यार दे रहे हैं।

उसके बाद बाबा ने मधुबन निवासी, ज्ञान सरोवर निवासी, शान्तिवन , हास्पिटल निवासी, आबू निवासी तथा चारों ओर के बच्चों को याद किया और सभी ने जो सेवायें की है उसकी मुबारक दी और कहा सबने अपनी-अपनी मुहब्बत की निशानी मेहनत की है और आगे भी करनी है। उसकी भी इनएडवान्स अनगिनत मुबारक हो, मुबारक हो। ऐसे कहते हमें विदाई दी और हम साकार दुनिया में पहुँच गई। ओम शान्ति्।

12.03.98

होली बनकर होलीएस्ट बाप के साथ सच्ची होली मनाओ

(सतगुरूवार के दिल होली तथा दादी चन्द्रमणि जी के निमित्त भोग –दिव्य सन्देश)

आज सतगुरूवार भी है और साथ-साथ होली का रंग-बिरंगा दिवस भी है, ऐसे समय पर जब हम वतन में पहुंचे तो वतन की शोभा भी न्यारी थी। आज वतन भी इन्द्र धनुष के समान रंग बिरंगा सजा हुआ दिखाई दे रहा था। बहुत प्यार से मीठे बाबा से नयन मुलाकात की और बाबा बोले आओ मेरे सिरताज बच्चे, आओ। बाप वतन में आप बच्चों का इन्तजार कर रहा है। ऐसे कहते जैसे बाबा ने अपनी बांहों में समा लिया और वह समाने का सुख भी ऐसा मीठा प्यारा सुख था, वर्णन नहीं कर सकते हैं। बाबा बोले बच्ची क्या समाचार लेकर आई हो? मैंने कहा बाबा आज यहाँ जितने कलर हैं आज उतने ही समाचार हैं। इतने ही सन्देश हैं। मैंने कहा बाबा आज सतगुरूवार भी है, होली भी है, दादी चन्द्रमणी का दिन भी है और भी सन्देश हैं। तो बाबा बोले - बाप के पास तो सदा ही उत्सव है। उमंग-उत्साह है। कोई भी बात के दु:ख की अशान्ति की लहर जो नीचे की दुनिया में होती है, यहाँ वह कुछ नहीं है। बाबा ने कहा बच्चे जो आत्मायें गई हैं उनको भी बाबा वतन में इमर्ज करके हर प्रकार से रिफ्रेश करता है, मधुबन का समाचार भी सुनाता है, चक्र भी लगवा देता है। मैंने कहा आखिर दादी चन्द्रमणि कहाँ है। बाबा बोला अगर मैं बता दूं तो तुम क्या करेंगी? हमने कहा सबको बताऊंगी। तो बाबा ने कहा कि ड्रामा में बाबा ने यही गुप्त राज रखा है। कितनी दादियां गई हैं, बाबा किसी का भी नहीं सुनाता। अगर सुना दे तो सब वहाँ पहुँच जाएँ और जिसके घर में जन्म लिया है वही परेशान हो जाएं। तो यह नूंध नहीं है। लेकिन अन्त समय में आप सबको साक्षात्कार होगा कि यह फ़लानी है, यह फलानी है। उस समय मिलने की इच्छा नहीं होगी। दोनों ही स्थापना के कार्य में निमित्त हैं। तो वह अपना पार्ट बजायेंगे और आप अपना पार्ट बजायेंगे। उस समय ऐसी भासना आयेगी कि यह फलानी आत्मा है। जो भी एडवांस पार्टी में जाते हैं उनकी ड्युटी बाबा सम्भालता है। तो बाबा बच्चों को हर रीति से बहलाता है, घुमाता है, अनुभव कराते है। नई नई प्वाइंटस् देता है। कोई बात की कमी नहीं रहती।

फिर बाबा ने कहा अच्छा होली मनाने आई हो ना। होली में क्या करें? रंग डालेंगे। लेकिन बाबा ने कहा होली में पहले जलाते हैं। तो बच्चों को कहना जो कुछ भी है उसे जलाओ, खत्म करो। जब तक खत्म नहीं किया है, हो ली, यानी पास्ट को पास्ट नहीं किया है तब तक सच्ची रीति से मिलन नहीं मना सकेंगे। तो आज बच्चों को कहना कि जो भी व्यर्थ है उस सबको योग अग्नि में खत्म करें, ऐसा जला दें जो राख हो जाए, ज़रा भी नाम-निशान न रहे। ऐसे खत्म करें जैसे पास्ट इज़ पास्ट, न मन में रहे, न चित्त में रहे, न वर्णन में रहे। ऐसे खत्म कर दें जैसे था

ही नहीं। शूद्रपन के जीवन की बातें खत्म, ब्राह्मण जीवन की फरिश्ता जीावन की बातें, देवता जीवन की बातें यही बुद्धि के अन्दर स्मृति में रहें। यही चिंतन-वर्णन रहे तो बच्चे खुशी में उमंग-उत्साह में उड़ते रहेंगे। तो बाबा ने कहा कि बाबा चाहता है इतना ज्ञान का प्रेम का, शान्ति का, आनंद का रंग चढ़े जो उसके ऊपर कोई दूसरा पुरानी दुनिया का रंग चढ़े ही नहीं। अभी तक कोई-न-कोई रंग चढ़ जाता है, वह चढ़े ही नहीं ऐसा रंग यहाँ से चढ़ाकर जाओ। आपका रंग दूसरों पर चढ़े, वह रंग आपके ऊपर न चढ़े ऐसा दृढ़ संकल्प करके ऐसा रूहानी रंग में रंगकर जाओ। बाबा बच्चों को रूहानी रंग में रंगता है और रोज मीठी मीठी बातें सुनाकर बच्चों का मुख मीठा करता है।

तो बाबा ने कहा बच्चों को कहना कि पद्मापदम भाग्यवान बच्चे हो जो भगवान के साथ होली मना रहे हो। तो होली मनाना है होलीएस्ट बाप के साथ होली बनकर।

ऐसे कहते बाबा के हाथ में एक छोटा सा फाउण्टेन होता है, ऐसे फाउण्टेन था और उससे चारों तरफ लाइट के रंग दूर दूर तक बिखर गये। जैसे फ्लावर वाज की तरह था लेकिन बाबा ने उसे उठाया तो उससे कई तरह के रंग गोलाई से गुलदस्ते की तरह चारों तरफ बिखर गये। जैसे लाइट के अन्दर अक्षर चमकते हैं लिखते मिटते हैं। ऐसे उसके अन्दर प्रेम, आन्नद, शान्ति... शब्द लिखते जायें, मिटते जायें। तो बाबा ने कहा कि बाप इन रूहानी रंगों में बच्चों को रंगता है जो दूसरा कुछ दिखाई ही नहीं दे। बाबा चाहता है कि सभी बच्चे इस रूहानी रंग के अन्दर छिपे रहें, दिखाई ही न दें।

बाबा ने कहा सबको कहना कि यह अन्तिम समय है, नाटक पूरा होने जा रहा है। जो भी आत्मायें हैं चाहे ज्ञान में है या नहीं है लेकिन सब बाबा के बच्चे हैं, सभी बच्चों को बाबा वापस घर ले जाने ही है। सबको अपना हिसाब-किताब पूरा कराके ले जायेगा। आप बच्चे तो ज्ञान योग बल से अपना एकाउण्ट खत्म करके बाबा की अंगुली पकड़कर जायेंगे, बाकी सब आत्मायें भी अपना हिसाब पूरा करके जाने वाली हैं। कल्याणकारी बाप सर्व आत्माओं का कल्याण करते है, ऐसा निश्चित समझो।

मैनें कहा बाबा – कोई कोई ने आज जीते जी मरने का भोग लगवाया है। तो बाबा ने कहा जीते जी मरने का अर्थ ही है पुराने को भूल जाना। वैसे भी आज होली है, तो हो ली अर्थात् पुराना खत्म। अब नया जीवन, नये संस्कार, नई बात, पुराने को खत्म करना है। आज का दिन मरने का नहीं लेकिन ऐसे समझें मेरे अलौकिक जन्म दिन है। इस जन्म दिन को याद रखना कि हमने भगवान की गोद में अपना नया जन्म लिया है। फिर हमने बाबा को भोग स्वीकार कराया। बाबा ने सभी को याद दिया और मैं नीचे वतन में आकर पहुँच गई।

16.03.98

विशेष आत्माओं के हर कदम में सेवा

(दादी जी के प्रति अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश)

आज बापदादा के पास दादी जी की और सर्व की याद लेते हुए गई तो बापदादा बहुत मीठा मुस्करा रहे थे और कहा आओ बच्ची, क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा, दादी जी का आपरेशन बहुत अच्छा हो गया। बाबा मुस्कराते बोले, बच्ची बापदादा तो ऑपरेशन थियेटर में सार कार्य देख ही रहे थे। बाबा के पास तो सहज साधन हैं। ऐसे कहते बाबा दादी को इमर्ज कर बहुत राज़युक्त मुस्कराते हुए नैन मिलन मना रहे थे। हम देख-देख खुश हो रही थी फिर बाबा बोले निमित्त विशेष आत्माओं की हर बात में सेवा समाई हुई है। सर्व को भिन्न-भिन्न प्रकार से पाठ पढ़ाती हैं। जैसे मन से मनोबल भरती हैं वैसे तन के हिसाब में भी अशरीरी और खुशी से पार्ट बजाने में भी सबको प्रैक्टिकल पार्ट पढ़ाती हैं। धन से भी एक तरफ बड़ी दिल साथ में एकानामी का पाठ पढ़ाती हैं। ऐसे हर कदम में पाठ पढ़ाती रहती हैं। ऐसे मिलते और महावाक्य उच्चारण करते सर्व बच्चों को यादप्यार दी।

07.04.98

सेवा के साथ-साथ स्व-उन्नति का बैलेन्स रखो

(मीटिंग प्रति अव्यक्त बापदादा का दिव्य सन्देश)

आज जैसे ही मैं वतन में बाबा के पास गई तो देखा बाबा बहुत मीठा मुस्करा रहे थे और मैं जितना आगे जाती रही उतना बाबा की मुस्कराहट में जैसे भिन्न-भिन्न राज से चेन्ज आती जाती थी। मैं भी देख-देख मुस्करा रही थी। तो जब मैं आगे पहुँची तो बाबा ने कहा – आओ मेरे सर्विसएबुल बच्चे, आओ। ऐसे कहते बाबा ने कहा बच्ची, आज सर्विस का समाचार लाई हो! तो मैंन कहा बाबा आपके पास तो पहले ही पहुँच जाता है, अभी मैं क्या सुनाऊं। तो बाबा ने कहा कि बच्ची मीटिंग तो मैं भी देखता हूँ और इस साल बच्चों ने दो थीम रखी हैं – एक स्व-उन्नति की और दूसरे तरफ विशाल प्रोग्राम्स की। वैसे दोनों ही इकट्ठी चलनी चाहिए, उसके लिए बाबा ने कहा कि वर्ष के मास भिन्न-भिन्न हैं तो भिन्न-भिन्न मास में प्रोग्राम को बाँटो। कुछ मास विशेष स्व-उनति की लहर फैले, उसमें फिर विशाल प्रोग्राम नहीं रखो। उसमे भी साल में बरसातों के दो मास हरेक अपने-अपने एरिया के हिसाब से ऐसे रखो जो स्व उनति के सिवाए कोई और बड़ा प्रोग्राम उस समय नहीं हो। बाकी छोटे-छोटे प्रोग्राम की बात दूसरी है लेकिन जो विशाल प्रोग्राम रखते है जिसमें सब तरफ की बुद्धि लगानी पड़ती है तो उसमें फिर स्व-उन्नति नहीं हो सकती है। इसीलिए बाबा ने कहा कि इस वर्ष बैलेन्स का अभ्यास ज़रूर करो। विशेष स्व-उन्नति के दो मास में सर्विस कोई भी विघ्न नहीं डाले। और जब सर्विस करते हो तो स्व-उन्नति की स्थिति तो चाहिए ही।

तो बाबा ने कहा कि इस साल कुछ नवीनता तो करेंगे ना, क्योंकि नवीनता के बिना तो मज़ा भी नहीं आता है। तो **बाबा ने एक काम तो दिया ही है कि मुक्ति वर्ष में 18 जनवरी में मैं सबसे पूछूँगा – कौन-कौन मुक्ति वर्ष में मुक्त हुआ**? यह तो बाबा ने डेट फिक्स कर दी है। लेकिन इस वर्ष बाबा मीटिंग वालों को खास कहते हैं क्योंकि सब सेन्टर्स की विशेष आत्मायें आई हुई हैं। तो इस साल बाबा बैलेन्स देखना चाहते हैं। जो बच्चे कहते हैं कि सेवा में लग गये इसलिए स्व-उन्नति के तरफ अटेन्शन कम हो गया। तो इस वर्ष बाबा यह नहीं सुनना चाहता कि सेवा के कारण स्व-उन्नति पर ध्यान कम हो गया। इसलिए बाबा इस साल किसी भी रीति से बैलेन्स का देखना चाहते हैं। तो स्व उन्नति भी साथ-साथ रहे और सेवा भी हो।

उसके बाद बाबा ने कहा कि सभी मीटिंग वाले बच्चों का एक गुण देखकर बाबा को बहुत प्यार आ रहा है। वह कौन-सा गुण? बाबा ने कहा एक गुण यह है कि जब प्रोग्राम बनता है, तो सब बड़े उमंग-उत्साह से पहुँच जाते हैं। अपने सरकमस्टांश को किनारे कर, मधुबन से दादी का जब बुलावा होता है तो एवररेडी बन बुलावे पर एक्यूरेट पहुँच जाते हैं, यह गुण सभी का बहुत अच्छा है। इस गुण को देख करके बाबा मुबारक देते हैं। तो जैसे इस समय यह गुण बहुत प्रिय लग रहा है, ऐसे जब भी बड़े निमित्त बने हुए कोई सेवा के लिए भी आर्डर देवें तो आप समय प्रमाण, डायरेक्शन प्रमाण वहाँ पहुँच करके वह कार्य करो। तो यह भी एक बड़ों को रिगार्ड देना है, हाँ जी का पाठ पढ़कर बड़ों की बहुत दुआयें लेनी हैं, इसलिए बाबा इस गुण के ऊपर हरेक बच्चे को अरब गुणा, खरब गुणा मुबारक देते हैं।

बाकी बाबा की दृष्टि में तो सब समाये हुए ही थे, और जब मैं वतन में जाती हूँ तो बाबा की आँखें ही मेरे लिए टी.वी. होती हैं। और बाबा का जो एक-एक बच्चे प्रति प्यार है, वह प्यार की तस्वीर बाबा के आँखों की टी.वी. से ही मैं देखती रहती हूँ।

21.04.98

समय की समीपता बाप के समीपता का अनुभव कराती है

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज बापदादा के पास गई तो बापदादा बहुत मीठी मुस्कान से ही दृष्टि दे रहे थे। मैं दृष्टि से मिलन की सृष्टि में खो गई और थोड़े समय के बाद देखा कि बापदादा के पास मेरे साथ-साथ देश विदेश के अनेक बच्चे भी पहुँच गये और बापदादा हर एक के माथे पर वरदानी हाथ घुमा रहे थे और हाथ घुमाते ही वह लाइट की छत्रछाया बन गई। साथ-साथ बाबा जो दृष्टि दे रहे थे उससे ऐसा अनुभव हो रहा था कि बापदादा के दिल की मुबारक मिल रहीं है। वह दृश्य भी अलौकिक था। हर एक खुशी के झूले में झूल रहे थे। उसके बाद बाबा बोले, बच्ची सब बच्चों की दिल के उमंग का गीत सुन खुश होते हैं जो बापदादा के दिल के विचित्र टेप रिकार्ड में भरा हुआ है।

ऐसे कहते ही बाबा ने एक ताली बजाई तो क्या देखा, बाबा के दिल में भरा हुआ हम बच्चों का आवाज शब्दों में नहीं लेकिन वण्डरफुल टयून की आवाज में सुनाई देने लगा, लेकिन टयून में भी ऐसा स्पष्ट था जो समझ में आ रहा था। यह थी वतन की जादूगरी। अब हम सब बच्चों का क्या गीत था वह जो हमने सुना वह आप भी सुनो, सबका यही साज़ भरा हुआ गीत था -

1- बाबा हमें तो अब विश्व में आपको प्रत्यक्ष करना ही है।

2- स्वयं को बाप समान बनाना ही है।

3- विश्व की दु:खी, अशान्त आत्माओं को मुक्त करना ही है।

ऐसे अपने ही दिल के आवाज अव्यक्त साजों में सुन हम सब भी बहुत खुश हो रहे थे कि वाह बाबा आपके दिल का अलौकिक टेप रिकार्ड भी कितना विचित्र न्यारा और प्यारा है!

उसके बाद बाबा बोले, बच्ची इस वर्ष बापदादा ने देखा कि अनेक बच्चों को स्व-परिवर्तन और सेवा प्रति बहुत उमंग भरा दृढ़ संकल्प है और यह दोनों का बैलेन्स ही हर एक के लिए स्व प्रति ब्लैसिंग बन रहा है और विश्व को भी वायब्रेशन द्वारा ब्लैसिंग की सकाश मिल रही है। फिर बाबा ने पूछा बच्ची और क्या समाचार लाई हो?

मैं बोली बाबा, अभी अमेरिका में आवाज़ बुलन्द करने लिए विशेष वी.आई.पीज़ और विशेष टीचर्स की मीटिंग हो रही है और इस वर्ष के रिफ्रेशमेंट के अनुभव भी बच्चों के बहुत सुन्दर हैं। बाबा मुस्कराते हुए बोले बच्ची समय की समीपता भी बाप की समीपता का अनुभव करा रही है। बाबा के पास सबके अनुभव पहुँच गये हैं। बाप ऐसे बच्चों को परिवर्तन की मुबारक भी दे रहे हैं और वरदान भी दे रहे हैं कि सदा परिवर्तन भव। 1. मिलन के अनुभव, 2. परिवर्तन के अनुभव, 3. सेल्फ रियलाइजेशन के अनुभव तथा 4. सेवा में उमंग-उत्साह से दृढ़ता के अनुभव को बढ़ाते चलो, बढ़ते रहो, अमर रहो।

ऐसे कहते बाबा ने कहा कि विदेश में भी बच्चे मीटिंग कर रहे हैं। यह बापदादा देख-देख हर्षित होते हैं। दृढ़ता की चाबी तो बच्चों के पास है ही तो सफलता का खजाना भी प्राप्त है ही। बाप का साथ और हाथ हर बच्चों को अनुभव है और होता रहेगा। देश में मधुबन में भी मीटिंग बहुत अच्छी उमंग-उत्साह की रही, बापदादा तो सब सुनते हर्षित होते कि वाह मेरे सेवा के निमित्त बने हुए बच्चे वाह! आगे बढ़ते रहो और बढ़ाते रहो, उड़ाते रहो। कितना प्यार बापदादा दिल से बच्चों को करते हैं वह बाप ही जाने और बच्चे ही जानें और न जाने कोई। बस ऐसे

कहते ही बापदादा बच्चों के स्नेह में ऐसे समा गये जो मैं देखते ही रह गई। बस यही दिल से निकला – इतना प्यार करेगा कौन! यही सोचते, मिलन मनाते मै साकार दुनिया में पहुँच गई। 19.06.98

बेहद के वैराग्य वृत्ति से विश्व-परिवर्तन का कार्य सम्पन्न करो

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज बापदादा के पास गई तो बापदादा बहुत ही स्नेह और शक्ति रूप से दृष्टि देते मधुर मिलन मना रहे थे। मैं आगे बढ़ते ही दृष्टि में समा गई। बाबा बोले आओ मेरे विश्व-परिवर्तक बच्चे आओ। जानते हो आज बाबा के पास कौन आये हैं? मैं देखने लगी तो क्या देखा, बड़े आदर भाव से हाथ में मालायें लिए हुए प्रकृति के 5 तत्व सूक्ष्म रूप धारण किये हुए बापदादा को प्रणाम कर रहे हैं और बापदादा उन्हें दृष्टि दे रहे हैं। बाबा ने हमें साथ में सामने आने के लिए इशारा दिया और मैं बाबा के साथ सामने पहुँच गई। बाबा बोले बच्ची जानती हो यह क्या कहना चाहते हैं? मैं मुस्कराई तो बाबा बोले, प्रकृति पूछती है कि अब तो हम अलग-अलग स्थानों में एक-एक तत्व द्वारा हलचल मचा रहे हैं लेकिन सब इकट्ठे हो हलचल मचाने के लिए कब आर्डर है? कब तक समाप्ति समारोह मनायेंगे? तो बोलो बच्ची कब तक आर्डर दें? क्योंकि आप प्रकृतिपति बच्चों के तीव्रगति के सम्पन्न बनने का पुरूषार्थ ही परिवर्तन का आधार है। मैं बोली बाबा, अब चारों ओर पुरूषार्थ की लहर तो है। मुक्ति वर्ष मनाने का अटेन्शन तो है ही। बाबा मुस्कराते बोले, क्या संगठित रूप में विश्व परिवर्तन के कार्य में सब एवररेडी हैं? क्योंकि स्थापना में तो सर्व आत्माओं का साथ चाहिए, राज्य तो तब ही स्थापन होगा। अब तो बाप बच्चों से यही चाहते हैं कि अब हर एक बच्चे को अपनी दिल से बेहद का वैरागय उत्पन्न हो तब यह लहर तीव्रगति से प्रत्यक्ष दिखाई दे। सेवा से, संगठन से वैराग्य नहीं लेकिन पुरानी दुनिया, पुराने संस्कार और पुरानी दुनिया की वस्तुओं से वैराग्य हो। हर एक में ऐसा सर्व प्रकार का वैराग्य है? क्योंकि आप विश्व मास्टर रचयिता आत्माओं के आधार से ही विश्व परिवर्तन होना है। आप ब्राह्मणों की वर्तमान की मुक्त स्थिति से ही विश्व की सर्व आतमाओं को दु:ख, अशान्ति से मुक्ति मिलनी है। इतनी बड़ी जिम्मेवारी सभी बच्चों पर है।

ऐसे कहते बाबा जैसे वतन से ही सर्व बच्चों को ज्ञान सूर्य रूप से शक्तिशाली किरणें दे रहे थे। मैं भी बाबा के साथ उसी रूप में समाई हुई थी, कुछ समय के बाद बाबा मुस्कराते बोले और क्या समाचार है? मैं बोली बाबा आजकल तो मधुबन, शान्तिवन और ज्ञान सरोवर में जोर-शोर से सेवायें चल रही हैं और हमारी दादी और साथी दादियां भाई-बहनें सब बहुत अथक बन सेवा कर रहे हैं। बाबा बोले, बाबा भी बच्चों को देखकर खुश होते हैं और सेवा की मुबारक पद्मगुणा दे रहे हैं। साथ में सदा एकरस स्थिति द्वारा 'बढ़ते रहो, बढ़ाते रहो' का वरदान भी दे रहे हैं। मधुबन के साथ चारों ओर भारत और विदेश के हर बच्चे को सूक्ष्म में बहुत-बहुत प्यार दे रहे हैं। और यही आशा बच्चों से रख रहे है कि सदा स्व-स्थिति और सेवा का बैलेन्स आवश्यक है और दोनों साथ-साथ हों, प्रकृति भी आप प्रकृतिपति बचें का आह्वान कर रही है कि कब इन श्रेष्ठ आत्माओं का विजय माला से स्वागत करें, सुखमय संसार में सेवाधारी बन सेवा करें।

उसके बाद मैंने अपनी दादी और अपने विदेश जाने का समाचार सुनाया। सुनते ही जैसे बाबा के सामने दादी इमर्ज थी और बाबा स्नेह से बोल रहे थे बच्ची (दादी) बहुत आलराउण्ड सर्विस के प्लैन बनाती रहती है। सेवा प्रति शुभ संकल्प का मंथन अच्छा चलता है। जनक बच्ची का ज्ञान मंथन ज्यादा चलता, सेवा का भी चलता। दादी का सबको बिजी करने का संकल्प अच्छा चलता और बापदादा भी टच करता। बच्ची कैच कर प्रैक्टिकल में लाने में अच्छा पार्ट बजा रही है क्योंकि विश्व के निमित्त है। बापदादा अथक भव और न्यारे प्यारे भव का सदा वरदान देते रहते हैं।

उसके बाद बाबा ने एक नये प्रकार की मसाज दादी को की, पहले दादी को की फिर जानकी दादी को की, वह कया थी? बाबा के दोनों नयनों से रेज़ (किरणें) लाइट की निकल रही थी जो एक बहुत शक्तिशाली थी, दूसरी शीतल थी। वह प्रकाश का रेज़ दादी के मस्तक में गोल-गोल हो घूम रहा था, और बहुत फ्रैश कर रहा था। ऐसे सारे शरीर में भी घूम रहा था। पहले शक्तिशाली रेज़ घूमी फिर बाद में शीतल प्रकाश की रेज़ घूमी, ऐसे दोनो दादियों को मसाज़ की। सच तो सीन बड़ी विचित्र थी और ऑटोमेटिक बहुत रमणीक भी थी, मैं तो साक्षी हो देखते ही खुश हो रही थी कि वाह हमारी दादियां।

फिर उनके बाद मैंने दादी और अपने फॉरेन जाने का सुनाया। बाबा बोले मेरे निमित्त बच्चों के कदम में पद्म हैं, डबल फायदा है एक तो अनेक विशेष लोगों को सन्देश मिल जाता, सम्बन्ध में समीप आते हैं, माइक बन जाते और दूसरा ब्राह्मण तो उड जाते हैं। फिर मैंने लंदन के लिए सुनाया कि अचानक जा रहे हैं। बाबा मुस्कराये और बहुत राजयुक्त रूप में बोले आदि अनन्य बच्चों का आपस में दिल का, ज़िगर का प्यार है और सहयोग की भावना है, उसी विशेषता से कारोबार चल रही है। बापदादा यह देख हर्षित होते कि एक दो को समय पर हाँ जी और समीपता अच्छी है। जनक बच्ची सदा सहयोगी रही है और हर आलराउण्ड सेवा मे हाजिर होती है तो हजूर भी सदा हाजिर साथ है। बच्ची को रेस्ट करना भविष्य लिए और वर्तमान लिए आवश्यक है। सर्व फारेन के सेवाधारी बच्चों को भी बहुत यादप्यार देना। यह था समाचार।

25.06.98

''4 गेट और उनसे पार होने की विधि – बेहद का वैराग्य''

(मम्मा के प्रति भोग तथा दिव्य सन्देश)

आज आप सबकी याद प्यार लेते हुए बाबा के पास वतन में पहुँची तो वतन में क्या देखा कि सामने बाबा मम्मा और मम्मा के साथ जो हमारी विशेष आत्मायें सेवा अर्थ गई है वे भी साथ में खड़े थे और ऐसे खड़े हुए थे जो लगता ही नहीं था कि यह कोई गई हुई आत्मायें हैं। जैसे साकार में बाबा मम्मा और बच्चे संगठित रूप में कभी घूमने जाते थे, कभी संगठित रूप में खड़े होते थे, बाबा दृष्टि देते थे। तो ऐसे ही लग रहा था जैसे वतन नहीं है लेकिन साकार सृष्टि में ही हम देख रहे थे। हमको देख करके सभी बहुत राजयुक्त मुस्करा रहे थे, जो भी हमारे अनन्य गये हैं, जैसे दीदी हैं, दादी चन्द्रमणि हैं... सभी मुस्करा रहे थे तो मैं सोच रही थी कि इन्हों की मुस्कराहट बहुत राज़युक्त है, इसका क्या मतलब है? मेरा संकल्प चला तो मम्मा ने कहा, बच्ची क्या सोच रही हो? मैं तो चुप रही तो मम्मा ने कहा कि यह सब आपसे पूछ रहे हैं कि आखिर भी हम लोगाों का यह एडवांस पार्टी का पार्ट कब तक है? तो मम्मा ने कहा कि यह आप लोगों को समय को समीप लाना है, हम तो एवररेडी हैं ही। हम तो सिर्फ स्थापना के कार्य में गुप्त रूप से आप लोगों के मददगार हैं लेकिन हमारा कर्मबन्धन तो पूरा हुआ है, हमारे हिसाब-किताब तो क्लीयर हैं, आप लोगों को तैयार होकर आना है। हम तो पहले से ही तैयार हैं तो बाबा सुनकर मुस्करा रहे थे। तो बाबा को मैंने देखा, बाबा को जैसे उन्होंने अपने साथ मिला लिया था। तो बाबा ने भी कहा बच्ची मम्मा को जवाब दो ना। मैने कहा क्या जवाब दें? बाबा ने कहा, कहो हम भी जल्दी-जल्दी आपको एडवांस पार्टी से मुक्त करेंगे और हम भी मुक्त हो जायेंगे। मम्मा तो होशियार है ना! तो मम्मा ने कहा कब तक? डेट बताओ ना। मैंने कहा कि डेट तो अभी निश्चित ही नहीं की है, डेट कौन सी बतायें? तो दीदी और चन्द्रमणि दादी दोनों मुस्कराकर बोली – अरे गुल्ज़ार तुम डेट नहीं बता सकती हो? जैसे साकार में दीदी और चन्द्रमणि दादी बोलती थी ना कि अरे बताओ ना! क्यों नहीं बता सकती हो? मैंने कहाँ कि मैं अकेले थोड़े ही बता सकती हूँ। अकेले मैं कहूँ कि मैं तो तैयार हो जाऊंगी तो भी बाबा कहेंगे कि संगठन चाहिए। तो मैं कैसे बताऊंगी, यह तो बाबा बताये। तो सभी मुस्कराने लगे। तो बाबा ने कहा बच्चे यही कहो कि मम्मा हम अभी आये कि आये। मैंने कहा कि अभी आये कि आये की तो बात ही नहीं है। तो ऐसे चिटचैट चल रही थी। मम्मा तथा सभी दादियाँ साड़ी पहने हुए ऐसे लग रहे थे जैसे उड़ते फरिश्ते होते हैं ना। फिर मम्मा ने कहा कि बच्चे तो सभी याद आते ही हैं। मम्मा ने जैसे कहा कि बच्चे याद तो आते ही हैं तो इतने में मैंने देखा कि काफ़ी बड़ा संगठन वतन में इमर्ज हो गया और मम्मा एकदम जैसे मिलेट्री का कमाण्डर होता है ना आफ़िशियल उसी रूप में जैसे जगत माता रूप में सभी बच्चों को दृष्टि भी दे रही थी और वरदान का हाथ भी घुमा रही थी।

थोड़े समय के बाद मम्मा ने कहा आज हम सभी भी आये हैं और यह सभी भी आये हैं तो वतन में इन्हों को खेल कराते हैं। तो बाबा बहुत मुस्कराया और कहा मम्मा आज मम्मा डे पर बच्चों को खेल कराने चाहते हैं, प्यार होता है ना माँ का। तो बाबा ने कहा कि मम्मा आप भले खेल कराओ। तो पहले जब मम्मा दृष्टि दे रही थी उस समय मम्मा का आफ़िशियल रूप था फ़िर जब कहा कि खेल कराते हैं तो बिल्कुल ही होमली रूप हो गया। दीदी और चन्द्रमणि दादी जो थी और भी थे, तो वह भी कहने लगे कि हाँ बहुत दिन हो गया है, खेल नहीं किया है, तो आज खेलेंगे। तो सभी खेलने के लिए तैयार हो गये।

तो क्या देखा कि सामने लाइट्स के गेट्स बने हुए थे और वो लाईन में थे। गेट के पीछे गेट, गेट के पीछे गेट। बीच में थोड़ी-थोड़ी मार्जिन थी, ऐसे चार गेट्स थे। चार गेट्स के बाद बहुत छोटे-छोटे विमान के मुआफिक बहुत हल्के से जैसे सिंहासन होते हैं, ऐसे बहुत विमान थे। फ़िर मम्मा ने चन्द्रमणि दादी को कहा कि आप पहले ड्रिल कराती थी ना तो आज तुम ही सीटी बजाओ। सीटी बजते ही हर एक को उन चारों गेट्स से पास होना था, तो दादी चन्द्रमणि ने सीटी बजाई और सभी गेटस से पास होने लगे। उन गेटस पर बहुत सुन्दर लाइट्स से लिखा था– 1. पुरानी दुनिया से मुक्त 2. लौकिक और अलौकिक सम्बन्ध से मुक्त 3. पुराने स्वभाव-संस्कार से मुक्त तथा 4. पुरानी दुनिया के पदार्थों से मुक्त।

तो इन चारों गेट्स से हम सभी को जाना था। तो दादी चन्द्रमणि तो हंसती जाए कहे कि मम्मा क्या यह सब पार हो हो जायेंगे? तो मम्मा ने कहा कि तुम देखो ना। इन्हों को चलाओ। तो एक एक करके चलते गये, एक-एक गेट से क्रास करते गये। आखरीन में रिजल्ट यह हुई कि कोई किस गेट में अटक गया, कोई किस गेट में ठहर गया। आखिर आधे से थोड़े ज्यादा दो गेट से तो क्रास कर गये लेकिन तीसरा गेट जो स्वभाव-संस्कार वाला था वहाँ थोड़ा टाइम अटके लेकिन पुरूषार्थ करके निकल गये और विमान में जाकर बैठे गये, विमान ऊपर उड़ गया और उड़ते हुए जैसे बादल होते हैं वैसे बादलों के बीच में फरिश्ते रूप में समाते जाते थे। जैसे बादलों में फेस दिखाई देता था, सारा शरीर नहीं दिखाई दे रहा था। ऐसे यह खेल पूरा हुआ तो मम्मा ने कहा बाबा इन्हों को तीव्र पुरूषार्थ करना पड़ेगा। एवररेडी बनने के लिए तीव्रगति का पुरूषार्थ, बेहद की वैराग वृत्ति का दिल से वैराग्य – अभी तो यह पाठ पढ़ना पड़ेगा। बाबा ने कहा हाँ मम्मा अभी यह पाठ रह गया है।

बेहद की वैराग्य वृत्ति, कर्म करते हुए, सेवा करते हुए कोई लगाव नहीं। किसी से भी लगाव नहीं। वैराग्य वृत्ति और कर्म वा सेवा में सफ़लता। ऐसे नहीं वैराग्य वृत्ति माना छोड़कर बैठ जाएँ। नहीं। लेकिन कर्म में भी बेहद की वैराग्य वृत्ति से सफलता और सेवा में भी सफलता और संगठित रूप से सम्बन्ध में आने में भी सफलता। बाबा ने कहा मम्मा अभी बच्चों को वर्तमान समय यही पाठ अटेन्शन में लाना है। जिससे ही कब होगा, यह क्वेश्चन मार्क खत्म हो जायेगा। ऐसे यह खेल पूरा हुआ।

फ़िर बाबा ने कहा मम्मा आज तो विशेष आपके प्रति भोग आया है। तो मम्मा ने कहा कि बाबा पहले तो आप स्वीकार करो। तो मम्मा ने भोग लेकर बाबा को गिट्टी खिलाई और बाबा ने अपने हाथ से मम्मा को गिट्टी खिलाई और साथ में जो आत्मायें थी उन्हों को भी बाबा ने अपने हाथ से खिलाया। हमको मम्मा ने अपने हाथ से खिलाया और बाकी जो थे दीदी, चन्द्रमणि दादी उन सबने हमको हाथ मिलाकर कहा कि आप हमारे तरफ़ से सबको यादप्यार देना और कहना कि हम आप लोगों का इन्तज़ार कर रहे हैं कि आप जल्दी-जल्दी सम्पन्न हो जाओ तो हमारा एडवांस पार्टी का पार्ट भी पूरा हो जाए और हम सब साथ में अपने राज्य में चलें। फ़िर बाबा ने सभी को बहुत स्नेह से विदाई दी।

फ़िर बाबा को हमने आप सबकी और दादी जानकी की याद दी तो बाबा ने कहा कि बीच-बीच में यह भी खेल में खेल दिखाती है आर खेल पूरा हो जाता है तो वैसे की वैसे हो जाती है। तो अभी भी यह खेल हो रहा है और बच्ची में हिम्मत और विल पावर है इसलिए फिर वैसी की वैसी हो जायेगी। दादी को बाबा और मम्मा ने बहुत प्यार दिया। आप सभी की याद हमने दी तो बाबा ने कहा कि वर्तमान समय डबल फ़ारेनर्स जो हैं उन्हों का अपने तरफ अटेन्शन अच्छा है। अटेन्शन के साथ सेवा का भी उमंग है। बाकी जिस समय योग में बैठते हैं उस समय तो गुम हो जाते हैं। याद और सेवा का परसेन्टेज़ में बैलेन्स है लेकिन अभी परसेन्टेज़ को बढ़ाना चाहिए। बाबा को डबल फ़ारेनर्स, लंदन निवासी और चारों ओर के जो बच्चे हैं वे सिकीलधे हैं, प्यारे हैं। बाबा अमृतवेले हर बच्चे को बहुत-बहुत स्नेह और शक्ति देता रहता है, बच्चे भी नम्बरवार लेते रहते हैं। इसलिए बच्चों को मुबारक देना और कहना आप फारेनर्स का भिन्न-भिन्न फूलों का गुलदस्ता बाबा सदैव सामने रखता है। बाबा के सामने आप सभी गुलदस्ते के रूप में हाज़िर हैं। बाबा सदा स्नेह करता रहता और दृष्टि देता रहता है।

30.07.98

" बुद्धि से उपराम रह अब घर चलने की तैयारी करो"

(दीदी जी के निमित्त भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश)

आज जब मैं बाबा के पास वतन में भोग लेकर गयी तो हमने देखा कि दीदी और बाबा आपस में कोई बात करते मुस्करा रहे थे ऐसे लगता था जैसे दीदी बाबा को कोई बात कह रही हो और बाबा हाँ बच्ची, हाँ बच्ची कह रहे हों। तो जैसे ही मैं आगे बढ़ी तो बाबा ने कहा देखो बच्ची मधुबन से तुम्हारे लिए भोग आया है। तो दीदी ने हमें देखा और कहा अच्छा तुम आ गई। हमने कहा हाँ दीदी, आपको सबने बहुत-बहुत याद दिया है। मधुबन में समर्पित भाई आये हुए हैं, मधुबन निवासी, शान्तिवन, ज्ञान सरोवर, आबू निवासी, कुमारियाँ सबने याद दी है। तो दीदी मुस्कराते बाबा को देखे और मेरे को देखे। तो मैने कहा कि दीदी आप हम लोगों को याद नहीं करती हो क्या? तो बोली मैं क्या करूंगी याद करके। हमने कहा क्यों हम आपके सेवा साथी हैं, आप हमें याद नहीं करती हो! तो कहा जब बाबा मुझे वतन में बुलाता है और सारा समाचार, सुनाता दिखाता है, बताता है तो अपनी सखियाँ अपना मधुबन यह सब याद तो आता है। फ़िर बोला दादी कैसे है? हमने कहा दादी ने तो आपको बहुत-बहुत याद दिया है। तो दीदी बोली अभी दादी अकेली हो गई है। मैंने कहा आप तो दादी को छोड़कर चली आई ना। तो बोला बाबा ने मुझे बुला लिया तो मैं आ गई। मैंने कहा आप आ गई तो दादी अकेली हो गई लेकिन दादी को और सखियाँ तो हैं ना। बोला सखियाँ भले हो पर दीदी जैसी सखी नहीं है। दीदी-दीदी थी, मैने कहा यह तो दीदी जरूर है, दीदी और दादी दो शरीर थे लेकिन प्राण तो एक ही थे। तो दीदी ऐसे चिटचैट कर रही थी। मैने कहा दीदी देखो आपके पीछे इतना बड़ा ज्ञान सरोवर बन गया, शान्तिवन बन गया। तो बोली हाँ मुझे पता है, मैने देखा है। जो कुछ भी होता है तो बाबा हमें चक्र ज़रूर लगवाता है। सारा समाचार सुनाता है। हम कोई बात से अन्जान नहीं हैं।

फ़िर मैने कहा दीदी हम लोगों के लिए आपकी क्या प्रेरणा है? तो दीदी मुस्कराई। बोली बाबा देखो प्रेरणा पुछती है। आप इतनी प्रेरणा देते रहते हो, अभी मेरी प्रेरणा पूछती है मैंने कहा नहीं दीदी आपने तो यह सब क्रास किया है ना। तो बोली देखो बाबा ने हमें अन्तिम दिनों के अन्दर एकदम उपराम कर दिया था, बस मेरे को यही था कि अब घर जाना है। अब घर जाना है। मेरे को यही एक रट लगी हुई थी, चलते चलो... कोई बात, कोई परिस्थिति आती है उसको देखो नहीं, खड़े नहीं हो, आगे चलो, बढ़ते चलो। तो बस मेरी बुद्धि के अन्दर दो बातें थी – एक था चलते चलो, खड़े नहीं हो और दूसरा था अब घर जाना है। तो मेरी वृत्ति हर बात से उपराम हो गई। जैसे कोई राम-राम का अजपाजाप जपता है तो बस मेरे को भी यही चलता था – "अब घर जाना है।" भल मेरे को बाबा ने हिसाब-किताब चुक्तू कराया लेकिन दु:ख दर्द की अनुभूति नहीं होने दी। यह भी बाबा का मेरे उपर विशेष प्यार रहा जो बाबा ने इन बातों से मुझे न्यारा रखा और मैं सदा देखती थी कि मैं बाबा की गोद में बैठी हुई हूँ। मैं बाबा से अलग नहीं हूँ, मेरा आदि से लेकर अन्त तक ऐसा ही पार्ट रहा, भले मैं सखियों के साथ, सबके साथ पार्ट बजाती थी लेकिन मेरे जो सर्व सम्बन्ध थे वह एक ही बाबा से थे। मैं उसी रीति से बाबा के साथ पार्ट बजाती थी लेकिन मेरे जो सर्व सम्बन्ध थे वह एक ही बाबा से थे। मै उसी रीति से बाबा के साथ जैसे व्यवहार मे, कार्य में आती थी कि बाबा मेरा ही सब कुछ है और जो बाबा मुझे कहे वही करना है। तो बाबा ने मेरी अंगुली पकड़कर सब सिखाया, सब पढ़ाया और बाबा ने मेरे सब संस्कारों को बदल दिया। तो इतने बड़े यज्ञ को बाबा के साथ से मैंने चलाया, बनाया और अन्त में बाबा ने मुझे इतना न्यारा कर दिया जैसे यह मेरी ड्यूटि बजाई और न्यारे हो गये। मेरा किसी भी चीज़ में, किसी भी व्यक्ति में लगाव झुकाव नहीं रहा। अन्त समय मेरी अवस्था ऐसी थी – जैसे मैं न्यारी प्यारी बाबा की गोदी में बैठी हूँ। तो मैं चाहूंगी कि बाबा का हर एक बच्चा अन्दर से इतना न्यारा और प्यारा बनें, सिवाए एक बाप के और कोई याद न आये। दूसरा बाबा ने देखो

बार-बार इशारा दिया है कि अचानक कुछ होगा, बच्चे रेडी रहो। तो सभी अपने दिल से पूछो कि मैं इतना नष्टोमोहा हुआ हूँ? मेरे सर्व सम्बन्ध एक बाबा से हैं या किसी देहधारी में बुद्धि जाती है? घर चलने की तैयारी है या अभी यहाँ बैठने की, रहने की इच्छा है? घर चलने की तैयारी होगी तो बुद्धि सदा उपराम रहेगी। कार्य करते हुए भी न्यारे और प्यारे होंगे। ऐसे ही अनुभव होगा जैसे मैं निमित्त मात्र कार्य कर रहा हूँ लेकिन उपराम हूँ, यह अवस्था न केवल आपको ही अनुभव होगी लेकिन आस-पास वालों को भी अनुभव होगी।

फिर दीदी ने कहा देखो अभी सब बिखरे हुए हो तो इतना बड़ा संगठन दिखाई नहीं देता है लेकिन जब एक वृत्ति वाले, एक संस्कार वाले, एक की याद वाले, एकरस रहने वाले... ऐसे जब एक समान झुण्ड दिखाई देगा तो लोग कहेंगे अरे यह क्या। जैसे देखो फरिश्ते झुण्ड में उड़ते हैं तो सब देखते हैं, पंछी भी जब झुण्ड में उड़ते हैं तो सबकी नज़र आकाश में जाती है, अकेला उड़ता है तो कोई की नहीं जाती। तो आप लोगाों का संगठन भी ऐसा हो। जो वह कान्ट्रास्ट महसूस करें, अभी समझते हैं यह भी हमारे जैसे हैं। लेकिन उनको आप लोगों से प्रेरणा मिले। तो ऐसे सैम्पल बनकर दिखाओ। अभी बाबा भी यही चाहता है कि सैम्पल बनें।

फ़िर मैने कहा दीदी कुमारियाँ आई हुई हैं, सबने याद दी है? तो बोली –अरे कुमारियों को तो बाबा बहुत प्यार करते है, उनके ऊपर तो बाबा की बहुत नजर रहती है। तो कुमारियों को कहना कि कुमारी कोमल नहीं बनो, कुछ कमाल करो। शक्ति रूप बनो। अभी नाज़-नखरे छोड़कर न्यारी प्यारी बनो। यह समय ऐसा है जबकि बाबा छोटे-छोटे बच्चों को भी इतनी मदद दे रहा है, जो छोटे बच्चे भी अपने अन्दर इतनी खुमारी महसूस करते हैं जो बस... तो जब यह छोटे बच्चे भी मैदान में आयेंगे तो देखना इनकी रौनक क्या होगी। तो यह बाबा के ज्ञानी योगी तू आत्मा बच्चे हैं इनको कहो डरो नहीं, हिम्मत रखो आपकी हिम्मत से, आके माँ-बाप भी आप पर बलिहार जा जायेंगे और आपको ईश्वरीय सेवा करने की छुट्टी दे देंगे। आपकी हिम्मत नहीं देखते हैं, तो वह भी समझ जाते हैं कि यह अभी प्रभाव में है लेकिन अपने पैर पर खड़ी नहीं हैं। तो दीदी ने कहा कुमारियों को कहना कि अपने पैर पर खड़े होकर अपनी हिम्मत से, अपनी शक्ति से उनको ऐसा अनुभव करावें, जो वह कहें कि यह मेरी लड़की नहीं है लेकिन शक्ति है। तो शक्ति-पन का, न्यारे-पन का, दुनियावी आकर्षण से दूर का अनुभव करावें।

तो दीदी के अन्दर जैसे बहुत ज़्यादा उमंग था। दीदी बोलती जाती थी और बाबा बीच-बीच में दीदी को देखता था। तो मैंने कहा बाबा दीदी बहुत दिनों के बाद मिली है ना, तो दीदी के अन्दर जो भरा है वह सारा सन्देश तो देगी। बोली – बाबा मेरे को बहुत दिल होती है कि यह सब जल्दी-जल्दी तैयार हो जाएँ। ऐसा संगठन दिखाई दे जो लोग देखते रह जाएँ कि इन्होंने तो गुप्त अण्डरग्राउण्ड रहकर इतनी बडी सेना तैयार कर ली है। तो मेरी दिल है कि बाबा मैं यह सीन देखूँ कि विशाल शिव शक्ति पाण्डव सेना तैयार हो गई है, तब लोगों की आँखें खुलेंगी कि हाँ यह तो बहुत शक्तिशाली योगयुक्त फरिश्ते हैं और तभी फिर जय-जयकार का नगाड़ा बजेगा। अभी नहीं बजता है इसका कारण कभी कैसे हैं, एकरस अवस्था नहीं है। फ़िर दीदी ने बाबा को कहा, बाबा जैसे हर एक से आप पूछते हो ना कि इनकी रिजल्ट क्या है? तो इन लोगों को भी दिखाओ ना कि तुम्हारा माला में कौन सा नम्बर है? तो बाबा बोले बच्ची अगर मैं यह दिखाउँ कि माला में कौन-सा नम्बर है तो एक भी नहीं ठहरें, अभी हार्टफेल हो जाएँ। तो बाबा हार्टफेल थोड़े ही करेगा, बाबा तो उमंग-उत्साह दिलायेगा। अन्दर से तो अपने पुरूषार्थ अनुसार बच्चे समझते हैं कि मेरा नम्बर कौन-सा है लेकिन अगर बाबा बता दे तो बच्चे बाबा की रिज़ल्ट नहीं सुन सकते हैं। इसलिए बाबा बच्चों का उमंग-उत्साह बढ़ाता है लेकिन बच्चों की वर्तमान रिजल्ट बाबा कभी नहीं देगा। संगठन में बाबा बोल देगा कि बच्चे यह यह पुरूषार्थ करो क्योंकि बाबा किसी को कहे और बच्चा ना करे तो विकर्म बन जायेगा। तो बाबा विकर्म कराने के निमित्त नहीं बनेगा। बाबा हमेशा बच्चों को आगे बढ़ाने के लिए इशारा देगा, उमंग-उत्साह भरेगा, शक्ति देगा, सकाश देगा लेकिन पुरूषार्थ करना बच्चों का काम है। लास्ट में बच्चे खुद अपनी रिजल्ट देखेंगे। ऐसे कहते बाबा को भोग स्वीकार कराया और बाबा ने दीदी को खिलाया, दीदी ने बाबा को खिलाया। बाबा ने हम सबको खिलाया। फ़िर बाबा ने सबको यादप्यार दिया और कहा कि बच्चों को कहना कि मधुबन में आते हो, संगठन में आते हो और इतने अनुभव करते हो, सेवा लेते हो तो सेवा का रिटर्न स्वरूप बनकर दिखाना, ऐसा दृढ़ संकल्प लेकर जाओ। ऐसा बाबा ने इशारा दिया और हम साकार वतन में आ गये।

22.08.98

"रियलाइज के साथ-साथ उसे बार-बार रिवाइज करो तो परिवर्तन स्थाई हो"

(अव्यक्त बापदादा का दिव्य सन्देश)

आज बापदादा के पास गयी तो देखा कि बापदादा बहुत बिजी थे मैं आगे बढ़ते जब नजदीक पहुँची तो बापदादा की दृष्टि हमारे ऊपर पड़ी। बाबा बोले बच्ची आओ, मेरे सहयोगी-साथी आओ। क्या समाचार लाई हो? मेरे मन में तो यही था कि बाबा सुनाये कि किसमें बिज़ी थे, तो मेरे संकल्प को जानकर बाबा मुस्कराये और बोले कि बच्ची बाबा विश्व की हालत देखते सोच रहे थे कि हालतें तो फ़ास्ट गति से बदल रही हैं, परन्तु मेरे बच्चों के परिवर्तन की गति क्या है? दोनों के अन्तर को देख रहे थे। प्रकृति तो आर्डर के लिए इन्तजार में है। हालतें अति में जा रही हैं, उस अनुसार बच्चों का क्या हालचाल है? बाबा देखते हैं कि बच्चे चाहते भी हैं और परिवर्तन हो भी रहा है लेकिन समय अनुसार बापदादा की शुभ आशाओं के अनुसार अभी भी बापदादा और अधिक फ़ास्ट गति देखने चाहते हैं। ऐसे बहुत थोड़े बच्चे हैं जो उड़ रहे हैं। बाबा तो बच्चों का पुरूषार्थ देख खुश भी होते हैं जैसे अभी राखी पर सभी ने बहुत अच्छे दृढ़ संकल्प बाप से किये परन्तु वो संकल्प अविनाशी,

एकरस, तीव्रगति में नहीं रहते। इसका कारण है रियालाइज करते हैं लेकिन बार-बार अपने आप से रिवाइज नहीं करते कि हमनें किससे संकल्प किया है और न करने से नुकसान क्या है! इसलिए बीच-बीच में दृढ़ता से और अविनाशी बनाने की आवश्यकता है। बाप तो हरेक बच्चे को अब जल्द से जल्द तीव्रगति से उड़ते हुए देखने चाहते हैं। यह बोल बोलते बापदादा इतना बच्चों के प्यार में समा गये और हरेक को इतने लाड-प्यार से देख रहे थे जो बात मत पूछो। दिल से यही गीत निकल रहा था कि इतना प्यार से सर्व श्रेष्ठ बनाने वाला और कोई नहीं। इसके बाद बाबा बोले, आप समाचार सुनाओ। तो मैं बोली बाबा दादी ने सबकी तरफ से बहुत सिक व प्रेम से याद दी है। दादी को भी सबका बहुत ध्यान रहता है कि जल्दी से बाबा को कुछ करके दिखायें बहुत दिल से सुनते हुये दादी को सामने देखते हुए बहुत ही जिगरी दादी को प्यार देते हुए बाबा बोले, बच्ची तो आदि से 1.निमित्त भाव, 2. निर्माण भाव, 3. नि:स्वार्थ भाव, सहनशीलता मूर्त्त – इन वरदानों की प्राप्त आत्मा है। विशेष सेवा की साथी बनी है। उसके बाद मैंने जानकी दादी के आपरेशन का समाचार सुनाया। बाबा मुस्कराते हुए बोले, बच्ची हिम्मत हुल्लास वाली है इसलिए सब सहज होना है। बच्ची का भी वण्डरफुल पार्ट है। एक तरफ देह का हिसाब चुकतु हो रहा है और दूसरी तरफ आत्मा शक्तिशाली बन सभी को उमंग-उत्सार में लाने की सेवा कर लास्ट समय तक सेवा का पुण्य जमा कर रही है। यह भी बच्ची की खूबी है क्योंकि बच्ची को 1. अनेक आत्माओं प्रति स्नेह, समय देने के फलस्वरूप बहुत शुभकामनायें प्राप्त हैं। 2. सर्व को हिम्मत दिलाने के फलस्वरूप दुआयें जमा हैं। 3. बड़ी दिल से सेवा व हर कार्य करने से हर वस्तु की सदा भरपूरता (सम्पन्नता) है। 4.अटल निश्चय से हर कार्य करने से सहज सफ़लता प्राप्त है। यह भी ड्रामा में विशेष आत्माओं की विशेषतायें हैं। बापदादा तो यही कहते हें कि हरेक बच्चे को यह विशेषतायें अपने में चेक करने और उसको अपने में धारण करने का अटेन्शन अब देना है क्योंकि हर विशेषता पर ही मार्क्स जमा होते हैं और पास विद् ऑनर बनते हैं। हरेक बच्चे को अपने जमा का खाता सदा चेक करना और उसको बढ़ाना ज़रूरी है क्योंकि समय अपनी चेतावनी दे ही रहा है। उसके बाद बापदादा ने जानकी दादी को इमर्ज किया और बहुत प्यार और पावरफुल दृष्टि से रेजेज़ दे रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे सारा शरीर लाइट की छत्रछाया के अन्दर है। कुछ समय के बाद बाबा बोले, विदेश के निमित्त सेवा की भुजायें बहुत अच्छी उमंग से सेवा कर रही हैं। उन सबको एक-एक को नाम सहित बापदादा की याद स्वीकार हो। भारत में भी बहुत अच्छे प्लैन बना रहे हैं तो बापदादा भी दादी के साथ-साथ सेवा में निमित्त सभी मधुबन के पाण्डवों, शक्तियों को याद दे रहे हैं। प्रोग्राम्स् तो सभी बहुत अच्छे बना रहे हैं, उमंग-उत्साह भी अच्छा है। साथ में बापदादा की श्रीमत सबको याद है कि कम खर्च बालानशीन करना है। अनेक आत्माओं को सहयोगी बनाने का लक्ष्य रखना है और वातावरण में स्थूल शो न हो लेकिन सिम्पल और आध्यात्मिक, अव्यक्त और ब्युटिफुल हो। यही नवीनता है। बाकी शो तो दुनिया वाले भी बहुत करते हैं। नवीनता यह हो जो आते ही हर एक की आध्यात्मिक वृत्ति बन जाये।

उसके बाद बाबा ने कहा जहाँ-जहाँ भी प्रोग्राम्स कर रहे हैं – उन सबको खास बापदादा की तरफ़ से एडवान्स मुबारक देना। और लास्ट में बाबा ने रत्नमोहिनी बहन और मनोहर बहन को खास याद किया और कहा बच्चियाँ भी बहुत सहयोगी हैं। ऐसे ही मुलाकात करते में अपने स्थूल वतन पहुँच गयी। 20.02.99

सफलता का आधार - ब्राह्मणों के शुभ संकल्प

(अव्यक्त बापदादा का दिव्य-सन्देश)

आज जब मैं वतन मैं वतन में गई तो क्या देखा, बाबा सामने खड़े थे और बाबा के नयनों से लाइट की किरणें ऐसे निकल रही थी- जो गोल्डन छत्रछाया के रूप में बनी हुई थी और दोनों ही दादियां आगे थी। साथ में कुछ मुख्य बहनें और मुख्य भाई उस छत्रछाया के अन्दर खड़े थे। बापदादा बहुत मीठा मुस्कराते सबको दृष्टि देते, नयनो की भाषा में स्नेह की भासना दे रहे थे। फिर बाबा बोले बच्ची क्या समाचार लाई हो? बापदादा तो पहले ही सब बच्चों को सेवा का प्रत्यक्ष फल खिला रहे हैं। आओ तुम भी खाओ, ऐसे कहते बाबा ने अपनी बांहों में समा लिया। तो दोनों दादियां भी बाहों में आकर समा गई। बाबा बोले, बच्ची बाप तो जानते ही हैं कि अन्त में विजय बच्चों की ही है। लेकिन ड्रामा में हर कार्य का समय निश्चित है तो समय तक बच्चों का भाग-दौड़ करते सेवा के निमित्त बनना ही है, लेकिन समय आने पर जो भूल-भुलैया का खेल दिखाई देता था उससे भी कोई न कोई रास्ता निकल ही आता है और सहज ही हो जाता है। उसमें जिन-जिन बच्चों ने डायरेक्ट, चाहे इनडायरेक्ट प्रत्यक्ष रूप में वा गुप्त रूप में सहयोग दिया है, उन सबको बापदादा मुबारक दे रहे हैं और मेहनत का फल खुशी स्वत: ही मिल रही है। सब निमित्त महारथियों के शुभ संकल्प ने अच्छा सहयोग दिया है। कोई ने मन्सा से किया, कोई ने भागदौड़ साकार रूप में की, सबके एक निश्चय बुद्धि का रिज़ल्ट सामने आ गया है। बापदादा भी सभी निमित्त बने हुए बच्चों को बहुत-बहुत पद्मगुणा मुबारक दे रहे हैं। समय अनुसार अनेकों को अनेक आत्माओं की सेवा का चांस मिला। यही ड्रामा का खेल बच्चों ने देखा। ऐसे कहते बापदादा ने मीठा मुस्कराते विदाई दी।

दूसरा सन्देश

बापदादा को फ़ारेन की बहनों की मीटिंग का समाचार सुनाया, बापदादा बहुत खुश हो रहे थे और मुस्कराते बोले निमित्त बने हुए बच्चों को बापदादा विशेष स्नेह और मुबारक दे रहे हैं। मधुबन के वायुमण्डल का भी बच्चों को सहयोग अच्छा मिला है। साल में एक बार सर्व टीचर्स को स्व-उन्नति और सेवा के प्लैन मंथन करने का चांस अच्छा मिला है। साथ-साथ ईश्वरीय डिसीप्लेन की तरफ़ भी इशारा अच्छा मिल जाता है।

और बच्चों ने दिल से सुनाया भी है और सुना भी है। बापदादा जानते हैं कि ऐसे समय सब बच्चों को दिल में उमंग है कि स्व-उन्नति और सेवा में आगे बढ़ना ही है और ऐसे निश्चय और हिम्मत वालों को बापदादा की मदद तो सदा ही है। दादियां भी बहुत दिल से सेवा कर रही हैं। रिटर्न तो हर बच्चों को देना ही है। अच्छा सभी बच्चों को विशेष यादप्यार और दिल से बाप की दुआयें स्वीकार हो।

20.03.99

समीप और समान भव

(दादी जी के प्रति अव्यक्त बापदादा का सन्देश)

दादी आपको बाबा ने सोने-चांदी की थालियाँ भर-भरकर याद प्यार दिया। बाबा ने एक दृश्य दिखाया जिसमें एक बहुत सुन्दर लाइट का सफ़ेद चबूतरा था, उसमें दादी जी बैठी हैं। और ऊपर बादलों में बहुत सारे ब्राह्मण थे, सभी के हाथों से अलग-अलग तरह की लाइट निकल रही थी। जिससे दादी जी के ऊपर एक सुन्दर छतरी जैसी बन गई थी। जिसमें किसी के हाथ से सोने की, किसी के हाथ से मोतियों की, किसी के हाथ से फूलों की लड़ियों जैसी लाइट निकल रही थी। बाबा ने कहा– यह सभी ब्राह्मण आत्माओं की दुआयें दादी को मिल रही हैं।

उसके बाद बाबा ने एक दृश्य दिखाया – जिसमें ब्रह्मा बाबा का हाथ था जिससे सफेद पर्दे पर बाबा लिख रहा था – "समीप और समान भव"।

06.04.99

बार–बार पोज़ बदलने के बजाए अपनी पोज़ीशन में रहो

(मीटिंग में आये हुए भाई-बहनों प्रति अव्यक्त बापदादा दिव्य सन्देश)

आज अमृतवेले जब मैं बाबा के पास पहुँची तो जैसे सदैव बाबा नयनों से मुलाकात भी करते हैं और प्यार से स्वागत भी करते हैं। तो मैं जब आगे बढ़ते बाबा को देख रही थी तो बाबा की जो मुस्कराहट थी वह बड़ी प्यारी भी थी और साथ-साथ रहस्य भरी हुई थी। मैं उस रहस्य को जानने की एक से ही आगे बढ़ती गई। तो बाबा मेरे को देखकर और ही ज़्यादा मुस्कराने लगे, जब मैं नजदीक पहुँच गई तो बाबा ने कहा – ''आओ मेरे स्व-परिवर्तक, विश्व परिवर्तक बच्चे आओ।" तो मैं मुस्कराने लगी लेकिन मेरे अन्दर तो क्वेश्चन था कि बाबा आज किस रहस्य से मुस्करा रहा है! बाबा मेरे इस संकल्प को जानते हुए भी पूछने लगा कि बच्ची क्या समाचार लाई हो?

तो मैंने कहा – बाबा, आज तो मीटिंग का समाचार लाये हैं। इस सीज़न में आपने जो महावाक्य उच्चारण किये, प्रेरणायें दी उसके प्रति सभी आपको थैंक्स और याद-प्यार दे रहे हैं। तो एक घडी के लिए बाबा जैसे एकदम कहाँ चला गया हो, ऐसे मुझे अनुभव हुआ। एक सेकण्ड के बाद फ़िर बाबा ने कहा – अच्छा, और क्या समाचार है? तो मैंने कहा बाबा आप यहाँ थे? तो कहा नहीं मैं बच्चों के पास गया था। बच्चों की सभा देखी, बहुत अच्छी सभा लगी फ़िर बाबा बहुत मुस्कराने लगा। मैंने कहा – बाबा, आज आप बहुत मुस्करा रहे हैं। रहस्य क्या है? बाबा बच्चों का सुनना और सोचना देख करके बहुत खुश होता है। फ़िर बाबा जैसे चुप हो गया। तो मैंने कहा बाबा परन्तु.... तो बाबा ने कहा कि बाबा सिर्फ यह नोट कर रहा था कि सुनना और सोचना बहुत अच्छा होते भी करने में क्या कारण आता है? बच्चे स्वयं भी महसूस करते हैं कि बाबा जो कहता है जैसे कहता है वैसे नहीं है।

तो मैंने कहा – बाबा, यह भी हो जायेगा ना! बाबा ने कहा होना तो है और बाबा को भी निश्चय है, कि यही बदलने वाले हैं और बच्चों को भी निश्चय है कि हम ही बदलने वाले हैं। लेकिन बाबा ने कहा सिर्फ कारण क्या है कि बार-बार जो सोचते या संकल्प करते हैं, तो जिस समय संकल्प करते हैं उस समय थोड़ा समय उसका असर रहता है और फ़िर धीरे-धीरे कोई-न-कोई कारण से थोड़ी परसेन्टेज कम होने लगती है। इसका कारण है कि बच्चे जो शुभ संकल्प परिवर्तन का करते हैं, उसे बार-बार अपने आपसे रिवाइज नहीं करते हैं। कई बच्चे रियलाइज भी करते हैं कि यह नहीं होना चाहिए लेकिन रियलाइज़ करने के बाद जो दृढ़ संकल्प रखकर रोज़ वह रिवाइज़ करें कि हमको यह करना ही है, करना ही है... इसकी कमी है। तो बाबा ने कहा जैसे कोई भी चीज़ का कमरे आदि का फाउण्डेशन डालते हैं तो उसको इतना कूटते हैं जो वह धरनी पक्की हो जाए। तो बाबा ने कहा ऐसे जो रियलाइज़ करते हो उसे बार-बार रिवाइज़ करो। उसकी कमी होने के कारण धीरे-धीरे कोई बातें आती हैं तो वह बातें परसेन्टेज़ को कम कर देती हैं।

ऐसा कहते बाबा फ़िर मुस्करये। मैंने कहा बाबा अभी भी आपके अन्दर कोई बात है जो आप बहुत मुस्करा रहे हैं। तो बाबा ने कहा – हाँ, मैं बच्चों की दो बातों को देखता हूँ – 1. बाबा बच्चों को पोजिशन पर खड़ा करता है, बच्चे उस पोज़िशन पर खड़े भी होते हैं लेकिन पोज़िशन के साथ-साथ, 2. अपने पोज़ (मूड) बहुत बदलते हैं। अभी-अभी देखो तो बहुत पावरफुल योग में, नयन और सूरत ऐसे लगती है जैसे सचमुच फ़रिश्ता हो गये हैं। और अभी-अभी कोई बात आ गई तो एकदम शक्ल में फ़र्क आ जाता है, पोज़ बदल जाता है। तो बाबा जो भिन्न-भिन्न पोज़ देखता है, उस पर बाबा को हँसी आ रही हैं।

फ़िर बाबा ने कहा बच्चे कहते हैं हमको बाबा से, दादियों से बहुत प्यार है। तो बाबा ने कहा प्यार का अर्थ क्या है? प्यार का अर्थ है – जिससे प्यार है वह जो चाहता है वह करना। साकार में दादियों से जो प्यार मिलता है – उसका रिटर्न क्या दिया? तो हमने कहा बाबा रिटर्न तो सब दुआयें दे रहे हैं। तो बाबा ने कहा - दुआयें तो दे रहे हैं लेकिन प्यार माना जो वह कहें, वह करें। प्यार माना जो उनकी शिक्षायें हैं उसके

प्रति समर्पण। तो दादी को और अन्य सभी दादियों को बाबा जैसे सामने इमर्ज करके बहुत मीठी दृष्टि दे रहे थे।

फ़िर बाबा बोले – बाबा अभी यह देखना चाहते हैं कि कहाँ से भी कोई ऐसी कमज़ोरी की बात नहीं हो। शक्तिशाली पुरूषार्थ, शक्तिशाली सम्बन्ध-सम्पर्क और शक्तिशाली सेवा करते आगे बढ़ते रहें बाबा शक्तिशाली सेवा उसे मानते हैं जिसमें स्व की उन्नति, साथियों की उन्नति और जिनकी सेवा करते हैं उनकी भी उन्नति की रिजल्ट नज़र आवे। ऐसे कहते-कहते फ़िर बाबा का रूप थोड़ा चेंज हुआ। तो बाबा ने कहा – बच्ची, बाबा तो जानता है कि ऐसा दिन तो आना ही है लेकिन बाबा सोचते हैं कि समय के पहले मेरे बच्चे एकदम सज़े-सज़ाये गुणों की माला पहने हुए इस सृष्टि मंच पर प्रत्यक्ष हों। अभी वह दिन लायेगा कौन तो बाबा ने कहा वह दिन भी लाने वाले भी बच्चे हैं और बाबा तो मददगार है ही। फ़िर बाबा ने कहा कि बाबा का बच्चों से प्यार है इसीलिए बार-बार बच्चों को कहता है। अगर बाबा कहेंगे नही तो बच्चों का अटेन्शन कैसे जायेगा, इसीलिए बाबा को बार-बार कहना पड़ता है। लेकिन बाबा को निश्चय तो क्या, बाबा निश्चिंत है कि यह मेरे ही बच्चे एक दिन ऐसा बनेंगे। तो बाबा ने एक सेकण्ड में सारी सभा इमर्ज की और जैसे गुलाब के पुष्प होते हैं, ऐसे बहुत खुशबूदार दिव्य गुणों की बहुत सुन्दर-सुन्दर मालायें इमर्ज हो गई और जैसे कोई ऑटोमेटिक मशीनरी थी जो सबके गले में वह चमकती हुई मालायें पड़ गई। ऐसी सभा लग रही थी जैसे राजाओं की रॉयल सभा हो गई। तो बाबा ने कहा बस, यही दृश्य बाबा देखने चाहता है। ऐसे ही दिव्य गुणों की माला से सजे सजाये रहो।

उसके बाद बाबा ने कहा कि सभी निमित्त बने हुए सेवाधारी बच्चों को सदा यह प्वाइंट याद रखनी चाहिए कि हम विश्व सेवा की स्टेज पर हैं सेन्टर पर नहीं हैं लेकिन विश्व के सेवा की स्टेज पर हैं। तो स्टेज पर कितना अटेन्शन से रहते हैं, ऐसी कोई चाल-चलन नहीं हो जो देखने वाले इशारा करें। इसीलिए इन बच्चों को यह अटेन्शन विशेष रखना चाहिए कि हम सेन्टर पर नहीं है लेकिन हम विश्व को परिवर्तन करने की स्टेज पर हैं। तो स्टेज याद होने से अपनी स्टेज भी याद रहेगी और सदा बाबा की जो स्टेज है, वह सामने रहेगी। तो स्टेज शब्द कभी भी नहीं भूलना। स्टेज पर हैं, स्टेज बनानी ही है और बाबा की स्टेज जैसा बनना ही है – यह स्मृति में रहने से अटेन्शन रहेगा कि हमारे से ऐसा कोई संकलप भी न हो जो उसका प्रभाव दूसरों पर पड़े। फ़िर बाबा ने कहा कि इस सीजन की लास्ट मुरली में भी बच्चों को इशारा दिया है कि बच्चे मेहनत मुक्त बनो। तो दादियों को भी अभी मेहनत से मुक्त करो और स्वयं भी मेहनत मुक्त बनो। ऐसा मेहनत मुक्त वर्ष मनाओ।

फ़िर बाबा ने कहा - बच्ची, सभी बच्चों को बहुत-बहुत-बहुत यादप्यार देना और कहना कि मीटिंग बहुत अच्छी चल रही है, मेहनत भी अच्छी की है। जगदीश जी को भी याद दी और दादियों को भी विशेष याद दी और कहा कि मेहनत अच्छी की है और मेहनत का फल तो निकलना ही है लेकिन बाबा सभी बच्चों को एक बात ही कहते हैं कि बच्चे खुद को भी माया की युद्ध से मुक्त करो और दादियों को भी मेहनत से मुक्त करो। ऐसे कहते बाबा ने छुट्टी दी और हम साकार वतन में आ गई।

21.04.99

"वरदानों और दुआओं से प्रकृति का हिसाब-किताब सहज चुक्तू हो जाता है"

(प्यारे अव्यक्त बापदादा का दिव्य सन्देश)

आज विशेष अपनी प्यारी दादी जी के आपरेशन का समाचार लेकर बापदादा के पास गई तो सदा बाबा मुस्कराते मिलते ही हैं, मधुर मिलन मनाने के बाद बाबा बोले आज चलो तो एक दृश्य दिखाऊँ - मैं बाबा के साथ-साथ गई तो कया देखा – सामने दो पहाड़ थे जो चांदनी की लाइट समान बहुत सुनदर चमक रहे थे लेकिन एक पहाड़ थे जो चांदनी की लाइट समान बहुत सुन्दर चमक रहे थे लेकिन एक पहाड़ सारा गोल्डन फूलों से सजा हुआ था और दूसरा पहाड़ गुलाब के फूलों से सजा हुआ था। दोनों के ऊपर दादी जी खड़ी थी और दादी जी का वरदानी हाथ चारों ओर वरदान दे रहा था। देखने में यह दृश्य दिल को बहुत आाकर्षित करने वाला था, मैं देखती रही। बाबा ने पूछा बच्ची इसका रहस्य जानती हो? मैं मुस्कराई, बाबा बोले बच्ची यह गोल्डन फूलों का पहाड़ जो है। दूसरा है बाप और सर्व द्वारा जो दुआयें मिली हैं - उन दुआओं का पहाड़, जो गुलाब के फूलों से सजा हुआ है। तो जिस आत्मा को इतने वरदान और इतनी दुआयें मिली हुई हैं उसके लिए यह प्रकृति का हिसाब क्या बड़ी बात है, सहज ही है। थोड़ा बहुत दर्द होता है लेकिन बच्ची को तो विशेष ब्रह्मा बाप द्वारा पावर्स की विल मिली हुई है। (ब्रह्मा बाबा ने लास्ट में दादी का हाथ पकड़ते हुए बहुत पावरफुल दृष्टि दी थी) इसलिए कोई बड़ी बात नहीं है। सब सहज हो जाता है। यह प्रकृति का हिसाब भी सूली से कांटा बन जाता है। ऐसे कहते बाबा ने दादी को बहुत-बहुत स्नेह की दृष्टि दी और सभी की यादप्यार देते और लेते हुए मैं साकार वतन में आ गई। ओम शान्ति्।

29.04.99

"यह समय है - हिम्मत से उड़ने का, घबराने का नहीं"

आज बापदादा के पास इस सीज़न का प्रोग्राम पास कराने जाना हुआ। बापदादा ने देखा और मीठा मुस्कराया। मैं भी बापदादा को देख रही थी, बाबा मीठी दृष्टि देते हुए बोले बच्ची प्रोग्राम तो ठीक बनाया है लेकिन बच्चे जानते हैं कि आजकल के समय प्रमाण प्रकृति भी अपनी हलचल मचाने का कार्य बीच-बीच में दिखाती रहती है इसलिए इस खेल को साक्षी दृष्टा की सीट पर सेट बच्चे ही हिम्मत से पास करते रहते और करते रहेंगे क्योंकि प्रकृतिपति, नालेज़फुल ब्राह्मण बच्चे हें इसलिए नथिंगन्यु समझ हलचल में अचल बन आगे बढ़ते चलो। अब तो हिम्मत

से उड़ने का समय है, घबराने का नहीं। योगयुक्त बन वाइसलेस बुद्धि द्वारा बापदादा की श्रीमत को कैच करने वाले बच्चे ही सब खेल देखते फ़रिश्ते बन उड़ते रहेंगे और हर समय सफ़ल होंगे। सभी बच्चों को दिलाराम बाप की बहुत-बहुत दिल व जान से यादप्यार देना। ओम शान्ति्।

10.05.99

"बीती को बिन्दी लगाओ और बिन्दु बन परमात्म–स्मृति में रहो"

आज विशेष अपनी बड़ी दादी जी, जानकी दादी और साथ में आप सभी देश–विदेश के भाई-बहनों का यादप्यार लेते हुए जब मैं वतन में पहुँची तो क्या देखा, बापदादा बहुत ऊँची लाइट की पहाड़ी पर खड़े हैं और चारों ओर लाइट हाउस समान दृष्टि दे रहे हैं, मैं नज़दीक जाते देखती रही। कुछ घड़ी के बाद बापदादा ने हमें देख मुस्कराया और बोला "आओ मेरे निश्चिंत और निश्चित विजयी स्थिति में रहने वाले बच्चे आओ"। ऐसा कहते बापदादा ने बहुत मीठी दृष्टि दी और मैं ऊपर बापदादा के पास पहुँच गई, तो क्या देखा?

बापदादा को ऊपर खड़े हुए चारों ओर के बच्चे दिखाई दे रहे थे। ऐसे लग रहा था जैसे नज़दीक से बहुत स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। मैं बोली बाबा ये तो बहुत अच्छा दृश्य है जोकि एक ही स्थान से चारों ओर के सभी बच्चे दिखाई दे रहे हैं। बाबा मुस्कराये और बोले बच्ची, आज बापदादा देख रहे थे कि बच्चे दुनिया की बातों में हलचल में आ रहे हैं या अचल हैं? मैंने कहा बाबा आपने क्या रिज़ल्ट देखी? तो बाबा बोले **अभी बच्चों में अचल, अडोल, एकरस स्थिति में स्थित होने का अभ्यास बहुत चाहिए।** भय तो थोड़े बच्चों में रहा, लेकिन व्यर्थ संकल्प चलना कि क्या होगा, कुछ होगा व नहीं होगा, ये हो जाये तो क्या करेंगे... ऐसे व्यर्थ संकल्प भी पावरफुल याद में रहने नहीं देते। अभी-अभी व्यर्थ संकल्प का खेल चलता रहना हैं, ये ही बापदादा देख रहे थे। बापदादा तो सदा बच्चों के भिन्न-भिन्न खेल देख मुस्कराते रहते। एक तरफ़ बच्चों में सेवा का उमंग-उत्साह भी बहुत अच्छा है। दिल से सेवा में लगे रहते हैं, दूसरी तरफ कोई छोटी-मोटी बात आई तो फौरन टेन्शन में जा जाते हैं इसलिए बच्चों का टेन्शन आत्माओं को बाप की तरफ अटेन्शन खिंचवाने में देरी कर रहा है। बाप बच्चों से पूछते हैं कि- "हे मायाजीत, प्रकृतिजीत बच्चे आपने ही तो प्रकृति को आर्डर दिया है कि अब विश्व की सफ़ाई करनी है। वह मास्टर रचयिता का आर्डर मान धीरे–धीरे कुछ-न-कुछ करती रहती है। तो आप आर्डर देने वाले भी हलचल में आयेंगे तो प्रकृति अपना कार्य कैसे सम्पन्न करेगी।" बाप कहते हैं कि अब तो चाहे प्रकृति की हलचल हो, चाहे माया भिन्न-भिन्न रायल रूप से हिलाने वली हो लेकिन बच्चे सदा साक्षी दृष्टा की, आराम की सीट पर सेट रहो। कभी सेट, कभी अपसेट यह खेल बहुत खेला, अब तो समय इंतज़ार कर रहा है बाप की प्रत्यक्षता का पर्दा खोलने का। फ़िर भी मेरे हीरो पार्टधारी बच्चे सदा सर्व शक्ति सम्पन्न एवररेडी नहीं बने हैं इसलिए डबल खेल खेलते रहते हैं। अब बाप कहते हें – **बीती को बिन्दी लगााओ, बिन्दी बाप समान बिन्दु स्वरूप बन परमात्म–स्मृति स्वरूप सदा रहो।** ऐसे ऊँची–ऊँची पहाड़ी पर ये रूहरूहान होते हुए बहुत-बहुत आनन्द आ रहा था।

उसके बाद बाबा को दादी की तबियत की खुशखबरी सुनाई। बाबा बोले - बच्ची को तो बापदादा की सकाश चलाती, उड़ाती रहती है। दादी जानकी की सेवा का चक्कर का समाचार भी सुनाया। बाबा बोले बच्ची को बाबा सदा मस्त फ़रिश्ता कहते हैं। हिम्मत से मदद मिलती है फ़िर भी दोनों दादियों को अपने रेस्ट व सेवा का बैलेन्स रखना ज़रूरी है।

इसके बाद फ़ारेन वालों की खास याद दी तो बापदादा सुनते सभी को दिल से बहुत-बहुत यादप्यार दे रहे थे। उस समय ऐसे लग रहा था जैसे बाप बच्चों के स्नेह में ही समा गये और बोले, सभी बच्चे सदा सर्विसएबल, सेन्सीबुल और इसेंसफुल का बैलेन्स रखते ब्लैसिंग लेते समीप और समान बनते चलो। बच्चों का उमंग-उत्साह देख बापदादा खुश होते रहते हैं। फ़िर बाबा ने भारतवासियों को विशेष याद दी और कहा भारत में भी बहुत अच्छे-अच्छे महावीर बच्चे बाप के दिलतख्तनशीन हैं। बाप की दुआयें और सर्व की दुआओं से उड़ते रहो और उड़ाते रहो।

ऐसे कहते बापदादा ने नयनों में समाये हुए हर बच्चे को बहुत-बहुत यादप्यार दी। ऐसे ही हम भी बापदादा से मिलन मनाते अपने साकार देश में पहुँच गई। ओम शान्ति्।

06.06.99

मायाजीत का एक्जैम्पल बनो तो प्रत्यक्षता का झण्डा लहराये

बापदादा को यूथ के प्रोग्राम प्रति सुनाया तो बापदादा बहुत मीठा-मीठा मुस्करायें, ऐसे लग रहा था जैसे कोई होवनहार आत्माओं को देख मुस्करा रहा हैं, ऐसे मुस्कराते हुए बाबा बोले, बच्ची यूथ पर तो गवर्मेन्ट की भी विशेष नज़र है। और यह तो फिर ब्रह्मचारी यूथ है, इन्हों पर तो बापदादा को नाज़ है, विशेष नज़र है क्योंकि हमारे यूथ बच्चों में तो डबल ताकत है। एक स्प्रीचुअल बल, दूसरा शारीरिक बल, इससे तो यह ब्रह्मचारी यूथ विश्व में अपने मायाजीत के एक्जैम्पुल से बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहरा सकते हैं। अनेक हमजिन्स को साथी बना सकते हैं। और योगबल से विश्व में शान्ति-शक्ति का वायब्रेशन फैला सकते हैं। इसलिए इन्हों को जितना महावीर बनाओ, शक्ति भरो उतना अच्छा है।

24.06.99

विदेही अवस्था का आधार है - बेहद की वैराग्य वृत्ति

आप सबका यादप्यार लेकर जब वतन में पहुंची। तो देखा कि बाबा सामने से मुस्कराते हुए आ रहे हैं। मेरे अन्दर तो संकल्प था कि

आज तो मैंने बाबा को कहा था कि बाबा आज मम्मा को वतन में बुलाना, लेकिन मम्मा दिखाई नहीं देती। तो मैं चारों तरफ़ देखने लगी, इतने में बाबा बोले, आओ मेरे विश्व-कल्याणी बच्चे, बाबा के दिलतख्तनशीन बच्चे आओ। तो मैं बाबा को देख रही थी बाबा बोले - बच्ची आज तो सतगुरूवार है ना। मैंने कहा बाबा आज सतगुरूवार भी है तो मम्मा का भी दिन है। मधुबन में तो मम्मा का आह्वान हो रहा है, सभी याद कर रहे हैं। ते बाबा ने कहा अच्छा अकेले मम्मा से मिलोगी या सभी से मिलोगी? तो बाबा मेरे अंगुली पकड़कर ले चले। तो सामने क्या देखा कि एक बहुत सुन्दर सफेद-सफेद फूलों की लड़ियों से जैसे पर्दा बना था और उन फूलों से बहुत अच्छी सुगंध आरही थी। तो जैसे आगे बढ़ी तो वह लड़ियां हटने लगी, रास्ता बन गया। अन्दर गये तो सारा हाल बहुत सुन्दर फूलों से सजा हुआ था और एक बहुत अच्छा तख्त भी फूलों से सजा हुआ था। अन्दर जैसे यह सब देख रहे थे तो बाबा ने कहा कि आप सब मम्मा को याद करते हो, तो आज बाबा ने भी मम्मा के स्वागत के लिए यह सजावट की है। इतने में देखा कि सामने मम्मा अपनी सभी सखियों सहित खड़ी है, मम्मा बहुत सुन्दर दिख रही थी। जैसे कोई को साक्षात्कार कराना होता है, सभी उसी रीति से खड़े थे, साथ में दीदी, बृजइन्द्रा दादी आदि सभी दादियां थी.... मैं तो मम्मा को ही देखती रही, मम्मा बहुत प्यारी दिख रही है। मम्मा बाबा को देख रही थी, मम्मा बहुत प्यारी दिख रही है। मम्मा बाबा को देख रही थी, मैं मम्मा के सामने खड़ी हुई तो मम्मा ने देखा और मेरे सिर पर हाथ फेरा, गले से लगाया। फिर जैसे सभी अपने आप तख्त पर विराजमान हो गये। लेकिन सब दर्शनीय मूर्त थे, कोई बोल नहीं रहा था सब मुस्करा रहे थे। बाबा ने कहा - क्यों सब चुप हो, आज कुछ बोलना नहीं है। मम्मा बोलो, बच्ची तो आपके लिए आई है। आज तो आपका आह्वान हो रहा है। मैंने कहा - मम्मा आपको सबने बहुत-बहुत यादप्यार दिया है, सब आपको बहुत याद करते थे और पूछते हैं कि मम्मा कहाँ है, कब मिलेगी। मम्मा क्या कर रही है। तो मम्मा चुपचाप मुस्कराती रही, बीच-बीच में बाबा को देख लेती थी तो मैने कहा मम्मा बताओ ना आप किस रूम में हो, कहाँ हो? क्या कर रही हो? कब प्रत्यक्षता होगी? अब तो सेवा बहुत बढ़ गई है, सब जगह सेवा हो गई है। अभी तो अन्तिम समय आकर पहुंचा है। तो बाबा ने देखा और कहा - बच्ची, जवाब दो ना। तो मम्मा फिर बाबा को देखे और कहे बाबा आप दो जवाब। तो बाबा ने कहा अच्छा मैं बता दूं कि मम्मा यहाँ है, यह कर रही है, ऐसा-ऐसा हो रहा है तो आप क्या करेंगी? सुनकर बैठ जायेंगी या वहाँ पर भागेंगी? इसलिए ड्रामा में यह अभी घूँघट में है। अभी पर्दे के पीछे है, पर्दा जब खुलेगा उसके बाद फिर गुप्त नहीं रह सकेंगी। उस समय जो सीन चलेगा वह सीन भी वन्डरफुल होगा। दुनिया की त्राहि-त्राहि का और आपकी जयजयकार का। अभी तो आपकी वाह वाह करते हैं, जय-जयकार नहीं करते, इनका ज्ञान अच्छा है, इनकी जीवन अच्छी है... यह अच्छा कार्य कर रही हैं, ऐसे कहते हैं लेकिन जय-जयकार नहीं करते। यह तो अन्तिम समय में पार्ट खुलेगा तब आपका जय-जयकार होगा! तब मम्मा को भी सम्पूर्ण रूप से पहचानेंगे, आप लोगों को भी पहचानेंगे और बाबा को भी पहचानेंगे। तो यह सब पार्ट अन्त का है लेकिन यह पार्ट होगा ज़रूर। तो मैने मम्मा से पूछा कि मम्मा अभी कितना समय लगेगा? अभी तो बहुत समय हो गया है, 2000 भी होने वाला है। तो मम्मा ने कहा - अच्छा यह बताओ कि आप सब तैयार हो? मैंने कहा मम्मा समय पर तो सब तैयारी हो ही जाती है। ड्रमानुसार तो सब ठीक हैं मम्मा ने कहा नहीं, सबकी तैयारी चाहिए। मैंने कहा कि दादी तो कहती है कि अभी बाबा बताये कि कितनी आत्मायें ऊपर हैं, बाबा सबको नीचे भेजे तो परमधाम का गेट खुले और हम सब जायें। तो बाबा ने कहा कि अभी तो कितने ऐसे स्थान हैं, जहाँ पर बाबा का सन्देश गया ही नहीं है। जब तक सब जगह सन्देश नहीं मिला है तो अभी आपके ऊपर कर्ज है। वह आपको उल्हना देंगे कि हमको पता ही नहीं चला। तो बाबा नहीं चाहता है कि बाप को और बच्चों को उल्हना मिले कि हमको पता नहीं चला। अभी तो सन्देश पहुंचाना बड़ा इजी हो गया है। थोड़े समय में ही हर एक को सन्देश मिल जाने वाला है। फिर मैने कहा मम्मा अभी हम लोगों को विशेष क्या पुरूषार्थ करना है? आप बताओ हम वही पुरूषार्थ करें ताकि फिर हम आपका साथी बन सके। तो मम्मा बोली - बाबा इतनी बाते सुनाता है, इतने इशारा देता है..... फिर वह इशारे आप लोग ध्यान पर नहीं रखते हो क्या! तो बाबा ने कहा बच्चों को मम्मा की लोरी ज्यादा प्यारी लगती है। तो मम्मा मुस्कराती रही क्योंकि मम्मा बाबा के आगे इतना बोलती नहीं थी। तो बाबा ने कहा - अच्छा बच्ची आप अपनी सखियों से बात करो मैं आता हूँ। तो बाबा जैसे गुम हो गया फिर सब आपस में नज़दीक आये, फिर तो सब पूछने लगे कि मधुबन में क्या हो रहा है? तो हमने सारा सुनाया।

फिर दीदी कहती है कि पता है सब मम्मा की कितनी महिमा करते हैं, मम्मा की क्या विशेषता थी? मैने कहा मम्मा गम्भीर थी, धैर्यवत थी। बाबा की आज्ञा का पालन करती थी... सब मैंने सुनाया। तो बोला कि मम्मा की पहली विशेषता थी कि मम्मा जब से आई - बाबा जो है जैसा है, वैसा ही मम्मा ने बाबा को पहचाना और कभी भी बाबा की कोई भी बात को हल्का नहीं लिया। कौन बोलता है, कौन डायरेक्शन दे रहा है, मम्मा ने बाबा को इस रीति से देखा और बाबा की हर आज्ञा को जी बाबा, हाँ जी बाबा, किया। इसके अलावा कभी मम्मा ने यह नहीं कहा कि यह नहीं हो सकता। पुरूषार्थ करेंगे... देखेंगे.. यह नहीं कहा। हमेशा कहा - हाँ जी बाबा। मम्मा बाबा को सम्पूर्ण परम-आत्मा के रूप में, सर्वशक्तिवान के रूप में ही देखती रही। जो भगवान के मुख से एक-एक ज्ञान अमृत निकलता था मम्मा उसे चात्रक होकर अपने अन्दर समाती जाती थी, एक बूंद भी इधर से उधर नहीं - मम्मा का इतना ध्यान था। ऐसे दीदी- मम्मा की विशेषतायें सुना रही थी।

फिर मैने कहा - मम्मा, आप हमारी उन्नति के लिए कुछ तो बताओ। अन्तिम समय हम बच्चे क्या विशेष धारणा करें? तो मम्मा ने कहा - अच्छा मेरी दो बातें हैं, इन दो बातों पर आप सब पुरूषार्थ करेंगे तो अन्तिम समय के लिए आप सब तैयार रहेंगे। मम्मा ने कहा कि

वर्तमान समय को देखते हुए एक तो सभी बच्चों को बेहद की **वैराग्य वृत्ति धारण करनी है** और वह तब होगी जब हर एक यह लक्ष्य रखे कि **मुझे विदेही बनना है**। वैराग्य वृत्ति से ही विदेही अवस्था जल्दी आ सकती है। तो समय को देखते हुए इन दो बातों पर अटेन्शन देकर अपनी स्थिति को ऊँच बनाओ और बाबा की जो हम बच्चों के अन्दर आश है वह पूरी करो। तो मम्मा ने यही दो बातें कहते सबको याद प्यार दी। इतने में बाबा आये और कहा कि बच्ची माँ से चिटचैट हो गई। अब तो मम्मा के लिए जो भोग स्वीकार कराया। फिर बाबा ने सबको भोग स्वीकार कराया। फिर आज जिन-जिन आत्माओं का भोग था, उनको बाबा ने वतन में इमर्ज करके अपने हस्तों से भोग स्वीकार कराया और सबको यादप्यार देते कहा कि समय के अनुसार आने वाली परिस्थितियों को बाप की याद से पार करते आगे बढ़ते चलो, बढ़ाते चलो और कोई भी बात सामने आये तो उसका अपनी स्थिति से सामना करके आगे बढ़ो। बाबा हर पल हर कदम बच्चों के साथ है और रहेगा। ऐसे कहते बाबा ने सबको याद दिया और हम नीचे आ गयी। ओम शान्ति्।

06.07.99

स्वयं में बल भरो और सबमें वही लहर फैलाओ

आज बाबा के पास गई तो बापदादा बहुत-बहुत मीठा मुस्कराते हुए मिले और समाचार पूछा मैंने आस्ट्रेलिया, हांगकांग आदि का सुनाया। असके बाद विशेष मधुबन में टीचर्स भट्ठी का सुनाया। बाबा सुनते ही बोला - बच्ची, चारों ओर सेवा किया यही आप बच्चों का विशेष कार्य है। सब उमंग-उल्लास में आ जाते हैं और मधुबन की भासना आती है। आजकल तो इसी की आवश्यकता है।

टीचर्स को भी शक्तिशाली बनना है क्योंकि आगे समय नाज़ुक आना ही है। बड़े स्नेह रूप से जैसे टीचर्स बाबा के नयनों के सामने दिखाई दे रही थी और बाबा नयनों में बच्चों का प्यार समाते हुए बोले - टीचर्स तो बापदादा की राइट हैण्डस हैं। बाप को जो हजारों भुजाओं वाला दिखाया है, वह विशेष टीचर्स का यादगार है। टीचर्स सिर्फ यह भी याद रखें कि हम किसकी भुजायें हैं, राइट हैण्डस हैं, तो रूहानी नशा स्वत: ही रहेगाा क्योंकि भुजायें सदा साथ रहती और भुजाओं बिना कुछ हो नहीं सकता। तो बाप भी अकेले कुछ नहीं कर सकते और भुजायें भी बाप बिना कुछ कर नहीं सकती। कम्बाइन्ड हैं। ऐसे कहते बाबा ने कहा - टीचर्स से बाप का बहुत जिगरी दिल से प्यार है क्योंकि हिम्मत रखकर सेवा अर्थ सब त्याग कर समर्पण हुई हैं। तो बाप बच्चों की हिम्मत पर खुश है और आगे भी यही बाप की आश है कि मेरा एक-एक बच्चा स्वराज्य-अधिकारी बन अनेक परेशान, कमजोर आत्माओं को अपनी शक्तियों के वायब्रेशन दे, उन आत्माओं को भी बाप की कुछ न कुछ अंचली दे। अब तो बच्चों को मर्सीफुल (रहमदिल) स्वरूप का पार्ट बजाना है क्योंकि समय अनुसार आत्माओं को बाप-समान शन्तिदेवा बन शान्ति देनी है। **अब वायब्रेशन की सेवा आवश्यक है। इसलिए ही बापदादा ने 4 घण्टे पावरफुल याद का डायरेक्शन दिया है**। जब निमित्त टीचर्स अपने में बल भरेंगी तब ही औरों में भी लहर फैलेगी। यह रेसपान्सिबिल्टी टीचर्स की है।

इसके बाद बाबा बोले - टीचर्स तो मेरी फ्रैण्डस हैं, साथी हैं, तो चलों इन्हों को एक खेल कराते हैं। ऐसे कहते ही बापदादा ने सभी टीचर्स को इमर्ज किया। क्या देखा एक लाइट की पहाड़ी थी जो सर्किल मुआफिक थी। हम सभी बाबा के साथ नीचे सर्किल में खड़े थे। पहाड़ी की 9स्टैप बनी हुई थी। सबको दृष्टि देते बाबा बोले, अभी बापदादा खेल खेल में हर एक को 1-अपने मन की कण्ट्रोलिंग पावर और 2-बुद्धि की एकाग्रता 3- संस्कारो को परिवर्तन करने की शक्ति कहाँ तक है - वह दिखायेंगे। इतने में देखा कि बाबा ने एक ताली बजाई तो सब फ़रिश्ते बन उड़ते हुए पहाड़ी की फर्स्ट स्टेप तक पहुंच गये और वहाँ सबके आगे एक छोटा सा वेट मशीन मुआफ़िक ोल यन्त्र था, उसमें परसेन्टेज कांटे द्वारा दिखाई दे रहा था हर एक का फेस देखते हुए अलग-अलग रूप में दिखाई दे रहा था। यह पहला स्टैप मन की कण्ट्रोलिंग पावर का था। कमाल यह थी कि हर एक को अपना ही दिखाई दे रहा था। इतने में बाबा ने दूसरी ताली बजाई तो सब उड़ते हुए फ़रिश्ते सेकण्ड स्टैप पर पहुँच गये। वहाँ फिर हर एक के बुद्धि की एकाग्रता का चार्ट दिखाई दे रहा था। ऐसे ही तीसरे में फिर संस्कार परिवर्तन का चार्ट दिखाई दे रहा था। तीनों स्टेप देखकर फिर बाबा ने ताली बजाई तो सब पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गये। वहाँ सब सर्किल में खड़े हो गये। इतना संगठन का सर्किल ऐसे लग रहा था जैसे पूनम की महारास का दृश्य दिखाते हैं। और सेकण्ड में देखा हर एक के साथ बाबा है और हर एक फरिश्तों की रास बहुत रूहानी नशे में समाई हुई कर रहे थे। यह सीन भी बड़ी अच्छी थी। कुछ समय बाद बाबा बीच में खड़े होकर बोले - बच्ची, अब समय अनुसार हर एक समझते हो कि पुरूषार्थ की रफ्तार कितनी तीव्र होनी चाहिए! बच्चे पुरूषार्थ तो करते हैं लेकिन समय प्रमाण स्वयं को हर बात में बाप समान बनाना ज़रूरी है तब ही फुल परसेन्टेज की मंजिल पर पहुँच सकेंगे। इसलिए बाप बच्चों को बहुत-बहुत स्नेह से कहते हैं- बच्चे, हर कदम, हर कर्म, हर बोल बाप समान मिलाने चलो, उड़ते-उड़ाते चलो। यह शब्द बाबा ऐसे बोल रहे थे जैसे घरेलू रूप में बाबा बच्चों से बात कर रहे हैं। फिर बाबा ने सबको बांहों में समाते हुए, मीठी-मीठी दृष्टि देते हुए एक चमकती हुई मणि सौगात रूप में दी, जो शिवबाबा के गोल-गोल रूप में थी, जिसमें 8 शक्तियों के 8 रंग दिखाई दे रहे थे। उसके बाद हमने अपने को साकार वतन में देखा। ओम शान्ति्।

21.07.99

फ़रिश्ता सो ज्योतिर्बिन्दु और ज्योतिर्बिन्दु सो फ़रिश्ता-इस महामन्त्र को याद रखो

आप सबके याद का जो संकल्प था, उसी संकल्प से बाबा को मैसेज दिया तो बाबा ने अमृतवेले वतन में बुला लिया। जैसे ही मैं वतन में पहुँची तो बाबा सामने खड़े थे लेकिन ऐसे खड़े थे जैसे और कोई संकल्प में हों। तो मुझे यही वायब्रेशन आ रहा था कि जैसे बाबा मेरे को देख

भी रहे हैं लेकिन सामने होते भी और कहाँ हैं। तो जब बाबा के सामने पहुँची तो बाबा हमें देखकर बोले - आओ बच्ची, क्या सन्देश लाई हो? तो मैं मुस्कराई। मैंने कहा - बाबा, आप कहाँ थे! तो बाबा ने कहा कि यह मेरे जो बच्चे भट्ठी में आये हुए हैं, वह बहुत याद कर रहे हैं। वैसे भी अमृतवेले सभी बच्चे योग में बैठते हैं, याद करते हैं, तो आज विशेष भट्ठी में आये हुए बच्चे मेरे सामने थे। मैंने पूछा-बाबा, आपने क्या देखा? बाबा ने कहा कि मैंने देखा कि यह जो ग्रुप है - यह सभी विशेष मेरी आशाओं के दीपक हैं। तो मैं देख रहा था कि इन मेरे आशाओं के दीपकों की लौ एकरस है या टिमटिमाती है? तेज है या धीमी है? तो मैने कहा - बाबा, फिर कैसी लौ आपने देखी? बाबा ने कहा कि नम्बरवार तो हैं ही लेकिन इस समय सबके अन्दर एक जैसा उमंग-उत्साह है कि बस, हम बाबा की आशाओं को पूर्ण करें - यह उमंग मैजारिटी में बहुत अच्छे रूप में दिखाई दे रहा है। ऐसे कहते हुए बाबा ने जैसे अपना हाथ वरदान के रूप में उठाया और ऐसे लगा जैसे बाबा वह वरदानी हाथ चारों ओर सभी पर घुमा रहे हैं। दृष्टि दे रहे हैं। बाबा के आगे जैसे यह संगठन है और बाबा सभी को वरदान दे रहे हैं। तो मैं यह सीन देखने में ही बिज़ी हो गई।

फिर उसके बाद बाबा ने कहा - बच्ची, मैंने बच्चों को बहुत-बहुत दिल के प्यार से अविनाशी भव, अमर भव का वरदान दिया। ऐसे कहते फिर बाबा ने कहा - अच्छा बच्ची, और क्या समाचार लाई हो? तो मैं मुस्करा रही थी, मैंने कहा आज तो बाबा के सामने यही नजर आ रहे हैं, तो मैंने कहा बाबा बहुत अच्छी भट्ठी चल रही है। तो बाबा ने कहा - यह तो मेरे स्पेशल रत्न हैं, इन्हों को मैं एक सीन दिखाता हूँ। तो जादू की उस नगरी में एक सेकण्ड में पूरा सीन बदल गया।

क्या देखा - बाबा मेरे से थोड़ा दूर एक छोटी लाइट की पहाड़ी पर खड़े हैं, और जैसे पांव से ही ऐसे बटन दबाया तो आप सभी साकार वतन में इमर्ज हो गये, और बाबा ऊपर पहाड़ी पर सूक्ष्मवतन में है। तो बाबा ने कहा - आओ बच्चे, आओ बच्चे, आओ बच्चे..... तो ऐसे लगा जैसे आप सबको पंख लग गये और फ़रिश्ते बन साकार वतन से उड़ते-उड़ते बाबा के सामने सूक्ष्मवतन में पहुँच गये। यह सीन भी बड़ी अच्छी लग रही थी, जैसे बादलों में आप सब फ़रिश्ते बहुत सुन्दर चमक रहे थे और पंख भी बहुत अच्छे लग रहे थे। ऐसे उड़ते-उड़ते जब सभी बाबा के सामने पहुँचे तो चार-पाँच सर्किल बन गये। सभी के पंख, पंख से मिल रहे थे और बीच में यह सिर भी दिखाई देते थे, ऐसे लग रहा था जैसे गुलाब की पत्तियां होती हैं और बीच में बूर होता है, ऐसे चार-पांच सर्किल में आप सब थे और बीच में बाबा खड़े हो एक-एक को दृष्टि देने के बाद बाबा बोले- बच्ची, अभी बाबा इस ग्रुप के लिए एक विशेष महामन्त्र देते हैं, वह मन्त्र कभी नहीं भूलना, ऐसे बड़े प्यार से बाबा बोल रहे थे। तो बाबा ने कहा वह मन्त्र है "फ़रिश्ता सो ज्योतिर्बिन्दु"। देवता तो पीछे बनेंगे पहले तो बिन्दु बनना है और घर जाना है। तो **बाबा ने कहा - "फ़रिश्ता सो ज्योंतिर्बिन्दु, ज्योतिर्बिन्दु सो फ़रिश्ता।"** यह महामन्त्र चलते-फिरते याद रखना। जब भी कर्म में आओ तो फ़रिश्ते रूप में डबल लाइट होकर कर्म में आओ और फिर जब कर्म पूरा हो तो ज्योतिर्बिन्दु बनके घर में जाकर स्थित हो जाओ। यह ड्रिल करना। तो जैसे बाबा डायरेक्ट आप सबसे यह बात कर रहे थे फिर वह फ़रिश्ता रूप जो दिखाई दे रहा था वह समाप्त हो गया।

उसके बाद बाबा ने कहा - यह मेरी आशाओं के दीपक हैं, तो यह क्या कमाल करेंगे? तो बाबा ने कहा कि यह मेरी आशाओं के दीपक सारे विश्व में ऐसी रोशनी करें जो उस रोशनी में बाप की प्रत्यक्षता हो जाये। सभी को बाप दिखाई दे। अब ऐसी ज्योति जगाओ, ऐसी रोशनी दो जो प्रत्यक्ष हो जाये कि हाँ परमात्मा का कार्य चल रहा है। इसी कार्य में सबको बिज़ी रहना है। ऐसे बाबा ने बातचीत की फिर कहा अच्छा, अभी बच्चों को एक खेल कराता हूँ।

खेल भी बहुत अच्छा परखने की शक्ति का था। ऐसे तीन स्थानों पर अलग-अलग रूमाल से कुछ ढका हुआ था। जैसे भोग रूमाल से ढककर रखते हैं तो बाबा ने कहा अच्छा, अभी लाइन लगाओ और जिसको जिस लाइन में जाना है वह जावे। तो तीन लाइनें लग गई। फिर बाबा ने ऐसे हाथ किया तो वह रूमाल हट गये। तीनों रूमालों के नीचे ज्वैल्स (रत्न) थे, जो बहुत चमक रहे थे। तो बाबा ने कहा अभी जो जिस लाइन में है, उसी लाइन में आकर एक-एक रत्न उठाओ। तो लाइन में जब रत्न उठाने गये तो कोई कोई लाइन बदली करने की कोशिश करने लगे। तो बाबा हँस रहे थे। वह ज्वैल्स क्या थे? एक लाइन में थे - बिल्कुल बेदाग हीरे। और दूसरी लाइन में ऐसे हीरे थे जिसमें बहुत महीन (सूक्ष्म) कुछ दाग थे, जो दूर से दिखाई नहीं देते थे लेकिन सामने जाने से पता चलता था और तीसरी लाइन वालों के सामने वाले हीरों में अच्छा दाग था जो दिखाई देता था। तो बाबा ने कहा - अभी जिस लाइन में जो है, वही उठाओ। तो सभी हंसने लगे। फिर सभी ने उठाया तो लेकिन जिसके पास दाग वाला आया वह जैसे सोचने लगे कि यह तो मेरे लायक नहीं है। उनकी शक्ल थोड़ी बदल गई। यानि सोचती हो यह ठीक नहीं है, हमको तो बेदाग हीरा चाहिए। फिर बनने में क्या सोचती हो? जैसे दाग वाला हीरा उठाने में अच्छा नहीं लगता तो जब प्रैक्टिकल लाइफ में आप हीरे हो, उसमें आपको दाग पसन्द आता है? अगर वह दाग पसन्द नहीं है तो फिर जीवन में कोई सूक्ष्म दाग भी है तो वह क्यों पसन्द आता है? वह भी नहीं आना चाहिए!

तो बाबा ने कहा अच्छा दो लाइन वाले सब हीरे रख दो। सभी ने वहाँ ही वह हीरे वापस रख दिये। फिर बाबा ने अपने हाथ से एक-एक को बेदाग हीरे की गिफ्ट दी और कहा कि बाबा की यह गिफ्ट याद रखना। बीती सो बीती लेकिन अब के बाद बेदाग हीरा बनना ही है। यह नहीं सोचना कि बनेंगे, कोशिश करेंगे, देखेंगे क्या होता है..... लेकिन क्या भी हो जाए - हमें बेदाग बनना ही हैं।

फिर बाबा ने जैसे सभी को शुरू-शुरू की एक बात सुनाई। उस समय बाबा बच्चों को कहानी के रूप में कहते थे - बच्ची, इतनी मिर्ची खायेंगी? इतना मटका पानी पियेंगी?.... फिर हाथ से आँख के सामने ऐसे करते थे, तो अगर आँखें हिल जाती थी तो कहते थे -फेल! और नहीं हिली तो पास। ऐसे बाबा खेल कराते थे। तो बाबा ने कहा तुम छोटेपन में जब थे तो तुमको बाबा यह खेल कराता था। तो यह खेल करता था। तो यह खेल भी याद रखना कि कहाँ भी आँख ऐसे झुके नहीं। बस, बाबा नयनों में हो।

तो बेदाग हीरा बनना, आशाओं का दीपक एकरस रखना, नयनों में एक बाबा को बसाना - यही बाबा का बच्चों प्रति सन्देश है, यही बाबा की यादप्यार है। ऐसे यादप्यार लेते मैं साकार वतन में आ गई। अच्छा - ओम शान्ति्।

25.07.99

सफलता प्राप्त करने का आधार हिम्मत और दृढ़ता

आज बापदादा के पास दादी जानकी और सर्व लंदन निवासियों की यादप्यार और उमंग-उत्साह के संकल्प लेकर पहुँची। बापदादा भी बच्चों का उमंग-उत्साह देखकर खुश होते हैं। तो वतन में जाते ही बाबा बोले - बच्ची आज क्या सन्देश लाई हो? मैने कहा - बाबा दादी जानकी ने पूछा है कि ग्लोबल हाउस के साथ वाला मकान मिल रहा है, बनाने के लिए छुट्टी भी मिली है। तो बाबा मुस्कराये और बोला - लंदन में जो जनक बच्ची और साथी सोंचते हैं कि "यह होना चाहिए" तो सब के उमंग-उत्साह से वह मुश्किल बात भी सहज हो जाती है, और सफल भी होता रहता है। लण्डन निवासी बच्चों की हिम्मत बहुत अच्छी है और दृढ़ता है कि हो ही जायेगा। कैसे होगा, का संकल्प नहीं है। यह भी जनक बच्ची को वरदान मिला हुआ है। साथ में सब सहयोगी बच्चों का भी पार्ट बहुत अच्छा ड्रामा में है। बापदादा तो वाह, बच्चे वाह! के गीत गाते रहते हैं। मैं बोली - बाबा, जो प्लाट मिल रहा है, उनके साथ वाला भी ऑफर कर रहा है। तो बाबा मुस्कराये और कहा- बच्चे जितनी हिम्मत है, सबका सहयोग है उतना करते जाओ।

उसके बाद मैंने दादी जानकी की तबियत का सुनाया। तो सुनते ही बाबा जैसे लण्डन में ही पहुंच गया और जानकी दादी को बहुत स्नेह की दृष्टि से पावर दे रहा था और मीठा-मीठा मुस्करा भी रहा था। उस मुस्कराहट में ऐसे लग रहा था जैसे बाबा उनको मीठा बोल भी रहा है कि जितनी शारीरिक सेवा की शक्ति है उसी अनुसार उसको चलाओ।

उसके बाद बाबा ने मुझे देखा और कहा कि और क्या समाचार है? मैं बोली बाबा आप कहाँ थे! तो बाबा बोले बच्ची बाप की सेवा का मुख्य राइट हैण्ड है तो बाप को इशारा भी देना पड़ता है। विशेष अनन्य बच्चों पर विशेष ध्यान तो जाता है। आपकी दादी को भी और जनक बच्ची को खास बाबा अमृतवेले शक्ति देता है। ऐसे तो और भी विशेष निमित्त बच्चे हैं। जगदीश बच्चा है बीमार है या और भी आदि से अब तक सेवा के निमित्त हैं। अथक बन तबियत का न देख सेवा में लगे हुए हैं। उन सबको दृष्टि के दुआओं की दवाई देता रहता हूँ। आपको भी फील होता है कि हमें सब ब्राह्मणों का विशेष प्यार बाप की दुआयें मिलती हैं। मैं तो मुस्कराती रही और बोली, बाबा यह तो कमाल देख रहे हैं। ऐसे कहते बाबा के नयनों में जैसे सब सर्विसएबुल बच्चे समाये हुए थे और बाबा बहुत-बहुत प्रेम के सागर स्वरूप में थे।

उसके बाद बाबा को सुनाया कि दो ग्रुप टीचर्स की भट्टी चल चुकी है। बहुत अच्छी रिजल्ट है। बाबा बहुत दिल से मुस्कराये और कहा कि अब दिखाई देता है कि सबके दिल में लहर उठी है कि कुछ करना ही है। बस दादी का दृढ़ संकल्प प्रैक्टिकल में आ रहा है। आगे भी बीच-बीच में अटेन्शन खिंचवाते रहेंगे तो अच्छा हो जायेगा। सबने मेहनत अच्छी की है। बापदादा सब निमित्त बने हुए बच्चों को मुबारक दे रहे हैं।

उसके बाद हमने बाबा को यह समाचार भी सुनाया कि मधुबन, शान्तिवन, ज्ञानसरोवर में सब मधुबन निवासी भी भट्ठी बहुत रूचि से कर रहे हैं। तो बाबा बोले - मधुबन वालों को भी भट्ठी करने की विशेष मुबारक देना क्योंकि मधुबन का वायुमण्डल ही लाइट हाउस बन चारों ओर फैलता है। इसलिए मधुबन के एक एक बच्चे का भाग्य भी श्रेष्ठ है तो जिम्मेवारी भी इतनी ही है। मधुबन वालों का कमजोर वा शक्तिशाली वायब्रेशन चारों ओर फैलता है। बाकी मधुबनवासी बच्चों पर तो बापदादा की विशेष नज़र छत्रछाया है ही। उन्हों को विशेष याद और दिल के प्यार की सौगात देना और कहना कि दिल के प्यार की लाइट के विमान में उड़ते रहो।

उसके बाद मेरे से बाबा ने टुअर का समाचार पूछा। मैंने कहा बाबा आपके अव्यक्त पालना की कमाल हांगकांग, बैंकाक और आस्ट्रेलिया के दोनों स्थानों में देखी। सबका योग द्वारा अनुभव बहुत वण्डरफुल है कि बाबा कैसे हमें प्यार, शक्ति दे रहे हैं। बहुत अच्छे-अच्छे उमंग की अनुभूति करते, आपस में सहयोगी बन खुद भी उड़ रहे हैं और सेवा में भी उड़ रहे हैं। आस्ट्रेलिया वालों के रिट्रीट हाउस का वातावरण में बहुत स्नेह और एकमत उमंग-उत्साह का देखा। क्यों, क्या कुछ नहीं देखा। सब बहुत खुशी-खुशी में पार्ट बजा रहे हैं।

बाबा बोले - बच्ची, अब चारों ओर के वातावरण में कुछ स्व-परिवर्तन करने की लहर है और हर एक आगे उड़ने के उमंग में हैं। बापदादा को तो आस्ट्रेलिया निवासियों से आदि से विशेष प्यार है और सदा रहेगा। हांगकांग और बैंकाक के निमित्त सर्विसएबुल बच्चों की भी हिम्मत पर बापदादा बहुत-बहुत खुश हैं। एक एक बच्चा अपने–अपने प्रति बापदादा को स्पेशल यादप्यार और मधुर दृष्टि स्वीकार करे और साथ में चारों ओर के डबल फारेनर्स को बापदादा स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति की डबल-ट्रिबल यादप्यार दे रहे हैं।

बेगमपुर के बादशाहों के 4 स्तम्भ

आज जैसे ही मैं बाबा के पास पहुँची तो सामने बाबा खड़े थै और हम आगे बढ़ रही थी। बाबा दूर से मीठी-मीठी दृष्टि दे रहे थे। दृष्टि में ऐसे लग रहा था जैसे बाबा कह रहे हैं - "आओ बच्ची, आओ बच्ची।" तो जब मैं थोड़ा और नज़दीक पहुँची तो बाबा ने कहा- "आओ मेरे मीठे बच्चे, आओ मेरे प्यारे बच्चे".... ऐसे कहते बाबा ने ऐसे बाँहो की जैसे बाँहे पसारकर (फैलाकर) कह रहे हैं -आओ बच्चे, आओ बच्चे... इतने में मैंने देखा मेरे पीछे ही आप सब बहनों की बड़ी लाइनें थी और सभी को जैसे बाबा बाँहो में समाते जा रहे थे। समाने के बाद सबका यह लाइट को आकार खत्म होता गया और सभी चमकती हुई मणि बन गई। वह तीन प्रकार की मणियाँ थीं जो तीन स्थानों पर समाती गई। एक - बाबा के सिर पर लाइट का ताज था, उस ताज़ में कुछ मणियां बाबा के मस्तक में त्रिशूल के मुआफ़िक समा गई। बाकी सभी बाबा के गले में माला के रूप में समा गई। वह तो मणियों की दो तीन मालायें बन गई। तो आप सोचो उस समय बाबा कितना शोभनिक, प्यारा चमकता हुआ नज़र आ रहा होगा और मणियों की इतनी चमक कितनी अच्छी लग रही होगी। फिर बाबा ने कहा देखो, यह मणियां कितना चमक रही हैं क्योंकि इन मणियों द्वारा ही बाबा को विश्व-परिवर्तन करना है। तो सारे विश्व के आत्माओं की नज़र इन चमकती इुई मणियों द्वारा बाप के ऊपर जायेगी। फिर यह सीन भी पूरी हो गई।

उसके बाद बाबा ने कहा कि यह ग्रुप जो है - यह है बाबा को प्रत्यक्ष करने वाला ग्रुप, "प्रत्यक्षता ग्रुप"। फिर बाबा ने एक दूसरा दृश्य दिखाया। वह दृश्य भी बहुत विचित्र था, एक छोटा ग्रुप गोल सर्किल में था और सभी के हाथ आपस में ऐसे मिले हुए थे जो लग रहा था जैसे कोई कमल के पुष्प की बन्द कली होती है, तो सभी के हाथ ऐसे थे जो उसमें ऐसे नज़र आ रहा था जैसे अन्दर मुखड़ी बन्द होती है। उस सर्किल के नीचे बहुत से लोग खड़े थे - सभी की दृष्टि ऊपर की ओर थी। जैसे सभी नीचे से ऊपर की ओर कोई चीज़ देख रहे हों। फिर सर्किल में जो खड़े थे उन्हें बाबा ने दृष्टि दी तो कमल का पुष्प जैसे खिल जाता है, ऐसे सभी के हाथ खुल गये और उसके बीच से लाइट में ऐसे धीरे-धीरे जैसे शिवबाबा निकला और एकदम ऊपर चला गया, जैसे सूर्य आकाश में ऊपर होता है और सभी ऊपर देखते हैं। ऐसे सूर्य के मुआफ़िक शिवबाबा ऊपर चमकने लगा और सबकी दृष्टि शिवबाबा के तरफ गई। सभी के मुख से जैसे निकला - वाह! वाह! वाह! जैसे झण्डा खुलता है तो फूल बरसते हैं, ऐसे सबके मुख से यह आवाज़ आ रहा था - जैसे वाह! वाह! की वर्षा हो रही हैं। फिर कुछ समय के बाद जैसे वह लोग जो पहले वाह! वाह! कह रहे थे, उसमें से ही कई आत्माओं की आंखों से जैसे आंसू बह रहे हैं और बाबा को देखकर बहुत प्यार से कह रहे हैं - "हे भगवन्! हे भगवन्!...और जो सर्किल में खड़े थे, वह सब लोगों को दृष्टि दे रहे थे। तो बाबा ने कहा कि देखो यह ग्रुप प्रत्यक्षता ग्रुप है। और यह पब्लिक जो देख रहे हो यह सब जैसे झुंझार आंख वाले हैं। शिवबाबा आ भी गया है लेकिन झुंझार आंखों वाले देख नहीं सकते हैं, अन्धकार में पडे हुए हैं। तो जब आप शक्तियों का यह प्रत्यक्षता ग्रुप उन्हों को रोशनी देगा तो उस रोशनी से वह बाबा को देख सकेंगे।

उसके बाद बाबा ने कहा - अच्छा बच्ची और क्या सन्देश लाई हो? मैंने कहा बाबा सभी ने यादप्यार दिया है और सभी के दिल में यही है कि बस बाबा को प्रत्यक्ष करना है। वह तो आपने सीन दिखा दी। तो बाबा ने कहा कि इन सभी बच्चों में यह उमंग है कि अभी जो बाबा कहता है वह हमको कैसे भी, किसी भी हालत में, कुछ भी हो जाए लेकिन करके दिखाना है। तो यह मेरे बच्चे जो है वह कहने वाले नहीं है लेकिन करके दिखाने वाले हैं और हरेक जिम्मेवारी समझते हैं कि मुझे करना है, मुझें निमित्त बनना है। इस ग्रुप का यही दृढ़ संकल्प है। तो मैंने कहा - बाबा है तो ऐसा ही, यह जो भट्टियाँ हुई हैं उसमें सभी का यही संकल्प है कि कुछ भी हो जाये, हम दूसरों की बातों को न देख करके खुद करेंगे।

फिर बाबा ने कहा - एक सर्किल में राजसभा लग गई लेकिन उसमें वैकुण्ठ वाला सिंहासन नहीं था। लेकिन जैसे शुरू शुरू में लाइट के सफेद-सफेद चबूतरे देखते थे, ऐसे ही जैसे रूई के बीच रंग-बिरंगी लाइट निकल रही थी। वह रूई भी अजीब-सी थी, जैसे रूई के बीच में लाइट जलती हो, तो वह सिंहासन बहुत अच्छे लग रहे थे। उसके ऊपर सभी बैठे थे, जैसे बेगमपुर के बादशाहों की सभा है फिर बाबा ने कहा - बच्ची, तुमने सारा सिंहासन ध्यान से देखा। उस सिंहासन में जो चार पाँव थे - उनमें लिखत थी - एक में लिखा था - निराकारी, दूसरे में निर्विकारी, तीसरे में निरहंकारी और चौथे में था निर्विघ्न। जैसे योगी के चार स्तम्भ (नियम) दिखाते हैं, ऐसे ही उसमें निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी और निर्विघ्न लिखा हुआ था।

तो बाबा ने कहा कि अगर बच्चों के जीवन में यह चार स्तम्भ पक्के हैं तो बेगमपुर के बादशाह हैं। यदि बच्चे इन चार स्तम्भ के सिंहासन को कभी न छोड़े तो खुद भी बेगमपुर के बादशाह रहेंगे और दूसरों को भी बनायेंगे। ऐसे कहते बाबा ने कहा- मेरे बेगमपुर के बादशाहों को बहुत-बहुत यादप्यार देना। मैंने कहा बाबा याद प्यार तो दूँगी लेकिन आपने आज इन्हों को सारे विश्व की स्टेज पर सौगात के रूप, शो केस में रखा हुआ है, अभी इन्हों को क्या सौगात दूँ? लेकिन तुम कहती हो तो मैं बच्चों को सौगात भी देता हूँ - बाबा ने जैसे एक-एक बच्चे को बहुत अच्छी हार्ट दी, उस हार्ट में लिखा हुआ था - "मेरे सिकीलधे, मीठे, प्यारे विशेष बच्चे"। तो बाबा ने कहा - यह मेरे दिल की सौगात हैं जो सभी बच्चों को दे रहा हूँ। फिर कहा कि सभी बच्चों को कहना कि ब्रह्मा बाबा आपको बहुत याद करता है। ब्रह्मा बाबा कहता है - मेरे बच्चे

कब आकर मेरे से मिलेंगे? जब आप बच्चे मेरे पास वतन में आओ तब तो मैं परमधाम में जाऊं, गेट खोलूं, गेट खुलने के बिना तो कोई जा ही नहीं सकता है। तो मेरे बच्चे पहले फरिश्ते बनें, वतनवासी बनें तब मैं परमधाम को गेट खोलूँ। इसीलिए सभी बच्चों को कहना कि ब्रह्मा बाबा विशेष ब्राह्मण बच्चों को, महारथी बच्चों को बुला रहा है कि अभी फ़रिश्ते बनके आओ तो फिर मैं परमधाम का गेट खोलने के लिए आगे जाऊं। ऐसे बहुत रमणीक रूप रूहरिहान का था।

फिर बाबा ने कहा बच्ची एक बात सुनाऊं? मैंने कहा - बाबा सुनाओ। तो कहा आज अमृतवेले ब्रह्मा बाबा के आगे वह ग्रुप विशेष इमर्ज था जिसने बाबा की साकार में पालना ली है। उन्हें आज ब्रह्मा बाबा ने बहुत याद किया। ब्रह्मा बाबा के नयनों में जैसे एकदम प्यार के आँसू थे, तो ब्रह्मा बाबा ने कहा - मेरे पले हुए यह बच्चे हैं, जैसे वृक्ष के पले हुए, पके हुए फल और ऐसे ही पके हुए फलों में फर्क होता है ना! तो मेरे साकार होते जिन्होंने पालना ली हुई है - बस, वही मेरे को प्रत्यक्ष करेंगे। ऐसे कहते बापदादा दोनों ही जैसे स्नेह में डूब गये। जैसे सागर उछलता है ना ऐसे प्यार का सागर जैसे बाबा के नयनों में, हृदय में दिखाई दे रहा था। तो कुछ टाइम तो दृश्य देखते जैसे साइलेन्स हो जाता है, ऐसे साइलेन्स हो गई। और मैं जैसे उसी स्नेह में समाते हुए, सबकी याद प्यार लेते हुए साकार वतन में आ गई ओम शान्ति।

10-08-99

पतिव्रता और पिताव्रता बनने का दृढ़ संकल्प लो

आज जब मैं अमृतवेले आप सब समर्पित भाईयों की याद लेकर बाबा के पास वतन में गई तो बाबा मुस्करा रहे थे। बाबा ने कहा कि बच्ची आप अकेली आई हो या साथ में भट्ठी के सभी पाण्ड़वों को भी लाई हो? तो मैंने कहा - बाबा, आपकी तो यह जादू की नगरी है, आप तो सेकण्ड में सबको इमर्ज कर देते हैं । तो बाबा ने एक सेकेण्ड में ही सबको वतन में इमर्ज किया और दृष्टि देते हुए कहा कि 'यह मेरे दिल के दीपक हैं'। दिल का महत्त्व होता है ना। तो हमेशा याद रखना कि हम दिल के दीपक - कभी बुझें नहीं, टिमटिमाये नहीं, सदा जो भट्ठी की वा ब्राह्मण परिवार की मर्यादायें हैं, वह कायम रहें। फिर बाबा ने सभी भाईयों को एक टाईटल दिया कि - "यह सब मुझ परमात्म राम की संगमयुगी सच्ची सीतायें हैं"। तो हरेक समझे कि - मैं परमात्म-राम की संगमयुगी सीता हूँ। चाहे कोई भी माया का रूप ले करके हमें मर्यादा की लकीर से दूर करने आये लेकिन मन, वाणी और कर्म से एक राम की ही रहना है। अपने से संकल्प करो कि "मर जायेंगे, मिट जायेंगे लेकिन आत्मा सीता एक की लगन में, स्वप्न में भी पिताव्रता, पतिव्रता का जो व्रत है, यह नहीं तोड़ेंगे।" सच्ची सीता होकर रहेंगे। ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा अपने से, बापदादा के कमरे में जा करके दिल से हर एक को करनी है।

उसके बाद बापदादा ने कुमारों के 25-25, 30-30 के ग्रुप बनवाये और उस एक-एक ग्रुप को अपनी बाहों में समाया और दिल से लगाते यही बोला कि "दिल में रहने वाले दिल से कभी दूर नहीं होना।" तो सभी खुशी में फूले नहीं समा रहे थे। ऐसे लग रहा था जैसे नदी सागर में समा जाती है, ऐसे सभी अव्यक्त मिलन में समाये हुए थे।

इसके बाप बाबा ने सभी समर्पित भाईयों को एक खेल कराया। तो खेल चेयर्स का था। हरेक चेयर पर भिन्न-भिन्न स्लोगन लिखे हुए थे। एक पर लिखा था - 1. शुभ सोचना है। 2. दूसरे पर लिखा था - "कम बोलना और मीठा बोलना है।" ऐसे ही 3.सदा मुस्कराते रहना। 4. उड़ती कला में उड़ते रहना। 5. कर्म करते आत्मा मालिकपन की स्मृति में रहना। 6. कोई भी विघ्न को पेपर समझ खुशी से पार करना। 7. कभी किसी के व्यर्थ, कमज़ोर संस्कार को देख मूड ऑफ नहीं करना। 8. किसी से घृणा नहीं करना, क्षमा करना, शुभ भावना रखना। और 1.संकल्प में भी किसी आत्मा के प्रभाव में नहीं आना।

ऐसे यह 9बातें जो हैं वह फिर से रिपीट-रिपीट कुर्सियों पर लिखी हुई थीं। तो बाबा ने कहा-अच्छा, अभी दौड़ लगाओ। तो सभी कुर्सियों के चारों ओर ग्रुप में दौड़ी लगाने लगे। जितने दौड़ने वाले थे उतनी ही कुर्सियाँ थी। फिर बाबा ने सीटी बजाई तो हरेक अपनी-अपनी कुर्सी पर बैठ गये और अपना स्लोगन पढ़ने लगे। तो बाबा ने सबको दृष्टि देते हुए कहा कि यही पाण्डवों के प्रति गॉडली गिफ्ट है, जो हरेक को बाबा दे रहा है। वैसे तो सब बातें घ्यान में रचानी हैं लेकिन यह विशेष वरदान सदा कार्य में लगाते रहना। ऐसे ही खेल कराते हुए बाबा ने लास्ट में हमें भी दृष्टि दी और हम स्थूल वतन में पहुँच गई। ओम शान्ति्।

17.08.99

दिलशिकस्त होने के बजाए दिलखुश मिठाई खाना और खिलाना

आज जब मैं बाबा के पास गई तो बापदादा को सुनाया कि छोटी-छोटी टीचर्स का ग्रुप आया है, तो बाप बापदादा बहुत-बहुत मीठा मुस्कराये और बोला ये ग्रुप तो छोटे शुभान-अल्लाह हैं। बापदादा को छोटी-छोटी बच्चियां बहुत प्यारी हैं क्योंकि बापदादा इन्हों के त्याग और भाग्य को देख हर्षित होते हैं कि उस संसार की आकर्षण से छूटकर बापदादा के संसार में पहुँच गई हैं। और जान गई हैं कि वो तो दुःखी, अशान्त, असार, संसार है। इतना बुद्धि से जानकर हिम्मत रखी है तो इन्हों के हिम्मत पर बापदादा भी बहुत-बहुत खुश हैं। फिर बाबा ने इस ग्रुप को एक टाइटिल देते हुए कहा कि - "यह ग्रुप तो मेरे विशेष गले की माला के मणके हैं।" बापदाद इस ग्रुप को यही वरदान देते हैं कि सदा हिम्मत और उमंग-उत्साह से आगे उड़ते रहो। कभी भी छोटी-मोटी बातों में दिलशिकश्त व कमज़ोर नहीं होना। सदा दिलखुश मिठाई खाते रहना और सबको भी दिलखुश मिठाई खिलाते रहना।

बापदादा को सदा अपने साथी के रूप में अनुभव करना, बापदादा से सदा दिल की बातें करते रहना, साथ खाना ओर साथ चलना - ये पक्का अनुभव सदा करते रहना। सदा हर परिस्थिति में व किसी के भी संस्कारों से घबराना नहीं। सदा अपने गले में विजय माला चमकती हुई देखते रहना। सदा अपने को बापदादा के अति प्यारे हैं, ये अनुभव करते रहना। जिस समय बाबा ये शब्द बोल रहे थे उस समय ऐसे लग रहा था जैसे सब बापदादा के सामने इमर्ज हैं और बापदाद बहुत-बहुत जिगरी प्यार से सबको सजा रहे हैं।

इसके बाद बाबा बोले, अच्छा सभी इतने स्वीट बच्चे हैं तो इस ग्रुप को भी खेल करायें। ऐसे कहते, दृष्टि देते बाबा ने बोला -''आओ बच्चे- आओ बच्चे", बस बाबा का बोलना था कि सेकण्ड में सभी वतन में इमर्ज हो गये और क्या देखा कि अर्ध-चन्द्रमा समान हाल था, जिसमें सभी अपने-अपने स्थान पर बैठ गये और सामने स्टेज थी उस पर बहुत सुन्दर कलश एक-दो के ऊपर तीन-तीन कलश सिर पर रख करके बगीचे के अन्त तक पहुँचना है। बस बाबा ने ताली बजाई और सब स्टेज के आगे पहुँच करके तीन कलश उठाने लगे। फिर तो बहुत सुन्दर दृश्य था, कोई तो तीन कलश को देख सोच में पड़ गई कि ये तो नहीं जायेगा, भारी है, कोई ने उठाया लेकिन थोड़ा चलने के बाद बोझ लगने के कारण बहुत धीमे, रूक-रूक कर जाने लगी, कोई बीच में एक या दो कलश उतार कर रूक भी गई, कोई-कोई चल तो रहे थे लेकिन कलश थोड़े हिलने लगते थे, तो भय में चल रहे थे। बाकी कुछा ऐसे भी थे जो बहुत खुशी-खुशी से डबल लाइट बन चलती गई और समय पर मंजिल पर पहुँच गई। लेकिन वो ज़्यादा नहीं थी, थोड़ी सी थी। और कोई ऐसी भी थी जो उठा तो लिया लेकिन रफ्तार बहुत ढीली थी इसलिए मंजिल पर समय पर नहीं पहुँच सकी। बहुत मज़ेदार दृश्य दिखाई दे रहा था। उसके बाद बाबा ने ताली बजाई तो जो जहाँ पर था वहीं पर खड़ा हो गया। कोई तो मंजिल पर पहुँच गये थे, कोई बीच-बीच में रह गये थे। बाबा ने बीच में जाकर, सामने खड़े होकर सभी को दृष्टि दी और बोले - बच्चियां बापदादा आप बच्चो को सब ज़िम्मेवारियों की शक्ति से अब सम्पन्न देखना चाहते हैं। यह तीन कलष जो बाबा ने हर एक के सिर पर रखे - वह विशेष तीन ज़िम्मावारियों के थे, तीनों कलश पर अलग-अलग लिखत थी - एक पर लिखा था - स्व-परिवर्तन की ज़िम्मेवारी। दूसरे पर लिखा था सेवा साथियों से मिलकर आगे बढ़ने की जिम्मेवारी और तीसरे पर लिखा था - विश्व-परिवर्तन की ज़िम्मेवारी।

तो बाबा बोले - इन तीनों में से आप बच्चियों में जो भी शक्ति कम हैं, वो बापदादा व दादियों के व सेवा साथियों के सहयोग से अपने में भरनी है और हरेक अपने को छोटा नहीं समझे लेकिन हर एक को शक्तिरूप बन तीनों ज़िम्मेवारियों के निमित्त- आत्मा समझ बापदादा समान बनना है ऐसे एक-एक को बाबा मीठी दृष्टि दे रहे थे, ऐसे दृष्टि देते-देते ये दृश्य पूरा हो गया। सभी बहुत मौज में मुस्कराती रही और मैं भी ये दृश्य देखते-देखते स्थूल वतन में पहुँच गई। ओम शान्ति्।

(दादी जी और दादी जानकी जी के प्रति-सन्देश)

दादी, बाबा का इस ग्रुप के प्रति दिल से इतना प्यार था, जो ऐसे लग रहा था जैसे बाबा चाहता है कि मेरी एक-एक बच्ची अभी ही सम्पूर्ण बन जाए। बाबा ने एक-एक को जैसे दिल में समा दिया।

बाबा ने आप और दादी जानकी दोनों को अपने दोनों हाथों पर बिठाया और ऐसे उड़ाया जैसे पंछी को उड़ाते हैं, आप दोनों दादियां इतनी हल्की थी, जो आप दोनों ही बाबा के हाथों में समा गई। जैसे कोई आसन लगाकर बैठता है, ऐसे आप दोनों बाबा के हाथों में बैठ गई और बाबा ने ऐसे किया तो उड़ गई फिर बाबा ने ताली बजाई और आप नीचे आ गई तो बाबा ने गोदी में बिठाकर दिल में समा लिया। फिर बाबा ने कहा कि आप दोनों दादियों को अपनी तबियत का बहुत ख्याल रखना है क्योंकि आगे चलकर आप दोनों को बहुत-बहुत आगे बढ़कर सहयोग देना है। इसलिए अपनी बॉडी को बाबा की तरफ से अमानत समझकर अमानत को सम्भालकर चलाओ। मनोहर दादी, रतन मोहनी दादी, शान्तामणि दादी, मोहिनी बहन, मुन्नी बहन और जो भी विशेष टीचर्स की सेवा के निमित्त हैं, बाबा ने सभी के लिए बहुत दिल से याद और प्यार दिया है। हर एक अपने-अपने नाम से याद-प्यार स्वीकार करें। अच्छा। ओम शान्ति्। 26.08.99

विजय का तिलक प्राप्त करने के लिए समर्पण भाव से आज्ञा का पालन करो

आज सतगुरूवार भी है तो राखी बन्धन का पावन उत्सव भी है। तो आज वतन की रौनक ही निराली थी जैसे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की राखियां सज़ी हुई हैं। (सभी स्थानों से आई हुई बहुत सुन्दर-सुन्दर राखियाँ ओम शान्ति भवन की स्टेज पर सजाई गई है) लेकिन वतन में तो इससे भी अच्छी चमकती हुई राखियाँ बापदादा के सामने रखी हुई थी। बाबा बोले, कि वैसे भक्तिमार्ग में तो हरेक का ईष्ट और उनके साथ ही सर्व सम्बन्ध अपने-अपने होते हैं। लेकिन आप बच्चों के इस समय एक के साथ ही सर्व सम्बन्ध हैं। तो भिन्न-भिन्न उत्सवों पर, भिन्न-भिन्न सम्बन्ध से यह संगम के सुहेज आप बच्चे बाप के साथ मनाते हो। यह राखी उत्सव प्रतिज्ञा का उत्सव है। आप बच्चे कहते हो - बाबा, हम पूरे संगमयुग तक आपकी रह आज्ञा का पालन करेंगे। तो बाबा भी कहते - बच्चे, मैं आप बच्चों की सर्व मनोकामनायें पूर्ण करता हूँ। जो जितना समर्पण भाव से आज्ञा का पालन करते हैं, उनके मस्तक पर अपने आप विजय का तिलक लग जाता है। बाबा तो हर बच्चे को विजयी भव, अमर भव का वरदान देते हैं लेकिन बच्चे कहाँ तक इस वरदान को अपने जीवन में अपनाते हैं, यह तो हर बच्चे के ऊपर डिपेण्ड करता है। तो बाबा ने कहा कि यह पवित्र आत्माओं की सभा है। और पवित्र आत्माओं को बाबा बार-बार मुरली द्वारा इशारा देता रहता है कि बच्चे सम्पूर्ण पवित्र भव। केवल ब्रह्मचर्य ही पवित्रता नहीं है लेकिन मन की पवित्रता, वाणी की पवित्रता, जीवन की पवित्रता संग की पवित्रता यह भी सब पवित्रतायें हैं।

और जो इसे जीवन में जितना धारण करता है उतना बड़ा विश्व का महाराजा, महारानी बनता है। इसलिए आपके यादगाार देवी-देवताओं को 'कमल-आसन' पर दिखाते हैं और गाायन भी करते हैं कमल-नयन, चरण कमल, मुख-कमल..... तो एक एक अंग इतने पवित्र बनें हैं तब उनका गायन भक्तिमार्ग में होता है। तो ऐसे गायन और पूजन योग्य आत्माओं को देख बाबा भी खुश होता है और देखता है कि इसमें मेरे विजयी रत्न 108 की माला में आने वाले कौन-कौन हैं? और बच्चे खुद भी समझते हैं कि मैं विजय माला में आने लायक हूँ या नहीं?

फिर बाब ने कहा - देखो बच्चे, आज वतन में कितनी राखियां आई हैं। आज बच्चों के अन्दर यह संकल्प जागृत है कि बाबा के साथ हमारा भाई का भी सम्बन्ध है। और बच्चे अन्दर-ही-अन्दर बाप से प्रतिज्ञा भी करते हैं, हिम्मत भी रखते हैं। तो बाबा बच्चों की हिम्मत देख मदद भी देता है और मुस्कराता भी है। फिर बाबा ने कहा कि सभी बच्चों को कहना कि आपकी सूक्ष्म यादें बाप के पास पहुँचती हैं और **जो जितना अमृतवेले लगन से बाप के साथ रूहरूहान करते हैं तो ऐसे लगन वाले बच्चों को बाबा विशेष रूप से सकाश देते हैं** और बच्चे भी सकाश का अनुभव करते हैं, हल्कापन महसूस करते हैं। तो बाबा ने कहा कि आज के पावन-उत्सव पर सभी बच्चों को मेरा बहुत-बहुत याद प्यार देकर कहना कि बाबा तो बच्चों को श्रेष्ठ आत्मा, महान-आत्मा, पुण्य आत्मा का नज़र से देखते हैं। तो आप भी अपने आपको ऐसी महान श्रेष्ठ आत्मा समझकर चलेंगे तो आपका यह संकल्प ही आपकी दृष्टि को, वृत्ति को, बोल को सबको श्रेष्ठ बना देगा।

फिर बाबा को निर्वैर भाई की याद दी कि बाबा आज निर्वैर भाई रशिया सेवा पर जा रहे हैं, आपको बहुत-बहुत याद दी है। तो बाबा मुस्कराये और कहा कि बाबा के मुरब्बी बच्चे जहाँ भी जाते हैं तो न केवल बाप का सन्देश देते हैं लेकिन उनको बाप के साथ का अनुभव भी कराते हैं। तो बच्चा केवल सन्देश देने, सेवा करने नहीं जा रहा है लेकिन बाप की ली हुई पालना का अनुभव कराने के लिए जा रहा है क्योंकि अभी बच्चे चाहते हैं कि बाप की पालना का अनुभव हमको भी हो, तो वह अनुभव कराने के लिए जा रहा है और सफलता तो बच्चों के हर कदम में समाई हुई है। जो जा रहे हैं उनके कदमों में भी और जो आये हैं वह भी सफलता प्राप्त करके आये हैं। फिर मैंने कहा कि बाबा मृत्युंजय भाई, प्रताप भाई विदेश सेवा करके वापस आये हैं तो बाबा ने कहा उन दोनों को भी यादप्यार देना। फिर बाबा ने बहुत-बहुत प्यार हर बच्चे को दिया और ऐसे ही प्यार भरी दृष्टि देते-देते बाबा ने कहा कि- बच्ची, राखी लायी हो? मैने कहा - मैं तो बहुत-सी राखियां लायी हूँ। फिर मैंने बाबा को सारी राखियां दिखलाई और कहा कि बाबा यह सबकी राखियां हैं, यह सब राखियाँ आपको बांधेगी। तो बाबा ने एक राखी मेरे को दी वह बहुत अच्छी और बड़ी राखी थी जिसमें इतनी महीन-महीन किरणें थीं, उन किरणों के ऊपर लिखा हुआ था - फलाने-फलाने की राखी। उस एक राखी में ही जैसे सारी दुनिया की राखी आ गयी। तो मैंने कहा - बाबा, आप बहुत चतुर सुजान हो जो सबकी इच्छा पूरी कर देते हो। फिर बाबा ने दादी के लिए बहुत-बहुत याद प्यार दिया और कहा - बाबा के तरफ से वतन की यह राखी जाके बच्ची को पहनाओ। बाबा का बहुत प्यार भरा स्वरूप था। ऐसे प्यार के नयनों से दृष्टि देते-देते बाबा ने मुझे साकार वतन में भेज दिया। ओम शान्ति्।

09.09.99

दिल से मेरा बाबा मानना - यही हर समस्या का हल है

परमात्मा द्वारा मिले हुए वरदान के आधार पर, दिव्य दृष्टि द्वारा जब हम इस देह की दुनिया से परे सूक्ष्मवतन में पहुँची तो सामने से ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा (बापदादा) दोनों ने ही मुस्कराते हुए, नयनों की दृष्टि देते हुए मिलन मनाया और हमसे पूछा कि बच्ची आज क्या समाचार लाई हो? तो मैंने कहा कि बाबा आप तो जानते ही हैं कि ज्ञानसरोवर में आध्यात्मिकता में रूचि रखने वाला और विश्व की सर्व आत्माओं के प्रति एक रहम भावना रखने वाला ग्रुप आया हुआ है। तो बाबा ने मुस्कराते हुए कहा कि बच्ची - मैं देख रहा हूँ कि यह वैरायटी गुलदस्ता आया हुआ है। वैरायटी देश के हैं, वैरायटी भावना वाले हैं, वैरायटी आक्युपेशन वाले हैं और वैरायटी संस्कार या स्वभाव के विशेषता की खुशबू वाले हैं। यह खुशबूदार वैरायटी संस्कार या स्वभाव के विशेषता की खुशबू वाले हैं। यह खुशबूदार वैरायटी फूलों का गुलदस्ता है।

उसके बाद बाबा ने कहा कि देखो बच्ची - यह जो भी आत्मायें आयी हैं- इन्हों की भावना बहुत अच्छी है कि विश्व की समस्यायें मिट जायें और हमारा विश्व अच्छा बन जाये। तो बाबा ने कहा कि यह बच्चे पहले कनेक्शन में आये, फिर कनेक्शन के बाद मधुबन में स्प्रिच्युअल फैमिली के रिलेशन में भी आ गये हैं और रिलेशन के बाद फिर रियलाइजेशन कर रहे हैं। तो बाबा ने कहा कि बच्चों ने रियलाइज तो किया है, सुना भी है कि मैं आत्मा हूँ, शिवबाबा हमारा गॉड फादर है। यह बात नॉलेज के आधार से तो समझ लिया है लेकिन सिर्फ नॉलेज के आधार से सहज याद नहीं आ सकती है क्योंकि एक है नॉलेज अर्थात् दिमाग से समझना, दूसरा है दिल से मानना कि हाँ, मै आत्मा, परमात्मा का बच्चा हूँ। परमात्मा हमारा पिता है। बाबा ने कहा गॉड फादर तो मानते हैं परन्तु मेरा फ़ादर है, मैं उनका ही बच्चा हूँ इसको थोड़ा और अण्डरलाइन करने की आवश्यकता है क्योंकि जहाँ "मेरा" होता है तो याद स्वत: ही आती है। तो बाबा ने कहा कि जब 'मेरा बाबा' यह इन्हों को अण्डरलाइन हो जायेगा और दिल से कहेंगे "My Baba" तो यही विश्व को परिवर्तन करने का सेल्वेशन है क्योंकि परमात्मा से कनेक्शन जुट जाने के बाद, इस वृत्ति से शक्तिशाली वातावरण बनेगा और अन्य आत्माओं पर पड़ेगा।

उसके बाद बाबा ने कहा कि बच्चे अपने गॉड फ़ादर के घर में आये हैं, तो बाप बच्चों को गॉडली गिफ्ट देते हैं। वह गिफ़्ट क्या थी? जैसे छोटी-छोटी डिब्बियां होती हैं, ऐसे डिब्बियां थी और उस हरेक डिब्बी में तीन हीरे थे। उन हीरों से बहुत सुन्दर लाइट निकल रही थी। तो

बाबा ने सबको तीन हीरे देते हुए इसका महत्त्व सुनाया कि एक हीरा है - स्वयं आत्मा, जो बहुत छोटा-सा ज्योति बिन्दु रूप है।

दूसरा हीरा है - परमात्मा, वह भी ज्योतिर्बिन्दु है। और तीसरा हीरा है - 'फुलस्टाप' क्योंकि इस सृष्टि रूपी ड्रामा में सभी आत्मायें एक्टर बनकर एक्ट कर रही हैं। तो जो भी ड्रामा में एक्ट बीत जाता है उसका चिन्तन नहीं करना है। फुलस्टॉप लगाना है। तो बाबा ने कहा कि जो बात बीत गयी उसमें क्वेश्चन मार्क नहीं करना, आश्चर्य की मात्रा नहीं देना, उससे शिक्षा लेकर फुलस्टॉप लगाना क्योंकि क्वेश्चन मार्क और आश्चर्य की निशानी जो है उसमें क्यों, क्या, कैसे हुआ, कैसे होगा... यह सब वेस्ट थॉटस् चलते हैं। इसीलिए यह तीसरा हीरा है - 'फुलस्टाप।' तो बाबा ने कहा - यह तीन बिन्दियां हीरे के रूप में इन बच्चो को गॉडली गिफ़्ट दे रहे हैं। यह गिफ्ट सदा बुद्धि में याद रखना। कोई भी बात हो जाये - इन तीन हीरों को याद करेंगे तो आपको सेल्वेशन मिल जायेगी और गॉड फ़ादर की मदद भी मिलेगी इसीलिए इन तीनों हीरों को बुद्धि में बहुत-बहुत सम्भाल के रखना, याद रखना। ऐसे कहते बाबा ने सभी को याद दी। अच्छा - ओम शान्ति्।

01.01.2000

नई सदी में मन-बुद्धि को एकाग्र कर टेन्शन मुक्त जीवन का अनुभव करो

विश्व रचयिता की सर्व आत्माओं के प्रति, 21 वीं सदी के आगमन की शुभ भावनायें, शुभ कामनायें।

सर्व आत्मायें वर्तमान समय की अनेक समस्याओं से तो अच्छी तरह से अनुभवी हैं ही। इस समय जबकि तीनों सत्तायें– विज्ञान सत्ता, राज्य सत्ता, अनेक धर्म सत्ता अपना- अपना कार्य कर रहीं हैं, फिर भी मानव-जीवन में सन्तुष्टता व विश्व में सन्तुलन नहीं है। इससे सिद्ध है कि अवश्य कोई अन्य सत्ता की आवश्यकता है, जिसका अभाव वर्तमान जीवन में महसूस होता है, उसको जानना आवश्यक है। वह है साइलेन्स की सत्ता अथवा आध्यात्मिक शक्ति की सत्ता, जिससे ही आन्तरिक परमात्म शक्तियां प्राप्त कर, अपनी सूक्ष्म इन्द्रियों को (मन-बुद्धि को) एकाग्र कर देन्शन मुक्त जीवन का अनुभव कर सकेंगे।

हे आत्मायें, इस नई सदी में सदा नई सन्तुष्ट जीवन का अनुभव करो। 21 वीं सदी में आध्यात्मिक शक्ति द्वारा ऐसा स्व-परिवर्तन करो जो विश्व-परिवर्तन हो जाये अर्थात् 21 जन्म के लिए सदा सुख-शान्ति व प्रेम की जीवन प्राप्त कर सको। यही विश्व-पिता की सर्व आत्माओं प्रति शुभ भावना व शुभ कामना है। ओम शान्ति्।

12.03.2000

दिलतख्तनशीन वह है जिसके दिल में बाप समाया हुआ हो

आज बापदादा के पास पहुँची और बापदादा को अपनी मीठी दादी जानकी जी का समाचार सुनाया और याद प्यार दिया। बापदादा को अपनी मीठी दृष्टि से मिलन मना रहे थे और बोले - बच्ची तो आदि से ही दिलतख्तनशीन है। सदा बाप के दिल में समाई रहती है और बाप को दिल में समाकर रखती है। बाकी थोड़ा बहुत तो इस बॉडी रूपी गाड़ी को रिपेयर कराना ही पड़ता है। पुरानी गाड़ी से काम लेना है और बड़ी आसामी है तो बड़ी आसामी की गाड़ी को ज़रा भी कुछ होता है तो फौरन रिपेयर होती है। तो यह भी थोड़ा बहुत रिपेयर कराना पड़ता है। अच्छी हिम्मत वाली है। सर्व की स्नेही है, सबका प्यार ही दोनों दादियों को चला रहा है।

बाकी विदेश वालों को भी याद तो आती है लेकिन स्नेह और दुआओं का सहयोग देना ही स्नेह है। ऐसे कहते बापदपदा ने बहुत-बहुत मीठी दृष्टि दी और आपने में समा दिया और कहा - यह तो बेफिकर बादशाह है, सबको भी बेफिकर बनाने वाली हैं। अच्छा - ओम शान्ति्।

20-03-2000

समय अनुसार मनोबल के सेवा की आवश्यकता

आज बापदादा के पास गई तो बापदादा मुस्कराये, बहुत-बहुत यादप्यार दी और सभी दादियों के साथ खास जनक बच्ची को कहा कि अब तक विचार सागर मंथन कर सबको अच्छी सूक्ष्म रूप में ले जाने, सुनाने, अटेन्शन देते की सेवा तो बहुत की है। अब फिर समय अनुसार सूक्ष्म मनोबल की सेवा की आवश्यकता है। इस सेवा के निमित्त आप बनो। जैसे साइन्स की शक्ति द्वारा राकेट एक जगह होते हुए भी जाँ निशाना लगाने चाहें वहाँ दूर से ही लगा सकते हैं, ऐसे साइलेन्स पावर से, मन्सा बल से स्प्रीचुअल राकेट बन दूर-दूर की आत्माओं को अच्छे-अच्छे बाप के अनुभव कराओ, आवाज पहुंचे कि कोई बुला रहा है। नजदीक आने की प्रेरणा मिले। सेवा के निमित्त बनने का उमंग आवे। जैसे आदि में बच्चों को ब्रह्मा बाप की अनुभूति होती थी, ऐसे अब आप शक्तियों द्वारा अनुभव हो। बापदादा का भी निमित्त आप द्वारा अनुभव हो, ऐसे मनोबल की पावर को प्रैक्टिकल में लाओ। जैसे वाणी द्वारा बाप के बच्चे बनाये ऐसे और ही मन्सा बल द्वारा तीव्र गति वाली पावरफुल आत्मायें तैयार करो।

23.03.2000

हर बात में ब्रह्मा बाप को फ़ालो करने वाले "ब्रह्माचारी" बनो

आज आप सबके दिल की स्नेह भरी याद लेकर बाबा के पास वतन में जाना हुआ। तो जब मैं बाबा के पास पहुँची तो देखा कि बाबा बहुत गम्भीर रूप में जैसे किन्हीं विचारों में खोये हुए हैं। वतन में होते भी जैसे बाबा वतन में नहीं हैं। बाबा जैसे हमें देख भी रहे हैं लेकिन देखते भी जैसे कोई बहुत डीप ख्यालों में, संकल्पों में हैं। बाबा के संकल्प तो श्रेष्ठ ही होते हैं तो मैंने बाबा से पूछा, कि बाबा आज आप बहुत डीप सोच में है, क्या सोच रहे हैं? तो बाबा ने कहा - बाबा का सोच क्या चलेगा? जैसे आप बच्चे कहते हो कि बाबा ही हमारा संसार हैं। तो बाप भी

कहते हैं - बच्चे ही मेरा संसार हैं। तो बाप को और क्या सोच चलेगा, बच्चो के प्रति ही चलेगा। ऐसे कहने के बाद जैसे बाबा मुझे देखते ही दूर-दूर कहीं दृष्टि दे रहे हैं। इतने में मैंने क्या देखा कि पाँच दीपक लाइन में बहुत अच्छे चमक रहे थे, उनकी लाइट बहुत सुन्दर थी। तो बाबा ने कहा - मैं क्या सोच रहा हूँ - वह आप इन दीपकों से देखो। मैंने ध्यान से देखा तो हर दीपक के नीचे शब्द लिखे हुए थे।

बाप के दिल के दीपक बाप के श्रेष्ठ संकल्पों के दीपक ब्राह्मण कुल के दीपक
विश्व के दीपक और बाप समान बनने वाला दीपक।

ऐसे पाँच दीपक बहुत अच्छे जग रहे थे।

फिर बाबा ने कहा कि तुमने समझा कि मैं क्या सोच रहा हूँ? जो भी बच्चे आज मीटिंग में आये हैं विशेष उन बच्चों को देख देख रहा हूँ कि कौन, कौनसा दीपक है? तो मैंने कहा बाबा ये तो हर एक सब प्रकार के दीपक होंगे। तो बाबा ने कहा- नहीं, इसमें परसेन्टेज है। ये बच्चे तो खास विश्व की सेवा के प्रति निमित्त हैं। यह भी बहुत बड़ा कार्य है। फिर बाबा थोड़ा राज़युक्त मुस्कराये और कहा कि सभी कहते हैं इसमें हमारा भी नाम होना चाहिए। हमारा भी कोई पार्ट होना चाहिए... तो बाबा ने कहा - यह तो अच्छी बात है। तो जैसे इस मीटिंग में या कोई भी ऐसा विशेष कार्य होता है तो हर एक समझता है कि उसमें हमारा पार्ट हो तो अच्छा है। तो बाबा ने कहा कि यह बच्चे जो विशेष कोटों में कोई, कोई में भी कोई की लिस्ट में है क्योंकि विशेष नाम, आक्युपेशन सहित आये हुए हैं। तो बाबा को इन बच्चों में से एक ग्रुप चाहिए, जो सिर्फ ब्रह्मचारी नहीं लेकिन ब्रह्माचारी हों। हर बात में ब्रह्मा बाप को फालो करे। तो बाबा ने कहा - मुझे ऐसा ग्रुप चाहिए - जो ब्रह्माचारी हो, हर बात में ब्रह्मा बाप को फालो करे। जैसे ब्रह्मा बाबा ने सम्पूर्ण बनकर अपना कार्य सम्पन्न किया, किसी को भी नहीं देखा कि ये बच्चा ऐसा है, ये ऐसा है.... इसलिए मैं सम्पूर्ण नहीं बन सकता। 'हर पार्ट बजाते हुए सम्पूर्ण बनें, सम्पन्न बने ऐसे मुझे बनना ही है।' ऐसा संकल्प लेने वाला ब्रह्माचारी ग्रुप चाहिए। तो इस ग्रुप में जो बच्चे स्वयं को समझते हैं वह खुद अपनी चिटकी लिखकर दें कि कुद भी हो जाये लेकिना प्रैक्टिकल लाने में कोई अन्तर नहीं लायेंगे। बच्चों ने ब्रह्माचारी ग्रुप की परिभाषा तो लेटेस्ट मुरलियों में सुनी ही है। तो उन सब धारणाओं को सामने रखते हुए अपना नाम दें कि मैं ब्रह्माचारी ग्रुप में प्रैक्टिकल करने के लिए तैयार हूँ। ऐसे अपनी चिटकी मीटिंग पूरी होने के बाद दादी जी को देकर जायें। फिर बाबा बहुत मीठा मुस्कराये और कहा कि बच्चों की चिटकियां भी बहुत आती हैं, वायदे भी बहुत करते है..... बाबा के पास तो वायदों के, प्रतिज्ञाओं के, प्रीत लगाने वालों के... फाइलों के फाइल हैं। ऐसे प्रीत लगाने वाले तो 9 लाख भी होंगे। लेकिन- 'प्रीत निभाने वाला, प्रतिज्ञा निभाने वाला हो।' तो जिसमें ऐसी हिम्मत हो, वह अपना नाम दे। **फिर बाबा कोई बहाना नहीं सुनेगा कि ये हुआ इसलिए थोड़ा ये हुआ, अभी बाबा यह सुनने नहीं चाहते हैं। कुछ भी हो लेकिन अपनी हिम्मत रखने वाले हो तो अपना नाम देवें**। ऐसे कहते बाबा ने सभी को वतन में इमर्ज कर लिया और एक-एक को मीठी दृष्टि देते मुस्कराते रहे। बाबा के मुस्कराने से हर एक जैसे समझ रहा हो कि बाबा के पास मेरे लिए कुछ है। बाहर से तो बाबा कुछ नहीं कह रहे थे लेकिन मीठा-मीठा मुस्करा रहे थे। फिर बाबा ने कहा याद-प्यार तो पदमापदम, पदम, पदम बच्चों के प्रति है ही है। लेकिन अभी बाबा ये 'ब्रह्माचारी ग्रुप' तैयार चाहता है।

फिर बाबा ने सेवा के प्रति कहा है कि सेवाओं के प्रति तो मुरली में सुनाया ही है। बच्चों ने सेवा तो बहुत की है लेकिन अभी बाबा चाहते हैं कि कोई संगठन बनाओ, हर देश में ऐसे कोई तैयार करो, जो ग्रुप सेवा के निमित्त बनकर सेवा को और भी फैलावे। एक ही लहर, एक ही टाइम पर सब देशों में निमित्त बन जाये, ऐसा संगठन हो। अभी तक सेवा जो बिखरी हुई है, बाबा कहते हैं - इसकी एक माला बनाओ और वह माला अभी से वह कार्य करे। एक दो के संगठन से उन्हों में और उमंग आयेगा। ऐसे सेवा के प्रति इशारा देते, याद-प्यार देते विदाई दी और हम साकार वतन में आ गई। ओम शान्ति्।

08.04.2000

हिम्मतवान बच्चों को बाप की कई गुणा मदद

आज विशेष सेवा के कार्य अर्थ बापदादा के पास जाना हुआ। बापदादा ने बहुत स्नेह सम्पन्न स्वरूप से मिलन मनाया और मधुर दृष्टि से निहाल किया फिर बोले, आओ बच्ची विश्व कल्याण की सेवा का क्या समाचार लाई हो? मैं बोली – बाबा, आपके श्रेष्ठ संकल्प प्रमाण लण्डन में सेवा के निमित्त बनने वाले कुछ वी.आई.पीज.(माअक्स) का संगठन है। सब बहुत उमंग प्यार से आये हैं। बापदादा बोले – बहुत अच्छा श्रेष्ठ कार्य के लिए निमित्त बने हैं। फिर बापदादा बहुत मीठा-मीठा मुस्कराते बोले – देखो बच्ची, परमात्मा बाप को भी बच्चों की पुकार, भक्तों की पुकार, समय की पुकार से सर्व आत्माओं की भावना का फल देने आना पड़ा। तो बच्चों को भी समय की पुकार से आत्माओं प्रति रहम दृष्टि दिल मे इमर्ज हुई है, यह बहुत अच्छा कार्य उठाया है। जैसे बाप मर्सीफुल है तो फालो फादर तो करना ही है क्योंकि आजकल आत्माओं को अपनी समस्याओं का समाधान मिलने की बहुत तड़प है। ऐसी भटकती, तड़पती आत्माओं प्रति सेवा के निमित्त बनने से उन आत्माओं के दिल द्वारा जो दुआयें मिलती है, उससे निमित्त बनने वाले आत्माओं को अपने प्रति भी खुशी, शक्ति, शान्ति प्राप्त करने का, स्व-परिवर्तन करने का एक्स्ट्रा बल मिल जाता है। बापदादा इस ग्रुप को बाप को फालो करने वाला "मर्सीफुल ग्रुप" के रूप मे देख रहे हैं। सारे ग्रुप की हिम्मत अच्छी है, इसलिए हिम्मतवान बच्चों को परमात्म मदद कई गुणा स्वत: ही प्रप्त होती है। तो बच्चों को कहना कि सदा उमंग-उत्साह से आगे बढ़ते रहना, समस्याओं से, वायुमण्डल से घबराना नहीं क्योंकि आपका साथी स्वयं परमात्मा बाप है और इतना बड़ा ब्राह्मण परिवार है। ऐसे मीठे बोल

बोलते बाबा ने कहा – सबको बापदादा का दिल से सफलता सम्पन्न यादप्यार देना।

उसके बाद बाबा ने विशेष जानकी दादी और सर्व सेवा पर उपस्थित विशेष बच्चों को इमर्ज कर बहुत मीठी दृष्टि दी और हर एक को पर्सनल प्यार की भासना दे रहे थे। बाबा का बहुत-बहुत मोहिनी रूप था और बोले, बच्चे बहुत मेहनत करते है लेकिन मुहब्बत के झूले मे झूलते हुए सेवा करते, इसलिए खूब नाचते-गाते, हँसते-खेलते सेवा में पार्ट बजाते रहते हैं। दादी जानकी के लिए कहा –"सेवा और सम्भाल" दोनों का बैलेन्स रखना है। एक-एक सेवा निमित्त बच्चों को नाम और रूप से यादप्यार दी जो सबने ज़रूर स्वीकार की ही है। अच्छा।

13.05.2000

शान्तिदूत बन सर्व को शान्ति की अनुभूति कराओ

आज बापदादा के पास अपनी प्यारी दादी जानकी जी का समाचार लेकर गई। मधुर मिलन मनाने के बाद मैने समाचार सुनाया। सुनते ही बापदादा जैसे विश्व की सर्व आत्माओं को सकाश देने में बिजी हो गये। मैं भी देखती रही, कुछ समय के बाद बाबा बोले – बाप बच्चों के ऊपर बहुत-बहुत खुश हैं, जो बैरूत जाने का प्रोगाम बनाया है। ऐसे कहते ही बाबा के सामने यह त्रिमूर्ति सेवाधारी दादी जानकी जी, जयन्ती, गायत्री और सर्व साथी इमर्ज थे और बाबा बहुत पावरफुल और बहुत स्नेह भरी नज़र से निहाल कर रहे थे। इसके बाद बाबा बोले – देखो ड्रामा अनुसार बच्चों के दिल में बाप को सर्व आत्माओं, सर्व धर्मो के पिता के रूप में प्रत्यक्ष करने का उमंग बहुत अच्छा है क्योंकि हर धर्म की पिता की आत्मा को बाप का सन्देश तो मिलना ही है। कोई धर्म भी वंचित नही रहना चाहिए। निमन्त्रण अच्छा है, जाना ही है सिर्फ त्रिकालदर्शी बन ऐसे शब्दों में मॉरल एज्युकेशन को लेकर ही बोलना, मिलना है, सम्पर्क मे लाना है, आगे बढ़ाना हैं। कोई भी रूप मे यह हिन्दू धर्म के हैं वा अपने प्रचार करने आये हैं - यह फीलिंग नही आनी चाहिए। लेकिन यह सर्व आत्माओं के कल्याण करने वाले, शान्ति देने वाले **शान्तिदूत** है, ऐसे शान्तिदूत का अनुभव कराना है, यही लक्ष्य सेवा का है। बाकी सफलता तो बच्चों के गले का हार है ही। बच्चों को बापदादा की याद और दिल का प्यार तो हर सेकण्ड, हर श्वाँस साथ है ही। सर्व को बहुत प्यार, यह था बाबा का सन्देश। ओम शान्ति्।

31.05.2000

सफलता का आधार – साफ़ दिल - मुराद हासिल

आज विशेष अमेरिका में होने वाली मुख्य टीचर्स आर.सी.ओ. की और एन.सी.ओ. की मीटिंग प्रति समाचार ले वतन में गई तो बापदादा से मधुर मिलन हुआ और बेहद के बाप ने बेहद की दृष्टि देते हुए मुस्कराते बोला – बच्ची, क्या समाचार लाई हो? मैने मीटिंग का समाचार सुनाया और दादी जानकी, जयन्ती बहन और लन्डन की सभी सखियों की यादप्यार दी तो बाबा बोले – जनक बच्ची को सर्व के प्रति भी, साथ मे फारेन की टीचर्स प्रति बहुत दिल में उमंग-उत्साह रहता है कि बहुत जल्दी से जल्दी सब निर्विघ्न बन उड़ती कला में उडती रहे, उडाते रहे। यह बहुत अच्छा है। निमित्त आत्मा उमंग-उत्साह वाली है तो चारों ओर वायुमण्डल वही बन ही जाता है। जयन्ती बच्ची भी चक्रवर्ती बन अच्छा पार्ट बजा रही है, दिल पर है। साथ मे सर्व यू.के.के सर्विस साथियों को भी बाबा ने याद किया और कहा कि एक दो से कम नहीं हैं। एक-दो से आगे हैं। फिर मैने समाचार सुनाया की वहाँ का प्लैन वा टापिक्स भी बनाई है:-

1.स्वउन्नति के प्रति 2. लगन की अग्नि सदा तेज रहे 3.आपसी युनिटी 4. फास्ट प्रोग्रेस 5. बेहद के विश्व सेवा में वृद्धि, ऐसी टापिक्स रखी हैं।

बापदादा बहुत मीठा मुस्कराया और बोला – टापिक्स तो बहुत अच्छी रखी हैं। इन सब धारणाओं के लिए मुख्य आधार है - क्लीन और क्लीयर मन और बुद्धि की। और सबसे मुख्य - ''साफ दिल मुराद हासिल। "इसी युक्ति से सर्व बातों में सहज सफलता मिल जाती है और उडते रहते हैं। बच्चों को रोज रात को स्व-कल्याणकारी बन समाप्ति समारोह मनाना चाहिए। जैसे शुरू मे ब्रह्मा बाप ने छोटे बच्चों को युक्ति बताई थी कि सदा सुबह को मास्टर ब्रह्मा बनो, दिन में मास्टर विष्णु और रात को मास्टर शंकर बन सारे दिन का जो भी मन में, बुद्धि में वेस्ट, निगेटिव का किचड़ा भर जाए तो उसको बिन्दी लगाए, विनाश कर समाप्ति कर सो जाओ। सुबह को जैसे स्वच्छ, साफ, फरिश्ता जीवन, ब्रह्म से ब्राह्मण पधारे हैं, ऐसे पार्ट बजाओ। इससे साकार सम्बन्ध में भी सहज युनिटी, स्नेह, स्वमान , सम्मान आ ही जाता है। सफलता सहज होती है।

उसके बाद बाबा ने जैसे सभी फारेनर्स को इमर्ज कर दृष्टि दी और बोले बापदादा विशेष अव्यक्त पालना की रचना, सर्व बच्चों को याद करते और शक्तिशाली सकाश देते रहते हैं कि फास्ट और फर्स्ट दिखायें। बाकी सफलता तो होनी ही है। हर बच्चा सफलता स्वरूप है। उसके बाद बाबा ने हर देश के हर एक बच्चे को नाम सहित सामने इमर्ज कर यादप्यार दिया और दृष्टि द्वारा सफलता का वरदान दिया।

उसके बाद अमेरिका निवासी बच्चों को विशेष "पीस विलेज" की सेवा के निमित्त बच्चों को नाम सहित याद किया, प्यार दिया और कहा मोहिनी बच्ची, कला बच्ची, गायत्री और सर्व सेवा के साथियों ने बहुत प्यार से सेवा की है। बापदादा सभी को बड़े स्नेह से मुबारक दे रहे थे। मोहिनी बहन को बहुत-बहुत स्नेह स्वरूप से दृष्टि देते बाबा बोले - बच्ची ने हिम्मत और बड़ी दिल से प्रोग्राम बनाया है, बड़ी दिल पर बड़ा बाबा भी खुश है, मददगार है। कला बच्ची भी अन्तर्मुखी गुप्त बन अच्छा पार्ट बजा रही है। कला, गायत्री दोनों स्नेह की सचली कौड़ी हैं। बाबा समय प्रति समय बहुत मदद देता रहता है। अच्छी आगे बढ़ रही हैं। फिर बाबा ने रिक, सेण्डी और अन्य पाण्डव साथियों को याद दिया और

कहा सबने दिल से सहयोग दे सेवा की हैं। रिक बच्चा तो आदी से अमेरिका सेवा के प्रति निमित्त बना है, आदि रत्न है। साथ में अंकल, आंटी परिवार का भी स्थापना में बहुत शानदार पार्ट है, इसलिए सारे परिवार को बापदादा बहुत-बहुत यादप्यार दे रहे है। बोलो, सभी को बापदादा का यादप्यार पहुँचा ना। अच्छा, सबको फ़रिश्ते रूप से ओम शान्ति। ऐसे ही साकार वतन मे पहुँच गई।

24-06-2000

ब्राह्मणों की सम्पन्नता और सम्पूर्णता ही प्रत्यक्षता का आधार है

आज अमृतवेले बाबा को सन्देश देकर आई थी कि हम सबकी दिल है कि आज आप वतन में मम्मा को बुलायें और मम्मा से मुलाकात करायें। सभी मम्मा को बहुत याद करते हैं। तो बाबा मुस्कराये और कहा कि मुरब्बी बच्चे बाप की आज्ञा को 'जी हजूर' करते हैं तो बाप भी मुरब्बी बच्चों की आश वा आज्ञा को पूर्ण करने के लिए 'जी हजूर' करते हैं। तो अभी जब हम आप सबका यादप्यार लेकर वतन में पहुँची तो देखा कि बाबा मम्मा, दीदी, भाऊ, पुष्प शान्ता दादी आदि... बहुत-सी दादियों से बाबा कोई गहरी रूहरिहान कर रहे हैं। सभी के चेहरे स्पष्ट नहीं दिखाई दे रहे थे। मैं खड़े होकर देख रही थी, परन्तु समझ में नहीं आ रहा था। फिर वह सीन गायब हो गया, मम्मा-बाबा रह गये। मैंने कहा बाबा, आपने सभी को कहाँ मर्ज कर दिया, तो बाबा बोले आप तो आज मम्मा से मिलने आई हो ना! तो मैं मम्मा को देखने लगी, मम्मा कभी मुझे देखे और कभी बाबा को देखे। हमने पूछा बाबा आज आप इन्हों से क्या रूहरूहान कर रहे थे? तो बाबा मुस्कराये और कहा कि यह जो एडवांस पार्टी में बच्चे गये हैं, उनकी मीटिंग हो रही थी। मैंने कहा कि बाबा यह सब क्या कह रहे थे! अभी तो यह पर्दा उठना चाहिए कि आखिर भी यह सब कहाँ हैं, क्या कर रहे हैं! तो बाबा ने कहा मम्मा से पूछो। तो मैंने मम्मा को कहा-मम्मा, बताओ ना, आप सब कब प्रत्यक्ष होंगे? आपके साथी सब कहाँ हैं! तो मम्मा मुस्कराती रही। फिर मैंने बाबा से पूछा, बाबा आखिर पर्दा कब खुलेगा? तो बाबा ने मुझसे पूछा कि आपकी सम्पूर्णता का पर्दा कब खुलेगा? आप सब सम्पूर्णता के समीप पहुँचे हो? सेवा का कार्य पूरा हो गया है? तो मैं चुप हो गई। फिर बाबा ने कहा – बच्ची, बाबा तो बार-बार बच्चों को इशारा देता रहता है कि सारा मदार बच्चों के पुरुषार्थ पर है। जितना जल्दी बच्चे सम्पन्न सम्पूर्ण बनेंगे उतना जल्दी यह पार्ट खुलेगा। मैंने कहा – बाबा, आप कुछ ऐसा पुरुषार्थ कराओ ना जो सब जल्दी सम्पन्न बन जाएँ। तो बाबा ने कहा कि बाबा तो बच्चों को इशारा देता रहता है, स्नेह, सहयोग और शक्ति भी देता है लेकिन बनना और आगे बढ़ना तो बच्चों को है। बच्चे जब तीव्र पुरुषार्थ करते हैं तो प्रकृति भी अपना खेल दिखाती है। फिर बच्चों का पुरुषार्थ ठण्डा होता है तो वह भी ठण्डी हो जाती है। इसलिए आलराउण्ड सभी का संगठित रूप में पुरुषार्थ चाहिए। प्रकृति तो आपके ऑर्डर का इन्तजार कर रही है, आप सम्पन्न बनकर आर्डर करो तो वह अपना कार्य आरम्भ करे। बाबा तो प्रकृति के, माया के बंधन से ऊपर बैठा है। आप बच्चों को प्रकृति जीत, मायाजीत बनना है। तो आप जब ऐसा बन प्रकृति को इशारा करेंगे तो प्रकृति अपना कार्य शुरू करेगी और माया विदाई लेगी। अभी बच्चों में थोड़ा अलबेलापन आ जाता है। सोचते हैं कि समय आयेगा तो बन जायेंगे। तो बाबा को बच्चों पर बहुत रहम आता है कि बच्चे जल्दी-जल्दी क्यों नहीं तैयार होते हैं।

फिर बाबा ने कहा कि बच्ची, अपनी मम्मा को देखो, बाप के मुख से जो निकला इस बच्ची ने फौरन धारण किया। कथनी-करनी समान होने के कारण देखो जगदम्बा बन गई। तो एक ने इतना पुरुषार्थ थोड़े समय में किया जो उसका पार्ट स्पष्ट हो गया। इस बच्ची ने बाबा को पूरा-पूरा फालो किया तब आप देखते हो कि सारा साल भक्ति में इनका पूजन, गायन, सिमरण होता रहता है। तो सब बच्चों में नम्बरवन यह जगदम्बा सरस्वती निकली। ऐसे अभी बाबा चाहते हैं कि और जो देवियाँ हैं, जिनका इतना पूजन, आह्वान हो रहा है उनको अब प्रत्यक्ष होना चाहिए। जितना बच्चे प्रत्यक्ष होंगे उतना दुनिया परिवर्तन की ओर जायेगी। स्व-परिवर्तन से ही विश्व-परिवर्तन का कार्य होना है। इसलिए स्व-परिवर्तन ज़रूरी है।

इसके बाद बाबा वहाँ से गायब हो गया। फिर मैंने मम्मा को अकेले सामने देखा तो कहा कि मम्मा आपको सब बहुत याद करते हैं। मम्मा आज दादी ने बहुत-बहुत प्यार से आपके लिए 35 प्रकार का भोग बनवाया है। दादी आपको बहुत याद करती है। तो मम्मा बोली कि बाबा ने ऐसी आत्मा को निमित्त बनाया है जो सदा उमंग-हुल्लास में रहती है और दूसरों को भी लाती है। ऐसी श्रेष्ठ आत्मा को भी आप फ़ालो करो तो आप क्या से क्या बन जाओ।

फिर मम्मा ने कहा कि देखो आने वाला समय बहुत नाज़ुक है। नाजुक समय के लिए बच्चों को तैयार रहना है। इसके लिए मम्मा सभी बच्चों को तीन शक्तियों की तीन सौगातें देती है जो हर एक सदा साथ रखना –

1- समेटने की शक्ति धारण करना। अन्दर, बाहर का सब समेटते चलो।

2- सहन करने की शक्ति धारण करना। क्योंकि कई बातें सामने आयेंगी, बीमारियाँ आयेंगी, हर बात में आपको सहन करना है। सहन करने से शक्ति आयेगी। और

3- आपके आगे बहुत सी ऐसी परिस्थितियाँ आयेंगी जिनका आपको सामना करना पड़ेगा। इसलिए सामना करने की शक्ति धारण करना।

जितना समेटने की शक्ति आयेगी उतना नष्टोमोहा बनेंगे। एक में ही बुद्धि जायेगी। जितना सहन करेंगे उतना हल्के बनेंगे। चमक बढ़ेगी। और जितना सामना करेंगे उतना ही शक्ति आयेगी।

यह तीन बातें अगर आपने जीवन में धारण कर ली तो बाबा जो चाहता है वह सहज कर सकेंगे। इसलिए मम्मा आज आप सबको याद के रिटर्न में यह 3 सौगात देती है। यह सौगात सदा साथ रखेंगे तो अनुभव करेंगे कि जो बाबा मम्मा चाहते हैं वह सहज कर सकते हैं। सिर्फ थोड़ा सा अटेन्शन देने की बात है।

फिर मम्मा को हमने यहाँ की सेवाओं के बारे में सुनाया कि सेवाओं का कितना विस्तार होता जा रहा है। तो मम्मा बोली आपके पास जो कुछ होता है वह बाबा हमें दिखाता भी है, बताता भी है। इतने में बाबा पहुँच गये। फिर मैंने कहा बाबा आज मम्मा के लिए दादी ने इतना भोग भेजा है। तो बाबा ने कहा – बच्ची में (दादी में) उमंग-उत्साह बहुत है। जो सबको उमंग-उत्साह दिलाती रहती है। ऐसे मेरी मुरब्बी बच्ची को याद देना और कहना कि बच्ची सदा बाप के साथ कम्बाइण्ड है। ऐसे कहते दादी को और सभी को बहुत-बहुत याद दी। फिर बाबा ने अपने हाथ से मम्मा को भोग खिलाया। ऐसे लगता था जैसे किसी देवी को भोग लगाते हैं, मम्मा गिट्टी खाती बाबा को देखती जैसे स्नेह में समाई हुई थी। ऐसे दृश्य देखते याद प्यार देते और लेते हुए मैं साकार वतन में पहुँच गई। ओम् शान्ति। 28-06-2000

शरीर का हिसाब चुक्तू करने में दुआओं का सहयोग

आज विशेष अपनी लाडली ईशू बहन का याद समाचार लेते हुए जब मैं बाबा के पास पहुंचीं तो बापदादा अति स्नेह स्वरूप में खड़े थे और हम स्नेह मिलन मनाते हुए आगे बढ़ती रही, बाद में बाबा को समाचार सुनाया तो बाबा मुस्कराते हुए बोले, ड्रामा में यह पार्ट बजाने का टर्न बच्ची का भी आ गया। बच्ची, बापदादा की तो अति स्नेही और सच्चा हीरा है। सर्व परिवार का भी दिल से स्नेह है। यज्ञ सेवा के रिकार्ड में नम्बरवन रही है। तो जैसे स्थूल हिसाब रखने में बहुत एक्यूरेट, होशियार रही है। ऐसे ही यह हिसाब भी चुक्तू करने में सहज होना है। बापदादा का बहुत-बहुत सहयोग है। और ब्राह्मण परिवार की दुआयें सदा बहुत साथ हैं। बापदादा की बाँहों का अमूल्य हार बापदादा की तरफ से गले में डालना।

उसके बाद बाबा ने साथ में दादी जी को बहुत प्यार से इमर्ज किया। मस्तक और माथे पर बहुत-बहुत प्यार से हाथ घुमाते, अपने होली हस्तों द्वारा ज़िगरी प्यार कर रहा था। दादी तो लवलीन थी। फिर कुछ समय बाद बाबा बोले, बच्ची को बाबा ने बहुत बड़ा जिम्मेवारी का ताज पहनाया है और बच्ची भी दिल से, हिम्मत और बाप की मदद से सहज निभा रही है। सबकी बहुत-बहुत दुआयें भी सदा मिलती रहती हैं। बापदादा रोज़ स्पेशल, बच्ची को स्नेह और सूक्ष्म सहयोग देते रहते हैं।

साथ में जगदीश भाई को भी बहुत-बहुत याद दी और कहा कि हिसाब चुक्तू करने का पार्ट बहुत अच्छा बजाया और बजा रहे हैं। सब मिलके खुश होते हैं। डाक्टर्स को भी अच्छा ज्ञान का पाठ पढ़ाया है। ज्ञान का मास्टर तो है ही, तो खुश होते हैं लेकिन साथ-साथ तबियत का भी ख्याल रखना ज़रूरी है। 05-07-2000

सर्व की शुभ भावना, बेहद की भावना ही किसी भी सेवा की सफलता का आधार है

आज बापदादा के पास अपने विशेष कार्य अर्थ जाना हुआ। बापदादा सामने खड़े हुए बहुत-बहुत स्नेह और शक्ति रूप से मिलन मना रहे थे। बस, वह मिलन तो हम जानें और बाप जानें। कुछ समय बाद बाबा बोले – आओ बच्ची, क्या सर्व के सहयोग से भविष्य राजधानी के सेवा की नींव डालने वाले बेहद के स्थान का समाचार लाई हो? बापदादा देख रहे हैं कि सर्व बच्चों का अटेन्शन इस बेहद के स्थान पर है कि क्या हुआ, क्या हुआ ... क्योंकि सबकी देहली राजधानी है। अनेक बार राज्य किया है और करना है इसलिए हर एक को अपनी राजधानी से आन्तरिक प्यार है।

बापदादा भी कहते हैं कि सर्व ब्राह्मणों को हर प्रकार से सहयोग का बीज तो अब संगम पर डालना है। सहयोग की फाउन्डेशन सेरीमनी अब मनानी है और राज्य की सेरीमनी भविष्य में मनानी है। इसलिए सब बच्चों की इस बेहद के स्थान की तरफ नज़र है। हर एक की शुभ भावना है। और सर्व की शुभ भावना, बेहद की भावना ही सफलता दिलाने वाली है। फिर बाबा ने समाचार पूछा कि अब क्या कर रहे हैं? मैंने कहा – बाबा, आज प्लैन सारा पास किया है। बाबा बोले – सबने अच्छा उमंग-उत्साह से प्लैन बनाया है। अब जितना उमंग से प्लैन बनाया है उतना ही चारों ओर सेवा के सहयोग की, शुभ भावना भी बच्चों को फैलानी है। उसके निमित्त भी विशेष निमित्त बच्चों को ही बनना है। यह संकल्प की सेवा भी करनी है। बच्चे सब यज्ञ के राज़ों को जानने वाले हैं और आदि से अब तक की विधि को भी जानते हैं कि आते जाना, लगाते जाना, यही रीति ब्राह्मणों की है। ऐसे अब भी आता जाये, लगाते जाओ, ड्रामा में अब तक हर एक कार्य सहज सम्पन्न हुआ है, अब भी होना ही है लेकिन इस बेहद के स्थान की विशेषता बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि ''कम खर्चा बाला नशीन'' का एक्जैम्पुल बनाना है। जितना हो सके यह भी ध्यान रखना है कि भिन्न-भिन्न शहरों में कोई-कोई बच्चों के सम्पर्क वाले इन्डस्ट्रियल, बिजनेसमैन जो मैटेरियल देने में सहयोगी बन सकते हैं, उन लोगों को भी सहयोगी बना सकते हैं। उन्हों को भी चावल-चपटी के सहयोग से भविष्य अधिकारी बना सकते हैं। ऐसे बेहद की सेवा में अपना सहयोग देने का चांस अच्छा है। सभी ब्राह्मणों को अपना कार्य समझ स्वयं को आफर कर आफरीन लेने का चांस है।

ऐसे उमंग-उत्साह हिम्मत दिलाते हुए बापदादा बहुत-बहुत मीठा मुस्कराते हुए हमें देख रहे थे। मैं भी बापदादा की बातों को सुन-सुन हर्षित हो रही थी। बाद में बाबा बोले – और क्या समाचार लाई हो? मैंने कहा बाबा अब राखी बन्धन आना है। दादी जी ने कहा है बाबा को कहना कि बाबा की अब क्या प्रेरणा है? तो बाबा बोले – बच्ची रक्षा बन्धन तो हर वर्ष मनाते ही हैं। सबको सन्देश देते हैं, वह तो करना ही है। लेकिन और पावरफुल वायब्रेशन से परिवर्तन कराने की शुभभावना से करना है। साथ-साथ बापदादा अब यही चाहते हैं कि सर्व ब्राह्मण बच्चे अब फास्ट गति से सम्पन्न बनें। उसके लिए हर एक अपनी हिम्मत से चल ही रहे हैं लेकिन अब हर एक को यह जिम्मेवारी की राखी बांधनी है कि जो भी साथी साथ रहते हैं वा जिज्ञासु हैं, सम्पर्क वाले हैं उन्हों के संस्कारों में मन्सा-वाचा-कर्मणा में जो भी कमी कमजोरी है, मुझे अपनी हिम्मत और बाप की मदद से उसको सहयोग दे आगे बढ़ाना है, वायुमण्डल बनाना है। हर एक को समस्या समाधान स्वरूप बनना है। विघ्न-विनाशक स्वरूप बनना है, बनाना है। इसके लिए 1- समाने की शक्ति 2- सहन शक्ति और 3- समस्या का सामना करने की शक्ति, अब त्रिमूर्ति शक्तियों के लड़ियों की राखी मन में संकल्प में बाँधनी है क्योंकि अब समय, प्रकृति, आत्माओं की पुकार है कि आओ हमारे मालिक, परिवर्तक आओ, हमें अब शुद्ध स्वरूप में परिवर्तन करो। क्या यह पुकार बच्चों के कानों में नहीं गूँजती है? तो अब बाबा तीव्र से तीव्रगति देखने चाहते हैं और यही शुभ आशा हर बच्चों में रखते हैं। फिर बापदादा ने सभी बच्चों को नाम सहित बहुत-बहुत मीठी दृष्टि देते याद-प्यार दिया।

17-07-2000

माइक्स की परिभाषा

बापदादा से ड्रामा अनुसार मिलन मनाने का गोल्डन चांस तो मिलता ही है। तो आज भी लण्डन, अमेरिका की सेवा का समाचार ले जाना हुआ। बापदादा तो बच्चों की हिम्मत, उत्साह को देख, सुन खुश होते हैं और दिल ही दिल में बधाईयाँ भी देते हैं। जाते ही बाबा का नयन मिलन और दिलाराम का दिल का प्यार मिला और बापदादा ने बोला – बच्ची, आज सेवा का समाचार लाई हो? मैंने कहा बाबा आपको तो हमसे पहले बच्चों के संकल्प पहुँच जाते हैं। हमें तो लिखत बाद में मिलती है। बाबा मुस्कराये और कहा – बच्ची, यह भी आपका विचित्र मीठा पार्ट है जो बहुत गुप्त भाग्य से प्राप्त होता है। ब्रह्मा बाप भागीरथ बना तो तुम्हारा भी भाग्यवान न्यारा और सर्व का प्यारा पार्ट है। यह भी विशेष है। ऐसे कहते ही ऐसे लगा कि बापदादा हमें नज़र से निहाल करते, हमारे भाग्य की लकीरों को देख बहुत हर्षित हो रहे हैं। हम भी लव में लीन थी। फिर बाबा बोले – जयन्ती बच्ची और गायत्री बच्ची को माइक्स निकालने का बहुत उमंग है और ड्रामा अनुसार अमेरिका लण्डन में कोई-न-कोई निमन्त्रण भी आफर होते रहते हैं। यह प्रोग्राम की आफर भी अच्छी है। दोनों बच्चियाँ और साथी सब स्थान में मिक्स हो सेवा करने में भी अनुभवी हैं। भले मधुबन जैसा वातावरण तो वहाँ नहीं होगा लेकिन हर कदम में बच्चो को सफलता तो मिलती ही है। भल आध्यात्मिकता में सबकी एक जैसी रूचि नहीं होती लेकिन आपकी नॉलेज तो आलराउण्ड है और वर्ल्ड वाइड है। वैल्युज़ भी हैं, एज्युकेशन भी है तो मेडीटेशन की भी है। समस्याओं का हल भी है, टेन्शन फ्री बनाने की भी है और आपकी त्यागी जीवन है। तो जैसा वायुमण्डल में लहर देखो वैसी लहर से उतनी कर सकते हो क्योंकि विशेष आत्माओं का संगठन है और बनी बनाई स्टेज है तो सबको सन्देश देने और भविष्य सम्पर्क बढ़ाने की सेवा तो है ही है, इसलिए जा सकते हैं। बाकी डायलाग रखने का वा बड़ा प्रोग्राम करने का है, यह बच्चों के ऊपर है। जितना समय और हिम्मत से कर सकते हैं, उस अनुसार बनावें। जैसे कहते हैं वैसे ही बड़ा करना है, ऐसी कोई बात नहीं है। सिर्फ सन्देश और सम्पर्क में भी फायदा है। बाकी हिम्मत, समय, सहयोग है तो करो। फिर गायत्री बहन को यादप्यार देते बाबा बोले, बच्ची ने माइक्स की परिभाषा पूछी है तो माइक्स तीन प्रकार के हैं –

1- जो आध्यात्मिकता के महत्व को मानते हैं और सम्पर्क सहयोग में आने वाले हैं। 2- आध्यात्मिकता का महत्व अच्छा मानते हैं लेकिन हिम्मत वा समय नहीं है, समीप और सहयोग में आने का। 3- जो आध्यात्मिकता के महत्व को नहीं जानते लेकिन आपकी जनरल नॉलेज को, जीवन को, सेवा भाव को, त्याग को अच्छा मानते हैं वह औरों को समीप कनेक्शन में ला सकते हैं, सहयोगी बना सकते हैं।

तो तीन प्रकार वालों की ही अपनी-अपनी विशेषता कार्य में आ सकती है। बाकी अब तक जो डायलाग हुए हैं उसकी रिजल्ट अच्छी रही है। बाकी कुछ लगभग नाम या रूप चेंज किया तो भी ठीक है। बाकी वर्तमान समय वर्ल्ड में जो टॉपिक चल रही है वही करने से अच्छा होता है।

उसके बाद बाबा ने अपनी दादियों को खास याद दी, कहा बहुत मुहब्बत से आलराउन्ड सेवा कर रही हैं और सर्व डबल विदेशी बच्चों को यादप्यार और वरदान दिया कि 'सदा निर्विघ्न और फास्ट गति से उड़ते रहो और उड़ाते रहो' अच्छा।

30-07-2000

अब घर जाना है - इस मन्त्र की स्मृति से अब उपराम बनो

आज सतगुरुवार के दिन मीठे बाबा के साथ-साथ प्यारी दीदी का भी याद प्यार लेकर जब बाबा के पास पहुँची तो देखा, जैसे साकार में दीदी बाबा के पास गद्दी पर बैठकर रूहरिहान करती थी, ऐसे ही बाबा के साथ वतन में बैठी थी। दीदी के चेहरे से ऐसे लग रहा था जैसेकि वह बाबा से कुछ पूछ रही हैं। जैसे ही मैं नजदीक जाकर पहुँची तो बाबा भी मुस्कराये, दीदी भी मुस्कराई। मैंने पूछा दीदी आप क्या बात कर

रही थी? तो दीदी ने कहा बाबा से पूछो। बाबा ने कहा दीदी से ही पूछो। तो दीदी बोली – मैं बाबा से पूछ रही थी कि हमारा आपस में मिलन कब करायेंगे? एडवांस पार्टी और यह पार्टी कब आपस में मिलेगी? बाबा, कितना दिन और इन्तजार करना पड़ेगा? अभी तो वतन में ही मिलते हैं। लेकिन प्रैक्टिकल में हम कब मिलेंगे? वह दिन कब आयेगा? तो बाबा मुस्कराता था। बाबा ने कहा – बच्चे तुम तैयार हो? हमने कहा – बाबा, हम ड्रामाप्लैन अनुसार तो तैयार हैं। तो बाबा ने कहा – जैसे एडवांस पार्टी तीव्र पुरुषार्थ कर रही है, वैसे आप लोग पुरुषार्थ कर रहे हो कि हम भी कुछ करें। देखने में आता है कि बच्चे समय का इन्तजार कर रहे हैं। सोचते हैं कि समय आवे और बाबा ले चले और बाबा कहता है – बच्चे, रेडी बनो तो मैं बच्चों को ले चलूँ। मैंने पूछा – बाबा, आप क्या चाहते हैं? किसमें रेडी होना है? तो बाबा ने कहा दादी से पूछना। मैंने कहा बाबा हम तो अभी आपके पास आये हैं, आपसे पूछ रहे हैं। तो बाबा ने दीदी को कहा कि दीदी आप बताओ। तो दीदी कहे बाबा यह तो आप जानो, नीचे वाले जानो। बाबा तो जवाब के समय मुस्करा देता है। कहता है धीरज रखो। तो दीदी ने कहा कि बाबा कहता है तो ज़रूर कोई कमी होगी। मैंने कहा दीदी, आपकी पालना लिये हुए बहुत बच्चे आये हैं, आपकी पालना ली हुई है। आप कोई सन्देश दो तो दीदी बोली कि पालना की तो रिज़ल्ट देनी होती है। जैसे बाबा कहे वैसे बनकर दिखायें तब कहेंगे बाबा की पालना का रिटर्न दे रहे हैं। दीदी ने कहा– मुझे लगता है कि अभी तक गम्भीरता से सब पुरुषार्थ नहीं कर रहे हैं। सोचते हैं, हो जायेगा। परन्तु बाबा कहता है सब तरफ से संगठित रूप में चारों तरफ घेराव डालो तब प्रत्यक्षता हो।

अपने अन्दर की लगन आवे, चिंता लग जावे कि मुझे यह करना ही है तो पुरुषार्थ की रफ्तार अपने आप बढ़ेगी। कहने से नहीं। अपनी लगन चाहिए। प्रोग्राम से कोई पुरुषार्थ करता है तो जितने दिन का प्रोग्राम उतने दिन का पुरुषार्थ, फिर वैसे का वैसे हो जाता है। प्रोग्राम से प्रोग्रेस नहीं होगी। अपने दिल की लगन से, चिंतन से, चिंता से पुरुषार्थ में तीव्रता आयेगी। दूसरे भी महसूस करेंगे तो उन्हें भी प्रेरणा मिलेगी। अभी यह ट्राई करके देखो।

फिर बाबा ने कहा – मैं तो बच्चों को सम्पन्न बनने की भिन्न-भिन्न युक्तियां देता रहता हूँ, अभी बच्चों का काम है अटेन्शन देकर चलना। परन्तु बच्चे अटेन्शन कम देते हैं। जब मैजारटी का पुरुषार्थ उमंग-उत्साह, तीव्रता वाला होगा तो उन्हें देखकर दूसरे भी पुरुषार्थ करेंगे। पुरुषार्थ तो बच्चे कर रहे हैं लेकिन जो बाबा चाहता है, उस अनुसार स्वयं को समर्थ नहीं बनाया है। अभी तक बच्चों का व्यर्थ बहुत चलता है। जब तक व्यर्थ को समर्थ नहीं बनाया है तब तक पुरुषार्थ आगे नहीं बढ़ेगा। व्यर्थ के कारण बच्चे कई प्रकार की भूलें करते रहते हैं। भूले करने के बाद फिर इतने निराश, हताश हो जाते हैं, जो चाहते हुए भी फिर पुरुषार्थ नहीं कर पाते। बाबा तो शुभ भावना, शुभ कामना रखता है, सकाश देता है, हिम्मत देता है, लेकिन बच्चे उसे ग्रहण करें, यह बच्चों पर डिपेन्ड करता है।

फिर दीदी ने कहा कि अभी मुझे दादी का बहुत ख्याल आता है, दादी अकेली है। मैंने कहा दादी को भी दीदी आप बहुत याद आती हो। आपकी पालना, आपकी शिक्षायें हर एक को याद आती हैं। तो जैसे दीदी कहीं ख्यालों में उड़ गई। बाबा दीदी को बहुत पावरफुल सकाश दे रहा था। फिर बाबा ने कहा– बच्ची, तुम तो दीदी के लिए भोग लेकर आई थी। तो बाबा ने दीदी को लाइट दी और कहा – पहले दीदी को भोग खिलाओ। तो दीदी ने कहा, नहीं बाबा को खिलाओ। फिर बाबा ने दीदी को, दीदी ने बाबा को भोग खिलाया। फिर बाबा ने कहा अच्छा सभी को मेरी विशेष याद देना और कहना कि समय को देखते हुए स्वयं को सम्पन्न बनाने का पुरुषार्थ करो, यही बाबा की भावना है। फिर दीदी से मैंने कहा कि आप भी कोई सन्देश दो। तो दीदी ने कहा कि सभी को कहना कि अन्त का जो मन्त्र है –''अब घर जाना है''। यह मन्त्र अगर सभी याद रखें तो वृत्ति अपने आप उपराम हो जायेगी। बाबा अपने आप याद आयेगा। समेटने की शक्ति भी आ जायेगी। अब घर जाना है, यह अन्त का मन्त्र है। यही मन्त्र अब अन्त के समय सभी को पक्का करना है। ऐसे कहते दीदी और बाबा से मिलते मैं अपने वतन में आ गई। अच्छा - ओम् शान्ति।

12-08-2000

स्व और सर्व प्रति विघ्न-विनाशक, सिद्धि नायक बन उड़ते चलो

आज बापदादा के पास सन्देश लेकर जाना हुआ। बापदादा दूर से ही बाँहें पसार ''आओ बच्ची, आओ बच्ची'' कहकर मिलन मना रहे थे। हम भी बाबा की बाँहों में समा गई। जैसे नदी सागर में समा गई। वह लवलीन स्थिति तो अति प्यारी, अति न्यारी है। आप सब भी एक सेकण्ड के लिए उस अनुभव में खो जाओ तो बहुत मजा आयेगा। उसके बाद बाबा बोले, बच्ची क्या सन्देश लाई हो? मैंने कहा, बाबा आजकल तो आपकी दी हुई बेहद के स्थान की गिफ्ट (देहली जमीन) की ही चर्चा हो रही है। भण्डारी तो आप भरते ही हो और आगे भी आपने कहा है, आता जाए और लगाते जाओ। तो प्लैन बहुत अच्छा बेहद का बना है, बनाने वालों में भी उत्साह अच्छा है। बाबा मुस्कराते हुए बोले, उमंग तो रहना ही चाहिए, तब ही स्थान में भी वह वायब्रेशन भरता है। मेरे चारों ओर के भारत व विदेश के ढेर बच्चों की बूंद-बूंद से यह सेवा के स्थान का तलाव भर रहा है और भरता ही रहेगा। सबके पास अपनी राजधानी के स्थान का प्यार है, उमंग है।

फिर हमने देहली जमीन के फाउण्डेशन का प्रोग्राम बताया। बाबा बोले – बच्चे बहुत अच्छा प्लैन बनाया है कि सर्व के सहयोग से सर्व कार्य सहज हो ही जाना है। उसके बाद बाबा को सुनाया कि आजकल भारत में विशेष फार्म भराने की सेवा

का उमंग बहुत अच्छा है। सब खूब बिजी रहते। बाबा बोले, बच्चे ईश्वरीय कार्य को वरदान है जो भी सेवा करेंगे उसमें सफलता तो मिलनी ही है। तो भारत वालों ने साइन कराने की सेवा में सफलता अच्छी प्राप्त की है और मेहनत भी खुशी से की है। बापदादा भी चारों ओर के दृश्य देखते हर्षित होते रहते हैं और दिल से मुबारक भी देते रहते हैं।

फिर मैंने फारेन वालों की सर्विस का समाचार सुनाया कि कैसे सभी ग्रुप्स् में रिट्रीट करते स्व-उन्नति और सेवा के प्लैन बना रहे हैं। बाबा बोले – फारेन भारत से कम नहीं तो भारत फारेन से कम नहीं है। जहाँ तहाँ बाप से प्यार, सेवा से प्यार है इसलिए आगे बढ़ते जाते हैं और नये-नये देशों में भी भिन्न-भिन्न लोगों की सेवा का प्लैन बहुत अच्छा बनाते रहते हैं। बापदादा देखते रहते हैं कि कैसे युक्ति से, युक्तियुक्त रीति से सर्व धर्म की आत्माओं की सेवा कर रहे हैं। बापदादा तो यही देखते कि बच्चे सेवा से सर्व की दुआयें बहुत जमा करते रहते हैं। जो दुआयें उन्हें अपने पुरुषार्थ में भी बहुत सहयोग दे रही हैं। बाबा तो 'वाह मेरे लाडले बच्चे वाह', यही गीत गाते रहते हैं।

हमने देखा बापदादा भारत चाहे विदेश के बच्चों की सेवा देख बहुत-बहुत स्नेह मूर्त से हर बच्चे को दिल ही दिल में प्यार कर रहे थे और ऐसे प्यार में समा गये जो कुछ समय तो मैं देखते ही रह गई। बाद में वर्तमान समय राखी का उत्सव सब तरफ बहुत उत्साह से हो रहा है, वह समाचार सुनाया। तो बाबा बोले – हिम्मते बच्चे मददे बाप, बच्चों की मुहब्बत से मेहनत देख बापदादा भी बच्चों पर बलिहार जाता है और स्नेह से थकावट मिटाता रहता है। राखी पवित्रता का फाउन्डेशन है ही लेकिन साथ-साथ समय समीप होने कारण बापदादा हर एक बच्चे को दृढ़ संकल्प की राखी बाँध रहे हैं कि अब स्व और सर्व के प्रति 'विघ्न-विनाशक, सिद्धि नायक' बन आगे उड़ते जाओ। बीती को बिन्दी लगाओ और वर्तमान के हर संकल्प, समय, शक्तियों को जमा करते जाओ क्योंकि जमा करने का समय बहुत कम है। जमा का खाता बढ़ाना - यही तीव्र पुरुषार्थ की विधि है, उससे ही डबल लाइट बन सहज उड़ती कला का अनुभव करेंगे। बस, अब वेस्ट खत्म और बेस्ट का खाता बढ़ाना ही है। ऐसे दृढ़ संकल्प की राखी स्वयं को और साथियों को बांधो। बाकी बापदादा आज बच्चों पर बहुत-बहुत खुश थे। और सर्व को सदा खुशी का वरदान दे रहे थे। अच्छा-ओम् शान्ति। 04-09-2000

समय की पुकार - हद की छोटी-मोटी बातों से व संस्कार स्वभाव से फ्री रहो

आज बापदादा के पास चारों ओर के सेवा का समाचार लेकर गई तो जाते ही क्या देखा कि बापदादा वर्ल्ड के गोले पर खड़े हैं और बहुत ही शक्तिशाली शीतल लाइट-माइट के रूप में विश्व की सर्व आत्माओं को सकाश दे रहे हैं। बाबा इसी कार्य में इतने मग्न थे जो हमें देखा ही नहीं, मैं भी अपने को उसी रूप में अनुभव करने लगी। कुछ समय के बाद बाबा ने दृष्टि दी। मुस्कराते हुए इशारा किया ''आओ बच्ची आओ।'' मैं भी बाबा के साथ ग्लोब पर खड़ी हो गई।

बाबा बोले, बच्ची आत्माओं का दृश्य देखा? अब तो बाप समान बच्चों की, कौन सी सेवा की आवश्यकता है? देख रही हो कि सर्व आत्मायें कितनी भिन्न-भिन्न प्रकृति के प्रकोप से, समस्याओं से दु:खी हैं। सुख की एक भी किरण नज़र नहीं आ रही है। ऐसे समय में आप बच्चों को अब बेहद के सेवा का विशेष प्लान बनाना चाहिए। अपने-अपने सेवास्थानों की सेवायें व छोटी-मोटी बातों में, हद के कमजोर संस्कार, स्वभाव से अपने को फ्री रखना आवश्यक है। जैसे औरों को ''समय की पुकार'' पर अटेन्शन दिलाते हो। ऐसे स्वयं भी समय की पुकार सुन रहे हो? अब तक जो भी सभी बच्चों ने सेवा की है, बहुत अच्छी की है। बापदादा भी देख खुश हैं परन्तु अब ''ओ मेरे बेहद बाप के मालिक के बालक, बेहद के राज्य अधिकारी अब बेहद के सेवाधारी बनने का समय है।'' समय, प्रकृति आप ईष्ट देवी-देवता आत्माओं को पुकार रही है। और फिर बापदादा हमारी अँगुली पकड़ चलते रहे और समाचार पूछते रहे।

मैंने सुनाया, बाबा न्युयॉर्क में जानकी दादी और जो भी उनके साथ प्रोग्राम में गये हैं, वहाँ पर रिज़ल्ट बहुत अच्छी आयी है। आपके इशारे प्रमाण विश्व के सर्व धर्मात्माओं ने और अन्य आत्माओं ने संदेश सुना और शान्ति का अनुभव किया। तो बाबा मुस्कराये और उस समय ऐसे लगा जैसे बापदादा के सामने बेहद सेवा का ग्रुप बाबा के नयनों में समाया हुआ था और बाबा मीठा-मीठा मिलन मना रहे थे। उसके बाद बाबा बोले – बच्चों को इस डायमण्ड युग - संगमयुग में दृढ़ता की डायमण्ड चाबी बाप द्वारा मिली हुई है। जनक बच्ची और ग्रुप ने दृढ़ता की गोल्डन की (Golden key) द्वारा सफलता प्राप्त करने का सबूत दिखाया है। जो भी टाइम मिला सन्देश तो मिल गया ना। बच्चे हिम्मत से मदद के पात्र बने। सभी बच्चों को बापदादा बाहों में समाकर मुबारक दे रहे हैं।

अभी फिर ''स्टेट आफ वर्ल्ड फोरम'' की कान्फ्रेन्स का प्रोग्राम बनाया है, वह भी अच्छा है। ड्रामानुसार एक तरफ धर्मनेतायें, दूसरी तरफ राजनेतायें दोनों वर्गों की सेवा का इकट्ठा चांस मिला है। 'कॉल आफ टाइम' के टापिक पर सन्देश और डिक्लरेशन देने का प्लैन भी अच्छा है। ऐसा करने से सबको स्पष्ट हो जायेगा कि ब्रह्माकुमारियों की सेवा का एम-ऑब्जेक्ट क्या है? विश्व की आत्माओं के लिए कितना रहम और उमंग है। लक्ष्य यही रखना है कि किसी भी रूप में कॉन्टेक्ट और कनेक्शन में सहयोगी बनाना है। आगे चलकर कई कार्य करने कराने के निमित्त बन सकते हैं।

इसके बाद बाबा को दादी का आस्ट्रेलिया का समाचार सुनाया। बाबा बोले कि चक्रवर्ती राजा बनने वालों को अब सेवा का चक्र लगाना पड़ता है फिर चक्रवर्ती राजा बन विश्व राजे का पार्ट बजाना है। बच्ची (दादी) की यही विशेषता बापदादा देखते हैं कि सदा स्वयं भी

उमंग-उत्साह में रहती और दूसरों को भी कोई-न-कोई प्लैन सोच उमंग-उत्साह में लाती। ये ब्रह्मा बाप समान बनने का बच्ची को वरदान है। दोनों दादियाँ अपने ग्रुप के साथ अच्छा पार्ट बजा रही हैं।

अब तो तुम्हारा भी (गुल्जार दादी का) चक्र लगाने का पार्ट है। हरेक बच्चों के कदम-कदम में पद्मों की कमाई जमा हो रही है। फिर अफ्रीका के बच्चों की भी बाबा को याद दी। बाबा ने कहा कि बच्चे वहाँ रहते-रहते अनुभवी हो गये हैं। हर एक को लाइट-माइद्यें रह कर बेहद सेवा के निमित्त बनना है। अलबेले भी नहीं बनना है, अटेन्शन और टेन्शन फ्री - दोनों का बैलेन्स रखना है। ऐसे कहते वेदान्ती बहन, सेन्टर के सर्व भाई-बहनों और टीचर्स बहनों को बहुत-बहुत स्नेह से बापदादा ने दृष्टि दी और सदा डबल लाइट रहने का वरदान दिया। ऐसे मिलन मनाते अपने साकार वतन में पहुँच गई। ओम शान्ति।

14-09-2000

सूक्ष्म इन्द्रियों (मन-बुद्धि-संस्कार) को कण्ट्रोल करने की एक्सरसाइज़ करो

आज जब मैं बाबा के पास वतन में गई तो जैसे बाबा सदा ही बाँहें पसार कर कहते हैं -''आओ बच्ची, आओ बच्ची'', ऐसे ही कहकर बुला रहे थे। जब मैं बाबा के पास पहुँची तो बाबा ने अपनी बाँहों में समा लिया। आप सब भी यह मीठा दृश्य देख रहे हो ना कि बाबा कैसे बाँहें पसार कर ''आओ बच्चे कहकर बुला रहा है!'' आप सब भी बाबा की बाँहों में आ गये, समा गये! इसके बाद हमने देखा कि बाबा के हाथ में कोई चीज़ है, जब मेरा अटेन्शन बाबा के हाथ की तरफ गया तो बाबा ने हाथ मेरे सामने किया। तो मैंने देखा कि बाबा के हाथ में चमकता हुआ छोटा सा बीज था। बाबा ने पूछा – बच्ची, देख रही हो यह क्या है? मैं सोचने लगी कि ये बाबा के हाथ में क्या है? किस रहस्य से है? मैं देख ही रही थी तो बाबा ने पूछा बच्ची तुम लण्डन से आई हो ना! लण्डन विदेश सेवा का बीज है तो बाबा बड़े प्यार से वह बीज देख रहा है। बाबा ने पूछा – बच्ची क्या समाचार लाई हो? मैंने कहा बाबा सभी खुशी में नाच रहे हैं और सबके मन में यही एक संकल्प है कि हमें बाबा

की आशाओं को पूरा करना है। बाबा ने कहा इसलिए तुम यह दीपक लाई हो। (भोग के समय मोमबत्ती जलाई गई है) बापदादा की आशाओं का दीपक लण्डन निवासियों ने जलाया है। सभी के मन में भी यही शुभ संकल्प है कि हम जल्दी से जल्दी बापदादा की आशाओं को पूरा करें।

फिर बाबा ने कहा – चलो बच्ची, अभी बापदादा सैर कराते हैं, जैसे साकार में बाबा हाथ में हाथ पकड़कर ले जाते थे, ऐसे ही बाबा ने हाथ पकड़ा और हम थोड़ा ही आगे चले तो 3 कमरे बने हुए थे और उन पर लिखत थी –''रूहानी एक्सरसाइज़''। हमने सोचा रूहानी एक्सरसाइज़ और 3 कमरों का क्या मतलब है! बाबा ने कहा-चलो दिखाऊँ, तो क्या देखा-

पहले कमरे पर लिखत थी - संकल्प कन्ट्रोल करने की एक्सरसाइज़

दूसरे कमरे पर लिखत थी - बुद्धि की एक्सरसाइज़।

तीसरे कमरे पर लिखत थी - संस्कार की एक्सरसाइज़।

हर एक कमरे में कुछ भाई-बहनें बैठे थे तथा एक्सरसाइज़ कर रहे थे। बाबा ने पूछा – बच्ची, आज के ज़माने में सबसे ज़्यादा ध्यान किस बात पर है? फिर बाबा ने सुनाया कि देखो आजकल अनेक प्रकार की दवाईयाँ हैं, होम्योपेथिक, आयुर्वेदिक आदि-आदि, फिर भी एक्सरसाइज़ के लिए सभी डाक्टर्स सलाह देते हैं। सबका इतना अटेन्शन एक्सरसाइज़ पर क्यों है? क्योंकि आपकी गोल्डन एज में तो कोई दवा होगी ही नहीं। तो अभी नेचर के नजदीक आ रहे हैं। तो अभी बापदादा भी यही चाहते हैं कि बच्चे तीनों प्रकार की एक्सरसाइज़ में होशियार हो जाएँ। एक्सरसाइज़ में क्या होता है? जो भी कर्मेन्द्रियाँ हैं उनको जहाँ चाहे वहाँ मोड़ सकते हैं, वह इज़ी हो जाये, टाइम नहीं लगे। तो बाबा चाहते हैं कि यह जो सूक्ष्म इन्द्रियाँ (मन-बुद्धि और संस्कार) हैं, इन पर भी बच्चों का पूरा कन्ट्रोल हो। अभी तक कई बच्चे संकल्पों के आधार पर कहाँ-कहाँ रुक जाते हैं, कभी कार्य में, कभी निगेटिव में अटकने के कारण स्वयं को पूरा मोड नहीं सकते हैं। व्यर्थ की बजाए सेकेण्ड में शुभ संकल्प कर सकें, वह अभी नहीं है इसलिए अवस्था कभी थोड़ी ऊपर, कभी नीचे होती रहती है। तो बाबा अभी चाहते हैं कि मेरे बच्चे एक सेकेण्ड में अपने संकल्प को जहाँ चाहें वहाँ स्थित कर सकें। चेंज भी कर सकें और उस स्थिति में टिक भी सकें। अभी भी चेंज करते हैं परन्तु सेकण्ड में चेन्ज नहीं करते, टाइम लग जाता है। जैसे शरीर की एक्सरसाइज में वो कहते हैं - वन, टू, थ्री... ऐसे ही मन-बुद्धि व संस्कार को एक सेकण्ड में नहीं बदलते, टाइम लगाते हैं। दूसरा - स्थित हो जाना माना चेंज होना। व्यर्थ को चेंज करके शुद्ध संकल्प की स्थिति में टिकने में भी अभी टाइम लगता है तो अन्तर भी पड़ जाता है। तो बाबा ने सुनाया कि इसमें एक तो स्थिरता चाहिए, दूसरा परिवर्तन चाहिए।

फिर बाबा ने कहा कि बुद्धि का काम है निर्णय करना। निर्णय शक्ति ऐसी हो जो बाबा की श्रीमत है वह क्लीयर सामने आ जाए, सोचना न पड़े, ठीक होगा या नहीं, यह करें या नहीं? लेकिन श्रीमत को सामने रखकर एक सेकण्ड में निर्णय कर लें।

तीसरा - जो भी पुराने संस्कार रहे हुए हैं वह अभी निकल रहे हैं। जैसे बीमारी जाने वाली होती है तो शरीर को छोड़ देती है। ऐसे ही पुराने संस्कार भी पहले बाहर निकलेंगे फिर छोड़ेंगे। तो अभी ब्राह्मण संस्कार एकदम नेचरल हो जाएँ, इसके लिए यह एक्सरसाइज़ बहुत ज़रूरी है। संस्कार ही खींचते हैं। 'संस्कार से ही संसार बनता है'। आपके नेचरल संस्कार जब बाप समान हो जायेंगे तभी दैवी संसार की स्थापना होगी।

तो सबसे ज़्यादा इस बात में एक्सरसाइज़ की आवश्यकता है। संस्कार परिवर्तन का पूरा अटेन्शन हो। बच्चों के संस्कार ही प्रकृति के संस्कार परिवर्तन करेंगे। अभी प्रकृति भी कितने खेल दिखाती रहती है, बच्चे भी कहीं-कहीं संस्कार के खेल दिखाते तो प्रकृति भी खेल दिखाती। इसलिए बापदादा चाहते हैं कि बच्चे तीनों एक्सरसाइज़ में नम्बरवन हो जाएँ।

फिर बाबा को भोग स्वीकार कराया। बाबा ने बहुत प्यार से भोग स्वीकार किया। आपने बाबा को प्यार से भोग लगाया और बाबा ने सभी के दिल का प्यार स्वीकार किया। फिर बाबा ने दादी जानकी, जयन्ती बहन व सभी निमित्त टीचर्स को विशेष याद दी। बाबा ने कहा – बच्ची की हिम्मत पर पद्मगुणा बाबा की मदद है। ऐसे वरदान देते बाबा ने हमें साकार वतन में भेज दिया। ओम् शान्ति्।

16-09-2000

सहनशक्ति का पाठ पढ़ लो तो बाकी सब शक्तियाँ स्वत: आ जायेंगी

आज अमृतवेले जब आप सबका यादप्यार लेकर बाबा के पास पहुँची, तो बाबा सामने ही खड़े थे और दृष्टि द्वारा मिलन मना रहे थे। जैसे मैं आगे बढ़ती गई वैसे क्या देखा कि मेरे पीछे-पीछे और भी आ रहे हैं। तो जैसे ही हम बाबा के पास पहुँची तो और भी अनेक भाई-बहिनें हमारे साथ-साथ वतन में पहुँच गये, और सभी ऑटोमेटिक त्रिशूल की डिजाइन में खड़े हो गये, और जो त्रिशूल के बीच में थोड़ा ऊंचा होता है, वहाँ पर बाबा हमें साथ लेकर खड़े हो सबको दृष्टि देने लगे। बाबा के हाथ में बहुत चमकदार हीरों के सुन्दर तिलक थे, जो बाबा ने सभी पर ऐसे फेंके जो हर एक के मस्तक पर ३ के आकार में ऑटोमेटिक लगते गये। बाबा को लगाने की आवश्यकता नहीं थी। फिर दादी जानकी, जयन्ती बहन और जो भी मुख्य बहिनें
हैं उन सबको बाबा ने इमर्ज करके अपने साथ खड़ा किया और कहा कि देखो यह सब मेरे विजयी रत्न हैं। मैंने कहा बाबा आज आपने किन्हों को इमर्ज किया, हम तो सबको पहचान नहीं सकी। तो बाबा ने कहा जो भी विदेश में सेवाकेन्द्र, गीता पाठशाला हैं उनके निमित्त एक-एक रत्न को विशेष आज वतन में इमर्ज किया है।

बाबा ने कहा – देखो यह संगठन कितना प्यारा है। फिर एक सेकण्ड में वो जो त्रिशूल बना हुआ था वो सभी ऐसे मिल करके बाबा की बाँहों में आ गया, जैसे सभी के गले में बाबा की बाँहों का हार पड़ गया। बाबा की बाँहें बहुत लम्बी-लम्बी, बड़ी-बड़ी होती गई और सभी के गले में वो हार पड़ता गया। फिर यह सीन पूरा हो गया। जो इमर्ज थे वो मर्ज हो गये और मैं अपने को बाबा के पास देखने लगी। तो बाबा ने मेरे से पूछा – बच्ची, आज क्या समाचार लाई हो? मैंने कहा बाबा आपके पास तो सब पहले ही पहुँच जाता है। फिर भी बाबा ने कहा तुम अपनी ड्युटी बजाओ। तो हमने सुनाया कि बाबा आज ग्लोबल हाउस के साथ जो स्थान मिल रहा है, उसमें फाउण्डेशन डालना है अथवा पाँव घुमाना है, उसके प्रति ही आये हैं। तो बाबा ने जैसे उसी सेकण्ड उस स्थान को वतन में इमर्ज कर दिया और बाबा जैसे ऊपर किसी स्थान पर खड़े हो गये, साथ में हम भी थी तो बाबा ऊपर से चारों तरफ घूमते हुए दृष्टि दे रहे थे।

फिर बाबा ने कहा कि लण्डन अथवा यू.के. निवासी और उनके जो भी साथी हैं, सबको बाबा मुबारक के साथ वरदान देते हैं, हिम्मत बहुत अच्छी है। कोई भी प्लैन बनता है तो सोचते नहीं हैं कि क्या होगा, कैसे होगा? क्या, क्यों का भाषण नहीं करते हैं लेकिन हिम्मत रखते हैं और सबके दिल से निकलता है ''हाँ जी।'' तो जहाँ हाँ जी, हाँ जी है वहाँ हजूर भी हाजिर हो जाता है और बाबा के घर वा स्थान भी सहज ही बन जाते हैं और सेवा भी चालू हो जाती है। अभी तक कोई ऐसा स्थान नहीं है, जो ऐसे ही खाली पड़ा हो, सेवा नहीं चल रही हो। यह भी एक वरदान है जो हिम्मत से सबके दिलों में हजूर हाजिर हो जाता है इसलिए सफलता बहुत सहज है। मेहमानों की भी सेवा बहुत अच्छी होती है।

फिर बाबा ने पूछा – बच्ची, और क्या समाचार लाई हो? मैंने कहा बाबा सभी जगह सेवा तो बहुत अच्छी चल रही है लेकिन सबके दिलों में एक संकल्प है कि जैसे बाबा चाहता है, ऐसे हम जल्दी-से-जल्दी बाप समान बन जाएँ। हम लक्ष्य तो ऐसा रखते हैं और जब बाबा पूछते हैं तो हाथ भी उठा लेते हैं लेकिन बीच-बीच में यह माया का खेल बाबा क्यों दिखाता है। तो हमने बाबा को कहा कि बाबा जब सबकी इच्छा है और दृढ़ संकल्प है कि हमको बाप समान बनना ही है फिर बीच-बीच में यह खेल क्यों होता है? कभी संस्कारों का, कभी व्यर्थ संकल्पों का, कभी अभिमान का, कभी अपमान का.... तो बाबा बहुत मीठा मुस्कराया। मैंने कहा बाबा मैं तो सभी का संकल्प सुना रही हूँ, मुझे कोई फ़िकर नहीं है। तो बाबा ने हमें ऐसे भाकी में लिया और कहा बच्ची कोई फ़िकर नहीं करो। होना ही है, सबको अपनी स्टेज अनुसार बाप समान बनना ही है। मैंने कहा बाबा ऐसा क्यों होता है, चाहता तो कोई भी नहीं है कि माया आये, या कोई ऐसी बात हमारे अन्दर आये लेकिन आ जाती है, वो पीछे पता पड़ता है फिर सोचते हैं यह क्यों हो गया! तो मैंने कहा बाबा आप कहते हो माया मेरी बेटी है तो आप उस बेटी को अपने पास सम्भाल कर रखो। आप उसको छुट्टी क्यों देते हो? तो बाबा बहुत मीठा मुस्कराये और कहा बच्ची बिना पेपर के पास हो जायेंगे क्या? (ऐसा हम शुरू-शुरू में भी बाबा से पूछते थे और बाबा इतना चतुराई से जवाब देते जो हम चुप हो जाते)।

फिर बाबा ने कहा बच्ची बाबा यही देखता है कि वर्तमान समय बच्चों में 'सहनशक्ति' की बहुत आवश्यकता है। विशेष अपने प्रति अथवा संगठन के प्रति सहनशक्ति कम होने के कारण ही यह सब बातें आती हैं - चाहे अभिमान की, चाहे अपमान की, चाहे कोई भी व्यर्थ संकल्प आते हैं, उन सबका कारण सहनशक्ति की कमी है। सहनशक्ति न होने के कारण ही बाबा बच्चों का एक खेल देखता रहता है। बच्ची

जानती हो वह खेल कौन-सा है? बाबा ने कहा – बच्चे बड़े चतुर हो गये हैं। अपने को बचाने के लिए जब भी कोई बात होती है तो कहते हैं - इसने ऐसा किया, उसे ऐसा नहीं करना चाहिए, वह ऐसा करता है इसलिए मुझे जोश आता है। वैसे जोश नहीं आता लेकिन यह आगे नहीं बढ़ता है, सहयोग नहीं देता है, यह कोई बात को समझता ही नहीं है इसलिए जोश आ जाता है। तो बाबा ने कहा कि वो तो रांग है जो कम समझता है, उसे जैसा करना चाहिए, वह करना नहीं आता है। रांग तो वो है लेकिन उसकी गलती को देखकर आप जोश करते हो तो क्या यह राइट है? जैसे कई कहते हैं - ऐसे तो हमको जोश या क्रोध नहीं आता लेकिन जब कोई झूठ बोलता है तो झूठ पर बहुत जोश आ जाता है। तो बाबा ने कहा कि बच्चे बहाना लगाने में बहुत होशियार हैं। दूसरे को फौरन दोष देंगे कि इसने ये किया तब मुझे ये व्यर्थ संकल्प आये। लेकिन कारण मैं हूँ, यह नहीं सोचते हैं। दूसरे की गलती नोट कर लेते लेकिन मेरी गलती क्या है वो नोट नहीं करते हैं। तो उसके लिए बाबा ने कहा कि सहनशक्ति की बहुत आवश्यकता है। अगर दो की बातें होती हैं, उसमें एक भी सहनशक्ति में आ जाए तो बात खत्म। तो बाबा ने आज विशेष अटेन्शन दिलाया कि बच्चे अपनी गलती को ही देखें। दूसरे की कितनी भी ग़लती हो, तो भी सोचो कि मेरी गलती क्या है? अटेन्शन से अपनी चेकिंग करो। दूसरा बाबा ने कहा कि सहन शक्ति वाले को साइलेन्स बहुत अच्छी लगती है, और ज़्यादा टाइम जो बातों में चला जाता है, सहनशक्ति से, अन्तर्मुखी होने से समय बच जायेगा और साइलेन्स की शक्ति स्वत: आयेगी। साथ-साथ साइलेन्स में रहने से समाने की भी शक्ति आयेगी।

तो ऐसे बाबा मुस्कराते हुए बोले कि सभी बच्चों को कहो कि अमृतवेले से लेकर यह एक ही सहनशक्ति को सामने रखो और डिटेल में नहीं जाओ। सवेरे से लेकर अपने चार्ट को बीच-बीच में चेक करो कि मेरे में सहनशक्ति है या हिल गये? सहनशक्ति को कितना प्रैक्टिकल में लाये और कहाँ-कहाँ हमारी सहनशक्ति लूज हुई? तो एक ही सहनशक्ति का पाठ पक्का कर लो, उसमें सब शक्तियाँ आ जायेंगी। तो बाबा ने यह शिक्षा दी और कहा कि बच्चे इस बात पर अटेन्शन देंगे तो सब बातें खत्म होकर सहज ही बाप समान बन जायेंगे। फिर बाबा ने दादी जानकी को इमर्ज किया और कहा कि ''यह हिम्मत और उमंग-उत्साह की देवी है।'' फिर जानकी दादी ने बाबा को कहा बाबा दादी को भी बुलाओ, मुझे दादी के बिना मज़ा नहीं आता। तो बाबा ने दोनों दादियों को अपने बाजू में बिठाया और दोनों के सिर पर ऐसे हाथ रखा, जैसे बाबा बहुत हल्की-हल्की मसाज़ कर रहा हो। वो सीन तो बहुत अच्छा लग रहा था फिर बाबा ने कहा अच्छा बच्ची मेरे में समा जाओ। तो दोनों दादियाँ ऐसे बाबा में समा गई जो मैं देखती रही। बाबा ने कहा बच्ची तुम तो इन दोनों के बीच में हो ही। मैंने कहा बाबा हमको बीच में अच्छा लगता है। फिर बाबा ने कहा एक-एक बच्चे को मेरी तरफ से विशेष यादप्यार देना। हर एक समझे कि बाबा ने मुझे स्पेशल यादप्यार दी है। साथ-साथ हर एक के मस्तक पर विक्टरी का (विजय का) तिलक तो बाबा ने लगा ही दिया है। ऐसे बाबा ने सभी को बहुत-बहुत याद दी और हम नीचे आ गई। ओम् शान्ति।

25-09-2000

शान्ति, शक्ति और खुशी की लाइट फैलाकर लाइट हाउस को प्रत्यक्ष करो

आज सूक्ष्मवतन में आप सबकी याद लेकर पहुँची तो क्या देखा – एक सोने की पहाड़ी है, उस पहाड़ी पर बाबा खड़े हैं और पहाड़ी जो नीचे थी वह सारी फूलों से सजी थी। जिस पहाड़ी पर बाबा खड़े थे वहाँ के भिन्न-भिन्न पत्थर ऐसे थे जैसे लाइट के हो, ऐसे दिखाई देता था जैसे एक-एक पत्थर से लाइट निकल रही है और वो पत्थर की लाइट आधे चन्द्रमा की लाइट के समान चमक रही थी। बाबा पहाड़ी पर ऊपर खड़े थे और मैं नीचे से देख रही थी। बाबा मुझे दृष्टि दे रहे थे और बाबा ने अपने दोनों हाथ इकट्ठे किये फिर ऐसे दोनों हाथ को नीचे किया और मैं नीचे से ऊपर पहुँच गई। आप सभी तो जानते हैं कि बाबा कितना प्यार से बच्चों को मिलते हैं और नैन मुलाकात करते हैं। फिर बाबा ने हमसे पूछा कि बच्ची आज क्या समाचार लाई हो? मैं मुस्करा रही थी। बाबा ने कहा तुम जहाँ से आई हो, देखो मैं उनको एक सेकण्ड में बुलाता हूँ। बाबा ने एक चुटकी बजाई तो जैसे फ़रिश्ते कोई कहाँ से, कोई कहाँ से उड़ते हुए पहुँच गये और फ़रिश्तों के पंख जो थे - वो थे उमंग-उत्साह के। ऐसे-ऐसे आते गये जैसे तितलियाँ पहाड़ पर नज़र आती हैं। ऐसे लग रहा था जैसे फरिश्ते पहाड़ी पर पहुँच गये हैं। मैंने कहा बाबा मैं क्या यादप्यार दूँ, ये तो अपने आप पहुँच गये हैं। सीन तो वहाँ की वण्डरफुल होती ही है, आप भी बुद्धियोग से इमर्ज कर सकते हैं। तो बाबा ने मीठी-मीठी दृष्टि से सभी का यादप्यार लिया भी और यादप्यार दिया भी।

उसके बाद बाबा ने कहा – देखो अभी मैं एक स्विच आन करता हूँ। बाबा ने नीचे पांव से दबाया, वहाँ तो आटोमेटिक है, तो सभी के मस्तक से तीन लाइट निकली, वह तीन रंग की लाइट मस्तक में लम्बी किरणों की तरह थी। उन लम्बी किरणों में तीन शब्द लिखे थे - शान्ति, शक्ति और खुशी। वो लाइट चारों ओर जैसे लम्बी किरणों में फैल रही थी। सभी के मस्तक से वह लाइट चारों ओर दूर-दूर सबके द्वारा पड़ रही थी। फिर बाबा ने कहा– बच्चों को 'पीस विलेज' विशेष किसलिए दिया है? तो बाबा ने कहा कि यहाँ से सभी को ये तीनों ही लाइट्स देनी हैं क्योंकि आज दुनिया में और सब साधन हैं, वह भी खास अमेरिका में तो सभी साधन हैं। लेकिन शान्ति नहीं है क्योंकि दिमाग भी फास्ट है। चलना, फिरना, खाना पीना भी फास्ट है, फास्ट लाइफ है। फिर बाबा ने कहा कि शक्ति भी नहीं है। प्लैन्स ज्यादा बनते हैं, प्रैक्टिकल में नहीं है। बाबा ने अमेरिका के बारे में कहा कि यदि यहाँ लोगों के फेस भी देखेंगे तो बहुत ही आफीशल हैं। चेहरे पर खुशी दिखाई नहीं देती, जैसे मर्ज

है, इमर्ज नहीं है। सीरियस नहीं हैं लेकिन बहुत आफीशल दिखाई देते हैं। इसलिए इन तीनों चीज़ों की यहाँ विशेष आवश्यकता है। इसीलिए मैने सभी बच्चों को इमर्ज किया है। बाबा ने कहा कि बच्चों को अभी सारे विश्व में तो स्मृति से मन्सा सेवा करनी ही है परन्तु पहले 'चैरिटी बिगेन्स एट होम' क्योंकि अमेरिका से आवाज़ निकालना है। खुशी मिल गई, शान्ति मिल गई, शक्ति मिल गई।

फिर बाबा ने कहा अभी भी देखो जब कोई भी पीस विलेज पहुँचते हैं तो पहुँचते ही उनको अनुभव होता है कि हल्के हो गये हैं। तो आप सबकी सेवा है, जो दूर बैठे भी सबको अनुभव हो कि कोई ऐसा लाइट हाउस है। जैसे लाइट हाउस होता एक जगह है, लगता है वाही से लाइट आ रही है। तो अमेरिका निवासियों को लाइट हाउस का अनुभव हो। उन्हें लगे कि यहाँ अमेरिका में कोई शान्ति की खान है। जब पता चलेगा तो भाग-भाग कर लेने के लिए आयेंगे। तो ऐसी सेवा करनी है। न्युयार्क में या कैनाडा में कहाँ भी हो... लेकिन ऐसे वायब्रेशन इस स्थान को दो जो ये वर्ल्ड में प्रसिद्ध हो जाए। जैसे वर्ल्ड में व्हाइट हाऊस प्रसिद्ध है, ऐसे 'लाइट हाऊस' प्रसिद्ध हो जाए। ऐसे अनुभव हो कि हमें वहाँ जाना है।

फिर बाबा ने पीस विलेज में रहने वाले सेवाधारियों को वतन में इमर्ज कर आगे बुलाया। पूरे वतन में जैसे रूहे गुलाब की खुशबू फैली हुई थी। और हमारा यह जो बैज है, ऐसे गुलाब के पुष्प के ही बैज थे, जो बाबा ने एक-एक बच्चे को गुलाब के पुष्प का बैज लगाया। फिर धीरे-धीरे यह सीन मर्ज होती गई और मैं अकेली रह गई फिर बाबा ने कहा बच्ची तुम्हें तो आने जाने का अभ्यास है। अभी जाना ही पड़ेगा। सभी को बापदादा की तरफ से अरब-खरब गुणा याद प्यार देना। ऐसे यादप्यार लेते हुए मैं साकार वतन में आ गई। अच्छा - ओम् शान्ति।

02-10-2000

सहयोगी बनने के साथ-साथ सहजयोगी बनो

आज अमृतवेले जब मैं बाबा के पास सूक्ष्मवतन में पहुँची तो बाबा बहुत-बहुत मुस्कराते हुए दृष्टि देते मिलन मना रहे थे, जब मैं नज़दीक जाके पहुँची तो बापदादा बोले, आओ बच्ची - क्या सन्देश लाई हो! तो मैंने सुनाया बाबा आपने जो बहुत समय पहले कहा था कि आपके पास ऐसी आत्मायें आयेंगी, जो सेवा में सहयोगी बनेंगी। तो आज ऐसी सहयोगी आत्मायें जो आयी हैं उनकी याद और सन्देश लेकर आयी हूँ। तो बाबा बहुत मीठा मुस्कराये, ऐसे लग रहा था, जैसे बाबा वतन से ही आप सभी को देख रहे हैं। हम भी एक सेकेण्ड के लिए बिल्कुल साइलेन्स हो गई।

उसके बाद फिर बाबा ने कहा कि बच्ची, यह सभी जो ''सहयोगी आत्मायें'' आयी हैं, इन्हों को कहना कि आपके मीठे ते मीठे, प्यारे ते प्यारे पिता परमात्मा ने कहा है कि सहयोगी तो आप हो, यह सहयोग का एक कदम बढ़ाके आप यहाँ पहुँचे हो लेकिन अगर आगे बढ़ना है तो एक कदम से तो आगे नहीं बढ़ सकते हैं, दूसरा कदम मिलाना पड़ता है तब आगे बढ़ते हैं। तो पहला कदम है - सहयोगी बनना और दूसरा कदम है - सहजयोगी बनना।

तो बाबा ने कहा कि बच्चों को कहना कि कदम आगे बढ़ाना माना आगे बढ़ना। उसके बाद बाबा ने कहा अच्छा, बाबा के घर में बच्चे आये हैं, आपने इन्हों की क्या खातिरी की है? मैंने कहा बाबा खातिरी तो बहुत की है, आध्यात्मिक भी की, खाने-पीने की भी की, दादी ने सौगात भी सबको दी है। तो बाबा ने कहा देखो यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आये हैं। कोई भी पूछेगा कहाँ गये थे तो कहेंगे ईश्वरीय विश्व विद्यालय में गये थे। तो बाबा ने कहा विद्यालय में जो भी स्टूडेन्ट आता है वह कुछ बनके ही निकलता है, ऐसे ही नहीं निकलता है। तो इन्हों को आपने क्या बनाया? तो मैं चुप रही, देखती रही - बाबा क्या चाहता है, क्या कहता है, ऐसे ही मुस्कराती रही।

तो बाबा ने कहा – मैं इन सभी एक-एक बच्चे को आज राजा बनाता हूँ, सभी राजा बन गये। मैंने कहा बाबा यह राजा कैसे बन गये? तो बाबा ने कहा कि आप बच्चों ने इन्हें स्वराज्य का ज्ञान दिया है ना! यह जो शरीर है, कर्मइन्द्रियाँ हैं मन, बुद्धि, संस्कार हैं, इनके ऊपर आत्मा राजा है। तो बाबा ने कहा कि आपने इन सभी को राजा नहीं बनाया? और इन्हों को आसन पर नहीं बिठाया? मैं तो मुस्कराती रही। तो बाबा ने कहा कि बच्चों से पूछना कि आप स्वराज्य अधिकारी राजा बच्चों के पास बैठने के लिए कौन सा आसन है? आत्मा राजा का आसन है यह भृकुटी अकाल तख्त, जहाँ स्वराज्य अधिकारी आत्मा निवास करती है और जो तख्त पर बैठता है उसे तिलक भी देते हैं, वह तिलक भी मस्तक पर दिया जाता है। यह मस्तक स्मृति की निशानी है। तो यह स्मृति का तिलक इनको लगाओ कि मैं आत्मा हूँ, मैं अकाल तख्त निवासी हूँ। साथ-साथ बाबा ने कहा कि इन बच्चों को ताज भी पहनाओ। डबल ताजधारी बनाओ। एक ताज है ''विश्व-परिवर्तन के ज़िम्मेवारी का ताज'' और दूसरा ताज है ''पवित्रता का।'' तो बाबा ने कहा कि बाप की तरफ से इन्हों को यह ताज, तिलक और तख्त गिफ्ट देना। तो बापदादा की यह गिफ्ट सभी सम्भालकर रखना।

फिर बाबा ने कहा इन बच्चों को कहना कि आप कोई-न-कोई प्रोग्राम बनाकर आपस में मिलते रहना और बाबा ने जो विश्व-परिवर्तन की जिम्मेवारी का ताज पहनाया है, उसका प्रैक्टिकल प्लान बनाना और प्रैक्टिकल में यह करके बाबा को रिटर्न देना। ऐसे बाबा ने सन्देश दिया और सबको यादप्यार दी, फिर तो मैं बाबा से छुट्टी लेके साकार वतन में पहुँच गई। ओम शान्ति्।

09-10-2000

नई दुनिया के हीरो एक्टर्स और साथी तैयार हो, तब समाप्ति की सेरीमनी हो

आज बापदादा के पास पहुँची, तो बापदादा ने मुस्कराते मिलन मनाया और समाचार पूछा, मैंने कहा बाबा दादी जी ने और मधुबन वालों ने मीठा-मीठा उल्हना दिया है कि बाबा ने हमसे मिलने के लिए कहा था फिर कब मिलेंगे? बापदादा मुस्कराये और बोले - मधुबन वालों का उल्हना तो ठीक है परन्तु बापदादा का भी उल्हना है कि मधुबन वालों को सदा बापदादा कहते हैं कि चारों ओर श्रेष्ठ पावरफुल वायुमण्डल फैलाने वाले लाईट हाऊस हो। यह बापदादा की विशेष दी हुई सेवा सभी को याद है? बापदादा तो मधुबन में चक्कर लगाते देखते रहते हैं। ''मधुबन निवासी तो सदा बापदादा की नज़रों में ही रहते हैं'' क्योंकि मधुबन वालों को बाप द्वारा बड़ी जिम्मेवारी का ताज मिला हुआ है। बापदादा तो वायदा निभायेगा। साथ में बच्चे भी अपनी ज़िम्मेवारी का रूप बापदादा को दिखायेंगे। ऐसे कहते बापदादा सबको मीठी शक्तिशाली दृष्टि दे रहे थे।

उसके बाद बाबा बोले और क्या समाचार है? मैंने बोला बाबा लंदन निवासी, अमेरिका, जर्मनी सभी बच्चों ने आपको बहुत-बहुत दिल से याद और थैंक्स दी कि आपने बहुत अच्छे स्थान और सेवा का चांस दिया है। दादी जानकी ने भी यादप्यार के साथ समाचार सुनाया कि आजकल चारों ओर ''काल आफ टाइम'' रिट्रीट के प्रोग्रामस बहुत अच्छे चल रहे हैं। बहुत अच्छी-अच्छी आत्मायें सम्पर्क में आ रही हैं। अभी आगे आस्ट्रेलिया और नैरोबी में भी ये प्रोग्राम होना है। दादी जानकी के साथ में गायत्री और मोहिनी बहन का प्रोग्राम सोचा है क्योंकि इन्हों को इस प्रोजेक्ट का बहुत अच्छा अनुभव हो गया है। बाबा बोले - एक दो के अनुभव से औरों का भी उमंग-उत्साह बढ़ता है और जहाँ जाते आपसी समीपता भी बढ़ती है, बापदादा की तो आस्ट्रेलिया और अफ्रीका में बहुत बड़ी उम्मीदें हैं तो अवश्य उम्मीदों का जगा हुआ दीपक बापदादा के आगे लायेंगे।

उसके बाद मैंने इण्डिया में भिन्न-भिन्न वर्गो की तरफ से रिट्रीट, कान्फ्रेन्स और माईक्स का प्रोग्राम सुनाया कि बहुत अच्छी रिज़ल्ट निकल रही है। सभी बहुत अच्छी मेहनत खुशी-खुशी से कर रहे हैं। बाबा बोले बच्ची, ऐसे रिट्रीट के प्रोग्रामस फारेन में या इन्डिया में करने अच्छे हैं क्योंकि इससे नजदीक सम्पर्क में आते हैं और स्नेह और संगठन का प्रभाव भी पड़ता है। ये सहयोगी बनाने का साधन बहुत अच्छा सहज है। परन्तु बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है कि प्रोग्रामस और रिज़ल्ट बहुत अच्छी है लेकिन उन विशेष आत्माओं से बाद में सम्पर्क रखने और सहयोगी बनाने के प्रोग्राम में ज़्यादा अटेन्शन रखना ज़रूरी है। बापदादा की राय है कि अब तक कम से कम पाँच वर्ष में जहाँ विशेष आत्माओं के प्रोग्रामस हुए हैं और कईयों ने अपने बहुत अच्छे अनुभव सुनाये हैं व लिखे हैं, उन्हों की लिस्ट निकालो और उन्हों को आगे सहयोगी बनाने का प्रोग्राम बनाओ। बापदादा आज फारेन और इण्डिया दोनों तरफ देख रहे थे तो पाँच साल में या पहले भी बहुत-बहुत अच्छे वी. आई. पीज़, आई.पी. आत्मायें आये हैं, उन्हों को सन्देश तो मिला है परन्तु सहयोगी बनें व माईक बन सेवा को फैलाने के निमित्त बनें वो रिजल्ट निकालो और इसका प्रोजेक्ट बनाओ।

उसके बाद बाबा ने दादियों को याद किया और बहुत-बहुत दिल से, वरदानी नज़र से दृष्टि दी और कहा कि ये तो चाहते हैं कि बस अभी-अभी बाबा की प्रत्यक्षता हो जाए लेकिन बच्चे पहले ब्राह्मणों में सम्पन्नता की प्रत्यक्षता हो तब तो बाप की प्रत्यक्षता हो। नई दुनिया के हीरो एक्टर्स और साथी तैयार हो, तब तो बाप प्रत्यक्ष हो और समाप्ति की सेरीमनी हो तो अभी सभी को जल्दी-जल्दी तैयार करो। अभी भी सर्व को उमंग-उत्साह में लाने की सेवा बहुत अच्छी कर रहे हैं। बापदादा खुश हैं। ऐसे कहते बाबा ने सर्व ब्राह्मणों को यादप्यार दिया और कहा अपने में सम्पन्नता की प्रत्यक्षता लाओ। ओम् शान्ति।

29-10-2000

तीन बीज हर एक को बोने हैं - 1- शुभ भावना 2- कल्याण भाव और 3- नि:स्वार्थ साधना

(मानेसर (दिल्ली) की नई जमीन पर फाउण्डेशन सेरीमनी) आज अमृतवेले बापदादा के पास पहुँची तो क्या देखा, बापदादा बहुत-बहुत प्रेम के सागर स्वरूप में सामने खड़े थे। ऐसा प्यार का स्वरूप इमर्ज था - जैसे सागर में नदियाँ जाकर समा जाती हैं, ऐसे आप सब आये हुए और अन्य भी बहुत प्रेम सागर में, प्रेम में लवलीन हो रहे हैं। मैं भी कुछ समय तो उसी समाये हुए रूप में खोई हुई थी।

फिर बाबा ने पूछा बच्ची क्या सन्देश लाई हो? मैं बोली बाबा, आज तो चारों ओर के विशेष ब्राह्मण आपकी दी हुई गिफ्ट देहली की जमीन पर पहुँचे हुए हैं। बाबा बोले बच्ची, देहली को तो बहुत बड़ी गिफ्ट मिली है। मैं बोली बाबा यह धरनी तो आपने बेहद के सेवा प्रति दी है, तो सर्व की है ना! बाबा बोले हाँ बच्ची सबके राज्य की गद्दी तो देहली ही है। सबसे पूछना आप सबको याद है कि आप सबने कितने बार यहाँ राज्य किया है? (अनगिनत बार) तो आप सबकी हुई ना। तो मैंने कहा बाबा सबकी है। बाबा बोले, सर्व ब्राह्मणों को दीवाली की दो गिफ्ट मिली हैं। एक मानेसर में और दूसरी सोनीपत में। फिर बाबा बोले कि इतने सब ब्राह्मण आये हैं तो हर एक ब्राह्मण को, या जो नहीं भी आये हैं सर्व को अपनी तरफ से बीज जरूर डालना है। एक तो भण्डारी में तो डालते ही हो लेकिन विशेष बीज जो सबको धरनी में डालना है वह है एक श्रेष्ठ शुभ भावना का बीज, दूसरा सदा हर कार्य करते, हर एक के सम्पर्क में आते हुए कल्याण का भाव रखना है। तो एक भावना, दूसरा भाव

और तीसरा नि:स्वार्थ साधना। तो तीन बीज मिलाकर डालना है। चाहे आज हाजिर हैं, चाहे विदेश में, देश में हैं, सबको डालना है।

उसके बाद बाबा ने पूछा और क्या समाचार लाई हो तो मैंने कहा बाबा आज विदेश, देश में सब तरफ बहुत अच्छी सेवायें चल रही हैं। एक तरफ कल्चर आफ पीस का चल रहा है, दूसरे तरफ भारत में वर्गीकरण की सेवायें बहुत अच्छी चल रही हैं, विशेष आत्मायें आ रही हैं। तो बाबा बोले, बापदादा बच्चों की सेवा को देख खुश हैं और मुबारक भी देते हैं लेकिन अभी तक बापदादा की एक आशा का दीपक जगाया नहीं है। जगाया है लेकिन पूरा नहीं, टिमटिमा रहा है, वह है अभी तक सब यह तो मानते हैं कि यह भी संस्था बहुत अच्छा कार्य कर रही है लेकिन यह कहें कि यह एक ही है, यही है और सबकी बुद्धि एक ही बाप तरफ जाए और सब जानें कि यह वही है, तब तो प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेगा। अभी तो आपने झण्डा लहराया वह भी लहराना है, लेकिन अब यह प्रत्यक्षता का झण्डा लहराओ। उसके बाद बाबा बोले, सब बच्चे हर तरफ से उमंग-उत्साह से आये हैं। यह देख बापदादा बहुत खुश हैं, तो बापदादा भी हर बच्चे को गिफ्ट दे रहे हैं - वह है जिम्मेवारी का ताज। हर एक समझे हमने वायब्रेशन द्वारा वा शुभ भावना द्वारा वा किसी भी रूप से सहयोगी बनने का जिम्मेवारी का ताज पहना हुआ है और सभी बच्चों को बाबा की तरफ से नाम सहित, विशेषता सहित यादप्यार देना। हर एक का नाम तो बाबा नहीं लेता लेकिन दिल में, नयनों में एक एक बच्चे को इमर्ज कर हर एक को बहुत-बहुत यादप्यार और त्रिमूर्ति उत्सव (दीवाली, नया वर्ष, भैया दूज) की अरब-खरब बार मुबारक दे रहे हैं।

28-01-2001

हर साइड सीन को साक्षी होकर देखते चलो, अशरीरी होकर उड़ते चलो

आज विशेष बापदादा के पास मीठी दादी जी के सन्देश के प्रति पहुँची तो बापदादा बहुत-बहुत स्नेह और शक्तिशाली रूप से नयन मिलन मना रहे थे। और बोले बच्ची, आपकी दुनिया का क्या हाल है! क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा, अर्थक्वेक अपना जलवा दिखा रही है। बाबा बोले – बच्ची, प्रकृति को अपना कार्य करना ही है क्योंकि ड्रामा में प्रकृति का भी विशेष पार्ट है। बापदादा ने तो पहले ही कहा है कि अब तक तो एक-एक तत्त्व अपना पार्ट बजाने की रिहर्सल कर रहे हैं। अभी तो आगे चल रीयल होना है। अभी तो अलग-अलग हरेक तत्त्व कब कोई, कब कोई अपना रूप दिखा रहे हैं लेकिन आगे तो पाँचों ही तत्त्व इकट्ठा अपना पार्ट बजायेंगे। इसलिए बापदादा बार-बार बच्चों को कहते हैं कि सदा अंगद मिसल अचल, अडोल, एकरस स्थिति में स्थित रहो। यह सब साइड सीन्स हैं उसको साक्षी होकर देखते चलो। अशरीरी होकर उड़ते चलो। समय अनुसार अभी तो बच्चों को स्व-चिन्तन, स्व-मान, स्व-स्वरूप में ही रहना है। स्व को डबल लाईट बनाए उड़ते रहो। विशेष अब अशरीरी स्टेज में रहने का अभ्यास अति आवश्यक है।

बाकी गुजरात के बच्चों को विशेष याद देना। बापदादा तो बच्चों की छत्रछाया है ही। सभी ने अपना-अपना अवस्था अनुसार अच्छा पार्ट बजाया। अब भविष्य शक्तिशाली स्टेज को बनाना है। यही अटेन्शन रख तीव्र पुरुषार्थ करना है। बाकी सब गुजरात के बच्चों को परीक्षा में पास होने की मुबारक है। सदा खुश रहो, आबाद रहो, परीक्षाओं में पास रहो।

ऐसे कहते बापदादा ने सभी देश-विदेश के बच्चों प्रति बहुत-बहुत यादप्यार दिया और यही वरदान दिया कि सदा मंजिल पर उड़ते रहना, रुकना नहीं। बापदादा के साथ उमंग-उत्साह से उड़ते रहना, सदा आगे से आगे बढ़ते रहना। यह था बाबा का सन्देश।

29-01-2001

प्रकृति प्रकोप में हिम्मतवान बनो

आज हम प्यारे बापदादा के पास पहुँची और बाबा को जो वर्तमान समय में अर्थक्वेक आदि हो रही हैं और एनाउन्स भी होता रहता है कि ऐसे झटके और भी आने वाले हैं, उसका समाचार सुनाया और बाबा को कहा सब तरफ से आने वाली पार्टियाँ पूछती हैं कि हम बाबा के प्रोग्राम में आवें? तो बाबा मुस्कराते हुए बोले – बच्चे, देखो ये प्रकृति के छोटे-छोटे प्रकोप तो होने ही हैं। जो हिम्मतवान बच्चे हैं, कोई संकल्प नहीं रखते वो भल आवें। बाकी जो भय में होंगे, अन्दर भिन्न-भिन्न संकल्प चलते होंगे, उन्हों का मधुबन में आने के बाद भी मन नहीं लगेगा इसलिए वे भले नहीं आवें। बाकी हिम्मत रखने वाले बच्चे भले आवें। ऐसे कहते बाबा ने सभी बच्चो को बहुत-बहुत याद दी।

01-03-2001

धारणा स्वरूप की परसेन्टेज़ बढ़ाओ तब समय का सामना कर सकेंगे

आज जब मैं बापदादा के पास पहुँची तो बापदादा ने मीठा मुस्कराते मिलन मनाया और पूछा - बच्ची, आज क्या समाचार लाई हो? मैंने कहा - बाबा आज दोनों दादियों की तरफ से बहुत प्यार और समाचार लाई हूँ। दोनों दादियों ने, सर्व दादियों के, बड़े भाईयों और सर्व ब्राह्मणों के तरफ से बहुत-बहुत यादप्यार और थैंक्स दी है कि आपने इस सीज़न के पानी की समस्या को सहज ही पार कराए सम्पन्न कर दिया। बापदादा बहुत ही मीठे स्वरूप से मुस्कराये और बोले, बापदादा चारों ओर सभी देश-विदेश के बच्चों को पदमगुणा थैंक्स देते हैं कि सबने अथक सेवा में उमंग- उत्साह से सहयोग दिया है। मधुबन के, शान्तिवन के, ज्ञानसरोवर के बच्चों ने अच्छा पार्ट बजाया और आने वाले नये-नये बच्चों ने भी अच्छी हिम्मत रखी जो हलचल के समाचार भिन्न-भिन्न सुनते भी पहुँच गये। फारेनर्स भी अच्छे निर्भय उत्साह वाले निकले और सोच लिया कि मधुबन जाना ही है, ऐसे हिम्मत उमंग वालों को बाप की और समय की मदद मिलती ही है। ऐसे कहते ही बापदादा के नयनों में

बच्चों के स्नेह के मोती चमक रहे थे। कुछ समय तो बाबा के सामने बच्चे ही इमर्ज थे फिर मैंने कहा – बाबा, दादी जानकी ने डबल फारेनर्स की आर.सी.ओ. मीटिंग का समाचार भेजा है। सबने बहुत अच्छे प्लान बनाये हैं। बाबा बोले – बच्चों ने अच्छा सोचा है कि की हुई सेवा की पीठ कैसे करें क्योंकि यह बहुत ज़रूरी है। अनेक बच्चों का समय, एनर्जी और मनी लगती है तो आगे रिजल्ट को बढ़ाना ही ठीक है। जिन आत्माओं को सम्पर्क में लाया है उनको और आगे बाप के प्यार में लाना, सेवा में समीप लाना, सहयोगी बनाना, फैमिली मेम्बर के सम्बन्ध का अनुभव कराना यह भविष्य प्लान ज़रूरी है। यह जो तीनों प्रोजेक्ट – काल आफ टाइम, कल्चर आफ पीस या लीविंग वैल्यू की उठाई है, उनके अलग-अलग तरीके की रिज़ल्ट और सम्पर्क बढ़ाने का साधन अच्छा है इसलिए उनको बढ़ाना ही है। इस बारी जो अपने संस्कार परिवर्तन पर ध्यान दे रूह-रूहान की है वा आगे भी प्लान बनाया है, यह भी ज़रूरी है क्योंकि समय की समीपता प्रमाण अभी फारेन के बच्चों को जो आर.सी.ओ वा एन.सी.ओ ग्रुप की निमित्त आत्मायें हैं उन्हों को विशेष यह ध्यान रहे कि जैसे निमित्त दादियों से रूहानियत
का अनुभव होता है और दादियाँ भी समझती हैं कि हमें अपने द्वारा रूहानियत और बाप के सम्बन्ध का अनुभव और आगे बढ़ाने में सहयोग की भासना देनी है। ऐसे इस ग्रुप को भी ऐसे नहीं समझना है कि यह तो दादियों का ही काम है, हम तो माईक हैं, दादियाँ माइट साथ में है, हम तो साथी हैं लेकिन अच्छे साथी सदा समान होते हैं। फ़ालो करते हैं। जैसे बाप समान बनने का लक्ष्य अच्छा है, ऐसे सेवा बढ़ाने, वारिस बनाने, सहयोगी बनाने में अपने में रूहानी भासना देने में भी आगे बढ़ाना है क्योंकि हर अलग-अलग दूर दूर के स्थान पर तो आप ही साकार में सामने एक्जाम्पुल निमित्त हो। अब तक सेवा में उमंग-उत्साह और प्रोग्रेस अच्छी कर रहे हैं। उसके लिए बापदादा खुश है और मुबारक दे रहे हैं। अब स्व-मान, स्व-स्थिति, स्व-उन्नति, सम्मान इस धारणा स्वरूपों में परसेन्टेज बढ़ानी है। वर्तमान समय प्रमाण इसकी बहुत आवश्यकता है तब समय का सामना कर सकेंगे और सेवा में सहज सफलता, निर्विघ्न स्थिति में उन्नति कर सकेंगे।

ऐसे कहते बापदादा ने कहा – यह अटेन्शन भारत की टीचर्स को भी ज़रूरी है, हमने कहा बाबा दादी ने होने वाली मीटिंग के लिए भी सन्देश दिया है। दादियों को तो यही उमंग है बस, सब अभी-अभी परिवर्तन हो जाये। बाबा मुस्कराये और कहा कि दादियों का उमंग भी पूरा होना ही है। फिर भारत के मीटिंग का सन्देश आगे देंगे, फिर तो बाबा ने दोनों ग्रुप के बच्चों को इमर्ज कर बहुत-बहुत सिक व प्रेम से दृष्टि में समा दिया और बड़े स्नेह के शब्दों से बाबा बोले - बच्चे, बाप की आशा को अवश्य पूर्ण करेंगे। बच्चे नहीं करेंगे तो कौन करेगा। मेरे हर कल्प के अधिकारी बच्चे हैं, बाप को तो नशा है वाह! मेरे बच्चे वाह! ऐसे कहते हमें भी बाहों में समाये विदाई दी। और साथ में सर्व डबल विदेशी बच्चों को भी यादप्यार दिया। ओम शान्ति्।

05-03-2001

रचना जो रची है, उसकी पालना रूहानियत की शक्ति द्वारा करो

आज जब मैं वतन में पहुँची तो बापदादा सामने खड़े थे और बहुत ही शक्तिशाली, रहमदिल स्वरूप में थे। बाबा के सामने विश्व का ग्लोब इमर्ज था, जिसमें विश्व की अनेक आत्मायें भी इमर्ज थी। बापदादा के मस्तक और माथे के चारों ओर से रंग बिरंगी लाईट की किरणें निकल रही थी। ऐसे लग रहा था जैसे एक विचित्र अति सुन्दर निराला सूर्य चमक रहा था। मैं दूर से देख-देख हर्षित हो रही थी कि आज का दृश्य तो बड़ा वन्डरफुल आकर्षण वाला है। मैं आगे बढ़ती गई तो बापदादा ने हमें दृष्टि दी और ऐसे हुआ जो मेरे मस्तक पर भी चारों ओर लाइट का ताज आ गया और मैं भी बाबा के साथ ग्लोब को लाइट दे रही थी। दृश्य तो बहुत सुन्दर था। कुछ समय के बाद यह दृश्य समाप्त हो गया और बाबा ने हमें बोला – आओ मेरी विश्व सेवाधारी सेवा की साथी बच्ची, आओ, क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आज तो भारत की मुख्य टीचर्स की मीटिंग का समाचार लाई हूँ। दादी जी ने यादप्यार और सन्देश लाने के लिए कहा था। बाबा बहुत हर्षाते, बहुत-बहुत स्नेह से बोले – बच्ची, यह ग्रुप तो बापदादा के राइट हैण्डस हैं। बापदादा की सेवा के साथी विश्व परिवर्तन के निमित्त आधार हैं। अब बच्चों को तो विशेष बापदादा सिक व प्रेम से सूक्ष्म पावर की सकाश देते रहते क्योंकि सारे विश्व की स्टेज पर साकार रूप में श्रेष्ठ आत्मायें बाप समान निमित्त एक्जैम्पल तो ये ही हैं। जैसे अंधकार में सितारों की रिमझिम होती है तो समय प्रमाण दु:ख के अंधकार में यह रूहानी सितारे ही प्रकाश पुंज हैं। ज्ञान सूर्य और ज्ञान चन्द्रमा तो बैकबोन है लेकिन बाप देख रहे हैं कि अब तक बच्चों को आत्माओं के तड़फने, दु:ख की पुकार, समय की पुकार सुनने और दिल से लगने में कमी है। जितना रहमदिल इमर्ज रूप में आवश्यकता है वह परेसेन्टेज में कम है। कारण - मैजारिटी बच्चे अपने-अपने स्थानों की सेवा में अपनी चार्ज में ही बिजी रहते हैं। 'हम विश्व के बेहद सेवाधारी आत्मायें हैं', यह नशा और सेवा का उमंग कम है। अब समय प्रमाण इन निमित्त आत्माओं को तो अब बेहद दृष्टि, बेहद की वृत्ति, बेहद की स्थिति की आवश्यकता है। जैसे दादियों द्वारा रूहानियत की अनुभूति करते हैं। ऐसे ही रूहानियत की शक्ति अपने में भरनी आवश्यक है क्योंकि अब रूहानी अनुभूतियाँ कराने की ही ज़रूरत होगी। इसकी विधि है- 1-पहले अपने में चेक करें कि सर्व शक्तियों का स्टाक मेरे में जमा है? अब तक बाप देखते हैं कि किसी न किसी शक्ति की परसेन्टेज कम है। 2- दूसरी बात - तो सेकण्ड में व्यर्थ संकल्प वा किसी के प्रति भी निगेटिव भाव वा भावना को स्टॉप लगाए परिवर्तन कर सकें। इन दोनों का अभ्यास बार-बार अटेन्शन दे करना चाहिए। अब तक दिखाई देता है कि इसमें समय और कभी-कभी मेहनत लगती है। अब समय की गति फास्ट रूप दिखा रही है लेकिन आप निमित्त आत्माओं के लिए रुक जाती है। इसलिए बापदादा का बच्चों पर प्यार और नाज़ है कि बनना तो कल्प-कल्प इन बच्चों को ही है और बनना ही है। बापदादा हर बच्चे की विशेषता पर बलिहार जाते हैं - ''वाह

मेरे बच्चे वाह!'' के गीत गाते हैं। फिर भी जरा सी कमी प्यार में देखी नहीं जाती है, इसलिए बीती सो बीती कर सिर्फ 1- स्व-परिवर्तन की गति को तीव्र बनाओ। 2- बेहद की स्थिति से सेवा में भी रूहानियत की सेवा बढ़ाओ। 3- अपनी जमा सर्व शक्तियों से शुभ संकल्प द्वारा कमज़ोर आत्माओं को मन में प्रसन्नता और सन्तुष्टता का सहयोग दो। किसी की कमज़ोरी को मन में न रख उसको हिम्मत-उमंग-उत्साह बढ़ाओ। यही बापदादा इस ग्रुप द्वारा बेहद की सेवा चाहते हैं। अब तक जो सेवा की है, उससे बापदादा खुश है। जो किया वह अच्छा हुआ लेकिन अब सेन्टर खोलना, भाषण करना, भिन्न-भिन्न कोर्स कराना, आपके स्टूडेन्टस भी कम होशियार नहीं हैं। उन्हों को योग्य बनाया है इसलिए विस्तार तो होता रहेगा। अब बाप चाहते हैं – विस्तार को सार में लाओ। रचना तो आपने कर ली है, उसकी मुबारक है लेकिन अब उन्हों के पालना की आवश्यकता है क्योंकि रूहानी पालना कम होने से आने वाली आत्मायें वा सेवा साथी अब भी कमज़ोर हैं। रूहानियत की शक्ति कम है इसलिए अब इस पर अटेन्शन दो।

ऐसे कहते आज तो जैसे बापदादा के सामने बार-बार चारों ओर की रिजल्ट सामने थी और बहुत दिल के स्नेह से बापदादा यही चाहते हैं कि अभी-अभी सब बच्चे सम्पन्न बन जाएँ, बेहद की स्थिति में स्थित हो जाऐं।

उसके बाद बाबा बोले – बच्ची, मीटिंग का एजेन्डा तो बनाया ही है, सब अच्छा है लेकिन इस वर्ष बापदादा चाहते हैं कि ज़्यादा बड़े बड़े प्रोग्रामस अपनी तरफ से न हों, जिसमें एनर्जी, मनी और स्थिति पर किसी कारण से हलचल हो। वह कम हो, लेकिन हर सेन्टर पर अब तक की हुई सेवा में जो आत्मायें निकली हैं, सम्पर्क वाली हैं वा पक्की ब्राह्मण आत्मायें हैं उनमें से अब क्वालिटी छांटो क्योंकि अब भिन्न-भिन्न क्वालिटी वालों की भिन्न-भिन्न रूप में पालना की आवश्यकता है। अब अच्छे पुरुषार्थियों को वारिस क्वालिटी बनाना है, आगे बढ़ाना है। इसलिए 1- अच्छे निर्विघ्न तीव्र पुरुषार्थी 2- सम्बन्ध सम्पर्क वाले जो सेवा में आगे बढ़ सकते हैं। 3- यथा शक्ति धारणा में रह माइक बन सन्देश देने वाले 4- हार्ड वर्क के समय पर मददगार बनने वाले 5- जो धारणा पढ़ाई में कम लेकिन सहयोग में अच्छे हैं.... हर एक सेन्टर यह लिस्ट बनाए इकट्ठी करो और इन ग्रुपस की चाहे ज़ोन में, चाहे कुछ नजदीक के सेन्टर्स मिलकर इकट्ठा कर उन्हों के अनुसार जो आगे रूहानियत की सेवा चाहिए, पालना चाहिए वह मिल सके और बापदादा सब सेन्टर्स की रिज़ल्ट भी निकालने चाहते हैं।

हे बापदादा के साथी बच्चे, आप सबने बगीचे तो बहुत तैयार किये अब उन फूलों की छांट-छूट करो, भिन्न-भिन्न गुलदस्ते बनाओ क्योंकि समय और प्रकृति एवररेडी है आपका राज्य लाने के लिए। विश्व में दिलशिकस्ती, निराशा, टेन्शन बहुत फास्ट बढ़ रहा है अब हे रहमदिल (मर्सीफुल) बच्चे, उन आत्माओं पर रहमिदल बन मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा दिलाओ। ऐसे कहते बापदादा तो बच्चों के लव में लीन हो गये। कुछ समय यही लहर रही फिर हमें प्यार भरी बाँहों में समाए विदाई दी! 18-03-2001

चलन और चेहरे को सन्तुष्टता और प्रसन्नता सम्पन्न बनाओ

आज जब मैं बाबा के पास मीटिंग का समाचार और कुछ यज्ञ की कारोबार के लिए दादी जी का सन्देश लेकर वतन में गई तो हर समय का नज़ारा न्यारा ही होता है। तो आज जब मैं वतन में पहुँची तो बाबा दूर खडे थे और मुझे देख करके दूर से बहुत मीठा मुस्करा रहे थे। बाबा मुस्कुराते तो सदा ही हैं लेकिन आज की मुस्कुराहट में ऐसे अनुभव हो रहा था जैसे बाबा के अन्दर कोई बात आ रही है। तो जब मैं नजदीक पहुँची तो बाबा की मुस्कुराहट और बढ़ती गई। मैंने कहा, बाबा आज आप विशेष कोई बात पर मुस्करा रहे हैं। तो बाबा बोले – हाँ बच्ची, बापदादा ने बच्चों का एक बहुत रिमझिम का दृश्य देखा। तो मैंने सोचा कि बाबा ने ऐसा क्या देखा! तो बाबा ने ही कहा कि बच्ची बाबा ने बच्चों के सेवा के उमंग-उत्साह की रिमझिम देखी। कैसे हर एक ज़ोन, हर एक वर्ग बहुत उमंग से सेवा के अपने-अपने प्रोग्राम्स बना रहे थे, यही रिम-झिम देख करके बाबा मुस्कुरा रहे हैं। मैंने कहा बाबा ये तो सदैव करते ही हैं। तो बाबा ने कहा – नहीं, करते तो सदा हैं लेकिन बाबा देख रहे थे कि बच्चों में सेवा का उमंग ज़्यादा है, सेवा के प्रति अपना समय, अपना आराम और अपने साधन इकट्ठे करने में बहुत अच्छे उमंग से आगे बढ़ रहे हैं। तो बापदादा सेवाधारियों की यह सेवा देख करके तो बहुत खुश हैं और वाह-वाह के गीत भी गाते हैं। बापदादा देखते हैं कि बच्चे सेवा के प्रति कितना कुर्बान होने के लिए तैयार हो जाते हैं।

ऐसा कहते-कहते बाबा एकदम शान्त हो गये, ऐसे लगा जैसे बाबा यहाँ है ही नहीं। मैं बाबा को देख रही हूँ, बाबा मुझे भी देख रहे हैं लेकिन यहाँ हैं नहीं। थोड़े समय के बाद मैंने पूछा – बाबा आप कहाँ चक्कर लगाने गये थे। तो कहा बच्ची मेरे आगे बच्चों का यह गुलदस्ता इमर्ज था। इनको मैं देख रहा था, और देखते-देखते बाबा का एक बहुत डीप संकल्प चल रहा था। उसमें ही बाबा जैसे लीन थे। मैंने कहा बाबा वह संकल्प क्या था? तो बाबा ने कहा बच्ची जैसे मैजारिटी सब बच्चे सेवा में एवररेडी रहते हैं, हिम्मत भी रखते हैं और आगे भी बढ़ते हैं। उसका परिणाम है जो इतने सेन्टर खुल गये हैं, इतने बाबा के बच्चे बन गये हैं। लेकिन अभी तक बाबा का एक संकल्प बच्चों के कानों तक, दिमाग तक पहुँचा है लेकिन दिल तक नहीं पहुँचा है। ऐसे कहते बाबा फिर एक सेकण्ड जैसे उसी संकल्प में बिल्कुल लीन हो गये। फिर बाबा ने कहा कि बाबा देख रहे थे कि सभी बच्चों ने 'संस्कार परिवर्तन' के लिए प्रोग्राम बनाये हैं, भट्ठियां भी रखी हैं। लेकिन बाबा चाहता था कि यह गुलदस्ता जो आया है इसमें कौन ऐसा बच्चा निकलता है जो कहे कि बाबा आप जो कहते हो वह मैं एक मास में आपको वैसा ही करके ही दिखाऊँगा। जैसे सेवा के उमंग-उत्साह में कहते हैं कि हम भी करेंगे, हम भी करेंगे, हम भी करेंगे... उस पर तो बाबा कुर्बान जाता है। लेकिन

ऐसा कोई बच्चा नहीं निकला जो यह ठेका उठाये कि हम 15 दिन में, 1 मास में, 2 मास में, 3 मास में यह करके ही दिखाऊँगा! बाबा की इस गुलदस्ते में यही शुभ आशा है, और बनना तो इन्हों को ही है, दूसरे नये अभी क्या आयेंगे। वह तो कोटो में कोई होंगे। तो बाबा ने कहा कि मैं देख रहा था कि ऐसा कोई समाचार लास्ट तक आता है! मैंने कहा बाबा संकल्प तो कईयों ने किया होगा। बाबा ने कहा, संकल्प तो किया है लेकिन संकल्प में परिपक्वता, यह अभी ध्यान देना पड़ेगा।

फिर बाबा ने कहा कि बाबा चाहते हैं कि पहले-पहले कोई सेन्टर की सेवाधारी निमित्त बहन या साथी बाबा के आगे यह संकल्प करे कि पहले 'चैरिटी बिगिन्स एट होम'। सेन्टर की निमित्त, सेवा साथी और सेन्टर में आने वाले जो सहयोगी आत्मायें, वारिस वा ब्राह्मण आत्मायें हैं, सभी का ऐसा गुलदस्ता बाबा के सामने आये - जैसे मोहजीत परिवार की कहानी सुनाते हैं कि चपरासी सहित, सर्वेन्ट सहित जिससे भी पूछा वह 'नष्टोमोहा' की झलक वाला दिखाई दिया। ऐसे सेवाकेन्द्र का हर एक छोटा-बड़ा चाहे सफाई करने वाला हो, चाहे भोजन बनाने वाला हो, चाहे किसी भी ड्युटी वाला हो लेकिन उसका चेहरा, उसके मन की स्थिति ''सन्तुष्टता और प्रसन्नता'' सम्पन्न हो। हर एक के चलन और चेहरे से सन्तुष्टता और प्रसन्नता ही दिखाई दे। तो बाबा ने कहा कि बाबा की यह 'शुभ आशा' इस ग्रुप के लिये है। मैंने कहा बाबा अभी एक दिन तो पड़ा है, यह भी हो जायेगा। तो बाबा बोले नहीं बच्ची, इसमें

1- सहन करना पड़ता है। लेकिन सहन करना न समझ, ऐसे समझें कि मैं आज्ञाकारी बनने का, स्वमान का तिलक बापदादा द्वारा धारण कर रहा हूँ। सहन नहीं कर रहा हूँ, आज्ञाकारी का यह तिलक धारण कर रहा हूँ।

2- जो कई बच्चे कहते हैं कि इसमें तो बहुत झुकना पड़ता है। लेकिन झुकना नहीं पड़ता है, उड़ना पड़ता है। यह झुकना नहीं उड़ना है।

3- बाबा ने कहा कई बच्चे कहते हैं क्या हमको ही मरना है, एक तो मरजीवा बनें, अभी हर बात में हमें ही मरना है। तो बाबा ने कहा यह मरना नहीं है, यह माननीय बनना है।

बाबा के प्यार में सहन करना, सहन नहीं है, यह त्याग का भाग्य लेना है। इस त्याग का प्रत्यक्ष फल मिलना है। भविष्य तो परछाई है ही। बाबा यह शब्द बहुत स्नेह से बोल रहे थे, बाबा की ऐसी स्नेह की सूरत थी, जो बाबा के नयन भी भरे हुए थे। उसके बाद बाबा से यज्ञ की कारोबार के बारे में कुछ बातें की। बाबा ने कहा कि बच्ची चाहे माउण्ट आबू, चाहे देश-विदेश में सब तरफ जो ईश्वरीय कार्य चल रहा है, इसका प्रभाव अभी बढ़ रहा है और भी बढ़ता रहेगा। जैसे पहले आप स्वयं स्टेज पर कोई मिनिस्टर, कोई भी आई.पी., वी.आई.पी. बुलाते थे, चाहे कोई भी हो लेकिन संस्था को आगे बढ़ने वा एडवरटाइज़ के कारण बुलाते थे। लेकिन अभी परिवर्तन हुआ है और भी होगा और भी बड़े बड़े जो भी मिनिस्टर्स हैं या साधू सन्त हैं, अभी सब आपको अपनी स्टेज पर बुलाते हैं, समझते हैं इन्हों के कारण हमारी स्टेज का प्रभाव बढ़ेगा। तो जैसे अभी बनी बनाई स्टेज मिलती है और अभी आपको निमन्त्रण नहीं देना पड़ता लेकिन वह आपको निमन्त्रण दे रहे हैं। उसके बाद बाबा ने कहा अच्छा, दादी ने सबको सौगात दी? मैंने कहा सौगात तो लास्ट दिन मिलती है। कहा अच्छा दादी जब तक देवे पहले बाबा दे रहा है। बाबा ने बहुत वण्डरफुल सौगात दी। एक सेकण्ड में क्या देखा यह जो ग्रुप आया हुआ है, वह सारा ग्रुप जैसे बाबा के सामने अर्ध-चन्द्रमा के मुआफिक खड़े थे और बाबा ने चारों ओर दृष्टि दी। तो जैसे जैसे बाबा दृष्टि देता गया पहले लाइन में दिया, दूसरे में दिया, तीसरी में दिया, चौथी में दिया तो दृष्टि के साथ हर एक के मस्तक से जैसे कोई लाइट का मशाल जलता है, ऐसे यहाँ मस्तक से मशाल के मुआफिक एक कमल के पुष्प जैसा था उससे भिन्न-भिन्न लाइट्स सकाश जैसी फैल रही है। यह एक वण्डरफुल मशाल था, साधारण नहीं था, कमल के पुष्प से बहुत प्रकार की लाइट्स फैल रही थी, जब सभी के मस्तक में जगता हुआ मशाल दिखाई दे रहा था तो भिन्न-भिन्न लाइट्स एकदम चारों ओर तीन लोकों तक जैसे जा रही थी। ऐसे चारों ओर जैसे बहुत फैली हुई लाइट निकल रही थी। तो बाबा ने कहा अच्छा बच्चों को यह 'रूहानी-मशाल' सर्व को सकाश देने, स्व-परिवर्तन, विश्व-परिवर्तन के लिए गिफ्ट में दे रहे हैं। ऐसे बाबा ने गिफ्ट दी और हम बाबा से विदाई ले यहाँ साकार वतन में आ गये। अच्छा - ओम शान्ति्।

24-04-2003

भिन्न-भिन्न बातों में डोंटकेयर और याद में केयरफुल रह निर्भय, निराकारी बनो

आज बापदादा के पास विशेष फारेन में जहाँ आजकल की नई बीमारी फैली हुई है, उन्हों की यादप्यार और समाचार लेकर गई तो सामने से ही बापदादा मुस्कराते खड़े थे और बहुत स्नेह से चारों ओर के बच्चों को दृष्टि से निहाल कर रहे थे मैं भी उस दिव्य शक्तिशाली दृष्टि लेते नयनों में समा गई। कुछ समय बाद बाबा बोले, आओ बच्ची आज मेरे बेफिकर बादशाह बच्चों का क्या समाचार लाया है? मैं बोली बाबा आप तो जानते ही हैं। ऐसे मीठे बाबा जैसे उन बच्चों को ही सकाश दे रहे थे और बोले, बच्चे इस पुरानी दुनिया में तो प्रकृति अपना तमोगुणी रूप दिखाती ही रहती है। कभी बीमारी, कभी तूफान, कभी अर्थक्वेक.. यही तो इस कलियुग के समय प्रकृति और माया की कमाल कहो वा धमाल है लेकिन मेरे बच्चे तो साक्षीपन की सीट पर सेट हो ड्रामा का खेल देखने वाले हैं क्योंकि बच्चों के तो बापदादा सदा रक्षक साथ हैं और बच्चों को तो अब रूहानी डाक्टर बन उन सब कारणों का मूल कारण मन के रोग, अशान्ति, परेशानी की बीमारी को मिटाना है। तो डाक्टर्स सदा किसी भी इन्फेक्शन से दूर रहते हैं। वैसे रूहानी डाक्टर्स भी हर प्रकार की हलचल में अचल सेफ रहने वाले हैं। ऐसे कहते बापदादा ने हांगकांग, सिंगापुर, चाइना आदि के बच्चों को अपने वतन में इमर्ज किया और बहुत स्नेह भरी दृष्टि देते सबके ऊपर अपना वरदानी हाथ घुमाया

तो क्या देखा - बापदादा के हस्तों द्वारा बहुत सुन्दर किरणें निकल रही थी, जो किरणें जैसे जैसे सबके ऊपर पड़ रही थी वैसे वैसे हर एक बच्चे के मस्तक में आत्मा सर्व शक्तियों की किरणों से चमकने लगी और हर बच्चा इतनी शक्तिशाली प्युरिटी की पर्सनाल्टी वाला लग रहा था, जो देख-देख मैं भी हर्षित हो रही थी। कुछ समय बाद बाबा बोले, बच्ची सदा माया के, प्रकृति के भिन्न-भिन्न बातों में डोंटकेयर और बाप की याद में केयरफुल रहते निर्भय, निराकारी बन उड़ते रहो और उड़ाते रहो। उसके बाद बाबा ने दोनों दादियों को याद किया और पूछा तबियत कैसी है? मैंने सुनाया दोनों कुछ भी होते सेवा के उमंग में हैं। बाबा बोले, मेरे मुरब्बी बच्चे हैं, मुरब्बी बच्चों को तो बापदादा सदा स्पेशल साथ और हाथ में हाथ दे चलाता रहता है। चलाता क्या उड़ाता रहता है। ऐसे कहते बापदादा ने हमें अपने हृदय में समा लिया और मैं साकार वतन में पहुंच गई। अच्छा - ओम् शान्ति। 01-05-2003

108 की माला में आना है तो आठों शक्तियां इमर्ज रख उन्हें समय प्रमाण यूज़ करो

(श्रीलंका निवासियों प्रति) - आज अमृतवेले आप सबकी यादप्यार लेकर बापदादा के पास सूक्ष्म वतन में गई तो बाबा सामने खड़े लाइट हाउस की तरह पूरी सृष्टि को दृष्टि दे रहे थे। दृष्टि देने के बाद बाबा बोले, बच्ची आज क्या समाचार लाई हो? मैंने बाबा को कहा कि बाबा आज श्री लंका के भाई-बहनों की विशेष यादप्यार लाई हूँ। तो बाबा ने पूछा श्री लंका को श्री का टाइटल क्यों दिया है? मैं तो मुस्कराती रही। तो बाबा ने कहा कि यहाँ जो मेरे बच्चे हैं वो सदा श्रीमत पर चलने वाले हैं। श्री लंका निवासी माना श्रीमत अनुसार चलने वाले। फिर मैंने बाबा को समाचार सुनाया कि मैं हिन्दू कान्फ्रेन्स के लिए श्रीलंका आई हूँ और यहाँ जो आपके बच्चे हैं वह भी बुला रहे थे। तो बाबा बोले, हिन्दु तो हैं ही देवी देवताओं को पूजने वाले, तो सबको ऐसा दिव्यगुणधारी देवता बनने का सन्देश तो देंगी ही लेकिन जो मेरे बच्चे श्रीलंका में रहते हैं उन भावना-युक्त बच्चों के लिए बाबा का बहुत-बहुत प्यार है और बाबा की यही आश है कि हरेक बच्चा बाप समान इतना शक्तिशाली बने जो लाइट हाउस बनकर पूरी दुनिया को अपनी शुभ भावना की दृष्टि दे। आप बच्चों में यह शुभ भावना होनी चाहिए कि दुनिया के सारे बच्चे मेरे भाई-बहन हैं जो बहुत दु:खी और हताश हैं। अपनी ही जड़ मूर्ति के आगे जाकर रहम मांग रहे हैं। तो मेरे बच्चों से जाकर पूछना कि क्या वे रहमदिल बन दुनिया की आत्माओं को रहम की भावना दे रहे हैं? या बच्चे भी अभी तक बाबा से रहम मांगते हैं? आप बच्चे तो बाबा से ले ही रहे हो अब दूसरों को भी दो। तो बाबा ने कहा कि मेरे श्रीलंका के बच्चों को कहना कि ऐसा पुरुषार्थ करें जो 108 की माला में आ जायें। बाबा ने सुनाया कि 108 की माला में आने के लिए आठों शक्तियां सदा अपने पास इमर्ज रखो और समय प्रमाण इन्हें यूज़ करो। परन्तु बाबा चारों ओर के बच्चों को देखता है कि बच्चे समय पर इन शक्तियों का प्रयोग करने के बजाय, परिस्थिति निकल जाने के बाद उस शक्ति के बारे में सोचते हैं कि अगर मैं इस शक्ति का प्रयोग करता तो अच्छा होता! यह नहीं होना चाहिए था! लेकिन फाइनल पेपर तो एक सेकण्ड का होगा। अगर फाइनल पेपर में जिस शक्ति की जरूरत है उसे आप एक सेकण्ड में प्रयोग में न ला पाये तो पास विद ऑनर कैसे होंगे! 108 की माला में आना माना पास विद ऑनर होना। तो बाबा ने कहा अभी आठों शक्तियों को सदा अपने पास रखना। लेकिन इन आठों शक्तियों में विशेष सहन शक्ति है। अगर आप सदा सहन शक्ति को धारण कर समय पर प्रयोग करते हो तो बाकी शक्तियां आपेही आ जायेंगी। जब आपमें सहन शक्ति होगी तो एकाग्रता और मानसिक स्थिरता भी होगी। और जब ये दोनों शक्तियां होगी तो समय अनुसार अपनी स्थिति बना सकेंगे। तो समय-समय पर अपने आपको चेक करो कि हमारे में किस शक्ति की कमी है? चेक और चेन्ज। सिर्फ चेक भी मत करो, अगर सिर्फ चेक करेंगे और परिवर्तन नहीं लायेंगे तो निराश होंगे कि शायद मेरे भाग्य में नहीं है। इसलिए चेक करके उसी समय परिवर्तन कर लो तो सबकुछ ठीक होगा।

फिर बाबा ने कहा आप श्रीलंका से मेरे पास पहली बार आई हो, तो इन बच्चों के लिए क्या सौगात ले जायेंगी? तो बाबा ने एक बहुत बड़ा हीरा दिया, जिससे आठ रंग, कमलपुष्प की तरह निकल रहे थे। बाबा ने कहा ये बच्चे सभी 108 की माला में आना चाहते हैं, तो बाबा इनको 8 रंगों की सौगात दे रहे हैं, जो आठों शक्तियों का प्रतीक है। तो बच्चों को कहना कि यह आठों शक्तियां सदा अपने पास रखें क्योंकि माया बड़ी चतुर है, वो छीनने की कोशिश करेगी। लेकिन आप इस हीरे की सौगात को अपने मन के भण्डारे में छुपाके रखना। ध्यान रहे कि ये खो न जायें। तो बाबा ने यह सौगात आप सबको देने के लिए मुझे दी और सबको दिल की दुआओं भरी बहुत-बहुत याद देते हुए साकार दुनिया में भेज दिया। अच्छा-ओम शान्ति्। 01-06-2003

दुआयें जमा करो और औरों को कराओ - यही सहज पुरुषार्थ है

(विशेष शान्तिवन वालों के लिये) - आज अमृतवेले हम आप सब शान्तिवन निवासियों की यादप्यार लेके बाबा के पहुँची तो बाबा ने ऐसे बड़ी-बड़ी बांहें फैलाई जैसे अर्ध चन्द्रमा हो गया और उसमें आप सबको इमर्ज किया तो आप सब जैसे बाबा की बांहों की माला में आ गये और दादी को बाबा ने अपने हृदय में समा दिया। तो मीठे बाबा ने आप सबको इतना प्यार किया और बहुत मीठी दृष्टि दी। दृष्टि ऐसी दी जो सभी आकारी से निराकारी आत्मा बन गये। और छोटी-छोटी बिन्दी रूप आत्माओं का जैसे झुण्ड बनकर ऊपर उड़ने लगा, तो यह सीन बहुत अच्छी लग रही थी।

फिर बाबा ने कहा देखो, शान्तिवन वालों को बाबा ने विशेष प्यार किया है, क्योंकि इन्हों ने अपना फैंसला बहुत अच्छा किया है।

शान्तिवन में सेवा करना माना रोज़ दुआयें लेना क्योंकि शान्तिवन में सेवा का विशेष पार्ट है। सेवा से सबकी दुआयें मिलती हैं। तो बाबा ने कहा अगर बच्चे दिल से, नि:स्वार्थ भाव से, सेवा अर्थ सेवा करते हैं तो सेवा की 100 मार्क्स तो इन्हों को मिलेंगी ही। साथ-साथ सेवा से दुआयें लेने का भी बहुत अच्छा चांस है। और कोई विशेष पुरुषार्थ करने की जरुरत ही नहीं पड़ेगी। बस, दुआयें लेते जाओ दुआयें देते जाओ। सेवा में शुभ भावना रखी तो दुआयें दी। और जिसकी सेवा करते हैं, प्यार से भोजन भी बनाते हैं, खिलाते हैं। तो जो ब्रह्माभोजन खाके जाता है वो दुआयें देता है। वह यहाँ के भोजन की कितनी महिमा करता है, कैसा भी खाना खाने की आदत हो लेकिन यही सोचते हैं कि यहाँ बिना प्याज़ के, बिना इसके.. कैसे इतना टेस्टी भोजन बनाते हैं... तो इन्डायरेक्ट सेवाधारियों के खाते में दुआयें जमा होती रहती हैं।

फिर बाबा ने कहा कि शान्तिवन वाले सेवा के निमित्त बनी हुई आत्मायें चाहे किसकी कोई भी ड्यूटी है। सब डिपार्टमेन्ट का एक दो से कनेक्शन है, चाहे बिजली है, पानी है, आवास-निवास है। सबको बहुत-बहुत दुआयें मिलती हैं। तो बाबा ने कहा कि शान्तिवन वालों को बहुत-बहुत-बहुत अच्छी गिफ्ट मिली है - बिना मेहनत के दुआयें जमा करने की। तो जमा करो और औरों को भी जमा कराओ और सदा यही अपना चित्र याद रखना कि मैं बाबा की बांहों में समाया हुआ हूँ, इससे बहुत अच्छी अवस्था रहेगी। ऐसे कहते बाबा ने दादी जी को बहुत-बहुत दिल से याद दी और कहा देखो दादी की कितनी दुआयें आज के दिन जमा हो गई क्योंकि आप सबके लिये सन्देश दिया कि जाओ और सन्देश लेकर आओ। तो बाबा ने कहा एक दिन में दादी की पद्मगुणा दुआयें जमा हो गई। अच्छा - सभी को याद .... ओम् शान्ति।

08-06-2003

मेहनत से मुक्त बनना है तो बाप समान बनो, फालो फादर करो

(लण्डन निवासियों प्रति) - आज जब अमृतवेले हम बाबा के पास पहुँची तो बाबा सामने ही विष्णु के रूप में खड़े थे और बहुत स्नेह भरी दृष्टि दे रहे थे, उसी दृष्टि की छाया में हम भी दृष्टि लेते-लेते जब बाबा के आगे पहुँची तो बाबा ने कहा - आओ मेरी ओ. के. बच्ची आओ। फिर बाबा ने पूछा बच्ची, आज किसकी याद लेकर आई हो? मेरे ओ. के. बच्चों की याद लाई हो? यू. के. के मेरे बच्चे तो सदा ओ. के. रहने वाले हैं। तो हमने कहा - हाँ बाबा, आज तो वहाँ से ही आई हूँ। तो बाबा ने कहा तुमको पता है यह मेरे बच्चे सदा ओ. के. अर्थात् ६ बाप और ख किंगडम को सदा याद रखने वाले हैं। मैंने कहा बाबा आज तो आप इन्हें सर्टीफिकेट देते जा रहे हो। तो बाबा मुस्कराये और कहा मेरे ओ. के. बच्चे हैं ही ऐसे। तो ऐसा सर्टीफिकेट आज बाबा ने आप यू. के. वाले बच्चों को दिया।

फिर बाबा ने कहा आज अकेली क्यों आई हो? मैंने कहा बाबा मैं तो जब भी आती हूँ अकेली ही आती हूँ। आप तो सबको एक सेकण्ड में इमर्ज कर देते हो, मैं कैसे सबको लेकर आऊंगी। तो बाबा ने ऐसे नज़र घुमाई और आप सारे ही वहाँ इमर्ज हो गये। फिर बाबा ने कहा अच्छा आज इन बच्चों को ऐसे स्थान पर ले चलता हूँ जो इन सबको बहुत मजा आयेगा। तो बाबा ने दोनों दादियों को भी इमर्ज किया और एक हाथ में दादी जानकी का हाथ और दूसरे में दादी जी का हाथ पकड़ तीनों एक साथ आगे चले, पीछे-पीछे आप सब थे। चलते-चलते देखा सामने बहुत ऊंची लाइट की पहाड़ी दिखाई दे रही थी, मेरे को संकल्प आया इस पहाड़ी पर कैसे चढ़ेंगे। तो बाबा ने कहा इस पहाड़ी के चारों ओर आप सब खड़े हो जाओ, तो जब सभी खड़े हो गये तो बाबा ने ताली बजाई तो ऑटोमेटिक सभी बूढ़े जवान ऐसे चढ़ गये जैसे अलौकिक लिफ्ट हो। एक सेकण्ड में सभी ऊपर पहुँच गये। जब सब ऊपर पहुँच गये तो लाइट की पहाड़ी बहुत सुन्दर लग रही थी जैसे यहाँ सूर्य उदय होता है तो उस समय आकाश कितना गोल्डन हो जाता है, ऐसे वो भी गोल्डन लाइट की पहाड़ी दिखाई दे रही थी। जब हम ऊपर चले गये तो सभी दादियों को बाबा ने सामने खड़ा किया और बाकी सब लोगों को गोल सर्कल में खड़ा किया। जब सभी खड़े हो गये तो बाबा और दादियाँ सभी को दृष्टि दे रहे थे, उस दृष्टि से सभी का फेस लाइट में चमकने लगा और धीरे-धीरे सबका आकार स्वरूप समाप्त होता गया और सभी आत्मा रूप में जैसे गोल बॉल होता है ऐसे बॉल के रूप में आत्मायें ऊपर-ऊपर उड़ने लगी। और निराकार आत्मायें जैसे निराकारी परमधाम घर में पहुँच गई। फिर हमको बाबा ने आकारी वतन में इमर्ज किया। दादियाँ भी उस समय नहीं थी, मैं ही अकेली थी तो बाबा ने कहा देखा, आज मैंने बच्चों को कैसी एक्सरसाइज कराई। मैंने कहा बाबा एक बात नहीं की, आपने बच्चों को टोली तो खिलाई नहीं। तो बाबा ने कहा मैंने सबको टोली ही तो खिलाई, यह भी तो खुशी की दिलखुश मिठाई खिलाई ना। तुमने देखा मैंने सभी बच्चों को एक्सरसाइज की दिलखुश मिठाई खिलाई!

उसके बाद बाबा ने समाचार पूछा तो मैंने बाबा को मधुबन का तथा चल रही सेवाओं का सब समाचार सुनाया। तो बाबा ने कहा कि बच्चे जब आपस में मिलते हैं तो यही सोचते और कहते हैं कि बाबा हम बच्चों से क्या चाहते हैं, वही हम करके दिखायें? तो बाबा ने कहा कि बच्चों को तो बाबा सिर्फ एक ही बात कहता है, विस्तार नहीं। वह एक ही शब्द है फॉलो फादर। और कोई मेहनत नहीं करो। बाप और दादा दोनों आप बच्चों के सामने हैं - एक निराकार है दूसरा आकारी फरिश्ता है। तो अगर आपको निराकार आत्मा बनना है तो निराकारी बाप को फॉलो करो और कर्मयोगी फरिश्ता बनना है तो ब्रह्मा बाबा को फॉलो करो। सिर्फ बाप समान बनो, फॉलो फादर करो तो सभी प्रकार की मेहनत से छूट जायेंगे। बाबा को सभी बच्चों की यही एक बात अच्छी नहीं लगती है - बच्चे जब युद्ध करते हैं, व्यर्थ संकल्पों को हटाने की मेहनत करते हैं तो बाबा को अच्छा नहीं लगता क्योंकि बाबा जानता है कि बच्चों ने मेरे को पाने के लिए 63 जन्म मेहनत की है और अभी जब मेरे को पा

लिया फिर भी मेहनत कर रहे हैं तो बाबा को यह मेहनत अच्छी नहीं लगती। इसलिए एक ही शब्द याद रखो फॉलो फादर। तो यही बाबा बच्चों से चाहता है और यही बच्चे बनने हैं। बाबा ने कहा मैं जानता हूँ बच्चे थोड़ा नटखट होते ही हैं जो माया से युद्ध करने लग जाते हैं, जैसे छोटे बच्चे जो नटखट होते हैं उन्हें माँ बाप अगर कहें कि आराम से बैठो तो भी बाहर चले जाते, कुछ न कुछ चक्कर लगाकर खेलकर ही आयेंगे, ऐसे मेरे बच्चे भी कभी कभी माया से खेलने चले जाते हैं फिर मेहनत लगती है। बाबा ने कहा माया कोई हैरान नहीं करती है वह तो खिलौना है, उससे खेलो भले लेकिन घबराओ नहीं, मेहनत नहीं करो।

उसके बाद बाबा ने सबको यादप्यार दी और कहा मेरे एक एक बच्चे को याद देना फिर कहा तुम यहाँ आई हो तो कोई गिफ्ट लेकर आई हो? तो मैंने कहा बाबा गिफ्ट क्या लाऊं, वहाँ से लाने में तो कस्टम वाले पकड़ लेंगे। तो बाबा ने कहा अच्छा तुम नहीं लाई हो तो वतन से ले जाओ, मैंने कहा हाँ बाबा मैं यहाँ से तो ले जा सकती हूँ। तो बाबा ने बहुत अच्छा क्रिस्टल का रंग बिरंगी कमल का पुष्प जो 8 रंग का था वह दिया और कहा यह लेकर आओ और सभी बच्चों को गिफ्ट देकर कहना कि इन अष्ट शक्तियों को धारण करते क्रिस्टल की तरह सदा ही चमकते रहना। तो यह गिफ्ट मैं तो ले आई, आप सब स्वीकार करना। गिफ्ट देने के बाद बाबा ने कहा अच्छा मैं तुमको अकेला छुट्टी नहीं दूँगा, दोनों दादियों को इमर्ज किया और भाकी में लिया, जैसे ही बाबा ने दादियों को भाकी में लिया तो हम चार हो गये और वह चार ही ऐसे हो गये जैसे चहुँमुखी ब्रह्मा दिखाते हैं ना, ऐसे ही हम साकारी ब्रह्मा के फेस में आ गये। चार मुखी ब्रह्मा हो गये, यह सीन बड़ी अच्छी लग रही थी। फिर चारों ही आत्मायें जैसे उड़कर हम नीचे साकार वतन में आ गई। अच्छा - ओम शान्ति्।

08-06-2003

सन्तुष्टमणियां बन सदा बाबा के दिल की डिब्बी में समाये रहो

(लण्डन निवासियों प्रति) - आज जब बाबा के पास वतन में भोग स्वीकार कराने के लिए गई तो जैसे बाबा अपने कमरे में गद्दी पर बैठते थे, ऐसे ही आज बाबा गद्दी पर बैठे थे, जब मैं बाबा के सामने पहुंची तो बाबा ने कहा ''आओ मेरी सन्तुष्टमणि बच्ची आओ।'' ऐसे बहुत मीठी दृष्टि देते बाबा ने अपने पास बिठा लिया और कहा बच्ची आज तो तुम भोग लेकर आई हो, यह भोग मैं किसको खिलाऊं? मैंने कहा बाबा हमने तो यह भोग आपके लिए लाया है। सभी ने बड़े प्यार से भोग बनाया है। बाबा ने कहा वह तो बनाने वालों के प्यार की खुशबू आ रही है। फिर बाबा ने कहा जितनी भी चीज़ें हैं वह सब एक एक चीज जिन्होंने बनाई है वह सब अपने हाथ से खिलायें। तो जो भी भोग बनाने वाली बहनें थी वह सब वहाँ इमर्ज हो गई और उन्होंने एक एक चीज अपने हाथ में उठाई और बाबा को खिलाई। बाबा ने फिर सभी को अपने हाथ से खिलाया। हमें भी बाबा ने भोग खिलाया और कहा बच्चों को कहना कि सदा अपने को सन्तुष्ट-मणियां समझकर बाबा के दिल की डिब्बी में रहना। सदा सन्तुष्ट रहने वाले, सर्व को सन्तुष्ट करने वाले और विश्व की सर्व आत्माओं को सन्तुष्टता की अंचली देने वाले बच्चे हो, यह महावाक्य बाबा ने उच्चारण किये, भोग खाया और हमें वापस साकार वतन में भेज दिया। ओम् शान्ति।

26-06-2003

मन को कन्ट्रोल कर व्यर्थ को स्टाप करो, सर्व शक्तियों का स्टाक जमा करो

(लण्डन के डायमण्ड हाउस के उद्‌घाटन अवसर पर) - आज आप सबके दिल की यादप्यार लेकर मैं बाबा के पास पहुँची। जैसे ही मैं दूर से समीप जाती रही तो बाबा की दृष्टि से लाईट की निकलती किरणें बहुत प्यारी लग रही थीं, बहुत सुन्दर भी थी। जिस लाइट का अनुभव करते हुए मैं बाबा के पास पहुँची। तो बाबा ने कहा ''आओ मेरे स्वराज्य अधिकारी बच्चे आओ।'' जैसे ही बाबा ने कहा इतने में हमने देखा बाबा ने आप सभी बच्चों का आह्वान किया और आप भी सब वहाँ पहुँच गये और एक हार्ट के शेप में खड़े हो गये। बाबा सभी को दृष्टि दे रहे थे, दृष्टि मिलते ही जैसे वर्षा होती है, ऐसे रंग-बिरंगे डायमण्ड की वर्षा हो रही थी। डायमण्ड ऐसे लाइट (हल्के) थे, जैसे फूल और साथ में बहुत सुन्दर गीत बज रहा था– बधाई हो... बधाई हो.. कभी मुबारक तो कभी म्दर्ह्रूॅर्ल्ह्रूॅंदह (कंगरेच्युलेशन) बज रहा था। वो जो साज और वर्षा हो रही थी, उससे आप सब जैसे मन ही मन में डान्स कर रहे थे। वायुमण्डल बहुत खुशी का हो गया और सभी के चेहरे खुश थे।

इसके बाद बाबा ने कहा बच्ची, आज बाबा आप बच्चों को नया दृश्य दिखाते हैं, तो बाबा के साथ हम सभी चले। आगे चलकर क्या देखा - एक सर्कल था और उसमें नई सीन यह थी जैसे परमधाम की लाइट और उसमें आत्मायें हैं, वैसे उस सर्कल में एक-एक आत्मा चमक रही थी। जैसे सी.डी. में आवाज भरा होता है वैसे उसमें लाइट भरी हुई थी। वहाँ जो सर्कल था, उसमें बहुत चित्र थे। ऊपर में लाइट के शब्दों में आया कन्ट्रोलिंग पावर और रूलिंग पॉवर। मैं बाबा की तरफ देखने लगी तो बाबा ने कहा बच्ची तुमने समझा यह क्या है? यह जो सर्कल है वो आत्मा है और जो सी.डी. है वो मन है। अभी समय जितना नजदीक आ रहा है, तो बच्चों को अपने मन के ऊपर कन्ट्रोलिंग पावर और रूलिंग पावर चाहिए। ऐसे ही सीन पूरी हो गयी तो फिर मैं इस रूप में प्रकट हुई।

फिर बाबा ने पूछा किन बच्चों का अपने मन पर कितना कन्ट्रोल है और कितनी परसेन्टेज़ में कन्ट्रोल है? वो सभी के चेहरे बताने लगे। उत्तर दिया नहीं लेकिन बाबा सभी के चेहरे से देख रहा था। बाबा ने कहा बच्चे यदि स्वराज्य अधिकारी नहीं बनेंगे तो विश्व राज्य अधिकारी कैसे बनेंगे। जैसे राजा ऑर्डर करता है, यह लॉ है यह ऑर्डर है, वैसे मन को भी लॉ में रखो और ऑर्डर में चलाओ। तो बाबा ने कहा कि बाबा

अभी यही चाहते हैं कि मन के मालिक बनें, अधीन नहीं। बाबा के वर्से के अधिकारी हों, मन के अधीन नहीं। फिर बाबा ने कहा अभी तक रिजल्ट में देखा कि कई बच्चों के वेस्ट थॉट्स चलते हैं और वेस्ट दृष्टि-वृत्ति भी जाती है, अभी सबको पूछो स्टॉप कर सकते हो? स्टॉप करने के लिए पहले चेक करो सर्व शक्तियों का स्टॉक है? तो स्टॉक करने से स्टॉप हो जायेगा। यही बाबा के मन की आशायें हैं। सभी बच्चे बाबा के आशा के दीपक हैं। तो इस आशा को पूर्ण करो। सारा समय बाबा सभी से बात ही कर रहे थे, आप सभी मेरे साथ-साथ थे। उसके बाद आप मर्ज हो गये और दोनों दादियों को इमर्ज किया, मैं भी थी। दोनों दादियाँ बाबा के कंधे पर आ गई तो मैं कहाँ जाऊं? तो बाबा ने मुझे हृदय से लगा दिया। फिर बाबा ने दोनों दादियों से हाल-चाल पूछा। सभी बच्चों का हाल-चाल, सर्विस का हाल-चाल क्या है? सभी को सम्पूर्ण बनाकर ब्रह्मा बाप के साथ मुक्तिधाम का गेट कब खोलेंगे? दादियाँ कहने लगी बाबा चाबी तो आपके पास है। फिर सेवा समाचार पूछा। तो मैंने कहा दादी जानकी और जयन्ती बहन ने पूछा था - बाबा आगे की सर्विस का डायरेक्शन देवे। तो बाबा ने कहा बच्चे जहाँ भी हैं अच्छी सेवा कर रहे हैं लेकिन अब तक आवाज नहीं फैला है। आवाज फैलाने का साधन है मीडिया। मीडिया की सर्विस और अटेन्शन से करनी है। वो आपकी तरफ से बोलें यह क्या कार्य चल रहा है और आत्माओं को लाभ क्या है? मीडिया की सर्विस तो कर रहे हैं लेकिन खुद समझकर खुद बोलें। दूसरा- जहाँ-तहाँ बड़ी कम्पनीज़ हैं उनके हेड की सेवा करो। हेड की सेवा करने से पूरी कम्पनी की सेवा हो जाती है। ऐसी आवाज फैलाओ जो यह आवाज निकले कि यही है यही है....। अभी अच्छा है, अच्छा है यह तो कहते हैं लेकिन यह आवाज निकले, यही है, यही है। यही एक है, एक की तरफ इशारा जाये। अभी दूसरों को भी एड (add) करते हैं लेकिन यही एक हैं, यही हैं तभी एक ही तरफ सबका अटेन्शन जायेगा।

फिर दोनों दादियों को हथेली पर ऐसे नचाया। दोनों दादियों को कहा बहुत, बहुत, बहुत सेवा की मुबारक। हमको भी बाबा ने बाहों की माला पहनाकर छुट्टी दी फिर मैं आपके सामने आ गई। ओम् शान्ति।

05-07-2003

चैतन्य प्रदर्शनी वह है जिसके नयनों में प्युरिटी की पर्सनैलिटी और होठों पर रूहानी मुस्कान है

(कुमारों की भट्ठी में) - आज आप सभी चारों ओर के कुमारों का याद-प्यार लेते हुए हम बाबा के पास पहुँची तो नियम प्रमाण जैसे बाबा दूर से ही खड़े हुए नयनों से मिलन मनाते स्वागत करते हैं, ऐसे ही आज भी बाबा नयन मिलन मनाते, दृष्टि देते हुए स्वागत कर रहे थे, आज मैं अकेली नहीं थी, आप सबकी यादप्यार लेकर गई थी तो आप सब भी मेरे साथ थे। तो जब मैं बाबा के पास पहुँच गई तो बाबा बोले बच्ची, आज क्या समाचार लाई हो? मैंने कहा बाबा आज सभी तरफ के कुमारों की याद-प्यार लाई हूँ। तो बाबा मुस्कुराते हुए बोले बच्ची, कुमार ग्रुप अर्थात् महावीर ग्रुप क्योंकि कुमारों में डबल शक्ति है 1- शारीरिक शक्ति और 2- अभी परमात्म शक्ति भी है। तो आज मेरे ऐसे महावीर बच्चों की याद-प्यार लाई हो ....। तो मैं भी मुस्कुराई। उसके बाद बाबा ने कहा कि देखो बच्ची, बाबा की कुमारों में बहुत-बहुत-बहुत उम्मीदें हैं। मैं सुनती रही। तो बाबा ने कहा कुमार (यूथ) आज विश्व के लिए जहाँ तहाँ अज्ञान होने के कारण प्राब्लम हैं। लेकिन मेरे बच्चे जो हैं वह प्राब्लम हल करने वाले हैं। इसलिए बाबा का भी कुमारों से बहुत प्यार है। तो मैंने कहा बाबा कुमारों से दादी का तो बहुत-बहुत प्यार है। कुमारों को देख करके दादी बहुत खुश हो रही है। तो बाबा ने कहा कि फिर कुमार क्या रेस्पान्ड (Respond) कर रहे हैं? मैंने कहा - बाबा वह भी बहुत खुश हो रहे हैं। मैंने तो यही देखा, अन्दर की बात तो कुमार जानें। तो बाबा ने कहा कि बाबा यही चाहता है कि ''मेरा हर एक कुमार इस भट्ठी से ऐसा परिवर्तन करके जाए, जो इन्हों के फेस ही बदल जाएं।'' मैंने कहा बाबा फेस कैसे बदलेंगे? तो बाबा ने कहा - बाबा को हर एक कुमार में उम्मीद है कि इन्हों के जो फेस हैं, नैन चैन हैं वह बिल्कुल प्रदर्शनी का रूप बन जाए। कोई भी देखे तो इनके नयनों से, फेस से पवित्रता की पर्सनैलिटी अनुभव हो। जैसे कोई रॉयल फैमिली वाला बच्चा होता है तो उसके मस्तक में लिखा हुआ नहीं होता है कि यह रॉयल फैमिली का है लेकिन उसका फेस, उसके नयन, उसकी चाल-ढाल सिद्ध करती है कि ये कोई रॉयल फैमिली का, बड़ी फैमिली का है। ऐसे बाबा की यही उम्मीद है कि हर एक के नयनों से अनुभव हो कि यह रीयल प्युरिटी की पर्सनालिटी वाले कुमार हैं। सबको प्युरिटी का वायब्रेशन आये। जैसे आपने देखा होगा कि जो अच्छी महान आत्मायें होती हैं उनकी शक्ल से अनुभव होता है कि यह सचमुच महान आत्मा हैं, इनमें कुछ ना कुछ विशेषता है। ऐसे मेरे बच्चे तो महान आत्माओं से भी महान हैं। इसलिए बाबा की यही उम्मीदें हैं कि हर एक बच्चे के नयनों से प्युरिटी की पर्सनैलिटी अनुभव हो और हर एक के होठों पर ऐसी रूहानी मुस्कुराहट की झलक हो जो कोई भी, कैसी भी संस्कार वाली आत्मा हो, अशान्त हो लेकिन आपके परमात्म प्यार की मुस्कुराहट उनको एक सेकेण्ड के लिए भी दु:खी से सुखी कर दे और उसको खुशी की झलक का अनुभव कराये। तो बाबा ने कहा जैसे प्रदर्शनी में चित्रों तरफ आकर्षण होती है, ऐसे मेरे हर एक कुमार का जो मुखडा है वो ऐसा चैतन्य प्रदर्शनी हो जाए जो हर एक देख करके खुश हो और बार-बार देखने की इच्छा हो कि इन्हों को देखने से हमारे में परिवर्तन आता है। तो जब आप सब अपने सेन्टर पर जायेंगे और एक दो के कनेक्शन में आयेंगे तो वह महसूस करें कि इनके नयनों से सचमुच पवित्रता की पर्सनैलिटी अनुभव हो रही है। इनकी मुस्कुराहट में खुशी की झलक दिखाई दे रही है। तो बाबा ने पूछा बच्ची, ऐसा परिवर्तन कुमारों ने भट्ठी में किया है? तो मैं क्या जवाब दूँ? मैं तो मुस्कुराती रही। तो बाबा ने कहा अच्छा - दादी यह रिजल्ट सभी से पूछे।

उसके बाद बाबा ने कहा कि कुमारों की एक बात पर बाबा को प्यार और नाज़ है। किस बात पर? जो भी कुमार आये हैं उन्होंने

हिम्मत तो रखी है - चाहे पुरूषार्थी कितने भी हों, लेकिन हिम्मत रख करके बाबा के तो बने हैं ना। दुनिया की जो बातें हैं, दुनिया का संग, दुनिया की आकर्षण उसका त्याग करने की, किनारा करने की हिम्मत तो रखी है। इसीलिए हर एक कुमार को बाबा का वरदान है - ''हिम्मत आप बच्चों की मदद विशेष बापदादा की आप के साथ है ही है।'' सिर्फ इस वरदान को यूज़ करना, प्रैक्टिकल में अनुभव करना।

उसके बाद बाबा ने कहा - दादी तो कुमारों की बहुत खातिरी कर रही है। सब कुछ खिला भी रही है, बहला भी रही है। मैंने कहा बाबा सौगात भी इन्हों के लिए बढ़िया-बढ़िया सोची है। और जो भी इन कुमारों की आशायें हैं, एप्लीकेशन हैं वो दादी पूरी कर रही है। तो बाबा ने कहा दादी तो बहुत सौगातें दे रही है। लेकिन बाबा भी आज इन सभी कुमारों को विशेष चार सौगातें देता है:-

1- एक बापदादा का दिलतख्त

2- दूसरा - उड़न खटोला, (वह उडन खटोला है मन) मन के उड़न खटोले से जब चाहें सूक्ष्म वतन में पहुंच जाएं, परमधाम में पहुंच जाएं या मधुबन में मन से आ जायें।

3- तीसरा - ताज। वह ताज है - विश्व कल्याण करने के जिम्मेवारी का। लेकिन यह ताज धारण करने के लिए डबल लाइट बनना पड़े तब ही यह ताज सेट हो सकेगा, नहीं तो अपसेट होता रहेगा। ऐसे ही उड़न खटोले के लिए-मन के ऊपर कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर चाहिए और दिलतख्त के लिए ''साफ दिल, सच्ची दिल'' चाहिए। और....

4- चौथी सौगात थी - सफलता की माला। बाबा ने कहा सफलता तो मेरे बच्चों के गले का हार है। तो यह चार सौगातें बाबा सभी कुमारों को दे रहे हैं, इन सौगातों को बहुत सम्भाल करके रखना और इनकी जो विधि है, उस विधि से ही सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

ऐसा कहते बाबा ने दादी जी को और दादी जानकी को वतन में इमर्ज किया। बाबा ने कहा यह जोड़ी एक दो से अलग नहीं होती है, इसलिए बाबा दोनों को इमर्ज करता है। मैं तो साक्षी हो करके देखती रही। बाबा ने कहा यह मेरे अति प्यारे, अति न्यारे और बाप समान बापदादा के मस्तक की मणियाँ हैं। जैसे मस्तक पर मणि चमकती है, वह बहुत चमकीली और तेजस्वी होती है। ऐसे यह दोनों दादियां बाबा की मस्तकमणि बन विश्व को रोशनी दे रही हैं, चमका रही हैं और इन्हों की विद्धि से विश्व तो चमकनी ही है। ऐसे कहते बाबा ने मेरे से भी मुलाकात की और मैं साकार वतन में पहुँच गई। अच्छा -ओम् शान्ति। 16-07-2003

मनोबल और वाणी के बल द्वारा सफलता मूर्त बनो

(टीचर्स भट्ठी में) - आज बापदादा के पास अपनी मीठी दादियों की और आप सब निमित्त टीचर्स बहिनों की यादप्यार ले वतन में पहुंची तो दूर से क्या देखा कि बापदादा आज लाइट के चबूतरे पर बैठे हैं और नयनों वा मस्तक से भिन्न-भिन्न लाइट्स की किरणें निकल, लाइट हाउस समान विश्व के गोले पर सर्व आत्माओं प्रति चक्कर लगा रही थी। ऐसे दृश्य लग रहा था जैसे एक विचित्र छतरी घूम रही है और लाइट की किरणें सर्व आत्माओं प्रति जो जा रही थी - वह ऐसे लग रही थी जैसे सर्व के ऊपर छत्रछाया पड़ रही है। मैं दूर से यह दृश्य देख हर्षित होते नजदीक बढ़ रही थी और नजदीक पहुंचते ही बापदादा ने अपने साथ लाइट के चबूतरे पर बिठा दिया। मुझे भी ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे मैं भी बापदादा के साथ सर्व आत्माओं को लाइट हाउस बन लाइट दे रही हूँ, यह अलौकिक अनुभव तो बड़ा प्यारा शक्तिशाली था। थोड़े समय के बाद बाबा बोले बच्ची देखा बापदादा क्या करते हैं!

अब सर्व निमित्त टीचर्स को भी इसी सूक्ष्म मनोबल की सेवा में मन को बिजी रखना है। अपने समय को सफल करना है तो सर्व प्रकार की स्थूल सेवा, सूक्ष्म सेवा में सफलता बहुत श्रेष्ठ और सफल हो जायेगी। अभी तो बापदादा देखते हैं कि सभी मेरी मीठी बच्चियां योग लगाने वा सेवा की सफलता में मेहनत करती रहती हैं लेकिन जितनी रिजल्ट चाहती हैं उतनी नहीं होती। मेहनत ज्यादा है उसके बैलेन्स में सफलता यथाशक्ति है। बापदादा को इस ग्रुप में सेन्टर सम्भालने वाले वा साथी बनने वाले बच्चों को देख बहुत दिल में प्यार आता है कि बच्चियों को इतनी भी मेहनत क्यों करनी पड़े। मेरी स्वराज्य अधिकारी बच्चियां तो दिलतख्त-नशीन बन मनोबल और वाणीबल डबल शक्ति से बहुत सहज सफलता को प्राप्त कर सकती हैं और करनी ही है। तो मेरे प्यारे सेवा के साथी बच्चों को कहना कि बाप के दिल की आश को सम्पन्न करने वाली बच्चियां अब बापदादा यही चाहते हैं कि हर बच्चा समय, संकल्प, शक्तियों को सफल करो और सफलता सहज प्राप्त करो। अब तो बस यही विशेष दृढ़ संकल्प अपने दिल में, मस्तक में निरन्तर इमर्ज रहे कि लाइट हाउस बन सकाश देनी है, स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन कर अव्यक्त फरिश्ता बन ब्रह्मा बाप के साथ घर चलना है, घर जाना है। यही धुन रात दिन रहे और यही धूम मचाओ कि परिवर्तन होना है, परिवर्तन करना है। तो मेहनत मुक्त बन ब्राह्मण जीवन में मीठी-मीठी जीवनमुक्त अवस्था का अनुभव करेंगे। बेहद का वैराग्य स्वत: अनुभव होगा और अनेक प्रकार के लगाव, माया के झुकाव से मुक्त हो जायेंगे। यही मन वशीकरण मन्त्र सदा वरदान के रूप में याद रखना।

बापदादा को तो छोटे बड़े लाडले बच्चों की हिम्मत देख बहुत प्यार आता कि बच्चियां हिम्मत रख इतने समय से निमित्त सेवा के साथी टीचर्स बनी हैं। इन्हों को तो बापदादा ''सदा उड़ती रहें, सफलता मूर्त रहें, दिलतख्तनशीन रहें, देह-भान की मिट्टी में पांव भी नहीं रखें, ऐसे देखने चाहते हैं। बोलो, मीठी बच्चियां यही बाबा की आशा पूर्ण करेंगी ना। बापदादा की आशाओं के दीपक हो ना!

सच तो आज बाबा को बहुत-बहुत टीचर्स प्रति प्यार आ रहा था। ऐसे कहते बापदादा ने हमारी सर्व दादियों सहित सब टीचर्स को याद

किया और सभी को इमर्ज किया। उस समय की सीन ऐसे थी जैसे मधुबन में जब बापदादा आते हैं तो दोनों दादियां बापदादा के साथ दोनों तरफ बैठती हैं और दूसरी दादियां भी साथ में बैठती, ऐसे ही वतन में भी इमर्ज किया। आप सबको जैसे अर्ध चन्द्रमा के रूप में बैठे हुए इमर्ज किया और बापदादा सर्व को मीठी-मीठी दृष्टि दे रहे थे। दोनों दादियां तो दोनों कंधों पर कंधे रख बाहों से समा गई। सर्व दादियां भी बहुत स्नेह के सागर में समाई हुई थी। बापदादा भी आप सभी के स्नेह में समाया हुआ था। सबके स्नेह की लहरें सागर में समा रही थी, कुछ समय तो सब लवलीन थे।

उसके बाद यह दृश्य समाप्त हो गया और बाबा बोले, बच्ची हमारी मीठी टीचर्स प्रति क्या सौगात लेकर जायेंगी! मैं मुस्कराई तो सामने देखा सौगात का टेबुल सामने आ गया। मैंने खोला तो क्या देखा - उसमें ताज और चिंदियां थी। ताज बहुत सुन्दर नये प्रकार का था। 8 शक्तियों की भिन्न-भिन्न लाइट्स अर्ध चन्द्रमा के रूप में ताज के बीच में चमक रही थी और बीच में एक बड़ा सुनहरी लाल हीरा मीठा बाबा चमक रहा था। बाबा बोले, सबको यह ताज देना और यही कहना कि ''सदा बाबा को याद कर अष्ट शक्ति धारनी शक्ति रूप बनो और सदा शुभचिंतन, श्रेष्ठ चिंतन की चिंदी मन और मस्तक में रहे।'' ऐसी याद सौगात देकर बापदादा ने सबको बहुत-बहुत याद दी और हम साकार वतन में पहुंच गई। ओम शान्ति्।

24-07-2003

संकल्प, बोल, वृत्ति-दृष्टि में व्यर्थ वा निगेटिव से मुक्त रहना ही सम्पूर्ण पवित्रता है

(युगलों की भट्ठी में) - आज बापदादा के पास भट्ठी में आये हुए प्रवृत्ति वाले भाई-बहिनों की यादप्यार लेते हुए वतन में पहुंची। दूर से ही बापदादा के मधुर मिलन की अनुभूति करते, दिव्य नज़र से निहाल होते नजदीक पहुंच गई। बाबा बोले, आओ मेरे पदमापदम भाग्यवान बच्चे आओ, ऐसे कहते बाबा ने अपने हृदय में समाए अपनी अलौकिक फरिश्ते की बांहों का हार मेरे गले में डाल दिया। यह अलौकिक हार पड़ते दिल ही दिल में अपने भाग्य को देख हर्षित हो रही थी कि अनेक भक्त आत्मायें तो भगवान को भिन्न-भिन्न हार पहनाते लेकिन हमें भगवान स्वयं अपने अमूल्य अलौकिक बांहों की माला पहना रहे हैं। ऐसी माला तो सारे कल्प में भी नहीं मिलती। ऐसे भाग्य की प्राप्ति में ही समा गई। बापदादा बोले बच्ची, बापदादा तो हर बच्चे को दिव्य बाहों में समाते हैं और सदा बच्चों के भाग्य के ही गीत गाते रहते हैं। बच्चों की भी कमाल देखो - बापदादा ने दिल के संकल्प से आओ बच्चे, आओ बच्चे कहा, निमन्त्रण दिया और सब बच्चे कैसे पहुंच गये हैं, समा गये हैं। उसके बाद बाबा बोले, अभी भी बच्चों की कमाल दिखाऊं, ऐसे कहते बाबा ने संकल्प किया और इतने में देखा एक बहुत बड़ा गोल सर्कल में हाल था और चारों ओर लाइट के आसन थे। एक सेकण्ड में ही सब आये हुए आप प्रवृत्ति वाले ग्रुप हाल में पहुंच गये और अपने-अपने आसन पर बैठ गये। वह दृश्य भी ऐसे सुन्दर लग रहा था, जैसे फरिश्तों की सभा सजी हुई है। बापदादा बड़े प्यार से सभी को दृष्टि दे रहे थे और मधुर बोल बोले, बच्चे सदा प्रवृत्ति में रहते पर-वृत्ति में न्यारे और बाप के प्यारे रहने वाले, डबल लाइट और माइट की बिन्दी बन चारों ओर वायुमण्डल को भी लाइट (हल्का) बनाओ क्योंकि आजकल सर्व आत्मायें अनेक बोझों से बहुत दबी हुई हैं, इस कारण निर्बल बन चुकी हैं। ऐसी आत्माओं को अपने फरिश्ते स्वरूप से डबल लाइट बनने का वायब्रेशन दो और बोझ से मुक्ति दिलाए उड़ाओ, यही आप पर-वृत्ति में रहने वाली आत्माओं की विशेष सेवा है। उसके बाद यह दृश्य समाप्त हो गया और बाबा ने पूछा बच्ची और क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आजकल तो इसी ग्रुप की मधुबन में रिमझिम है। बरसात भी खूब अपना पार्ट बजा रही है लेकिन सब प्यार से योग भट्ठी, क्लासेज़ कर रहे हैं। डायमण्ड हाल फुल भर जाता है। यह दृश्य सभी को बहुत अच्छा लग रहा है। बापदादा मुस्कराते बोले, बापदादा हर एक बच्चे से अब यही चाहते हैं कि हर एक निरन्तर और सहज संकल्प, स्वप्न में भी प्युरिटी की पर्सनैलिटी में रहे। हर एक के चेहरे पर यह दिव्य पर्सनै-लिटी की झलक प्रत्यक्ष दिखाई दे क्योंकि इस प्रवृत्ति मार्ग के ग्रुप द्वारा ही पवित्रता के महान शक्ति की प्रत्यक्षता होनी है। जो नामधारी महात्माओं का भी सिर झुकाने वाले हैं, बापदादा ऐसे अंगद समान बच्चों को बार-बार अमर भव, अटल भव, अचल भव का वरदान देते रहते हैं। ऐसे कहते ऐसे लगा जैसे बाबा हमारे सामने होते हुए भी वहाँ नहीं हैं। मैं देखती रही। कुछ समय बाद बाबा हमें देख मुस्कराये, मैं बोली बाबा आप कहाँ थे? बाबा बोले, मैं इस ग्रुप के बच्चों को देख रहा था कि बच्चे हिम्मत और उमंग-उत्साह से चल भी रहे हैं, बढ़ भी रहे हैं लेकिन कोई-कोई बच्चे बीच-बीच में फालो फादर, सी फादर और स्व परिवर्तन के सहज, सरल हाई वे (High way) के रास्ते के बजाए, छोटी-छोटी गलियों में - यह क्यों, यह क्या, यह कैसे... इस भ्रांति में उलझ जाते हैं और अपने श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति, श्रेष्ठ समय की शक्ति को व्यर्थ गंवा देते हैं, जिससे कमजोर बन जाते हैं क्योंकि इस ईश्वरीय मार्ग में पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत को नहीं मानते लेकिन ब्रह्मचारी के साथ ब्रह्माचारी, ब्रह्मा बाप के हर कदम पर चलने वाला भी बनना है। हर संकल्प, बोल, वृत्ति, दृष्टि में भी व्यर्थ वा निगेटिव है तो यह भी सम्पूर्ण पवित्रता नहीं है इसलिए बापदादा सदा अटेन्शन दिलाते रहते हैं कि हर समय स्वमान, स्व-परिवर्तन, स्व-चिंतन में रहो तो सम्पन्नता सहज प्राप्त कर सकेंगे। आजकल के संसार के वायुमण्डल और माया, प्रकृति के वायुमण्डल अनुसार अन्तर्मुखता, एकाग्रता और एकरस श्रेष्ठ स्थिति की आवश्यकता है। यही परिवर्तन बापदादा इस ग्रुप के हर एक बच्चे में देखने चाहते हैं और हर एक को यह अपना समाचार समय प्रति समय शार्ट में देते रहना है कि हम व्यर्थ मुक्त बन चल रहे हैं वा परसेन्टेज़ में हैं?

उसके बाद बापदादा ने कहा अच्छा बच्ची इस ग्रुप के लिए क्या सौगात ले जायेंगी? इतने में देखा - हमारे सामने बहुत सुन्दर अनेक

कंगन आ गये। हर एक कंगन में भिन्न-भिन्न रंग की लाइट चमकने वाले हीरे थे जो बहुत चमक रहे थे। बाबा बोले - बाबा यह दिव्य सौगात का कंगन हर बच्चे को दे रहा है जो अपने को सदा यह कंगन बांधकर रखें कि हमें हर समय मास्टर सर्वशक्ति-वान बन औरों को भी शक्ति देनी है और अपने मास्टर शक्तिवान टाइटल को हर कर्म में प्रैक्टिकल लाना है। शक्तिवान नहीं, सर्वशक्तिवान बनना है और बनाना है। ऐसे कहते सभी के प्रति दिल का यादप्यार देते हमें भी विदाई दी। ओम् शान्ति्।

27-07-2003

डबल लाइट रहने के लिए अपनी दिनचर्या विधिपूर्वक सेट करो

(डबल विदेशियों प्रति) - आज विशेष अपनी दादी जानकी जी की यादप्यार लेकर बाबा के पास जाना हुआ। जाते ही क्या देखा कि आज तो बापदादा साकार वतन के कमरे में गद्दी पर बैठा है और दादी जानकी पास में बैठ बड़े मजे से रूहरिहान कर रही है। मैं भी नजदीक जाती रही। बाबा हमें देख मुस्कराये और बोले, आओ बच्ची जनक बच्ची का आपसे बहुत स्नेह है, आओ देखो आप से पहले ही बच्ची को अपने पास बुला लिया क्योंकि इनको दिल में मिलन मनाने और मीठे बोल सुनने की बहुत लगन थी। वह पूरी कर रही है । उनके बाद फिर हमें भी बाबा ने अपने पास बिठाया और दोनों से बहुत स्नेह से मिलन मनाया। उसके बाद क्या देखा कि यह दृश्य तो मर्ज हो गया और मैंने अपने को बाबा के साथ देखा। बाबा ने समाचार पूछा - मैंने दादी जी की याद और मधुबन का समाचार, साथ में फारेन का समाचार भी सुनाया। तो बापदादा बोले देखो जनक बच्ची ने हिम्मत रख फारेन को अच्छा सम्भाल लिया। बाप-दादा भी बच्ची की हिम्मत देख और रहमदिल संस्कार देख बच्ची पर खुश है। बच्ची को निश्चय है कि बाप साथ है तो हर कार्य में सफलता है ही है, यह बात ही आगे बढ़ाती रहती है। इसके साथ बापदादा देखते हैं कि अपना वर्तमान तो बना ही रही है लेकिन दूसरों का भी भविष्य बनवाने में, सफल कराने में विशेष वरदान मिला हुआ है। इसलिए सदा भण्डारी और भण्डारा भरपूर रहता है। दिल बड़ी रहती है। सेवा में भी चारों ओर वृद्धि का उमंग, प्लैन चलता ही रहता है कि सबको सन्देश मिल जाए। इसलिए विशेष ड्रामा भी आगे बढ़ाता ही रहता है।

उसके बाद बापदादा ने सर्व डबल विदेशी बच्चों को याद करते बहुत-बहुत दिल का दुलार दिया और जिगरी बोल बोले, वाह मेरे विश्व में बाप का नाम प्रत्यक्ष करने वाले बच्चे वाह! ऐसे कहते ही ऐसे लगा जैसे सर्व बच्चे बापदादा के नयनों के सामने आ गये हैं और बापदादा नज़र से निहाल कर रहे हैं। उसके बाद बाबा बोले, बच्चों की कमाल देख बापदादा भी हर्षित होते हैं कि कल क्या थे और आज क्या बन गये हैं। अपनी सभी बातों में कितना अच्छा परिवर्तन किया है। बाबा जानते हैं कि कई बच्चे अथक बन लौकिक अलौकक सेवा की जिम्मेवारी निभाते भी बहुत अच्छी श्रेष्ठ जीवन का सबूत दिखा रहे हैं। ऐसे मेरे सपूत बच्चे बहुत अच्छे-अच्छे हैं। बोलो बच्चे आलराउन्ड कार्य करते कब थक तो नहीं जाते, ज्यादा बोझ तो नहीं लगता? क्योंकि बाप बच्चों का जरा भी भारीपन देख नहीं सकते क्योंकि बाप तो आये ही हैं बच्चों का बोझ खत्म कराने। कभी-कभी बोझ तब लगता है, जब बैलेन्स रखना नहीं आता तो बाप द्वारा ब्लैसिंग का अनुभव भी नहीं कर सकते इसलिए सदा अपनी दिनचर्या को सहज विधिपूर्वक सेट करते डबल लाइट स्थिति में उड़ते चलो। बापदादा बच्चों की टूमच मेहनत वा टूमच बर्डन देख नहीं सकते। संगमयुग है ही मन की मौज और सेवा की मौज में हल्के फरिश्ते बन रहना। बोलो बच्चे ऐसे फरिश्ते हैं ना! ऐसे रूहरिहान करते सबको बाबा ने मेरे दिल तख्तनशीन बच्चे कह हमें भी विदाई दी। ओम् शान्ति।

04-08-2003

मन को ऐसा रीयल गोल्ड बना दो जो उसे मोल्ड कर जिस स्थिति में चाहो उसमें स्थित हो जाओ

(टीचर्स बहिनों की भट्ठी के दूसरे ग्रुप में) - आज बापदादा के पास अपनी मीठी निमित्त टीचर्स की यादप्यार लेते हुए जाना हुआ। जाते ही क्या देखा कि बापदादा बहुत स्नेह स्वरूप से दूर से ही दृष्टि द्वारा मिलन मना रहे थे। आगे जाते मैं भी बापदादा के गले में समा गई। बाबा बोले, आओ मेरे त्रिमूर्ति तख्तनशीन बच्चे आओ, क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा अभी टीचर्स का संगठन देख हमारी दादी को तो बहुत उमंग और प्यार आ रहा है। सभी बहुत अच्छी मौन भट्ठी कर रहे हैं।

बापदादा मुस्कराते बोले - बाबा तो इन छोटी-छोटी कुमारियों की हिम्मत पर बलिहार जाते हैं। सर्व दुनिया के हद की आकर्षण से मुक्त हो अपनी जीवन को बचा लिया। बापदादा को भी बहुत खुशी होती है लेकिन बापदादा देख रहे हैं कि दुनिया के त्याग के साथ जो गायन है - त्याग, तपस्या और बेहद की सेवा, इन तीनों के बैलेन्स में अभी परसेन्टेज़ है। बापदादा तो समय प्रमाण यही चाहते हैं कि मेरा हर एक बच्चा तीनों में नम्बरवन विजयी बने। बापदादा हर एक बच्चे को शिव शक्ति स्वरूप में देखने चाहते हैं। ड्रामानु-सार होना तो है ही क्योंकि समय समीप आना ही है।

इसके बाद बाबा बोले, अच्छा बच्ची इन सभी बच्चियों ने भी बापदादा को बड़ी दिल से यादप्यार भेजा है, तो दिलाराम बाबा भी बच्चों को वतन में इमर्ज कर मिलन मनाते हैं। ऐसे कहते क्या देखा - सारे का सारा झुण्ड वतन में एक बगीचे में इमर्ज हो गया और सभी बहुत प्यार से चारों ओर के अलौकिक फल फूल देख खुश हो सैर कर रहे थे। कुछ समय के बाद बापदादा ने ताली बजाई और सभी बाबा के सामने पहुंच गये। बाबा बोले, बच्चों ने बगीचे का सैर किया। अब फिर बापदादा बच्चों को रूहानी एक्सरसाइज़ कराते हैं। सब टीचर्स चार लाइन में खड़ी हो

गई और बापदादा सामने थे। सभी को दृष्टि देते बाबा बोले, देखो बच्चियां अब लास्ट समय समीप के प्रमाण सभी सेकण्ड में जिस स्वरूप में स्थित होने चाहो उसी स्वरूप में स्थित हो जाओ। यह अभ्यास बहुत जरूरी है। बापदादा यह अभ्यास देखने चाहते हैं कि जब चाहो जहाँ चाहो, जितना समय चाहो उतना समय उसी रूप में स्थित हो सकते हो वा मेहनत करनी पड़ती है? ऐसे कहते बाबा ने चार स्वरूप की एक्सरसाइज़ कराई – पहली श्रेष्ठ ब्राह्मण जीवन के सर्व प्राप्तियों के रूहानी नशे का स्वरूप फिर ब्राह्मण से फरिश्ता, फरिश्ते से परमधाम निवासी ज्योतिबिन्दु, उसके बाद देवता स्वरूप। इन चारों रूपों की नम्बरवार एक्सरसाइज़ कराई। सभी टीचर्स अपनी हिम्मत अनुसार यह ड्रिल कर रही थी। ये ड्रिल समाप्त होने के बाद बापदादा मुस्कराये और बोले, बच्चियां यह अभ्यास अभी सदा शक्ति स्वरूप बनाओ। अब तक यथा शक्ति है। कई बच्चों को मेहनत भी करनी पड़ती है इसलिए अब इस अभ्यास से अपने मन को ऐसे रीयल गोल्ड बनाओ जो जैसे चाहो, जहाँ चाहो वैसे मोल्ड कर सको अर्थात् वहाँ स्थित कर सको। इतने में यह सीन भी समाप्त हो गई और मैंने अपने को बाबा के साथ देखा। बाबा बोले, अभी बच्चों को पास विद आनर होने के लिए यह अभ्यास बार-बार करना जरूरी है क्योंकि समय बहुत नाज़ुक आना है। सब बातें अति में जानी हैं। ऐसे समय पर बहुत शक्तिशाली स्थिति चाहिए। बच्चियां तो हंसी में कहती हैं - हमें ही मरना है। बाबा कहता है मरना ही उड़ना है। स्व-परिवर्तन ही सम्पन्नता है। इसमें ''पहले आप'' नहीं, ''पहले मैं'' समझ निमित्त बनना है। ऐसे पुरुषार्थ वाले बच्चों का जमा का खाता बापदादा के पास गुप्त जमा होता रहता है। चाहे संगठन में कोई कैसे भी समझे, कैसे भी चलावे लेकिन बेहद के न्यारे और बाप के प्यारे रहने की स्थिति की मार्क्स बापदादा के खाते में हजार गुणा जमा होती है और उसी अनुसार ही प्रालब्ध बन रही है। इस गुप्त जमा के राज़ को समझ रूहानी शक्ति से आगे बढ़ते चलो। जो हो, जैसे हो, बाप के पास प्रत्यक्ष हो। अगर सहन करना भी पड़ता है तो ज्ञान स्वरूप बन सहन करो तो सहनशक्ति का फल बहुत बड़ा है। इसलिए इस गुप्त रहस्य को जान नॉलेजफुल पावरफुल बन आगे उड़ते चलो। बापदादा को हर छोटे बड़े बच्चों पर दिल का प्यार है। हर एक बच्चे का बाप पर फुल अधिकार है, तो अपना अधिकार लो और सम्पन्न बनो।

उसके बाद बापदादा ने अपनी प्यारी दोनों दादियों को इमर्ज कर बहुत स्नेह से दृष्टि द्वारा, मुस्कराहट द्वारा बहुत प्यारी-प्यारी दुआयें दी और कहा कि बापदादा बहुत खुश है कि अपना पार्ट बहुत अच्छा बजा रही हैं। जैसे ही बापदादा स्नेह की दृष्टि दे रहे थे तो दोनों दादियां बाबा की गोदी में समा गई और मुझे भी बाबा ने अपनी गोदी में समा लिया। कुछ समय बाद बाबा बोले, बच्ची तुम तो याद-प्यार लेकर आई हो ना, तो याद का रिटर्न क्या ले जायेंगी? इतने में देखा बापदादा ने बहुत अच्छी सौगातें इमर्ज की, वह क्या थी? कीचेन में अलौकिक चाबियां थीं, और चाबी में हीरों से ''बाबा'' शब्द लिखा हुआ था। की रिंग में शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा का चित्र था। ऐसी सुन्दर सौगात बाबा ने सभी के प्रति दी और कहा - यही हर समस्या की चाबी है इसलिए इस चाबी को समय प्रति समय कार्य में लगाते सफलता मूर्त बनते रहना। ऐसे सभी टीचर्स प्रति नयनों के स्नेह से, दिल की दुआओं से यादप्यार देते हमें भी बाबा ने विदाई दी। ओम् शान्ति।

20-08-2003

जीरो बन जीरो बाप की याद से हीरो एक्टर बन हर एक्ट एक्यूरेट करो

(जन्माष्टमी तथा कुमारियों की भट्ठी प्रति) - आज आप सबकी यादप्यार लेते हुए मैं बाबा के पास पहुंची तो पहले बाबा ने दूर से ही खड़े होकर नयन मिलन मनाया। उसके बाद बाबा गुम हो गये, कुछ सेकण्ड के बाद हमने बाबा को एक बहुत बड़े बगीचे में देखा। वह बगीचा बहुत ही सुन्दर जड़ी-बूटियों से सजा हुआ था और बगीचे का जो सर्किल था उसमें जो वृक्ष थे वह लाल, पीले, रंग-बिरंगी फूलों से सजे हुए थे। उसी बगीचे में बाबा ने आप सभी कुमारियों को इमर्ज किया और ऐसी दृष्टि घुमाई जो सभी कुमारियां शहजादी के रूप में कृष्ण के साथ सर्किल में रास करने लगी। यह सीन ऐसी थी जैसे भक्ति मार्ग में महारास का चित्र दिखाते हैं, जिसमें एक एक गोपी के साथ श्रीकृष्ण को रास करते हुए दिखाया है। ऐसे ही आप सभी एक एक गोपी कृष्ण के साथ रास कर रही थी। और सभी राजकुमार, राजकुमारी के नशे के रूप में दिखाई दे रही थी। यह आप सबके भविष्य का रूप महारास के रूप में देखा, जो बहुत सुन्दर लग रहा था। थोड़े समय के बाद यह महारास का रूप समाप्त हो गया और आप सभी अपने संगमयुगी सफेद ड्रेस में एक स्टार के रूप में खड़े हो गये। स्टार में जैसे कोने होते हैं उसी डिजाइन में सभी बहिनें और भाई स्टार रूप में खड़े थे और बाबा स्टार्स के बीच में खड़े होकर सभी को दृष्टि दे रहे थे। तो यह सीन भी बड़ी विचित्र थी। यह सीन देखते हुए फिर बाबा ने हमको अपने पास बुलाया और अपनी बांहों में समा लिया। बाबा ने कहा बच्ची देखा अभी यह जो स्टार का रूप देख रही हो यह है स्वराज्य अधिकारी और वह थे विश्व राज्य अधिकारी। जो बच्चे अभी जितना स्वराज्य अधिकारी बनते हैं वही फिर विश्व राज्य अधिकारी बनते हैं।

फिर बाबा ने कहा बच्ची तुम क्या सन्देश लेकर आई हो? मैंने कहा बाबा सभी कुमारियों ने आपको बहुत-बहुत याद दी है और सभी ने भट्ठी में भी बहुत ही प्रामिस की है। जो कुछ कमियां थी उन्हें यज्ञ में स्वाहा किया है। तो बाबा ने कहा यह जो ग्रुप है ना - यह सब मेरे उम्मीदों के सितारे हैं। बाबा की इस ग्रुप में बहुत उम्मीदें हैं। अभी उम्मीदों को पूरा करना तो बच्चों का काम है। तो बाबा ऐसे कहते जैसे सभी से पूछ थे कि बच्चियां उम्मींदवार हो ना! बाबा की उम्मीदें पूरी करेंगी ना? तो सभी ने कांध हिलाते हाथ उठाया। तो बाबा ने कहा देखो मुझे इन बच्चों से बहुत प्यार है। मैंने कहा बाबा प्यार तो आपका सभी बच्चों से है। तो बाबा ने कहा फिर भी इन बच्चों से मुझे ज्यादा प्यार है क्योंकि चाहे यह

छोटी हैं, बड़ी हैं, सर्विस करने वाली हैं, सेन्टर में ट्रायल पर रहने वाली हैं। लेकिन बाबा ने देखा इन सभी में उमंग है कि हम कुछ नवीनता करके दिखायें, बाकी जो सरेन्डर सेन्टर पर रहने वाली बहनें हैं वह तो रहती ही सेन्टर पर हैं, सेवा करती ही हैं लेकिन इस ग्रुप में उमंग बहुत अच्छा है कि हम कुछ कमाल करके दिखायें तो इन्हों के इस उमंग के कारण बाबा ने कहा इन उम्मींदवार सितारों के ग्रुप से मेरा विशेष प्यार है। उसके बाद यह सीन मर्ज हो गई।

फिर बाबा ने पूछा बच्ची - दादी का क्या हाल है? मैंने कहा बाबा दादी तो नाच रही है, हॉस्पिटल में चेकिंग के लिए गई थी, कल सेन्टर पर आ गई है, वहाँ (बाम्बे पार्ला) से दादी ने सभी को डायरेक्ट फोन किया और कहा है मैं बहुत अच्छी तन्दरूस्त हो गई हूँ। मुझे डाक्टर्स ने सर्टीफिकेट दे दिया है कि आप बिल्कुल ठीक हो, इसलिए बाबा को हमारी बहुत-बहुत थैंक्स देना। तो बाबा ने कहा देखो यही एक दादी है जिसको डायरेक्ट ब्रह्मा बाबा ने हाथ में हाथ मिला करके सभी पावर्स विल की हैं। ऐसी विल किसको भी नहीं मिली है। प्रापर्टी की विल तो सभी करते हैं लेकिन दादी को सभी शक्तियों (पावर्स) की विल मिली है, जिस शक्ति के आधार से 67 वर्ष हो गये हैं, दादी निमित्त बन करके सारे यज्ञ को चला रही हैं। फिर बाबा ने दादी जानकी को भी याद किया और कहा यह दोनों ही दादियां मेरे सिर के ताज हैं। इनके सिर पर जिम्मेवारी का ताज है लेकिन यह मेरे ताज हैं इसलिए इनको यह जिम्मेवारी का ताज भारी नहीं लगता है। यह मेरे मुरब्बी बच्चे हैं इसलिए मैं हर पल दोनों दादियों को बहुत याद करता हूँ। तो मैं दोनों दादियों को सामने देखते, सुन रही थी, बाबा ने कहा तुम भी इनके बीच में आ जाओ। तो यह दादियाँ तो बांहों में समा गई और मैं बाबा के हृदय में समा गई। यह त्रिमूर्ति की सीन बहुत अच्छी लग रही थी। उसके बाद बाबा ने कहा तुम तो कुमारियों की याद लाई थी, क्या वह भूल गई! मैंने कहा बाबा कुमारियों ने तो आपको बहुत-बहुत याद दी है। तो बाबा ने कहा कि मेरे तरफ से खास कुमारियों को वरदान के रूप में दो शब्द याद दिलाना : 1- हीरो और 2- जीरो। सभी को कहना कि बच्चे आप सब हीरे तुल्य जीवन वाले हीरो बन गये। एक हीरो एक्टर कहा जाता है तो हीरो माना महान और दूसरा हीरा जवाहरात डायमण्ड होता है। तो एक बेदाग हीरा बनना और दूसरा हीरो एक्टर बन विश्व की स्टेज पर पार्ट बजाना। तो बाबा ने कहा सभी कुमारियों को कहना कि आप दफ्तर में काम करती हो, घर पर रहती हो, सेन्टर पर रहती हो या स्कूल वा कालेज में जाती हो ... कहाँ भी हो लेकिन आप हमेशा समझो कि हम हीरो एक्टर स्टेज पर पार्ट बजा रहे हैं। तो जो हीरो एक्टर होता है उसका एक्ट एक्यूरेट और दिलपसन्द होता है। तो बाबा ने सभी कुमारियों को डबल हीरो का वरदान दिया और साथ-साथ कहा बच्चों को जीरो बनना है, जीरो को याद करना है और जीरो लगाना है। (जीरो अर्थात् फुलस्टाप)। तो बाबा ने कुमारियों को खास कहा कि अमृतवेले सदा यह दो शब्द इमर्ज करना।

फिर बाबा ने कुमारियों से और मेरे से भी एक प्रश्न पूछा - कि बच्ची तुम्हारे पास ऐसा एक कौन सा चित्र है जिसमें चारों सबजेक्ट आ जाती हैं? तो मैंने कोई जवाब नहीं दिया, सिर्फ मुस्कराती रही। तो बाबा ने कहा कि विष्णु चतुर्भुज के चित्र में जो 4 अंलकार दिखाये हैं, यह 4 अलंकार चार सबजेक्ट की निशानी हैं। स्वदर्शन चक्र ज्ञान की सबजेक्ट का प्रतीक है, शंख है सेवा का, कमल पुष्प है धारणा का सूचक और गदा है शक्तियों की सूचक। तो बाबा ने कहा कि बच्चों को कहना कि यह विष्णु चतुर्भुज का चित्र सामने रखो और चेक करो कि यह चार अलंकार माना चारों ही सबजेक्ट में मैंने कहाँ तक मार्क्स ली हैं! किसी में 50, किसी में 60 परसेन्ट नहीं लेकिन फुल मार्क्स लेनी हैं। फुल पास होना है। इन्हीं चारों अलंकारों को जब धारण करेंगे तब श्रीकृष्ण के साथ सखे सखियां बन महारास करेंगे। तो बाबा ने कहा सभी से पूछना कि फुल पास होंगी ना! या सोचती हैं कि 108 की माला में तो बड़ी-बड़ी दादियाँ, पुराने-पुराने आयेंगे, हम कहाँ आयेंगे? लेकिन अगर आप सब भी पास होकर दिखाओ तो बाबा माला में और भी लड़ियां एड कर देंगे। ऐसे बाबा बहुत मीठी रूहरिहान कर रहे थे।

उसके बाद बाबा ने सभी मधुबन निवासी, शान्तिवन, ज्ञान सरोवर, हॉस्पिटल निवासी जिन्हें दादी कहती है यह सब मेरी भुजायें हैं, सभी को याद किया और कहा कि आप सभी जन्माष्टमी पर श्रीकृष्ण को झूले में झूलता देखते हो तो यह फील होता है कि मेरा भी जन्म ऐसे ही होना है? तो बाबा ने कहा कि सभी बच्चों को कहना यह जन्माष्टमी का श्रंगार देख करके आप सबको भी यह भासना आनी चाहिए कि हमारा भी ऐसा ही जन्म होना है। 21 जन्म आपका जन्म दिन ऐसे ही मनाया जायेगा। तो अपने 21 जन्म के जन्मदिन याद करो कि कितने सम्पन्न और सम्पूर्ण होंगे, कितने सर्व प्राप्ति सम्पन्न होंगे। ऐसे कहते बाबा ने कहा कि मधुबन वालों को तो सदा साथ और सम्मुख रहने, सम्पन्न रहने का वरदान मिला हुआ है। मधुबन वालों से तो बाबा का बहुत प्यार है क्योंकि बहुत सहयोगी हैं। फिर बाबा ने सर्किल में सभी को इमर्ज किया, सभी सर्किल में खड़े थे और भिन्न-भिन्न शक्तियों की धारायें लाइट्स के रूप में सभी पर पड़ रही थी। सभी के वस्त्र बहुत सुन्दर चमकीले हो गये और शक्ल भी बदल गई। तो बाबा ने यह सीन दिखाते मधुबन निवासियों को सर्व शक्तियों का वरदान दिया।

फिर बाबा ने पूछा - अच्छा आज कुमारियों के लिए क्या सौगात ले जायेंगी? बाबा ने आप सभी के लिए बहुत सुन्दर चमकती हुई रिंग दी। वह रिंग सोने की थी लेकिन सूक्ष्मवतन की लाइट में बहुत सुन्दर चमक रही थी, उस रिंग में ऊपर बीच में बाबा था और बाबा के एक तरफ पतले-पतले हीरे से लिखा था - दृढ़ता, दूसरे तरफ लिखा था सफलता। दोनों ही शब्द रिंग से ऊपर मिलते थे। तो बाबा ने सभी कुमारियों को यह सौगात दी और कहा कि सदा इसे अपने साथ रखना। अगर आपके पास कोई दूसरी रिंग भी हो तो उसे देख बाबा की रिंग याद करना। ऐसे सौगात के साथ याद देते हमें साकार वतन में भेज दिया। अच्छा - ओम् शान्ति।

28-08-2003

बाबा के साथ सदा कम्बाइन्ड रहो तो माया, प्रकृति वा समस्यायें परेशान नहीं कर सकती

(माताओं की योग भट्ठी में) - आज बापदादा के पास विशेष माताओं की यादप्यार लेकर पहुंची तो क्या देखा! बापदादा बहुत स्नेह स्वरूप से चारों तरफ मीठी दृष्टि दे रहे थे। मैं भी उसी रूहानी दृष्टि की अनुभूति करते सामने पहुंच गई। जाते ही बापदादा बोले, आओ मेरे विश्व कल्याणी मास्टर दाता बच्चे आओ। देखो, बापदादा आज चारों ओर के ब्राह्मण बच्चों को देख रहे थे कि बच्चे सदा बाप समान विश्व की सर्व आत्माओं को योगबल, मनोबल द्वारा सुख-शान्ति की अंचली देते हैं! क्योंकि आजकल के समय अनुसार आत्मायें बहुत शक्तिहीन निर्बल हो गई हैं। निर्बल होने के कारण भयभीत और परेशान हैं। ऐसी आत्माओं को रूहानी बल देने वाले आप बच्चे ही निमित्त हो। हर एक बच्चे को हर समय इस विश्व सेवा में बिजी रहना है क्योंकि आप दाता के बच्चे मास्टर दाता हो। तो बड़ी खुली दिल से देते जाओ और इसी सेवा में बिजी रहने से स्वयं भी सहज और स्वत: निर्विघ्न बन जायेंगे।

इसके बाद बापदादा ने समाचार पूछा - हमने बोला बाबा आजकल तो बहुत खुली दिल से मातायें भट्ठी में पहुंच गई हैं। साथ में कुछ भाई भी हैं, सब बहुत दिल से मौन भट्ठी और योग के गुह्यता की भिन्न-भिन्न क्लासेज सुन खुश हो रहे हैं। सुनते ही ऐसे लगा जैसे बापदादा के नयनों में सर्व मातायें समा गई हैं और बड़े स्नेह से बापदादा सबको प्यार दे रहे हैं। उसके बाद बाबा बोले, बापदादा को माताओं पर बहुत रहम और दिल का प्यार है क्योंकि माताओं को बहुत समय से सबने नीचे गिराया है और बाप ने ही आकर ऊंचा उठाया है। देखो, विश्व में एक ही यह आध्यात्मिक स्थान है जहाँ विश्व विद्यालय ब्रह्माकुमारीज़ के नाम से है और संस्थाओं में तो भिन्न-भिन्न महात्माओं के नाम से दूसरे-दूसरे नाम होते हैं लेकिन बापदादा ने शिव शक्तियों को ही आगे रखा है। दुनिया वालों ने तो पांव की जुत्ती तक कह दिया। बापदादा कहते मातायें तो मेरे सिर की ताज, मेरे दिलतख्तनशीन हैं। ऐसे कहते बापदादा को माताओं प्रति बहुत प्यार आ रहा था। कुछ समय तो बाबा जैसे स्नेह के सागर में समाये हुए थे। मैं भी बाबा के प्यार को पाते स्नेह स्वरूप में खो गई। उसके बाद बाबा ने सर्व भट्ठी वालों को बड़े स्नेह से वतन में इमर्ज किया। तो क्या देखा, सर्व मातायें और भाई बहुत सुन्दर नेकलेस के रूप में, 5 लड़ियों के रूप में इमर्ज हुए और बापदादा सबको मीठी दृष्टि में समा रहे थे। सब बहुत-बहुत खुशी के झूले में झूल रहे थे। दृष्टि के बाद बाबा बोले - भोलानाथ बाबा की यह भोली-भोली मीठी-मीठी मातायें हैं, बापदादा इन माताओं को ज्यादा मेहनत नहीं देते हैं क्योंकि आधाकल्प से बहुत थकी हुई हैं। बापदादा तो माताओं को वतन में इमर्ज कर रूहानी मसाज़ करके थकावट उतारते हैं। सिर्फ बापदादा यही कहते सदा बाबा के साथ रहो, कम्बाइन्ड रहो तो कोई भी शक्ति आपको बाबा से अलग कर नहीं सकती। अकेले होते हो तो माया, प्रकृति, समस्यायें परेशान करती हैं। बापदादा बच्चों की मेहनत देख नहीं सकते। हर एक बच्चे को मेहनत मुक्त देखने चाहते हैं। बोलो, बच्चियां मेहनत अच्छी लगती वा बापदादा की मुहब्बत अच्छी लगती? तो सदा यही सोचो - साथ रहेंगे, साथ चलेंगे।

उसके बाद यह दृश्य समाप्त हो गया और बापदादा ने पूछा और क्या समाचार लाई हो? मैं बोली, बाबा हमारी मीठी दादी ने सन्देश दिया है कि बापदादा के डायरेक्शन से मैं तबियत चेक कराके आई और सब डाक्टर्स ने रिपोर्ट ओ.के. दी है इसलिए दादी ने आपको बहुत-बहुत थैंक्स और याद दी है। बापदादा ने सुनते ही दादी को अपने में समा दिया। दादी भी ऐसे बाबा में समा गई जो दिखाई भी नहीं देती थी। कुछ समय बाद बाबा बोले, बच्ची की विशेषता बच्ची को सदा आगे उड़ा रही है और उड़ाती रहेगी। वह है उमंग-उत्साह में रहना और उमंग-उत्साह में सबको उड़ाना। कुछ भी हो लेकिन यह विशेषता सदा साथ रहती है इसलिए सर्व की प्यारी है। सब दिल से दादी, दादी याद करते हैं। ऐसे बापदादा ने दादी को बहुत-बहुत प्यार दिया और साथ में दादी के सेवा के साथी मीठी दादी जानकी को भी याद किया और बहुत स्नेह स्वरूप से दृष्टि देते बोले- जनक बच्ची को तो एक ही लगन लगी हुई है कि बस अब जल्दी से जल्दी बापदादा को विश्व के आगे प्रत्यक्ष करें। सर्व को बाबा का परिचय जरूर मिल जाए। इसी उमंग से विदेश की सेवा भी अच्छी बढ़ा रहे हैं और सर्व डबल विदेशी बच्चे भी याद और सेवा में, स्वपरिवर्तन में अच्छे उमंग से उड़ रहे हैं, उड़ते रहेंगे। बापदादा ने देखा कि अब मैजारिटी व्हाई (Why, why) में नहीं जाते लेकिन वाह-वाह करते फ्लाई करते रहते हैं। ऐसे कहते बापदादा ने सर्व डबल विदेशी बच्चों को एक एक को नाम सहित अपने सामने इमर्ज कर बहुत-बहुत यादप्यार दिया।

फिर बाबा ने कहा अच्छा बच्ची मेरी मीठी माताओं के लिए क्या सौगात ले जायेंगी? ऐसे कहते बापदादा ने बहुत सुन्दर सौगातें दिखाई। वह थे बहुत सुन्दर गोल्डन रूप में गुलाब के फूल। उसके बीच में हीरे का शिवबाबा बहुत सुन्दर चमक रहा था। बाबा बोले, बच्ची सबको यह सौगात देना और कहना कि सदा रूहानी गुलाब बन रहना है और बाप समान सच्चा हीरा बन विश्व में चमकना है। ऐसे सबके लिए यादप्यार देते हमें साकार वतन में भेज दिया। अच्छा - ओम् शान्ति।

01-10-2003

अपनी ऊंची स्टेज की स्थिति से वायब्रेशन द्वारा शक्तिहीन आत्माओं को अंचली देने की सेवा करो

(डबल विदेशियों प्रति) - आज बापदादा के पास दोनों दादियों की याद और विदेश का सेवा समाचार लेकर पहुंची तो देखा बापदादा

सामने खड़े थे और मीठी दृष्टि दे रहे थे। लेकिन आज दृष्टि में बहुत नवीनता थी। बापदादा के दोनों नयनों की दृष्टि ऐसे थी जैसे चुम्बक दूर से ही अपनी तरफ खींच लेता है। ऐसे ही मैं अनुभव कर रही थी कि मैं स्वयं नहीं चल रही हूँ लेकिन दृष्टि की सकाश खींच रही है। सेकेण्ड में मैं बाबा के सम्मुख पहुंच गई। बापदादा ने अपने स्नेह की बाहों में समा लिया और मधुर बोल बोले, बच्ची अब समय अनुसार हरेक बच्चे को ऐसे अपनी शक्तियों के चुम्बक से सर्व आत्माओं को बाप द्वारा मुक्ति व जीवनमुक्ति का वर्सा दिलाना है क्योंकि दिन-प्रतिदिन आत्मायें अनेक परेशानियों में निर्बल बन रही हैं। ऐसे बेसहारे आत्माओं का सहारा आप हो। वर्तमान समय तो शक्तियों की पूजा के दिन है, वायुमण्डल पुकार का है। तो क्या आप बच्चों को भक्तों की पुकार, समय की पुकार सुनाई नहीं देती! क्या आपको भक्तों के ऊपर दिल में रहम नहीं आता? ऐसे बोलते बापदादा बहुत मीठी पावरफुल शान्ति की शक्ति और स्नेह की शक्ति में लीन हो गये। वायुमण्डल ऐसा शक्तिशाली बन गया जो अनुभव करने वाला था। कुछ समय के बाद बाबा बोले बच्ची, अब सर्व शक्तियों के वायब्रेशन द्वारा ऐसा वायुमण्डल फैलाओ जो निर्बल आत्माओं को शक्ति और हिम्मत के पांव लग जायें। ऐसी वर्तमान समय की आवश्यकता है।

इसके बाद बाबा ने समाचार पूछा मैंने बोला आज तो विशेष दोनों दादियों की तथा सर्व बच्चों की याद और सेवा समाचार लाई हूँ। दादी जानकी तो चक्रवर्ती बन चक्कर लगा रही है। दादी जी भी लण्डन का चक्कर लगार अपने मधुबन में बेहद की सेवा पर पहुँच गई हैं। दादी जी की लण्डन यात्रा से तो यू.के. और यूरोप वासी, बड़ी बहनें बहुत समीप अनुभव कर रिफ्रेश हुई हैं। स्नेह और समीपता का अनुभव अभी भी याद करते रहते हैं। दादी तो कहती है बाबा ही बैकबोन बन ले चले और निर्विघ्न सेवा कराई। बहुत-बहुत थैंक्स दे रहे हैं। सारा ग्रुप ही आपको बहुत थैंक्स दे रहे हैं। अभी भी दादी की तबियत अच्छी है। बाबा बोले तुम्हारी सर्व दादियाँ तो हैं ही बापदादा द्वारा निमित्त बनी हुई - साकार सिम्बल। दादियों को देख सभी कितने खुश होते हैं। साकार पालना का जो वरदान मिला है उससे सभी को भासना दे रही हैं। सभी दादियों को बहुत-बहुत याद देना। दादी के साथ के ग्रुप को नाम सहित यादप्यार देना।

उसके बाद बाबा को आज लण्डन का डायमण्ड हाउस याद आया और समाचार पूछा। मैंने बताया कि बाबा अभी कम्पलीट तैयार हो गया है और दादी जानकी भी चक्कर लगाते लण्डन पहुंच गई है। बाबा बहुत राज़युक्त मुस्कराते हुए बोले, लण्डन के और साथ के बच्चों ने कमाल अच्छी दिखाई है। बापदादा इन बच्चों के अपना भाग्य बनाने की विधि को देख विशेष हर्षित हो रहे हैं कि बहुत हिम्मत, दृढ़ संकल्प और हुल्लास से समय पर अपना सहयोग दे सफल कर सफलता के सितारे बन गये क्योंकि ड्रामा में यह राज़ है कि आवश्यकता के समय जो जितना बड़ी दिल से सफल करता है उनका बहुत बड़ा हजार गुणा फल सफलता मिलती है, बहुत गुप्त प्राप्ति होती है। तो बापदादा ऐसे लकी लवली बच्चों देख खुश होते और दिल से गुण गाते वाह मेरे सेन्सीबुल, सर्विसेबुल बच्चे वाह! अच्छे बड़े दिल से सभी ने सहयोग दिया है इसलिए अच्छा बड़ा स्थान भी बना है और बड़े दिल से सेवा की सफलता भी समाई हुई है। ऐसे कहते बाबा जैसे लण्डन ही पहुंच गया और हरेक बच्चे को देख-देख हर्षा रहे थे। हमें भी कहा कि सब सफलता के सितारों को खास याद देना।

इसके बाद बाबा ने दोनों दादियों सहित सर्व दादियों को और विशेष बच्चों को इमर्ज किया और दोनों दादियों को तथा सबको साथ में लेकर एक पहाड़ी पर गये। लाइट की पहाड़ी बहुत ऊंची थी। बिल्कुल ऊंची चोटी पर हम सब बाबा के साथ अर्ध चन्द्रमा समान ठहर गये। क्या देखा कि नीचे करोड़ों आत्मायें खड़ी हैं लेकिन हरेक अपनी परेशानियों में लगे हुए हैं। बाबा बोले बच्ची देखा सर्व आत्माओं की हालत क्या है। ऊपर ऑख उठाने की भी ताकत नहीं है। अब ऐसे शक्तिहीन आत्माओं को अपनी ऊंची स्टेज की स्थिति से अंचली देना आपका काम है, तब ही विश्व परिवर्तन होगा। ऐसे बापदादा ने सर्व को प्रत्यक्ष अपने साथ अनुभव कराया जो तो बहुत ही प्रभावशाली था।

उसके बाद मैंने बाबा को भारत की सेवा भिन्न-भिन्न वर्गों के डायलॉग का समाचार सुनाया। विदेश के बच्चों की सेवा का समाचार भी सुनाया तो बाबा बोले, बच्ची दोनों तरफ सर्विस का उमंग तो बहुत अच्छा है। सेवा की सफलता तो बच्चों का जन्म सिद्ध अधि-कार है। डबल विदेशी बच्चों को खास एक-एक को याद किया और कहा सहज पुरुषार्थ, सहज सफलता प्राप्त है और सदा बाप का नाम बाला करने वाले लवली, लकी हैं। साथ में हमने गोहाटी और कलकत्ता का समाचार सुनाया। बाबा बोले गोहाटी के बच्चों ने तो ओटे सो अर्जुन बनकर दिखाया है। हिम्मत से सफलता है ही, यह एक इक्जैम्पुल बनके दिखाया। सबको खास याद देना। कलकत्ता तो है ही स्थापना की बाप की गद्दी। उनको तो वरदान है ही। सभी को याद देना। खास परदादी को बाबा ने साथियों सहित बहुत याद दी।

08-10-2003

सेवा के फाउण्डेशन आदि रत्नों की जिम्मेवारियाँ

(आदि रत्नों की योग भट्ठी में) - आज बापदादा के पास अपने सर्व आदि सेवाओं के निमित्त बने हुए ग्रुप की यादप्यार लेते हुए वतन में पहुंची तो क्या देखा, बापदादा बहुत स्नेह भरे दिव्य अमूल्य बांहों की माला से ''आओ बच्चे, आओ बच्चे'' कह मिलन मना रहे थे। मैं भी आगे बढ़ती उस दिव्य न्यारे प्यारे रूहानी बांहों की माला में समाए लवलीन हो गई। कुछ समय बाद बाबा बोले, बच्ची आज क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आज तो आदि सेवा के रत्नों, ब्रह्मा बाप की पालना वालों की याद लाई हूँ। बापदादा सुनते ही बहुत मीठा मुस्कराये और बोले, यह बच्चे तो बापदादा के विशेष सर्व आशाओं के दीपक हैं। श्रेष्ठ उम्मीदों को प्रत्यक्ष करने वाले हैं। उम्मीदों को सफल करने वाले सफलता के

सितारे हैं। बापदादा के श्रेष्ठ संकल्पों को साकार स्वरूप में लाने वाले निमित्त गुरूभाई हैं। इन बच्चों का तो बापदादा बहुत दिल से स्वागत करते हैं और सदा दिल में गुण गाते हैं - वाह मेरे लवली बच्चे वाह! वाह मेरे विश्व परिवर्तक बच्चे वाह! उसके बाद बाबा बोले, अच्छा बच्ची आज बापदादा तुम्हें एक दृश्य दिखाते हैं। ऐसे कहते हमें अपने साथ कुछ आगे ले चले। तो क्या देखा - दूर से बहुत दीपक जग रहे थे और सभी दीपक ताज के रूप में चमक रहे थे। हर एक दीपक की जो लौ निकल रही थी उसके बीच सभी बच्चों का फेस दिखाई दे रहा था। सीन तो बहुत सुन्दर थी। बापदादा हर दीपक को देख बोले - देखो बच्चे कितने चमक रहे हैं। कितने सुन्दर लग रहे हैं। बापदादा सदा बच्चों को अपने से भी ऊंचा उठाते हैं, इसलिए ताज के रूप में दिखाया है। मैं भी इन अलौकिक दीपकों की दीपमाला देख खुश हो रही थी।

उसके बाद बाबा बोले, बापदादा खुश हो रहे हैं कि बच्चे आपस में मिलकर स्व परिवर्तन द्वारा सर्व के परिवर्तन के प्लैन पर रूहरिहान कर कुछ दिव्यता सम्पन्न नवीन प्लैन बनायेंगे जिससे सर्व ब्राह्मण आत्माओं को, विश्व की आत्माओं को सहज परिवर्तन की शक्ति अनुभव हो क्योंकि यह ग्रुप विशेष सेवा के फाउण्डेशन हैं और फाउण्डेशन पर ही जिम्मेवारी रहती है। तो बच्चों को -

* बाबा के साथ-साथ समाधान स्वरूप बन सर्व को समाधान स्वरूप बनाने में सहयोगी बनना है।
* लव और लॉ के बैलेन्स द्वारा ब्लैसिंग लेने और दिलाने के पात्र बनना है।
* सर्व को जिम्मेवारी के स्वमान द्वारा स्वमान के स्मृति स्वरूप बनने में सहयोगी बन पुण्य का खाता जमा करना है।
* आधारमूर्त के साथ उद्वारमूर्त फरिश्ता रूप का अनुभव प्रत्यक्ष करना और कराना है।
* स्व परिवर्तन, सर्व परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन की झलक विश्व के सामने प्रत्यक्ष करना है।
* बाप को प्रत्यक्ष करने का झण्डा विश्व के आगे लहराना है।
* ज्वाला स्वरूप योगी आत्मा बन परिवर्तन की ज्वाला फैलानी है।

बोलो - ऐसे बाप की सर्व उम्मीदों को पूर्ण करने वाले बच्चे सबूत देने वाली सपूत आत्मायें हो ना! इस ग्रुप के लिए बापदादा के यही श्रेष्ठ संकल्प हैं। ऐसे कहते बापदादा जैसे सर्व बच्चों को अपने दिल में इमर्ज कर बहुत पावरफुल सकाश की किरणें दे रहे थे और बोले, बच्ची इस ग्रुप के लिए क्या सौगात ले जायेंगी? इतने में क्या देखा, बापदादा के सामने बहुत सुन्दर चिंदियां आ गई। जो हर एक चिंदी में अष्ट शक्तियों की अष्ट रंग के लाइट की किरणें चमक रही थी। बीच में शिवबाबा का गोल्डन लाल प्रकाशमय हीरा चमक रहा था, जो बहुत सुन्दर लग रहा था, ऐसी सुन्दर चिंदी की सौगात दे बाबा बोले, मेरे हर एक लाडले बच्चों को यह सौगात देना। सदा मस्तक में बाबा और सर्व शक्तियों के स्मृति स्वरूप की सौगात बापदादा दे रहे हैं। ऐसे लग रहा था जैसे बाबा के सामने एक एक बच्चा आ रहा है और बापदादा अपने हाथों से चिंदी लगाए सजा रहे हैं। कुछ समय तो जैसे बाबा बच्चों के साथ ही लवलीन थे। उसके बाद हमें भी बाबा ने चिंदी लगाई और अपनी शक्तिशाली स्नेही दृष्टि दे साकार वतन में भेज दिया। ओम् शान्ति्।

29-10-2003

राय बहादुर बच्चों प्रति बापदादा की आशायें

आज बापदादा के पास मीटिंग का समाचार लेकर जाना हुआ। समाचार सुनाया तो बाबा बहुत-बहुत मीठा मुस्कराया और सर्व बच्चों को अपने नयनों में स्नेह सम्पन्न समा लिया। उसके बाद बाबा बोले:-

1. बच्ची जिसमें सर्व बच्चे राज़ी हैं तो बाप भी बच्चों के राज़ीपन में राजी हैं ही।
2. एकमत, एकरस सर्व के सन्तुष्टता की रास में बाप भी राज़ी हैं ही।
3. अब बाप यही चाहते हैं, सदा सर्व प्रति सन्तुष्टता का वायुमण्डल फैलाते रहो।

सभी राय बहादुर निमित्त बच्चों को दिलाराम बाप के दिल की दुआयें स्वीकार हों।

24-11-2003

डबल लाइट रह बाप समान साक्षी और बाप के साथी बन उड़ते चलो, उड़ाते चलो

आज बापदादा के पास विशेष दादी जानकी जी और आस्ट्रेलिया के सर्व सेवास्थानों के ब्राह्मण भाई-बहनों की, साथ में एशिया वालों की याद-प्यार लेकर वतन में पहुँची। तो क्या देखा कि हमारे से पहले ही बापदादा के साथ दादी जानकी जी और हमारी मीठी सखी निर्मला बहन दोनों बापदादा के दोनों तरफ हाथ में हाथ मिलाके मीठी रूहरिहान और मधुर मिलन मनाते सामने आ रहे हैं। यह दृश्य देख मैं मुस्कराते आगे बढ़ती गई। तो बापदादा ने हमें भी नयन मिलन मनाते समा लिया और बोले, बच्ची इन दोनों ने बहुत-बहुत याद किया तो बापदादा ने वतन में बुला लिया। मैं बोली बाबा मैं भी आस्ट्रेलिया का ही समाचार लाई हूँ। बापदादा मुस्कराये और तीनों को अपने में समा लिया। फिर बापदादा बोले, बच्ची आस्ट्रेलिया को भी बापदादा बहुत याद करते है क्योंकि आदि से इन बच्चों में बापदादा की बहुत बड़ी उम्मीदें हैं। बापदादा जानते हैं बहुत अच्छे-अच्छे आदि से अब तक निश्चय बुद्धि, दिल के स्नेही, सेवा में सहयोगी पक्के-पक्के हैं। हाँ बीच-बीच में गुप्त हो जाते हैं लेकिन अमर हैं और हिम्मत वाले हैं। जो चाहे वह कर सकते हैं। देखो, एक आस्ट्रेलिया ही है जहाँ दो-दो रिट्रीट सेन्टर है। मैंने कहा बाबा दादी जानकी बीस वर्ष वाले पक्के ब्राह्मणों को देख बहुत खुश हुई। बाबा बोले बच्ची, यही तो हिम्मत है और फाउ-ण्डेशन पक्का है जो इतने समय से

ब्राह्मण जीवन के वर्से के अधिकारी बने हैं। बापदादा से दिल का प्यार है। ऐसा कहते बाबा ने जैसे सारी आस्ट्रेलिया के बच्चों को अपने सामने इमर्ज किया। सेकण्ड में बाबा के सामने सभी इमर्ज हो गये। बापदादा ने सबको बहुत प्यार से, एक-एक को पास बुलाके दृष्टि दी और दिल का प्यार दिया, दिल की दुआयें दी। हमें ऐसा लगा कि बापदादा हर बच्चे को नयनों की भाषा से कुछ वरदान भी दे रहे हैं। वो क्या थे, वह तो बाबा जाने और आप जानें। मैं तो देख-देख खुश हो रही थी। लेकिन दृश्य बहुत सुन्दर, स्नेही, पावरफुल था। लास्ट में बापदादा ने दादी जानकी, निर्मला बहन और साथ में सर्व को दृष्टि देते हुए बोला, मेरी बेफिकर जनक राजा और निर्मल आश्रम बच्ची तथा सभी बच्चे डबल लाइट बन बाप समान साक्षी और सदा बाप के साथ साथी बन उड़ते चलो और उड़ाते चलो।

इसके बाद यह दृश्य भी समाप्त हो गया। बाद में बाबा ने अपनी बड़ी दादी को इमर्ज किया और दादी आते ही बाबा की गोदी में छोटे बच्चे के समान लेट गई, समा गई। बापदादा भी बड़े प्यार से बोले, बच्ची को खांसते-खांसते दर्द होता है ना! ऐसा कहते बापदादा दादी को अपने होली हस्तों से हृदय पर हाथ घुमाते जैसे सेक कर रहे थे और बहुत दिल की दुआयें दे रहे थे। दादी जी और बाप-दादा दोनों बहुत लवलीन थे। कुछ समय के बाद बाबा बोले, बच्ची की कमाल है जो सदा सेवा के, याद के उमंग-उत्साह में रहती है और चारों ओर उमंग का वायुमण्डल बनाती है कि अभी जल्दी-जल्दी सभी को सन्देश मिल जाये। यह निमित्त बनी आत्मा का उमंग ही सर्व ब्राह्मण आत्माओं में सेवा और याद की लहर फैलाती है। हर एक कोई न कोई यथा शक्ति प्लैन बना रहे हैं, यह देख बापदादा खुश है। यह उमंग-उत्साह बढ़ाना ही सर्व ब्राह्मणों को बल और सेवा का फल दे रहा है। बापदादा देख रहा है कि विदेश में भी जनक बच्ची बहुत उमंग-उत्साह बढ़ाती हैं, दोनों मुरब्बी बच्चों पर बापदादा बलिहार है। अब के समय के प्रमाण दादियों का उमंग-उत्साह दिलाना, यह वायुमण्डल को परिपक्व कर रहा है। सर्व तरफ याद और सेवा में बिजी रहना आवश्यक है क्योंकि अब दुनिया का वायुमण्डल और ही दूषित बनना है। अति में जा रहा है और जाना ही है।

इसके बाद बाबा ने सर्व मधुबन निवासियों और दादी जी की सर्व भुजाओं को याद किया। सबके लिये बहुत-बहुत याद दी और कहा जैसे सेवा में अथक और उमंग से चल रहे हो वैसे ही वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाने में भी नम्बरवन बनना है। यही मधुबन और सर्व भुजाओं पर बापदादा की शुभ आशायें हैं। ऐसे कहते सबको बहुत-बहुत याद-प्यार दिया और मैं साकार वतन में पहुँच गई। ओम शान्ति्।

08-12-2003

बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए शक्तियां अपनी सर्व शक्तियों को वायुमण्डल में फैलाकर साक्षात्कार कराने की सेवा करो

(दिल्ली- शान्ति महोत्सव के पश्चात) - आज जैसे ही मैं वतन में पहुँची, तो सदा ही बाबा सामने मिलता है, लेकिन आज क्या देखा कि बाबा के आगे हम शक्तियों का चित्र था। जैसे झाड़ के चित्र में एक साइड में शक्तियों का चित्र है, जिसमें मम्मा और बड़ी दादियां सभी खड़ी हैं। तो मैंने देखा कि हमारी बड़ी दादियाँ और बहनें ऐसे शक्तियों के चित्र के मुआफिक खड़ी थी। बाबा उनके बैक (पीछे) में था। बाबा ने पीछे से ऐसे हाथ किया, तो दोनों दादियों के मस्तक पर हाथ आ गया और वह गले की माला बन गई। यह दोनों ही सीन बहुत अच्छी थी। उसके बाद बाबा ने बोला बच्ची देखो बाबा है ही तुम बच्चों का बैकबोन। तो बाबा बैकबोन हो करके अभी प्रैक्टिकल में शक्तियों को आगे कर रहा है। जैसे फंक्शन में तीनों दादियों के चित्र, पोस्टर छपवाकर चारों ओर लगाये, यह भी निशानी है कि अब शक्तियाँ प्रत्यक्ष हो रही हैं, फिर यह शक्तियां ही शिव को प्रत्यक्ष करेंगी। जैसे अभी फंक्शन हुआ, अखबारों में आया और सारे ब्राह्मण परिवार में भी यह तीन दादियाँ, सबके दिलों में आ गयी हैं। ऐसे ही बाबा ने कहा कि अभी दादियों की शक्तियों के रूप में प्रत्यक्षता हुई है, लेकिन आगे चलकर सभी शक्तियों की प्रत्यक्षता बहुत जल्दी होनी है। अभी पहला पर्दा खुला है। लास्ट पर्दा है बाबा की प्रत्यक्षता का, तब सभी अहो प्रभू कहेंगे। तो शक्तियों की प्रत्यक्षता के बाद ही शिव की प्रत्यक्षता होगी, यह शक्तियाँ ही शिवबाबा को प्रत्यक्ष करेंगी। सन शोज़ फादर। पहले फादर ने शक्तियों का नाम बाला किया। अभी शक्तियाँ शिवबाबा का नाम बाला करेंगी, प्रत्यक्ष करेंगी। तो यह चित्र का राज़ बाबा ने सुनाया और कहा कि अभी आप शक्तियों को बहुत सूक्ष्म सकाश वा पावर देने का दृढ़ संकल्प करना चाहिए और शक्तियों को अपनी शक्तियाँ यूज़ करना चाहिए, गुप्त नहीं रखनी चाहिए। हर एक शक्ति को अपनी शक्तियों से वायुमण्डल फैलाना चाहिए। जैसे शुरू में घर बैठे ब्रह्मा बाबा का साक्षात्कार होता था, ऐसे अभी समय समीप होने के कारण आप शक्तियों में ऐसी शक्ति हो जो शक्तियों के साक्षात्कार शुरू हो जाएं तब आप शक्तियों द्वारा शिवबाबा प्रत्यक्ष होगा। उसके बाद बाबा ने दिल्ली का समाचार पूछा तो हमने सुनाया कि बाबा सभी के मुख से यही निकलता है कि बहुत अच्छा, बहुत अच्छा..। तो बाबा ने कहा सबसे पहले तो दिल्ली के स्टूडेन्टस् ने जो सेवा की, पर्चे आदि बांटे, हर प्रकार की सेवा में सहयोगी बनें उन सबको मैं बधाई देता हूँ। स्वागत करता हूँ। साथ-साथ जो भी हमारे सेवाधारी साथी आये हैं, सबको बाबा ने यादप्यार दिया, स्वागत किया और कहा कि सभी आये हुए बच्चों को अपनी ही राजधानी में पधारने का यादप्यार देना। ऐसे याद प्यार लेते, मैं साकार वतन में आ गई। ओम् शान्ति।

22-12-2003

संगठन में एक दो के विचार में हॉ जी करना यही हज़ूर को हाज़िर करना है

(कलकत्ता के विशाल कार्यक्रम के पश्चात) - आप सबका यादप्यार और सर्विस समाचार लेते हुए मैं बाबा के पास पहुंची तो क्या

देखा! आज वतन की सीन बहुत ही विचित्र थी, क्या देखा! कि सामने बाबा खड़े हैं लेकिन आज बाबा अकेला नहीं था, बाबा के साथ एडवांस पार्टी में गई हुई विशेष आत्मायें, मम्मा, दीदी और सभी गई हुई विशेष आत्मायें सामने खड़ी थी, तो जब मैं पहुंची तो मैंने भी अपने साथ अपनी प्यारी दादियों को और विशेष भाई बहिनों को संगठित रूप में देखा। दोनों ही जब आपस में मिल रहे थे तो बहुत सुन्दर सीन लग रही थी, एक तरफ एडवांस पार्टी थी और दूसरे तरफ हम लोग सम्पन्न बनने के पुरुषार्थी और बाबा के स्नेही सहयोगी बच्चे थे, दोनों आपस में नयनों से मुलाकात कर रहे थे। तो बाबा ने मम्मा को कहा मम्मा देखो आपके बच्चे कितने होशियार हो गये हैं। तो मम्मा मुस्कराई, दीदी भी साथ में थी तो दीदी को बाबा ने कहा, देखो तुम्हारी कुमारका सखी और जनक सखी क्या-क्या कर रही हैं। तो दीदी भी मुस्कराई और जो भी एडवांस पार्टी में गये हुए हैं, विश्वकिशोर भाई, बृजशान्ता दादी, पुष्पशान्ता, जगदीश भाई आदि....कई विशेष भाई बहिनें बाबा के साथ थे। तो बाबा ने मम्मा को कहा, मम्मा आप इन दोनों दादियों को मुबारक दो। तो मम्मा आगे आई और दोनों ही दादियों को ऐसे बांहों में लेकर, तीनों ही मिलकर बाबा के सामने आई। यह सीन भी बहुत सुन्दर लग रही थी। फिर बाबा ने कहा अच्छा बच्ची अभी बताओ तुम क्या कर रही हो और एडवांस पार्टी क्या कर रही है? हमने कहा बाबा आपने जो दादी को टच किया है, तो दादी की प्रेरणा से, हम लोग जल्दी-जल्दी सन्देश देने का कार्य कर रहे हैं। फिर बाबा ने मम्मा से पूछा कि आपका ग्रुप क्या कर रहा है? तो मम्मा मुस्कराई, मम्मा ने कहा दीदी आप बताओ हम क्या कर रहे हैं! दीदी ने कहा कि हम तो इन्हों का आह्वान करते-करते थक गये हैं, अभी यह जल्दी-जल्दी आवें। तो बाबा ने कहा देखो बच्ची, आपका जो संकल्प है वह इन्हों तक पहुंच गया है। अभी देखो लाखों की अन्दाज में सन्देश पहुंच रहा है ना। लेकिन अभी इनसे एक ऐसा ग्रुप निकालो जो सर्विसएबुल ग्रुप हो। पहले बाबा ने कहा है माइक और वारिस निकालो लेकिन आज बाबा ने कहा कि ऐसा ग्रुप आप छांटकर निकालो, सेवा तो बहुत विस्तार में हो रही है, बाबा देखकर खुश होता है लेकिन अभी बाबा ऐसा ग्रुप चाहता है जो सर्विसएबुल हो, आप सिर्फ दृष्टि-दाता बनो, ऐसी दृष्टि सामने से दो जो सृष्टि बदलती जाए और आपके तरफ से वह बोलें। ऐसे बाबा ने कहा फिर यह सीन पूरी हो गई।

फिर बाबा ने कहा देखो दिल्ली वालों ने भी बहुत मेहनत की और ईस्टर्न वालों ने भी बहुत मेहनत की है, तो मैं इन्हों को एक्सकर्सन कराता हूँ। तो बाबा ने कलकत्ता और दिल्ली के मुख्य भाई-बहिनों को इमर्ज किया। और सभी को अपने साथ ऐसे स्थान पर लेकर चला, जो बहुत विचित्र था। वह था सागर लेकिन सागर पानी का नहीं था, उसमें भिन्न-भिन्न लहरें जैसे सागर में होती हैं, ऐसे लहरे थीं, लेकिन वह लाइट की लहरें थी, एक के पीछे एक लाइट की लहरें चल रही थी, जैसे विस्तार में सागर फैला होता है, ऐसे फैली हुई लाइट थी और उस लाइट में शब्द लिखे हुए थे - ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर, सुख के सागर, शान्ति के सागर, आनंद के सागर... तो बाबा ने कहा जैसे साकार में बाबा आप बच्चों को स्थूल पानी के सागर पर ले जाते थे और कहते थे, सागर में जाकर पांव डालकर आओ। तो आप सभी बच्चे बहुत मेहनत करके आये हो तो आज बाबा आपको लाइट के सागर में सैर करायेगा, अनुभव करायेगा। तो सभी एक लहर से दूसरी लहर में, दूसरे से तीसरी लाइन में ऐसे चलते गये और जिस लाइट की लहर में चलते थे, वैसा ही लाइट रूप उन्हों का बन जाता था। वह सीन बहुत अच्छी लग रही थी। कोई एक सेकण्ड भी अगर प्रेम की लहर में जाते थे तो उसी में लहराने लगते थे। ऐसे भिन्न-भिन्न अनुभवों के सागर में सभी लहराते रहे। जब सभी चक्र लगाके आ गये तो बाबा ने कहा, जैसे यहाँ मैंने आपको अनुभव कराया, सेकण्ड में अनुभूति की। ऐसे ही निरन्तर यह अभ्यास करते रहो तो औरों को भी यह अनुभव करा सकेंगे। कभी सुख की लहर में कभी शान्ति की, कभी आंनद की, प्रेम की लहर में, ऐसे लहराते जाओ और उसका आप भी अनुभव करो और दूसरों को भी अनुभव कराओ। फिर बाबा ने कहा अच्छा बच्ची, जब आप किल्फटन पर, सागर में जाते थे तो बाबा आपको ड्रिल कराते थे। तो बाबा ने कहा अच्छा वतन में आप कौन सी ड्रिल करेंगे! इस ड्रिल के लिए बहुत बड़ा संगठन वतन में इमर्ज हो गया। तो बाबा ने एक सीन बनवाई, (वह सीन दादी ने बनाकर दिखाई) एक सर्किल में सभी की बांहें थीं, हम सबके हाथ आपस में ऐसे मिले हुए थे, जो एक आसन सा बन गया और उस पर ब्रह्मा बाबा बैठ गये। यह सीन बहुत अच्छा लग रहा था। तो बाबा ने कहा बच्ची यह एक्सरसाइज इसलिए कराई है, कि देखो सबके संगठन की कितनी शक्ति है। अगर एक हाथ होता तो इतनी शक्ति नहीं होती लेकिन जब सभी मिल गये तो संगठन की शक्ति हो गई। तो यहाँ भी जो कार्य हुआ, संगठन के विचार मिलकर एक हुए इसीलिए यह सफलता हुई। तो बाबा ने कहा सभी ने चाहे किसी भी रीति से हाँ जी, हाँ जी का पाठ पक्का किया तभी यह सफलता का सितारा कलकत्ता में चमका। इसलिए सदा ऐसे ही समझो, कि हमको एक दो के विचारों पर हाँ जी करना है, विचार देना अलग चीज है लेकिन विचार देने के बाद जब संगठन की राय होती है तो फिर हाँ जी, हाँ जी करने से हजूर हाजिर हो जाता है। तो बाबा ने कहा कि खास सभी बच्चों को यही कहना कि हिम्मत, दृढ़ता और हाँ जी यह पाठ अगर किसी भी कार्य में पक्का रहता है तो सफलता आप सब बच्चों के गले की माला है, सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। फिर जो भी वहाँ इमर्ज हुए थे उन सबको बाबा ने अपनी बांहों में समाया और कहा मुबारक हो, मुबारक हो, ऐसे ही एवरी टाइम मुबारक के पात्र बनना। यह बाबा ने वरदान दिया और हमको छुट्टी दी, हम साकार वतन में आ गई। ओम शान्ति्।

10-01-2004

संकल्प और समय - यह दो बड़े डायमण्ड हैं - इन्हें समर्थ बनाओ सफल करो

आज दोनों दादियों की विशेष यादप्यार और आप सबका याद प्यार लेते हुए वतन में पहुँची तो सामने से ही बापदादा से नयन मिलन

मनाते मीठी दृष्टि में समाते हुए समीप पहुँच गई। बाबा बोले आओ मेरी समर्थ बच्ची आओ, क्या समाचार लायी हो? मैं बोली बाबा आजकल तो सब बच्चों में स्मृति दिवस के स्नेह की लहर है और चारों ओर पॉवरफुल याद के प्रोग्राम्स चल रहे हैं। बापदादा बोले बच्चों का स्नेह बापदादा के पास पहुँच रहा है क्योंकि यह स्मृति दिवस ही समर्थी दिवस है। इस दिन ही विशेष बच्चों को ''समर्थी भव'' का वरदान ब्रह्मा बाप द्वारा मिला था। इस दिन ही बापदादा ने स्वयं को बैकबोन बनकर शक्तियों को विश्व के आगे प्रत्यक्ष होने की पॉवर विल की। और ''सन शोज फादर'' का वरदान मिलने का दिन है। इसलिए इस दिन का बहुत महत्व है। बापदादा बच्चों का भाग्य देख हर्षित होते हैं। समर्थी दिवस के साथ-साथ बच्चों को इस संगमयुग का भी वरदान है।

1. यह संगमयुग का समय ही सारे कल्प की तकदीर को समर्थ बनाने वाला है।
2. व्यर्थ को समर्थ में बदलने का युग है।
3. कौड़ी से हीरा बनने का युग है।

इसलिए हर बच्चे को इस समय विशेष दो खजानों का ध्यान देना है - वह है संकल्प और समय। यह दोनों खजाने इस समय के बड़े ते बड़े डायमण्ड हैं इसलिए हर संकल्प वा हर घड़ी को समर्थ और सफल करना है और कराना है। सदा यही अटेन्शन रखना है कि व्यर्थ को बचाए जमा करना है।

इसके बाद बाबा को दोनों दादियों की सेवा का समाचार सुनाया कि कैसे बड़ी दादी साथियों के साथ हिम्मत और उमंग से भोपाल की सेवा पर गयी और सारा प्रोग्राम बहुत अच्छा रहा। सभी को बहुत उमंग दिलाया, बहुतों को सन्देश दिया। प्रकृति ने भी बहुत अच्छा सहयोग दिया जो वह दिन बहुत अच्छा रहा, दूसरे दिन तो खूब बारिश और ठण्डी हवायें हुई। बाबा मुस्कराते हुए बोले, मेरे सर्व मुरब्बी बच्चों की यही विशेषता है जो समय पर हिम्मत और शक्ति का वरदान मिल जाता है। बापदादा सर्व ग्रुप और विशेष भोपाल वालों को मुबारक देते हैं। सदा हिम्मत के बल से बढ़ते रहो और बढ़ाते रहो। सभी को दृष्टि द्वारा बाबा ने बहुत प्यार दिया। उसके बाद दादी जानकी का समाचार सुनाया कि वह प्रिन्स चार्ल्स से बहुत प्यार से होमली रूप से मिली, वह बहुत खुश हुए। लण्डन में और चारों ओर बहुत रिफ्रेश हो रहे हैं। उसके बाद बाबा ने विदेश की निमित्त टीचर्स को याद दी और हरेक को नयनों में समा कर बहुत प्यार दिया। कुछ समय के बाद बाबा बोले, बाप बच्चों की कमाल देख बच्चों के वाह! वाह! के गीत गाते रहते। साथ में दोनों दादियों को याद किया और कहा निमित्त बनी हुई दादियों का आपसी स्नेह और समीपता ही सारे ब्राह्मण परिवार को स्नेह के वायब्रेशन में बांध रहा है। ऐसे कहते दोनों दादियों को और हमें भी स्वयं में समा दिया। फिर हम साकार वतन में पहुँच गई।

17-01-2004

सेवा में टेन्शन के बजाए अटेन्शन रख संगठन और तन-मन-धन के सरकमस्टांश अनुसार सफलता मूर्त बनो

आज मीठी दादी जी की यादप्यार और समाचार लेते हुए बाबा के पास पहुंची तो क्या देखा कि बापदादा के पास दादी जी पहले ही पहुंची हुई थी। बाबा गद्दी पर बैठे थे और दादी पास में बैठी हैं, बहुत लाड-कोड से दादी का मिलन हो रहा था, कब गोदी में, कभी पास में बैठ बहुत प्यार से बातें कर रही थी। मैं पहुंची तो दादी बोली गुल्जार बहन आपको मैंने सन्देश दिया, आपको नहीं बुलाया तो मैं पहुंच गई हूँ। मैंने कहा दादी यह तो बहुत अच्छा आप डायरेक्ट बाबा का रेसपान्ड ले लो।

बापदादा बोले, आओ बच्ची अब दोनों सुनो। मुझे भी पास में बिठा दिया। फिर बाबा ने दादी का संकल्प सुना, मैंने भी सुनाया। बापदादा बड़े प्यार से मुस्कराते बोले, बच्ची निमित्त है तो संकल्प तो आने ही हैं। सेवा में बिजी रहना वा रखना आवश्यक है। बाकी विचार तो सबको दे ही दिया है, यह अच्छा है। लेकिन हर स्थान के संगठन का साथ और तन-मन-धन के सरकमस्टांश अलग-अलग हैं इसलिए टेन्शन से नहीं करें लेकिन अटेन्शन में जरूर रखें, करना अच्छा है, जब जैसे सहज चांस बनें वैसे करते जावें तो सफलता अच्छी मिलेगी। संकल्प दिया, यह अच्छा हुआ। सबको उमंग-उत्साह में लाया और सबको उमंग-उत्साह है भी, अब देखते चलो हो ही जाना है। ऐसे रूहरिहान करते हम दोनों को गले में समाए मीठी स्नेह की दृष्टि देते हुए साकार वतन में पहुंचा दिया। ओम् शान्ति।

24-01-2004

सेवा में ऐसी विधियाँ एड करो जो हर साधन एक परमात्मा से कनेक्शन और रिलेशन जुड़ाने वाला हो

(आर.सी.ओ. मीटिंग प्रति) - आज बापदादा के पास गई तो क्या देखा कि दूर से ही बापदादा बहुत स्नेह रूप में खड़े थे। दूर से ही आओ नयनों के नूर बच्चे, तख्तनशीन बच्चे आओ कहते, मीठी दृष्टि दे रहे थे और मैं उस दिव्य दृष्टि में ही समाई हुई आगे बढ़ते सम्मुख पहुंच गई। अपनी बाहों में समाते बाबा बोले, आज क्या समाचार लाई हो? मैं बोली, आज आपके विदेश में सेवा अर्थ निमित्त अनन्य बच्चे आर.सी.ओ. वालों की मीटिंग लण्डन में हो रही है और बहुत सेवा के प्लैन और लेन-देन कर रहे हैं। दादी जानकी जी ने भी बहुत यादप्यार दी है। सबने बहुत यादप्यार दी है। सुनते ही बाबा बहुत मीठा मुस्कराये और ऐसा लगा कि जैसे बापदादा लण्डन में बच्चों के पास ही पहुंच गया है। और हर एक को अपने नयनों में समा रहा है। कुछ समय के बाद बाबा बोले बाप तो अपने विशेष सेवा अर्थ निमित्त बच्चों पर बलिहार जाते हैं कि एक एक बच्चा कितना बाप के स्नेह में लवलीन हो बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए दिल की लगन से कहाँ-कहाँ कोने-कोने में सेवा में लगे हुए

हैं। बाप को भी नाज़ है कि क्यों नहीं उमंग-उत्साह में होंगे जबकि बेहद बाप, परमात्म बाप के अमूल्य रत्न हैं। बाप तो रोज़ अमृतवेले अपने एक-एक डायमण्ड को देखते, दृष्टि में समाते हैं।

फिर मैंने सुनाया कि बाबा आज कल मीडिया सेवा पर बहुत अच्छी लेन-देन हो रही है। बाबा बोले बच्चे, मीडिया की सेवा तो सहज बेहद की सेवा करने में, सन्देश देने की विधि बहुत अच्छी है। सब बच्चों को बहुत उमंग है, सब अपने अपने भिन्न-भिन्न साधन और विधियों से कर रहे हैं। कोई किताबों के द्वारा अपने अनुभव, प्राप्तियों के अनुभव लिख रहे हैं। कोई वीडियो द्वारा, कैसेट द्वारा, गीत द्वारा अच्छा ही प्रयत्न कर रहे हैं। ज्ञान को स्पष्ट भी कर रहे हैं। मेहनत मुहब्बत से कर रहे हैं लेकिन लोगों की मोटी बुद्धि, देह भान वाली बुद्धि होने कारण आत्माओं की तरफ बुद्धि जाती है, फलाने ने बहुत अच्छा लिखा है, बी.के. ने बहुत अच्छा बनाया है, बहिनों ने अच्छा बनाया है। लेकिन इन्हों का सोर्स एक परमात्मा ही है उस तरफ बुद्धि कम जाती है। बस यह कहते कि यह भी अच्छा काम कर रहे हैं लेकिन यही एक हैं, यह नहीं बुद्धि में आता है। इसके लिए कुछ ऐसे प्लैन, विधियां एडीशन करो जो हर साधन द्वारा परमात्मा तरफ कनेक्शन, रिलेशन जुट जावे और वर्से के अधिकारी बन जायें, कुछ प्राप्ति और पावर आये, अब तक जो किया है, बहुत अच्छा सन्देश पहुंचा है। बाप मुबारक देते हैं, प्यार देते हैं, वाह मेरे बच्चे वाह! अभी बिचार कर एक कमेटी देश विदेश में बिठाओ जो हर मीडिया के साधन को उस एम से देखे। चाहे बुक हो, अखबार के लेख हों, ड्रामा डायलाग हो, वीडियो फिल्म हो, तो कम खर्चा कम समय कम मेहनत और बालानशीन सेवा सहज हो जायेगी क्योंकि उमंग तो चारों ओर देश विदेश के बच्चों को आता ही है। अच्छा है और अच्छा होना ही है।

उसके बाद बापदादा ने दादी जानकी जी को और सब मीटिंग में आये हुए बच्चों को याद दी। बाबा बोले मेरे सब राय बहादुर सर्विसएबुल नॉलेजफुल बच्चे हैं। बापदादा एक एक की विशेषता जान मुबारक देते हैं वाह मेरे कोहनूर डायमण्ड से भी अमूल्य रूहानी परमात्म डायमण्ड वाह! सबको दिलाराम बाप की तरफ से दिल की दुआयें और यादप्यार देना।

उसके बाद बापदादा ने सर्व डबल विदेशी बच्चों को याद किया और कहा सभी दिल साफ मुराद हांसिल वाले सच्चे बच्चों को सत्य बाप, सत्य शिक्षक, सतगुरू की बहुत-बहुत यादप्यार देना। भारत के बच्चे तो बाप को भारत में बुलाने वाले भाग्यवान हैं ही। ऐसे कहते हमारी मीठी-मीठी दादी जी को तो बहुत प्यार किया, सिर पर दुआओं का हाथ घुमाते बहुत-बहुत यादप्यार देते हमें साकार वतन में भेज दिया। ओम् शान्ति्।

08-02-2004

भिन्न-भिन्न संस्कार वालों के साथ स्वयं को एडजेस्ट करने का लक्ष्य और अटेन्शन सेवा की सफलता का साधन है

(हैदराबाद में शान्ति-सरोवर के निर्माण प्रति) - आज बाबा के पास गई तो बाबा मुस्कराकर बोले, आओ विश्व परिवर्तक, संसार परिवर्तक, संस्कार परिवर्तक बच्ची आओ। क्या समाचार लाई हो? मैंने कॉन्फ्रेन्स का समाचार सुनाया, साथ में हैद्राबाद का समाचार भी सुनाया। बापदादा मुस्कराये और बोले, मेरे महारथी बच्चों को समय प्रमाण भिन्न-भिन्न वैरायटी संस्कारों वाली आत्माओं के साथ सेवा में निभाने के लिए विशेष स्वयं को एडजस्ट करने का लक्ष्य और अटेन्शन बहुत जरूरी है। हैद्राबाद के लिए बापदादा समझते हैं कि पहला फेज़, जैसे जिन्होंने उमंग से शुरू किया है वैसे ही बीती को बिन्दी लगाकर डबल लाइट बन हिम्मत से पूरा करें। जैसे जितना बना है उसको तैयार कर समाप्त करें, तो शोभा है। जैसे आन्ध्रा साथ में महाराष्ट्र ने मिलकर हिम्मत रखी है वैसे ही मिलजुलकर सबको साथ मिलाकर साथी बन आपस में कमेटी बनायें, सेवा में मिलकर करें। तो आन्ध्रा और महाराष्ट्र में बहुत अच्छे-अच्छे बच्चे सहयोगी, स्नेही हैं और रिजल्ट अच्छी निकाल सकते हैं। फिर भी आपस में राय कर बनाओ। बाकी तो बापदादा और दादियाँ सर्व के साथ है ही हैं। अच्छा।

13-03-2004

होली हीरो एक्टर की पालना और परवरिश भी हीरो चाहिऐ

(दादी जी के प्रति) - बापदादा के पास दादी जी की याद लेकर गई। बापदादा बहुत मीठा मुस्कराया और समाचार पूछा। मैंने सुनाया तो बापदादा बोले आप सबकी, बाप की प्यारी दादी तो बेहद के ड्रामा में परमात्म पार्ट की हीरो एक्टर है। इसलिए होली हीरो एक्टर हैं इसलिए होली हीरो एक्टर की पालना और परवरिश भी तो हीरो होनी चाहिए। तो डाक्टर्स वहाँ हैं, सब मिलकर जो चेकिंग कर रहे हैं, उसी प्रमाण ही चलना है। कुछ समय रेस्ट करनी है। बाकी दादी के दिलख्त पर तो बापदादा बैठा है इसलिए तख्त की सम्भाल भी बहुत अच्छी करनी ही है। साथ में दादी जी को दिल पर हाथ घुमाते बहुत-बहुत प्यार किया। साथ में जो भी साथी हैं, उन्हों को भी (हीरो एक्टर के साथियों को) बापदादा ने दिल से, प्यार से याद दी।

25-03-2004

प्रभु नूर डायमण्ड के आगे कोई भी डायमण्ड साधारण पत्थर है

(दादी जी के स्वास्थ्य प्रति) - आज अमृतवेले बापदादा के पास विशेष अपनी प्यारी दादी जी का यादप्यार लेते हुए पहुंची तो क्या देखा, बापदादा अति स्नेह रूप से अपने सर्व ब्राह्मण बच्चों को अमृतवेले के मिलन में याद का रिटर्न दिल का स्नेह और दुआयें दे रहे थे। कुछ समय के बाद बाबा की दृष्टि मेरे ऊपर पड़ी और मधुर बोल बोले - ''आओ स्नेही बच्ची आओ''। मैं यह मधुर बोल सुनते, दृष्टि की छत्रछाया में

सम्मुख पहुंच गई। बाबा बोले बच्ची बाबा जानता है कि आज तुम मेरी विश्व के निमित्त कोहनूर हीरे से भी ज्यादा प्रभू नूर बच्ची का याद समाचार लाई हो। प्रभू नूर डायमण्ड के आगे सारे कल्प में और कोई भी डायमण्ड साधारण पत्थर है। मैं बोली बाबा आज दादी जी का आपके डायरेक्शन प्रमाण अहमदाबाद में एनजियोप्लास्ट हो गया। दादी जी ने बहुत-बहुत यादप्यार थैंक्स दी है। तबियत वैसे ठीक है, सिर्फ पहला दिन है तो वीकनेस है।

बाबा बोले यह तो होता ही है। बच्ची तो मेरी विश्व की आत्माओं में विशेष निमित्त निर्माण हर कार्य में सदा समीप साथी, जी हाँ, जी हाजिर करने वाली एवररेडी शक्तिशाली है। बापदादा तो हर समय छत्रछाया बन देख रेख कर रहा है, चक्कर लगाते रहते हैं। अच्छा हुआ सबकी हिम्मत से बच्ची का हिसाब सूली से कांटा हो गया। थोड़े समय में ही सहज हो गया। बाकी कमजोरी भी ठीक हो जानी है। मैंने सुनाया बाबा चारों ओर के सेन्टर्स से साथी टीचर्स भाई-बहिनों के फोन आ रहे हैं - क्या हुआ, क्या है? बाबा बोले बच्ची सबको कहो ठीक हुआ, ठीक होना ही है। फिर बाबा को दादी के सवेरे के सेवा के फोर्सफुल संकल्प का समाचार सुनाया। बाबा बोले बच्ची को विश्व कल्याण की जिम्मेवारी का ताज है तो प्लैन तो चलेगा ही। साकार ब्रह्मा बाप को भी नया-नया उमंग-उत्साह भरा संकल्प आता और सबको सेवा में नचा लेता था, तो बच्ची भी निमित्त है तो उमंग-उत्साह तो आता ही है। सभी बच्चे भी चारों ओर सेवा में अच्छे ही उमंग-उत्साह में हैं। यह देख बापदादा सर्व देश विदेश के हर बच्चे को बहुत-बहुत यादप्यार और सेवा की मुबारक दे रहे हैं। विशेष दादी जानकी को भी याद दी। ओम शान्ति्।

30-03-2004

स्वयं में सम्पन्नता की प्रत्यक्षता करो तब बाप की प्रत्यक्षता होगी

(मीटिंग के भाई बहिनों प्रति) - आज बापदादा के पास सर्व मीटिंग के साथियों की और विशेष हमारी दादियों की यादप्यार लेते हुए पहुंची। तो क्या देखा कि आज बापदादा बहुत बिजी थे। बापदादा के सामने बहुत रंग-बिरंगी हीरे थे और हर एक हीरे को बहुत प्यार से देख-देख हर्षित हो रहे थे। मैं दूर से ही देख हर्षित हो आगे बढ़ते सम्मुख पहुंच गई। लेकिन बापदादा का ध्यान हीरों में ही था। थोड़ी हलचल के बाद बाबा की नज़र मेरे ऊपर गई और बाबा बोले आओ मेरी होली, हैपी डायमण्ड आओ, क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आज आपके विशेष निमित्त बच्चों की यादप्यार लाई हूँ। बापदादा ने मुस्कराते सबका यादप्यार स्वीकार किया। मैं बोली बाबा आज आप बहुत बिजी हो, तो बापदादा मीठा मुस्कराते बोले, बच्ची आजकल आपकी साकार दुनिया में इलेक्शन चल रहे हैं ना। तो बापदादा भी आज सलेक्शन कर रहे हैं कि मेरे लाडले हीरे बच्चे कैसे कैसे हैं। मैं बोली बाबा आप क्या देख रहे हैं? बाबा बोले बच्ची हीरे तो सब हैं लेकिन तीन प्रकार के रत्न देख रहे थे। एक हैं - जो कितना भी कैसे भी वायुमण्डल, परस्थितियों की धूल हो लेकिन उन्हों पर धूल का प्रभाव नहीं पड़ता, सदा चमकते ही रहते हैं। दूसरे हैं - जो कभी-कभी कोई न कोई शक्ति की समय पर अपने में कम-जोरी होने कारण वायुमण्डल के, परिस्थितियों के, वायब्रेशन के प्रभाव की धूल के असर में आ जाते हैं। कभी अटेन्शन से मिटा भी लेते, कभी प्रभाव में भी आ जाते। तीसरे हैं जो कुछ न कुछ छोटे बड़े दाग पक्के हैं, मिटाते भी मिटा नहीं सकते। सोचते बहुत अच्छा हैं, यह करूंगा, यह होगा लेकिन संकल्प को प्रत्यक्ष परिवर्तन में लाने की शक्ति कम है। किसी न किसी संस्कार के कारण शक्तिहीन बन जाते हैं। ऐसे तीन प्रकार के हीरों को देख रहे थे।

मैं बोली, बाबा परिवर्तन चाहते, उमंग होते, सोचते भी क्यों नहीं कर पाते? बापदादा मुस्कराते बोले, बच्ची परिवर्तन की इच्छा होती है लेकिन साथ में चारों ओर के हद की इच्छायें कि मेरा नाम, शान, मान भी होगा वा नहीं...., यह तो नहीं हो जायेगा! यह व्यर्थ संकल्प मिक्स होने के कारण शुभ संकल्प की शक्ति को दबा देते हैं। इसलिए प्रत्यक्ष परिवर्तन संकल्प तक ही रह जाता है। समर्थ और व्यर्थ दोनों की टग्आफवार में ही रह जाते हैं। बापदादा ऐसे बच्चों को विशेष रहमदिल बन हिम्मत की शक्ति देते लेकिन वह अपनी ही उलझन में मस्त होते। बापदादा ने देखा है - विशेष कारण है एक दो को देखना और एक दो को हद की प्राप्ति में कापी करना। यह ऐसे, यह इतना.. मैं क्यों कम रहूँ! यह लहर ज्यादा दिखाई देती है। फालो फादर के बजाए फालो एक दो को करना। जैसे ब्रह्मा बाप सभी बच्चों की कमी भी जानते लेकिन विशेषता देख विशेषता से आगे बढ़ाते। इस विधि से ही स्व परिवर्तन सहज हो सकता है। नॉलेजफुल ज्यादा हो जाते लेकिन पावरफुल हो परिवर्तन नहीं कर पाते। बापदादा यही चाहते हैं कि अब समय प्रमाण स्व के ऊपर अटेन्शन जरूरी है।

इसके बाद मैंने बोला बाबा हमारी दादियों का यही संकल्प है कि इस वर्ष बापदादा को अवश्य विश्व के आगे प्रत्यक्ष करना है। बाप-दादा मुस्कराते बोले, आप मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चों के संगठन के लिए यह क्या बड़ी बात है लेकिन यह ध्यान रहे कि प्रत्यक्षता का पर्दा खुलेगा तो क्या अकेला बापदादा प्रत्यक्ष होगा वा बच्चों सहित प्रत्यक्ष होगा? तो सर्व बच्चों को पहले स्वयं में सम्पन्नता की प्रत्यक्षता करनी होगी, तब बाप की प्रत्यक्षता होगी। बाप साथ, बाप समान बच्चे भी चाहिए तब नगाड़ा बजेगा - हमारा बाप आ गया, हमारे पूर्वज आ गये...

फिर मैंने दादी जी का सर्विस का संकल्प सुनाया कि हर एक विश्व की आत्मा को सन्देश मिलना चाहिए, उल्हना न रह जाए। बाबा बोले बहुत अच्छा है, यह सेवा तो करो लेकिन साथ में तीन प्रकार की सेवा का लक्ष्य रखो। एक तो सन्देश देना, दूसरा - सम्बन्ध-सम्पर्क वालों को और आगे बढ़ाना, तैयार करना। तीसरा - सन्देशवाहक आत्माओं को भी तैयार करना। जो अपनी पोजीशन और आध्यात्मिक अनुभव के आधार से ललकार कर सकें। तीनों प्रकार की सेवा हर सेन्टर वा गीता पाठशाला की हर ब्राह्मण आत्मा को मर्यादा-पूर्वक करना जरूरी है। हर

एक ब्राह्मण आत्मा ऐसे ही समझे कि इस समय या इस वर्ष स्व और सेवा के बैलेन्स द्वारा विशेष सहज ब्लेसिंग के सफलता की डायमण्ड लाटरी लेने का चांस लेना ही है। समय के चांस को कार्य में लगाना ही है। जितना ज्यादा समय, संकल्प, तन, मन, धन द्वारा करें उतना स्व और सर्व का भाग्य बनाना है।

बाकी तो मीटिंग वाले बच्चों को सदा दिलाराम बाप दिल तख्तनशीन देखते हैं। हर एक की विशेषता पर बलिहार जाते हैं। बाकी बच्चों ने मिलने की अर्जी डाली, बाप तो बच्चों से ज्यादा मिलना चाहता क्योंकि बाप का तो काम ही है बच्चों से अव्यक्त, व्यक्त रूप में मिलना। लेकिन इस वारी वायदों का फायदा बापदादा प्रत्यक्ष रूप में बच्चों का परिवर्तन चाहते हैं। वायदों का फाइल समाप्त कर फाइनल स्टेज को प्रत्यक्ष देखने चाहते हैं। बापदादा तो हर कदम में बच्चों के साथ है। साथ है, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे। ऐसे कहते हर बच्चे को अपने नयनों में समाते यादप्यार दी, साथ में देश-विदेश के हर बच्चे को भी यादप्यार दी। अच्छा - ओम् शान्ति।

03-04-2004

निमित्त भाव, निर्मान भावना और निर्मल वाणी द्वारा सहज सफलतामूर्त भव

(मीटिंग के प्रति दूसरा सन्देश) - आज बापदादा के पास आप सबका और दादियों का यादप्यार लेकर गई तो सामने से ही देखा कि बापदादा बहुत मधुर मुस्कान से स्नेह भरी शक्तिशाली दृष्टि दे रहे थे और बोले, ''आओ मेरे विश्व सेवा साथी गुरूभाई बच्चे आओ।'' मैं तो सुन-सुन स्नेह में समा गई। कुछ समय बाद बाबा बोले बच्ची, आज क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आज तो सब ज़ोन, वर्ग बहुत उमंग-उत्साह से चारों ओर की सेवा के प्लैन बना रहे हैं। सबको दादियों सहित यही संकल्प है कि परमात्म प्रत्यक्षता करनी ही है। बापदादा ने मीठा मुस्कराया और बोले, स्व परिवर्तन का भी प्लैन हर एक ने दिल से बनाया?

मैं बोली बाबा सबका इस समय लक्ष्य तो बहुत अच्छा लग रहा है। तो बाबा सुनकर एक घड़ी के लिए बिल्कुल डेड साइलेन्स स्वरूप में आ गये और बोले, बापदादा इन एडवांस सर्व बच्चों को स्व-परिवर्तन की पदमापदम गुणा मुबारक दे रहे हैं और बहुत खुश हैं, और रिजल्ट देख हर बच्चे पर स्वर्ग के सच्चे डायमन्ड्स की वर्सा करेंगे क्योंकि बापदादा देख रहे हैं कि कहाँ कहाँ अब भी बच्चों के दृढ़ता की शक्ति को, आपसी समस्यायें, सेवा की समस्याओं की शक्ति 100 परसेन्ट विजयी बनने में, कुछ मिटाने, भूलने, बदलने में कमजोर बना सकती है। फिर भी बापदादा बच्चों की हिम्मत पर सदा सर्व के मददगार हैं। उसके बाद ऐसे लगा जैसे बापदादा हमारी मीटिंग के सर्व बच्चों को सामने देख रहे हैं और बहुत मीठा स्नेह दे रहे हैं। मैं बोली बाबा आप क्या देख रहे हैं! बाबा बोले, बाप तो सदा बच्चों को ही देखते हैं। बाबा ने तो पहले ही कहा है कि इस बारी रिजल्ट देख फिर आगे का प्रोग्राम बनायेंगे। बापदादा के पास तो चारों ओर की रिजल्ट एक मास में ही पहुंच जायेगी।

उसके बाद बाबा को दादी जी की विशेष याद और उमंग सुनाये। बाबा खुश हुए और कहा बच्ची के दिल के उमंग तो बहुत अच्छे हैं क्योंकि निमित्त है। भल शरीर साथ नहीं दे रहा है लेकिन बापदादा और आप सबका स्नेह, दुआयें चला रही हैं, चलाने वाला चला रहा है। चलाते रहेंगे।

उसके बाद बाबा ने दादी जानकी और साथ में सब दादियों को याद दी। दादी जानकी को याद देते बोले, बच्ची को वर्तमान समय शरीर को चलाना अच्छा आ गया है इसलिए सेवा में चक्रवर्ती बन गई है। फारेन की सेवा पर भी अच्छा अटेन्शन है। चारों ओर उमंग-उत्साह अच्छा बढ़ा रही है। इस समय डबल फारेनर्स बच्चों में भी स्व-परिवर्तन के पुरुषार्थ में सफलता अच्छी है इसलिए बापदादा दिलाराम सर्व डबल विदेशी बच्चों को दिल की दुआयें दिल की यादप्यार दे रहे हैं।

उसके बाद बापदादा ने सब मीटिंग वाले और मधुबन की सर्व भुजाओं के बच्चों को वतन में इमर्ज किया। सेकण्ड में ही सब अर्ध चन्द्रमा के रूप में बापदादा के आसपास पहुंच गये। बापदादा अपने वरदानी हाथ से वरदान दे बोले, बच्चे ''सदा निमित्त भाव, निर्माण भावना, निर्मल वाणी द्वारा सहज सफलता भव'' और बाबा के हाथ द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार की लाइट्स की किरणें निकल रही थी जो सबके ऊपर छत्रछाया बन गई। यह दृश्य भी बड़ा सुन्दर था। उसके बाद बाबा ने मिलन मनाते विदाई दी और बोले सभी स्व राजदुलारे बच्चों को दिलाराम का दुलार देना। अच्छा - ओम् शान्ति।

05-04-2004

खुशनुमः बन सबको खुशी का सहयोग देते चलो

(मीटिंग में तीसरा सन्देश) - आज बापदादा के पास गई, सबका यादप्यार दिया। बापदादा ने मीठा मुस्कराते बोला बच्चों ने प्रोग्राम बहुत अच्छे बनाये हैं। दिल से बनाये हैं। अब स्व और सेवा का बैलेन्स रख ब्लैसिंग लेनी है। बापदादा तो बच्चों पर सदा खुश है क्योंकि बाप जानते हैं यह ही तो मेरे सिकीलधे, लाडले डायरेक्ट बच्चे हैं और सारे कल्प के हीरो एक्टर हैं। यह बच्चे ही परमात्म साथी हैं इसलिए बापदादा का बहुत-बहुत दिल का प्यार है। अब बापदादा यही चाहते हैं कि मेरे बच्चे जल्दी-जल्दी बाप समान बन विश्व की आत्माओं को सुखी बना दें, मुक्ति का वर्सा बाप से दिला दें। यह होना ही है। हुआ ही पड़ा है इसके बाद बाबा को दादी की तबियत का समाचार सुनाया। बाबा बोले यह तो खिटखिट थोड़ी होती है क्योंकि पुराना अन्तिम शरीर है। बाकी बाप और आप सबकी दुआयें हैं। ऐसे कहने के बाद सबको बाबा ने याद देते कहा सदा खुशनसीब हो, खुशनुमः बन सबको खुशी का सहयोग देते रहो। ओम शान्ति्।

टीचर्स बहनों की ट्रेनिंग तथा माताओं की भट्ठी प्रति प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश

आज बापदादा के पास आप सब माताओं और आने वाली टीचर्स की याद-प्यार लेते हुए पहुँची। तो क्या देखा बापदादा सामने खड़े थे और दूर से दृष्टि दे मुस्कुराते बोले, आओ बच्ची आओ। मैं दृष्टि के आकर्षण में आगे बढ़ते पास पहुँच गई। जाते ही अमूल्य बाहों की माला में समा गई। बापदादा ने भी ऐसे स्नेह में समा लिया जो मैं भी लव में लीन हो गई। कुछ समय के बाद बाबा बोले आज क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आपके सिर के ताज मीठी माताओं का संगठन बहुत अच्छा आया है साथ में आपके समान गुरु भाई टीचर्स का भी संगठन आया है। आज तो जैसे आप ने मुरली में कहा कि मातायें स्नेह और भावना की रस्सी में बांध लेती हैं और बाप दिलतख्त का झूला बनाकर झुला लेते हैं। ऐसे ही आज कल मधुबन में चारों ओर वायुमण्डल में वायब्रेशन छाया हुआ है।

बाबा बोले, माताओं में प्यार की विशेषता होती ही है। दिलाराम बाप भी बहुत दिल से दिलतख्त नशीन बना देते हैं क्योंकि द्वापर से सबने माताओं को नीचे गिराया है। लेकिन बापदादा को माताओं पर बहुत नाज है। क्योंकि माताओं के बिना विश्व का कल्याण हो ही नहीं सकता है। ड्रामा अनुसार माताओं को ही विश्वकल्याण के कार्य की जिम्मेवारी बाप द्वारा मिली हुई है। इसलिए माताओं, कन्याओं से बापदादा का बहुत प्यार है। ऐसे कहते बापदादा ने एक ताली बजाई तो क्या देखा आप सब मातायें खुशी में नाचते-नाचते वतन में पहुँच गई। साथ में टीचर्स भी इमर्ज हो गई। और सभी संगठन में जैसे हमारे झाड़ के चित्र में शक्तियों का चित्र है और मम्मा आगे झण्डा लेकर खड़ी है ऐसे सारा संगठन एक-दो के पीछे खड़े थे। हर एक के हाथ में छोटा झण्डा था जिसमें लिखा हुआ था हमारा विश्व का बाबा आ गया। आगे दादी जानकी और सर्व दादियाँ, दीदियाँ थी। दादी जानकी बीच में थी और दादी के हाथ में शिव बाबा का किरणों वाला शोभनिक झण्डा था। साथ में अन्य दादियों और बड़ी बहनों के हाथ में भी शिव बाबा का छोटा झण्डा था। सबके झण्डे इतना अच्छे लहरा रहे थे कि लाईट फैल रही थी, वह तो देखने वाली ही सीन थी। बाबा भी हर एक को बहुत मीठी दृष्टि देते बोले, बच्ची अब यही ललकार जोर शोर से विश्व की आत्माओं तक पहुँचाने का कार्य करना है। जो कार्य अब रहा हुआ है वह अब जल्दी-जल्दी सम्पन्न करना ही है। कई आत्मायें दु:ख, अशान्ति की आहों से भटक रही है। आप शिव शक्तियों को इन भटकी हुई आत्माओं को बाप का परिचय दे ठिकाने पर पहुँचाना है। अब इस दिल के संकल्प को मन्सा, वाचा, कर्मणा अर्थात् चेहरे और चलन द्वारा तीव्र गति की आवश्यकता है। बाप जानते है कि सभी बच्चे यथा शक्ति तथा संस्कार प्रमाण सेवा कर रहे है। अब बाप का फरमान है कि समय की समीपता प्रमाण अब सेवा की रफ्तार को तीव्र करने की आवश्यकता है। ड्रामा की भावी और बाप की शुभ आशा यही है कि सेकण्ड-सेकण्ड, श्वांसों-श्वांस याद और सेवा के लगन की आवश्यकता है। अब अनेक कारणों को समाप्त कर निवारण मूर्त बन विश्व की स्टेज पर स्थित हो ज़ीरो और हीरो का पार्ट बजाने का समय है। बोलो, ऐसे दिल का उमंग आता है ना कि अब से आलस्य, अलबेलापन, नाजुक संस्कार को छोड़ शिव शक्ति रूप बन बाप के श्रीमत रूपी हाथ में हाथ दे और सदा साथी बन साथ दे कार्य की रफ्तार को बढ़ाना ही है। बापदादा देश-विदेश के हर बच्चे को सामने देख कह रहे है बच्चे अब सदा हर आत्मा प्रति रहमदिल, कृपालु, दयालु, मास्टर दु:ख हर्ता, सुख कर्ता बन उड़ते रहो और उड़ाते रहो। अपने हर संकल्प, बोल और कर्म की जिम्मेवारी करनकरावनहार बाप को दे दो। बापदादा आपको निमित्त करनहार बनाये आपका वर्तमान और भविष्य सहज और श्रेष्ठ बनाके ही रहेंगे। मैं-पन को छोड़ बाप के हवाले कर दो तो बापदादा का वायदा है सब बच्चों का सर्व बोझ समाप्त कर डबल लाईट बना ही देंगे। बोलो, डबल लाइर्ट बनना पसन्द है ना! दिलाराम की यही आश है कि मेरा एक-एक बच्चा हर ज्ञान के राज़ और शक्तियों के अनुभव के अथॉरिटी की सीट पर सेट हो, बेफिकर बादशाह बनके रहे। बोलो पसन्द है। आज बापदादा विशेष चारों ओर के बच्चों को, मीठी मातायें और निमित्त बनी हुई टीचर्स जो आगे एडवान्स स्टेज पर जानी ही है, सर्व को एक बात का इशारा दे रहे हैं कि आज-कल समय की समीपता प्रमाण भिन्न-भिन्न पेपर्स आयेंगे। लेकिन हर प्रकार के पेपर को अनुभव के अथॉरिटी बन आगे बढ़ने का साधन समझ बाप के सदा साथी और साक्षी दृष्टा की स्थिति से अचल बन आगे बढ़ते चलो। जैसे दुनिया में भी कोई भी पेपर, क्लास व स्टेटस आगे बढ़ाता है तो ऐसे ही पेपर भी आता है। यह पेपर भी सदा के लिए अनुभव की अथारिटी को बढ़ाने वाला है। इस दृष्टि से सहज पास कर आगे बढ़ो। अपोज़ीशन अपने अनुभव के अथॉरिटी के पोज़ीशन की सीट का आधार बनाओ। तो स्वयं भी निराकारी, निर्विघ्न, निर्विकल्प स्थिति का अनुभव करेंगे। साथ-साथ अपने श्रेष्ठ वायब्रेशन द्वारा चारों ओर श्रेष्ठ वायब्रेशन फैलायेंगे। बोलो यह सहज अविनाशी पुण्य जमा करने का कार्य करना है ना! बापदादा के द्वारा भी ऐसे बच्चों पर सदा वरदानों की वर्षा होती रहती है।

उसके बाद बाबा बोले, बच्चों द्वारा बाप के पास राखी का उमंग-उत्साह पहुँच रहा है। बापदादा भी सभी बच्चों को राखी की लाख-लाख गुणा बधाई, याद-प्यार दे रहे है और यही दिल का संकल्प दे रहे है कि हर एक बच्चा दृढ़ संकल्प के धागे की स्व को राखी बांध रक्षा बन्धन मनाये। विश्व रक्षक बन सर्व के आत्माओं को उत्साह की मिठाई खिलाओ। अनुभवी मूर्त बनने का अविनाशी तिलक लगाओ। ऐसे कहते बापदादा ने चारों ओर के बच्चों को अपने नयनों में इमर्ज कर याद-प्यार और वरदान दे विदाई दे दी। ओम् शान्ति।

ओम् शान्ति 03-08-08 मधुबन

टीचर्स के दूसरे ग्रुप और अधरकुमारों की भट्ठी में प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश – दादी गुल्ज़ार

आज बापदादा के पास गई तो सदा के मुआफिक बापदादा सामने दृष्टि देते मुस्कराते मिलन मना रहे थे। यह परमात्म मिलन का अतीन्द्रिय सुख तो हर एक अपने से पूछे। मैं तो स्नेह के लगन में मगन होते सम्मुख पहुँच गई। बाबा बोले, आओ मेरी दिलखुश बेफिक्र बादशाह बच्ची आओ, क्या समाचार लाई हो? मैं बोली, आज तो ब्रह्मा बाप के साथी अधरकुमार बहुत अच्छे आये हुए हैं। साथ में आपके गुरूभाई टीचर्स भी बहुत आई हैं। दोनों ग्रुप्स की याद-प्यार लाई हूँ। बापदादा मुस्कराते, अपने नयनों में सर्व बच्चों को समाते हुए बोले, बच्चों को देख बाप को बहुत खुशी और स्नेह होता है क्योंकि यही लाडले बच्चे तो कोटो में कोई गाये हुए हैं। बापदादा एक-एक बच्चे को याद करते दिल से गुण गाते वाह! मेरे कल्प-कल्प के साथी बच्चे जो साधारण रूप में बाप को पहचान "मेरा बाबा" कहते, वर्से के अधिकारी बन गये। मेरे अधरकुमार बच्चे तो विश्व को विशेष इन महात्माओं, सन्यासियों को भी चैलेन्ज करने वाले हैं कि देखो परमात्म शक्ति की कमाल जो आप कहते हैं असम्भव है, हम कहते यह तो बहुत सहज है। साथ में मेरी सिकीलधी शिवशक्ति सेना भी कम नहीं है। दिल में लगन है कि सबको सन्देश देना है कि हमारा मीठा प्यारा बाबा आ गया। यह पुण्य का कार्य करने वाली गुरू भाई बच्चियाँ भी बापदादा के दिल की दुलारी सो राज अधिकारी बच्चियाँ हैं। आज बापदादा देश-विदेश के सर्व बच्चों को एक विशेष इशारा दे रहे हैं कि समय की समीपता प्रमाण अब एक बात चेक करो कि सर्व शक्तियां, सर्व खजाने, स्थूल साधन सफल हो रहे हैं या व्यर्थ भी जाते हैं? क्योंकि याद रहे कि सफल करना ही सफलता मूर्त बनना है और सफल करने का समय अर्थात् जमा करने का समय सिर्फ सारे कल्प में अब संगमयुग है, जो एक जन्म में सफल करने का बीज अनेक जन्म फल देने के निमित्त बनता है। यह तो जानते हो कि जैसे अब अपना बहुत समय सफल करते हो तो भविष्य प्राप्ति में भी फुल समय अर्थात् बहुत काल राज अधिकारी बनते हो, श्वांस सफल करते हो तो सदा स्वस्थ रहते हो, दु:ख दर्द का नाम निशान नहीं, ऐसे सब सफल करो तो हर कार्य में सहज सफलता मूर्त का अनुभव करेंगे। वैसे तो सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है लेकिन अब नहीं तो कब नहीं। सफल करना ही डबल लाईट बेफिक्र बादशाह बनाने वाला है। इसलिए सदा चेक करो - आध्यात्मिक खज़ाने, समय, संकल्प, श्वांस और ज्ञान, शक्ति और गुणों का खज़ाना सफल हो रहा है? स्थूल खजाने तन, मन, धन, पदार्थ व्यर्थ तो नहीं रह जायेगा? सब बच्चे कहते हैं बापदादा से अपार स्नेह है तो ब्रह्मा बाप को फालो करना अर्थात् सफल कर सफलता पाना, श्रेष्ठ तरफ लगाना। जैसे ब्रह्मा बाप ने खुशी-खुशी अविनाशी निश्चय और नशे के आधार पर, निश्चित भावी के ज्ञाता बन सफल कर सफलता पाई। ऐसे हद के मैं और मेरे की वृत्ति को विन कर बाप समान वन नम्बर बनना ही है। जैसे रोशनी से अंधकार स्वत: ही खत्म हो जाता, मेहनत नहीं करनी पड़ती क्योंकि निकालने की मेहनत नहीं करनी पड़ती। समय और मेहनत बच जाते हैं। ऐसे सफल करने से सफलता स्वत: ही मिल जाती है।

इसके बाद बाबा ने सर्व अधरकुमारों को विशेष याद-प्यार और वरदान दिया – सदा सन्तुष्ट आत्मा बन सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना, यह बच्चों का लक्ष्य और लक्षण है। उसके बाद सर्व कुमारियों को याद करते बाबा बोले, यह बच्चियां तो अब स्व परिवर्तन के दृढ़ संकल्प को प्रत्यक्ष करने वाली, बाप के दिल की दुलारी और विश्व के मास्टर दु:ख हर्ता सुख कर्ता बन शक्ति और परमात्म स्नेह की किरणें देने वाली मास्टर ज्ञान सूर्य हैं। बाप का हर बच्चे के प्रति पदमगुणा याद-प्यार और वरदान है। ऐसे कहते फिर बापदादा ने जानकी दादी और सर्व दादियों को, दीदियों को और सर्व मधुबन निवासियों को भी बहुत-बहुत स्नेह सम्पन्न याद-प्यार दिया। दादी जानकी की तबियत का भी समाचार पूछा। सुनकर बाबा बोले, कि बच्ची में सहन शक्ति अच्छी है और सबको रिफ्रेश करने का उमंग-उत्साह है इसलिए स्वयं उमंग-उत्साह में रहते दोनों तरफ की जिम्मेवारी भी अच्छी निभा रही है इसलिए बापदादा की तरफ से पदम-पदम गुणा याद-प्यार और वरदान देना। ऐसे मिलन मनाते हमें साकार वतन में भेज दिया। ओम शान्ति्।

09-08-2008

समर्पित भाईयों की भट्ठी में प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश – – गुल्जार दादी

आज बापदादा के पास सरेन्डर भाईयों की यादप्यार लेकर पहुंची तो बापदादा सदा के सदृश्य सामने खड़े हुए मीठी मुस्कान भरी दृष्टि देते मिलन मना रहे थे। मैं भी उस दृष्टि में समाते हुए सम्मुख पहुंच गई और बाबा ने बांहों की माला में समा दिया। यह अमूल्य विचित्र माला तो बात मत पूछो, कितना अतीन्द्रिय सुख देती है। कुछ समय के बाद बाबा बोले, मेरे दिल की दुलारी बच्ची आज किसकी याद लाई हो? मैं बोली बाबा आज तो आप के सेवास्थान पर रहने वाले सरेन्डर भाईयों की यादप्यार लाई हूँ। बाबा बोले, यह ग्रुप तो शिव शक्तियां बहिनों के साथ सेवाधारी साथी और साक्षी बन जिम्मेवारी निभाने वाले पाण्डव हैं। ब्रह्मा बाप को फालो करने वाले हैं। तो जो ब्रह्मा बाप का आदि से अन्त तक लक्ष्य रहा- निराकारी, निरंहकारी, निर्विकारी अर्थात् संकल्प स्वप्न में भी सम्पूर्ण पवित्र स्वरूप। ऐसे हर एक सरेन्डर बच्चा भी इतना स्व रक्षक सो विश्व रक्षक के निर्विघ्न, निर्विकल्प स्वरूप में रहते हैं ना! बापदादा को तो ऐसे समान साथी बच्चों को देख नाज़ रहता है कि वाह! बाप समान बनने वाले बच्चे वाह!

बापदादा यही सभी बच्चों प्रति शुभ आशा रखते हैं कि सदा यह ध्यान अवश्य रहे कि जो कर्म हम करेंगे हमें देख सर्व स्टूडेन्टस में और चारों ओर वायब्रेशन फैलता है, सबमें उमंग-उत्साह आता है कि हम भी ऐसे आगे उड़ें। इसलिए आप निमित्त आत्मायें ऐसे नहीं समझों कि हम सेन्टर पर बैठे हैं लेकिन विश्व की स्टेज पर निमित्त हीरो और ज़ीरो का पार्ट बजा रहे हैं। तो बोलो, इतना अटेन्शन रहता है? सरेन्डर बच्चे जिस भी सेन्टर पर निमित्त हैं, उस बाप के स्थान के वायुमण्डल को ऐसे बनाना है, जैसे मधुबन के वायुमण्डल में आते लोग अनुभव करते हैं कि परमात्म शक्ति और आत्मिक स्नेह की शक्ति है। ऐसे सेवा स्थान से भी परमात्म शक्ति, आत्मिक प्रभाव का अनुभव हो। उसके लिए सिर्फ बहिनें निमित्त नहीं हैं लेकिन आप पाण्डव भी निमित्त हैं। बापदादा ने होमवर्क भी दिया है कि सबको नम्बरवन निर्विघ्न, निर-विकल्प आत्मिक स्नेही, सहयोगी बनने का सर्टीफिकेट लेना है। ऐसे लक्ष्य रख एक दो से आगे उड़ती कला वाला डबल लाइट बन दिखाना है। बोलो, उम्मींदवार हो वा करना ही है, बनना ही है, ऐसे सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि, निश्चित हो? बोलो, बापदादा के वरदान को अनुभव कर रहे हो ना। ऐसे कहते क्या देखा कि बापदादा जैसे वतन में सामने होते भी कहाँ और हैं। कुछ समय बाद मैंने पूछा, बाबा आप कहाँ चले गये? तो बाबा बोले बच्ची मैं अपने बच्चों के पास चक्कर लगाकर आया हूँ। सबको दृष्टि दे आया हूँ क्योंकि बाप यही चाहते हैं कि हर ग्रुप कुछ कमाल कर दिखायेंगे। मैं बोली बाबा आपका चक्कर लगाना, यह भी इस गुप का भाग्य है, तो अवश्य यह ग्रुप चक्रवर्ती बन श्रेष्ठ स्थिति की सीट पर सेट हो बाप समान बनने का प्रत्यक्ष सबूत दिखाए सपूत बच्चों का स्वरूप दिखायेंगे।

बापदादा बहुत मीठा मुस्करा रहे थे। ऐसे लगा जैसे एक एक बच्चा बाबा के नयनों का नूर बन नयनों में समाये हुए हैं। बापदादा ने मुस्कराते बोला, देखो, दोनों ग्रुप सर्विसएबुल ग्रुप हैं। टीचर्स भी उमंग-उत्साह और हिम्मत के पंखों द्वारा उड़कर उड़ाने के निमित्त बनने वाली बाप की आज्ञाकारी वफादार निमित्त बच्चियाँ बाप के दिलतख्तनशीन सो विश्व राज्य अधिकारी हैं। हर एक पाण्डव को भी यही वरदान है कि हर्षितमुख, प्रसन्नचित मूर्त बन सर्व को प्रसन्न चित्त बनाने वाले हैं, बाप से मुक्ति का वर्सा दिलाने वाले हैं। इस ग्रुप में तो विशेष मधुबन वासी समर्पित भाई भी साथ में हैं, अच्छा किया एक दो को उमंग-उत्साह दिलाते उड़ते उड़ाते रहो, सदा यह तो याद रहता ही है कि बापदादा की श्रीमत पर चलने वाली सदा हर्षितमुख रहने वाली आत्मायें, अन्य आत्माओं को भी खुशी की अनुभूति कराने वाली खुशनसीब, खुशनुमा आत्मायें हैं। ऐसे कहते बापदादा ने सबको बहुत-बहुत याद दी और मुझे साकार वतन में भेज दिया। अच्छा - ओम शान्ति्।

मधुबन 20-08-08 ओम शान्ति्

"मुख्य भाईयों की भट्ठी में प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश" – दादी गुल्जार

आज बापदादा के पास आप सब उदाहरण मूर्त एवररेडी ग्रुप की यादप्यार लेते हुए वतन में पहुंची तो क्या देखा कि बापदादा सामने खड़े थे। बापदादा की दृष्टि ऐसे थी जो दूर से जैसे चुम्बक अपनी तरफ खैंच लेता है, ऐसे ही मैं अनुभव कर रही थी कि मैं स्वयं नहीं चल रही हूँ लेकिन कोई खींच कर अपनी तरफ ले जा रहा है। सेकण्ड में ही अपने को बाबा के सम्मुख अनुभव करने लगी। बाबा ने अपनी बांहों के स्नेह की माला में समा लिया और मधुर बोल बोले, बच्ची अब समय अनुसार हर एक बच्चे को ऐसे शक्तियों का चुम्बक बनना है जो कमजोर आत्मायें आपकी शक्तियों के आधार से बाप के सम्मुख पहुंच जायें, मुक्ति के वर्से के अधिकारी बन जायें क्योंकि दिन प्रतिदिन आत्मायें अनेक परेशानियों के कारण निर्बल बन रही हैं, बेसहारे बन गई हैं, ऐसे बेसहारे वालों का सहारा आप ही हो। अब वर्तमान समय तो आप पूज्य आत्माओं की ही पूजा ज्यादा हो रही है। तो क्या आप उदाहरण मूर्त बच्चों को भक्तों की, समय के पुकार की आवाज सुनाई देती है? क्या रहमदिल आत्मायें रहम आता है? ऐसे कहते बापदादा ऐसे डीप साइलेन्स के अनुभव में ले गये जो बहुत शक्तिशाली और स्नेह युक्त था। मैं भी उस प्रभावशाली स्वरूप में खो गई। फिर बाबा ने पूछा, बच्ची आज क्या समाचार लाई हो? मैं बोली आज तो आपके एवररेडी, उदाहरण मूर्त ग्रुप की यादप्यार लाई हूँ। तो बाबा ने कहा कि भट्ठी का नाम तो बहुत अच्छा रखा है। यह सभी अति होली बच्चे अपने को विश्व के आगे उदाहरण रूप में अनुभव करते हैं ना! बापदादा ऐसा कहते मीठा मुस्कराये और बोले, बापदादा भी इस ग्रुप को डबल जिम्मेवारी के ताजधारी ग्रुप समझते हैं – यज्ञ रक्षक और विश्व रक्षक। अब हर एक अपने से पूछे चाहे यज्ञ वा सेन्टर पर रहते वा परिवार में प्रवृत्ति में रहते लेकिन सदा यज्ञ और विश्व दोनों सेवा याद रहती हैं? बापदादा भी जानते हैं बच्चे होशियार हैं, जानते हैं कि भोलेनाथ को राज़ी करने की युक्ति क्या है? सच्ची दिल, साफ दिल, निमित्त भाव। तो अवश्य आशाओं के दीपक बन बाप की आशाओं को पूर्ण करेंगे।

बापदादा अब यही चाहते हैं कि एक एक बच्चा सदा जो बाप का संकल्प वह मेरा संकल्प, जो बाप का बोल वह मेरा बोल, जो बाप का कर्म वही मेरा कर्म, इस दृढ़ संकल्प को स्वरूप में लावे। वायदे का फाइल बड़ा न कर फाइनल कर दिखावे। जब प्रकृति को परिवर्तन करने का संकल्प कर रहे हैं, तो क्या अपने को, साथियों को परिवर्तन के साथी नहीं बना सकते। ओ मेरी निमित्त महान आत्मायें अब संस्कार परिवर्तन की कमाल करके दिखाओ। क्या संसार परिवर्तन के नज़ारे मन में, नयनों में दिखाई नहीं देते! अब अपने में फरिश्ता रूप की प्रत्यक्षता करके दिखाओ। कारण नहीं निवारण स्वरूप प्रत्यक्ष करो। ऐसे मीठे बोल बोलते बापदादा ने जानकी दादी को और सर्व दादियों, दीदियों को इमर्ज किया और बोले सब मिलकर कमाल दिखाने वाले हैं। दिल में सबके उमंग है कि करना ही है। बापदादा भी सदा साथी हैं।

उसके बाद बाबा ने सारे ग्रुप को अपनी दृष्टि से इमर्ज किया। सब बड़े स्नेह से वतन में पहुंच गये। बापदादा से मिलन मनाते, दृष्टि में समाते सब बहुत हर्षित हो रहे थे। उसके बाद बाबा बोले, अच्छा चलो तो बाबा आज सैर कराते हैं। तो सभी होलीहंस बाबा के साथ चलते रहे, आगे बढ़े तो एक हाल था जिसमें सर्किल में अलग-अलग सफेद चबूतरे बने हुए थे, बाबा बोले सब बैठ जाओ। सब बैठ गये। बीच में बाबा भी बैठे। तो बाबा ने एक ताली बजाई तो क्या देखा कि सबके माथे पर लाइट के ताज चमकने लगे। दूसरी ताली बजाई तो हर एक की भ्रकुटी में ज्योति बिन्दु का तिलक चमकने लगा, तीसरी ताली बजाई तो हर एक देवता रूप में बदल गये। बापदादा सबको दृष्टि दे रहे थे और बोले, मीठे बच्चे सदा यह स्मृति रहे कि मैं श्रेष्ठ आत्मा सदा लाइट के ताजधारी, लाइट स्वरूप ब्राह्मण सो देवता आत्मा हूँ। बाप समान स्वमानधारी आत्मा हूँ। उसके बाद बाबा ने चौथी ताली बजाई तो हर एक की अंगुली में अष्ट रत्न की रिंग पड़ गई। बाबा बोले, यह अष्ट शक्ति स्वरूप सदा याद रहे। ऐसे ही बापदादा ने हर एक को मीठी दृष्टि दी और सब दृष्टि लेते वतन से मर्ज हो साकार वतन पहुंच गये। मुझे भी बाबा ने दृष्टि से साकार वतन में भेज दिया। अच्छा - ओम शान्ति्।

मधुबन 25-08-08 ओम शान्ति्

परम प्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा वा मीठी दादी की अलौकिक पालना में पले हुए सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,
ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न हार्दिक मधुर यादप्यार स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - हम सबकी अति प्यारी जगत-जननी, मीठी दादी जी का पहला पुण्य स्मृति दिवस आज आप सभी ने बहुत स्नेह और श्रद्धा के साथ उनकी दिव्य स्मृतियों को याद करते हुए मनाया होगा। शान्तिवन की रौनक तो विशेष अलौकिक होती ही है। दादी जी की स्मृति में बने हुए ''प्रकाश स्तम्भ'' को प्रकाश और मणि के अद्भुत मिलन के साथ बहुत सुन्दर वैरायटी फूल मालाओं से सजाया गया था, दादी जी ने जो अपनी अलौकिक पालना से विश्व की आत्माओं में अपने स्नेह और शक्ति की छाप डाली है, विश्व के अंधकार को दूर कर प्रकाश फैलाया है। देश और विदेश के हजारों भाई बहिनें आज के दिन दादी जी को बड़े प्यार से याद कर रहे हैं और बड़े सुन्दर भाव भरे शब्दों से ईमेल अथवा फोन द्वारा याद भेज रहे हैं। साथ-साथ बड़े भाईयों की और युगलों की भट्ठी होने कारण चारों ओर के महारथी भाई बहिनें तथा लगभग 8 हजार प्रवृत्ति के भाई बहिनों का ग्रुप शान्तिवन में है। ऐसे लग रहा है जैसे बाबा की सीजन में ग्रुप आते हैं तो कितनी रौनक हो जाती है। चारों ओर सफेद-सफेद फरिश्ते मौन व्रत लिये हुए पूरे शान्तिवन में विचरण करते दिखाई दे रहे हैं। भट्ठी की आकर्षण, तपस्या की सुगन्ध और दादी जी की यादों का अलौकिक संगम बहुत सुखद अनुभूतियां करा रहा है। बोलो, आप सब भी दूर बैठे सारा दृश्य अपने दिव्य बुद्धि के नेत्रों से देख वा अनुभव कर रहे हो ना। मुरली क्लास में दादी जानकी जी ने दादी की अनेकानेक विशेषतायें सुनाते हुए सभी के दिलों में दादी जी की स्मृतियां साकार कर दी। कैसे दादी रामा से, कुमारका बनी, साकार बाबा बहुत प्यार से कुमारका कहकर याद करते, कुमारका माना सम्पूर्ण पवित्र कुमारी। इतनी सब कुमारियों में दादी नम्बरवन पवित्र कुमारी बनकर रही, उनके पवित्रता की किरणें सरे विश्व में ऐसी फैली जो दादी प्रकाश की मणि बन ''प्रकाशमणि'' के नाम से विश्व विख्यात हो गई। सारे विश्व की आत्माओं के दिल में दादी जी की ऐसी छाप है, जो सभी बहुत प्यार से हमारी दादी कहकरके याद करते हैं। बाबा ने तो सब कुछ करके अपने आपको छिपाया लेकिन दादी ने बाबा को छिपने नहीं दिया, विश्व में प्रसिद्ध किया। ऐसी हमारी मीठी दादी का आज स्मृति दिवस है। तो इन्हीं स्मृतियों को संजोये हुए सभी भाई बहिनें प्रकाश स्तम्भ पर पहुंचे और साइलेन्स के बाद, दादी के स्नेह में मधुर वाणी ग्रुप ने बहुत अच्छा गीत प्रस्तुत किया और दादियों वा मुख्य भाई बहिनों ने दीप प्रज्वलित करके ''प्रकाश स्तम्भ'' का लोकार्पण किया। इलाहाबाद से पधारी मनोरमा बहन आंखों देखा दृश्य दादी जी की अनेक विशेषताओं के साथ कामेन्ट्री रूप में प्रस्तुत कर रही थी। दीप प्रज्वलन के पश्चात सभी ने पुष्प हार अर्पित किये। 8 बजे से 11 बजे तक सभी भाई बहिनें प्रकाश स्तम्भ पर लम्बी कतार में आते अपने स्नेह सुमन अर्पित करते रहे। प्रकाश स्तम्भ के पास बगीचे में वृक्षारोपण का कार्यक्रम भी चला और दादी जी के कमरे में भी सभी भाई बहिनें नम्बरवार जाते रहे। उसके पश्चात मोहिनी बहन ने क्लास में दादी जी के अंग संग के अनुभव सुनाये। दादी गुल्जार जी ने प्यारे बापदादा और दादी जी को भोग स्वीकार कराया। दादी जी कुछ मिनटों के लिए सभा में पधारी तथा स्नेह भरी दृष्टि देते हाथ हिलाते सभी से नयन मुलाकात करके वतन में चली गई। उसके बाद गुल्जार दादी ने जो सन्देश सुनाया वह आपके पास भेज रहे हैं। शाम के समय दिल्ली की आशा बहन और लण्डन की जयन्ती बहन ने दादी जी के साथ के अनुभव सुनाये। बाद में सार्वजनिक कार्यक्रम में आबू, सिरोही तथा आसपास के अनेक प्रतिष्ठित भाई बहिनें सम्मिलित हुए। गुजरात विधान सभा के अध्यक्ष भ्राता अशोक भट्ट जी, राजस्थान के श्रम मंत्री भ्राता रामकिशोर मीना जी, राजस्थान महिला आयोग अध्यक्षा श्रीमति तारा भण्डारी और वरिष्ठ भ्राता निर्वैर जी, बृजमोहन जी, रमेश जी, मृत्युजंय भाई तथा दादियों ने, मोहिनी बहन, मुन्नी बहन ने दादी जी के अंग-संग के अनेक अनुभव और उनकी विशेषताओं से सभी को अवगत कराया। बहुत दिव्य कार्यक्रम चला। यह था आज का संक्षिप्त समाचार। अच्छा - सबको बहुत-बहुत याद.. ओम् शान्ति।

दादी जी के निमित्त भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश - दादी गुल्जार

बाबा और दादी के प्रति आप सबकी विशेष यादप्यार लेकर मैं जब वतन में पहुंची, तो आज क्या देखा? कि हमारी दादी और कुछ एडवांस पार्टी वाले जो विशेष रत्न गये हैं, दादियाँ और कुछ मुख्य भाई 14-15 का ग्रुप था, तो मैं जैसे पहुंची तो सामने वही थे, बाबा नहीं था। तो दादी ने कहा आज एडवांस पार्टी का दिन है ना, इसीलिए एडवांस पार्टी आपका स्वागत कर रही है। तो मैं मुस्कराते एक-एक को देखती रही क्योंकि सभी हमारे बचपन के साथी रहे हैं, बहुत समय के बाद साथियों को देखकर प्यार तो आता ही है। तो आज ऐसे लग रहा था जैसे दादी ही वतन की मालिक है। तो दादी ने कहा गुल्जार बहन आज मैं आपको बाबा के पास ले चलूंगी। मैंने कहा दादी बहुत अच्छा, तो दादी हमको बाबा के पास लेकर चली, बाबा जैसे मुरली के बाद अपने कमरे में गद्दी पर बैठते थे, हम सभी बाबा के चारों ओर होमली रूप में बैठ जाते थे, ऐसे बाबा के पास हम और दादी और सभी एडवांस पार्टी वाले जाकर बैठ गये। तो दादी ने बाबा को कहा आज मैं अपनी सखी को ले आई हूँ, आप याद कर रहे थे ना। तो बाबा ने कहा बाबा के पास बच्चों की याद के बिना है ही क्या! बाबा के दिल में तो हर श्वांस, हर सेकण्ड बच्चों की ही याद है। विश्व की याद तो है ही लेकिन पहले बच्चे, क्योंकि बच्चे मेरे साथी बनकर विश्व का परिवर्तन करने के निमित्त हैं। फिर बाबा ने कहा, दादी आज आपके लिए ही यह आई है। हमने कहा दादी आपके प्रति सभी के दिल में कितना प्यार है, वह तो आपको आज विशेष सवेरे से पहुंचता ही होगा! खिंचावट होती होगी! तो दादी ने कहा मैं प्यार को तो भूल ही नहीं सकती, मेरे को सब याद है। मैंने कहा दादी आपने जन्म ले लिया है ना, तो आपको कैसे याद आयेगी! तो दादी ने कहा हमें रोज़ बाबा वतन में इमर्ज करता है, कभी अमृतवेले, कभी थोड़ा पीछे, मैं रोज़ वतन में बाबा से मिलने आती हूँ और एडवांस पार्टी के जो विशेष हैं, उन्हें भी बाबा इमर्ज करता है। बाब की दृष्टि से ही हमें बहुत सकाश मिलती है। उसके बाद मेरी नज़र बाबा की तरफ गई, तो दादी ने बीच में बोला, बाबा आपको बच्चों के प्रति क्या संकल्प है, वह आप मेरे को सुना रहे थे, वह इनको भी सुनाओ। तो बाबा मुस्कराये, बाबा ने कहा दादी का आप लोगों से कितना प्यार है, कहती है कुछ भी इन्हों से मिस न हो, इनको सुनाओ। तो बाबा ने कहा - कि आज दादी और बाबा आपस में रूहरिहान कर रहे थे, दादी ने मेरे से कहा कि बाबा आप इन्हों को यह स्पष्ट सुना दो कि अभी आगे क्या करना है! क्या ऐसी बात है जिस पर विशेष अटेन्शन रखें? तो बाबा ने कहा बच्ची मैंने आपको सुनाया, तो आप ही सुनाओ। तो दादी ने कहा बाबा आप सुनाओ। तो बाबा ने कहा कि बच्चे कोशिश करते हैं, दिल का संकल्प भी दृढ़ करते हैं, लेकिन... यह शब्द बीच में आ जाता है। वह लेकिन क्या है? भोलानाथ को अपना बनाने, भोलानाथ को राज़ी करने का जो साधन है - ''सच्ची दिल और साफ दिल''। इसमें अभी थोड़ा और अपने को बाबा के आगे स्पष्ट करना, कोई भी किचड़ा संस्कार का, स्वभाव का अन्दर नहीं हो। तो भोलानाथ को राज़ी करने की जो विधि है, इस पर थोड़ा और अटेन्शन देना क्योंकि समझदार कभी किचड़े को दिल में नहीं समाते। अगर कोई भी किचड़ा दिल में समाया तो बाबा दूर हो जाता है फिर बच्चों को याद करने की मेहनत करनी पड़ती है। लेकिन बाबा चाहता है कि बच्चे मेहनत से मुक्त हों और ऐसा योग हो जो जब चाहें, जैसी स्थिति चाहें उसमें सेकण्ड में स्थित हो जाएं क्योंकि लास्ट में पास विद आनर होने के लिए सेकण्ड में एकाग्रता का ही अभ्यास चाहिए। अभी बच्चे युद्ध करके एकाग्र होते हैं लेकिन संकल्प किया और एकाग्र हो जाएं और जितना समय चाहे उतना समय एकाग्र हो जाएं, उसकी अभी आवश्यकता है। तो दादी ने कहा मैं भी यही कहती हूँ, सभी का मेरे से प्यार तो है, तो मुझे भी प्यार की निशानी यही देवें, जो कोई भी संस्कार-स्वभाव का किचड़ा, स्वप्न में भी आवे तो उसे दिल में नहीं समायें। राइट रांग समझकर, फैसला करके उसको चेंज करें या समाप्त करें। तो दादी ने कहा बाबा आज मैं यही प्यार की सौगात सभी से लेती हूँ। मैंने कहा दादी सौगात तो देने के लिए सभी तैयार ही हैं, तो कहा बस मेरे को याद करते यही शब्द याद रखना कि बाबा को राज़ी करने के लिए दिल सच्चा, साफ करना ही है, यह है मेरे प्यार की गिफ्ट। मैंने कहा दादी क्या बड़ी बात है! आपको गिफ्ट देने के लिए सभी तैयार हो जायेंगे। तो कहा जब मेरी याद आये तो यही दो शब्द याद आयें - ''सच्चाई और सफाई''। इससे भोलानाथ भी राज़ी रहेगा और दादी भी बलिहार जायेगी। फिर दादी के साथ जो भी एडवांस पार्टी वाले बैठे थे, उसमें दीदी ने कहा हम तो बहुत इंतजार कर रहे हैं, डेट बताओ ना - कब आप सम्पन्न होंगे, जो हमारा कार्य पूरा होगा! तो मैं मुस्करा रही थी, मैंने कहा लक्ष्य तो सभी का है। तो सभी ने कहा कि हमारी तरफ से सभी भाई बहनों को यही कहना कि थोड़ी रफ्तार तेज करें, रफ्तार तेज करेंगे तो हमारा इन्तजार पूरा हो जायेगा। फिर दादी ने कहा कि मेरे को सब याद करते हैं, यह तो मैं भी देखती हूँ लेकिन याद करते हुए दादी जैसा नहीं बनना है, बाबा जैसा बनना है। तो मैंने कहा बाबा के बिना तो गति ही नहीं है। बाबा के बिना तो चल ही नहीं सकते हैं। तो दादी ने कहा कि मेरे तरफ से यह भी सभी को कहना कि जब मुझे याद करते हो तो बाबा के साथ मुझे याद करो। अकेला मुझे याद नहीं करो। मैं सदैव अपने को बाबा के साथ देखती हूँ तो आपको जब भी मेरी याद आवे तो बाबा के साथ याद करने से आपको डबल ताकत मिलेगी, एक तो मेरे प्यार का रिटर्न भी मिलेगा और बाबा से तो प्राप्तियाँ होंगी ही। फिर बाबा ने कहा दादी आज सभी आपको याद कर रहे हैं, मैंने कहा सभी ने कहा है कि एक सेकण्ड के लिए भी दादी सबसे मिलने आवे। बाबा ने कहा जाना है, तो दादी ने कहा जी हजूर, तो दादी आई और कहा मैंने सभी को देखा, सभी से मिली और मुझे एक बात बहुत अच्छी लगी, जो आजकल युगलों की भट्ठी चल रही है। तो दादी ने कहा मुझे सारी हिस्ट्री याद आई, पहले तो बाबा ने हम सबकी बहुत अच्छी पालना की, उसके बाद

आदि रत्न सेवाकेन्द्र खोलने के निमित्त बने। फिर जैसे सेवा शुरू हुई तो सेवा की वृद्धि वा विस्तार जो हुआ, वह हुआ प्रवृत्ति में रहने वाले पर-वृत्ति, ट्रस्टी होकर रहने वालों से क्योंकि पहले लोगों को डर लगता था - कि ब्रह्माकुमारियों के पास जायेंगे तो शायद घरबार छोड़ना पड़ेगा लेकिन जब से प्रवृत्ति वाले आये तो उन्होंने देखा कि प्रवृत्ति में रहते भी लक्ष्य अनुसार चल सकते हैं। दादी ने पहले वाले युगलों को याद किया, दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, पंजाब, बाम्बे, पूना तरफ जो शुरू में सेवायें हुई, तो दादी ने कहा मैं हिस्ट्री देख रही थी कि कैसे दूसरा ग्रुप प्रवृत्ति वालों का सेवा के निमित्त बना। फिर तीसरे ग्रुप में सेवा का विस्तार करने वाले भी बहुत अच्छे-अच्छे बच्चे निकले। तो दादी ने कहा जब मैं वतन में आती हूँ तो बाबा कभी कौन सी लिस्ट सामने रख देता है, कभी कौन सी और कहता है बच्ची इसमें और भी नाम एड करो। फिर बाबा ने कहा मैं एक-एक ग्रुप को मुबारक देता हूँ। दादी ने कहा मैं तो पदमगुणा मुबारक देती हूँ जो निमित्त बनकर दिखाया। फिर जो कुमारियां सेन्टर सम्भालने, वृद्धि करने के निमित्त बनी उनको भी दादी ने याद किया, फिर डबल विदेशी बच्चों को भी याद करते कहा कि सभी ग्रुप बाबा के सामने आते हैं और बाबा मुझे वह सारी लिस्ट दिखाता है, और चौथा ग्रुप जो विशेष सेवा साथी बनें, हर एक ग्रुप की अपनी विशेषता है। फिर मैंने दादी से पूछा, दादी आपको बाबा सेवा में कैसे भेजता है? तो दादी ने कहा मुझे बाबा मैजारिटी रोज़ वतन में इमर्ज करता है और वहाँ से सेवा कराता है। जन्म के रूप से नहीं। लेकिन वतन में इमर्ज करके कभी बाबा साथ ले जाता है, कभी किरणें कैसे दो, वह अनुभव कराता है। फिर बाबा ने कहा कि आज जो मैंने इशारा दिया - सच्चाई और सफाई का, इस बात को विशेष अण्डरलाइन करना तो जल्दी-जल्दी समाप्ति का समय सामने आयेगा। और दादी, दीदी, चन्द्रमणि दादी वा जो भी एडवांस पार्टी के थे, सबने कहा हमारी तरफ से यही कहना - कि हे एडवांस स्टेज वाले मेरे भाई बहिनें अभी इन्तजाम करो, इन्तजार ज्यादा नहीं कराओ। फिर बाबा ने कहा आप जाकर सभी को यह मेरा सन्देश देना। ऐसे कहते बाबा ने बहुत स्नेह से नयनों में समाते मुझे साकार वतन में भेज दिया। अच्छा। ओम् शान्ति।

मधुबन 14-10-08 ओम शान्ति्

"प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश - मीटिंग प्रति (दादी गुल्जार)"

आज अमृतवेले आप सबका यादप्यार लेते हुए वतन में पहुंची तो सदा के मुआफिक सामने से बापदादा मधुर मुस्कान के साथ दृष्टि दे रहे थे। मैं भी अलौकिक दृष्टि में समाते हुए सम्मुख पहुंच गई और अलौकिक बांहों के हार में समा गई। कुछ समय के बाद बाबा बोले, आओ मेरी विश्व कल्याणकारी, विश्व परिवर्तक बच्ची आज क्या समाचार लाई हो? मैं बोली, बाबा आजकल तो देश विदेश के आपके बच्चे मिलकर चारों ओर के ब्राह्मण आत्माओं को अपनी ईश्वरीय पालना द्वारा परिपक्व स्थिति बनाने के प्लैन पर रूहरिहान कर रहे हैं। बाबा बोले, बच्चों ने बहुत प्यार से मेहनत की है और संगठन को देख बापदादा भी बहुत खुश है क्योंकि अब तो समय की समाप्ति के नज़ारे भी नजदीक आते जा रहे हैं, इसलिए प्रकृति भी अपनी तमोप्रधानता के नज़ारे दिखा रही है। अचानक के नज़ारे भी देख ही रहे हो, इसमें प्रकृति भी साथ दे रही है क्योंकि आप बच्चे तो बाप का सन्देश दे ही रहे हो लेकिन प्रकृति द्वारा भी अचानक नज़ारे देख आत्माओं में हद की वैराग्य वृत्ति आयेगी और भौतिकता की तरफ से बुद्धि हट आध्यात्मिकता की तरफ बुद्धि जायेगी। उससे जिन आत्माओं के भाग्य में है वह थोड़ा बहुत मुक्ति-जीवन मुक्ति का वर्सा ले ही लेंगे। इसलिए अब यह तो रिहर्सल हो रही है रीयल समय के लिए। बापदादा भी बच्चों को समय प्रति समय अटेन्शन खिंचवा ही रहे हैं कि अब समय की तेज रफ्तार को देख स्वयं को चेक करो कि समर्थ बन व्यर्थ को कहाँ तक समाप्त किया है क्योंकि इस संगम का एक एक सेकण्ड, सेकण्ड नहीं अमूल्य समय है, हीरे समान है। इसलिए एक सेकण्ड भी व्यर्थ न जाए, समर्थ हो, सफल हो। ड्रामा को भी तुम बच्चे जानते हो कि इस ड्रामा में भी पुरुषार्थ कम और प्राप्ति ज्यादा का राज.रखा हुआ है इसलिए पुरुषार्थ का समय सिर्फ यह छोटा सा एक जन्म है और प्रालब्ध 21 जन्म बहुतकाल है, तो इस भाग्यशाली ब्राह्मण जन्म का कितना महत्व है, इस महत्व को सदा स्मृति में रखो तो पुरुषार्थ में सदा सहज सफलतामूर्त बन ही जायेंगे। बापदादा तो आप हर एक को बाप के कार्य के साथियों को देख वाह बच्चे वाह के गीत गाते रहते हैं। तो यह भी याद रहे कि हम निमित्त बने हुए बाप के साथी बच्चों को सिर्फ अपने लिए पुरुषार्थ नहीं करना है लेकिन हमारे ऊपर विश्व की आत्माओं को परिवर्तन करने की भी जिम्मेवारी है। इसलिए आप बच्चों का टाइटिल ही है विश्व कल्याणी, विश्व परिवर्तक। तो समय प्रमाण अब समय नाजुक आ रहा है तो अब उन दु:खी अशान्त आत्माओं के प्रति भी मास्टर दु:ख हर्ता, सुख कर्ता बनना ही है। इसलिए स्व में सम्पन्नता और सम्पूर्णता की स्थिति को लाना ही है। अब फिर भी अपने प्रति अशरीरी बनने के अभ्यास को बढ़ाने का समय है, जितना करना चाहो वह कर सकते हो। बहुतकाल के अभ्यास में समय, संकल्प को सफल कर सफलता मूर्त बन सकते हो। अब मन्सा वृत्ति द्वारा वायुमण्डल बनाने के सेवा की आवश्यकता है, तो हर समस्या समाधान रूप में परिवर्तन सहज हो जायेगी। उसके बाद बाबा बोले, बच्चे आपस में एक दो को स्नेह सहयोग देने के लिए प्लैन तो अच्छे बना रहे हैं, बापदादा भी बच्चों के संगठन में चक्कर लगाते रहते हैं और बच्चों को देख खुश होते रहते, ऐसे कहते बापदादा बच्चों के स्नेह में ऐसे लवलीन हो गये जो वह दृश्य भी देखने वाला था। फिर उसके बाद बाबा बोले, बच्चों ने संगठन अच्छा किया है। जैसे पाण्डव गवर्मेन्ट की राजयोगी सभा लग रही है, तो इन सबके लिए आप यादगार सौगात क्या ले जायेंगी? वतन में तो सब एवररेडी ही रहता है। बाबा ने ताली बजाई तो सौगातें हाजिर हो गई। मैं देखती रही, देखा तो क्या था! सोने के गुलाब के फूल की मालायें थी और एक

एक गुलाब के बीच एक लाल बिन्दी हीरे की थी। बाबा बोले, यह माला एक एक बच्चे को देना, साथ में पदमगुणा दिल की दुआयें और स्नेह भरी यादप्यार देना। ऐसे यादप्यार लेते मैं साकार वतन में आ गई। ओम शान्ति्।

मधुबन 25-8-13 ओम शान्ति्

प्राणेश्वर प्यारे अव्यक्त बापदादा और दादियों के अति स्नेही सर्व निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आज हम सबकी अति प्यारी, मीठी मीठी दादी प्रकाशमणि जी का छठा स्मृति दिवस है। दादी जी की अलौकिक पालना बाबा के अधिकतर बच्चों ने साकार में ली है। आज के दिन उनकी मीठी मुस्कराती सूरत, रूहानियत से सम्पन्न मूर्त सबके सामने आ जाती है। मुरली क्लास में दादी जानकी जी ने दादी की विशेषतायें सुनाते हुए बहुत अच्छी प्रेरणायें दी। मुरली के बाद सभी मुख्य दादियाँ, बड़ी बहिनें और बड़े भाईयों ने प्रकाश-स्तम्भ पर जाकर अपने स्नेह सुमन अर्पित किये। फिर भट्ठी के निमित्त आये हुए भाई बहिनें नम्बरवार प्रकाश स्तम्भ की परिक्रमा देते आगे बढ़ते रहे। (10 हजार भाई बहिनें युगलों की भट्ठी में आये हुए है) कुछ मुख्य भाई बहिनें दादी जी के कमरे में गये, जहाँ थोड़े शब्दों में दादी जी द्वारा आज के दिन प्राप्त प्रेरणायें कुछ दादियों वा बड़े भाईयों ने सुनाई। दादी गुल्जार ने कहा कि आज दादी प्रेरणा दे रही है कि सभी सन्तुष्ट रहना और सबको सन्तुष्ट करना। दादी जानकी जी ने कहा कि दादी ने जैसे सबको एकता के सूत्र में बांधा, इतने बड़े संगठन को एकमत बनाया और सबको स्नेह की पालना दी, अब हम सबको उसका रिटर्न करना है। दादी रतनमोहिनी जी, मोहिनी बहन, मुन्नी बहन तथा बड़े भाईयों ने भी अपने-अपने अनुभव व्यक्त किये। फिर दादी जी के अंग संग के अनुभव क्लास में निर्वैर भाई जी ने सुनाये। फिर गुल्जार दादी ने दादी जी के निमित्त बापदादा को भोग स्वीकार कराया। दादी जी कुछ समय के लिए सभी से मिलन मुलाकात करने के लिए सभा के बीच में पधारी और बहुत प्यार से खड़े होकर पूरी सभा को स्नेह भरी दृष्टि दी। बाद में अपने मधुर महावाक्य उच्चारण करते हुए कहा कि-

अभी आप सभी के मन्सा सेवा की आवश्यकता है। मन्सा सेवा हर एक कर सकता है। चाहे बीमार हो, चाहे कोई भी कारण हो लेकिन मन्सा सेवा से जो वायुमण्डल बहुत गंदा हो रहा है, चारों ओर गंद ही गंद है, उसको मिटाने के लिए वाचा सेवा तो करते हो लेकिन अभी मन्सा सेवा से आत्माओं की मन्सा को चेंज करो। भाषण सुनते हैं, उसका भी प्रभाव पड़ता है लेकिन स्वयं मन्सा सेवा द्वारा परिवर्तन हो जाये। जो इतनी गंदगी अति में जा रही है क्योंकि अति में तो इसीलिए जा रही है क्योंकि अति के बाद अन्त तो होना ही है लेकिन आप सिर्फ भाषण से नहीं मन्सा सेवा से भी मन्सा को परिवर्तन करो क्योंकि अभी मन्सा सभी की गंदगी की होती जा रही है।

मन्सा सेवा के लिए सहज विधि क्या हो?

खुद को पहले मैं शक्तिशाली आत्मा हूँ, मन में यह अनुभव करो। बापदादा से मन का कनेक्शन जोड़ो और बापदादा से मन के कनेक्शन से सर्व शक्तियां अपने मन में धारण करो। आप लोगों की खुद की मन्सा भले विपरीत नहीं है, लेकिन फालतू है। फालतू टाइम, फालतू संकल्प, फालतू बोल यह चलता है, वह फालतू अभी खत्म होना चाहिए। आपका पहले खत्म होगा तो वायब्रेशन फैलेगा।

एडवांस पार्टी का अभी क्या रोल है भविष्य में क्या होगा .....?

हम सभी पहले अमृतवेले मैजारिटी बाबा के पास मिलने जाते हैं, और बाबा हम सबको क्योंकि विशेष आत्मायें हैं, जो भी सब विशेष आत्मायें सर्विसएबुल हैं, उन सभी को सम्मुख में योग तपस्या नहीं, मन्सा सेवा की ड्रिल सिखाता है। चाहे हमारा जन्म हो गया है लेकिन हम संगम के समय से और संगम के शरीर से वहाँ इमर्ज होते हैं इसीलिए हम लोगों को बाबा मन्सा सेवा का वायब्रेशन फैलाओ, देश-विदेश का चक्र लगवाते हैं। कभी कहाँ का, कभी कहाँ का, मन्सा सेवा का अभ्यास कराके, विश्व की सेवा कराते हैं। कभी इन्डिया, कभी विदेश दोनों तरफ मन्सा सेवा का अभ्यास कराते हैं और उन्हों की बुद्धियों को, बुद्धिवान की बुद्धि है बाबा। तो बुद्धिवान बाबा उनकी बुद्धियों को मन्सा द्वारा टच करते हैं। आप कौन है!

दादी आप देश में हो या विदेश में हो?

देश में हैं। देखो, विदेश जो है, वह दूर से कैच करने में होशियार हैं। इन्डिया नहीं है, इन्डिया की मोटी बुद्धि है। (दादी जानकी ने कहा आपने हमें तो विदेश सेवा में भेज दिया) लेकिन इन्डिया वालों को ही निमित्त बनना है, फारेन वाले हैं लेकिन इन्डिया वाले ज्यादा हैं। अभी मन के व्यर्थ संकल्प जो हैं, उसको खत्म करने का अटेन्शन चाहिए क्योंकि देखा यह है कि खराब संकल्प इतना नहीं चलते हैं लेकिन व्यर्थ काफी चलते हैं। जो काम नहीं होगा ना उसके भी चलेंगे। खराब नहीं होंगे लेकिन हैं व्यर्थ इसीलिए मन्सा सेवा से पहले व्यर्थ को खत्म करो। मन को बिजी रखने का अपना-अपना प्लैन बनाओ। जहाँ भी आपका मन जिस सबजेक्ट में लगता हो, उससे मन्सा सेवा करो।

यज्ञ के भविष्य का चित्र कैसा होगा?

यज्ञ में एकानामी और एकनामी, योग का वायब्रेशन ज्यादा चाहिए। और एकॉनामी के ऊपर अभी अटेन्शन चाहिए। बहुत फ्री हो गये हैं, फालतू खर्चे। हमारे होते इतना व्यर्थ खर्चा नहीं था लेकिन अभी दिन-प्रतिदिन व्यर्थ खर्चे बहुत बढ़ रहे हैं, उसके ऊपर अटेन्शन, अटेन्शन,

अटेन्शन। क्योंकि मंहगाई तो बढ़नी ही है, जब महंगाई बढ़नी है तो उसका ध्यान रखना आवश्यक है। यह नहीं चार्ज वाले करते हैं, यह करते, यह करते इसमें नहीं जाओ, मैं क्या करता हूँ!

आपके इस दिवस के निमित्त 150 मेहमान भी आये हैं, उनके लिए विशेष कोई सन्देश?

बापदादा खुश है कि आप सब युगल रूप से पहुंचे हो। अभी मन्सा सेवा बढ़ाना। (नयों के लिए) उन्हों के लिए योग शिविर रखी है ना, उन्हें योग के अनुभव कराओ। ऐसे नहीं योग में बैठे हैं लेकिन अनुभव क्या हुआ। जितना अनुभव होगा, उतना स्वयं ही इन्ट्रेस्ट बढ़ेगा।

अभी यज्ञ को बढ़ाने के लिए क्या करना है?

बहुत आवश्यकता है, बहुत बहुत बहुत आवश्यकता है तो बनाओ। पर जो कहे वह बनाओ, वह नहीं।

दिल्ली गवर्मेन्ट को हम जगाते रहते हैं लेकिन वह जागते नहीं हैं उसके लिए हम क्या करें?

योग शिविर के ऊपर अट्रैक्शन करो। योग में अनुभव होना सम्भव है, इसीलिए जितना योग से अनुभव करेंगे, सिर्फ बैठे नहीं लेकिन अनुभव कैसे करें ऐसी कामेन्ट्री बनाके हल्की, ज्यादा भारी भी नहीं, सिम्पुल बनाके कामेन्ट्री करो और अनुभव कराओ। जब तक अनुभव नहीं करते हैं तब तक रेग्युलर नहीं बनते हैं। रेग्युलर बनाओ।

विदेश के लिए दादी की क्या प्रेरणा है?

विदेश में सेवा का शौक अभी बढ़ रहा है, सबका यह संकल्प है कि कुछ करना है लेकिन उनको पर्सनल एक एक देश में क्या हो सकता है, क्या कर सकते हैं, देश के वायुमण्डल अनुसार वह थोड़ा अटेन्शन खिचवाओ। जनरल में यह करना है, नहीं। हर एक देश की सरकमस्टांश और हालतें अपनी-अपनी हैं इसलिए जो बड़े देश हैं, उनको सामने रख उनकी प्राब्लम पहले चेक करो, फिर उनको प्रोग्राम दो। जनरल टॉपिक जो रखते हैं, जनरल वह नहीं। कहाँ एकानामी चाहिए, कहाँ खुशी चाहिए, कहाँ वेस्ट को सेफ करना चाहिए, हर एक एरिया को समझकर प्रोग्राम करो।

जैसे बाबा का दस बार आना होता है तो दादी का भी आना जाना हो सकता है?

नहीं। लूज़ नहीं करो। बापदादा और बापदादा द्वारा जो डायरेक्शन मिलते हैं, उसी पर चलो।

सभी खुश रहते हो, हाथ उठाओ। कोई भी बात आवे खुशी नहीं जावे। चलो थोड़ा सीरियस हो जाना, वह भी ठीक नहीं। लेकिन कभी कभी जब हो जाते हैं ना तो कहते हैं कुछ सोच रहा हूँ! लेकिन क्या सोच रहे हैं। जो बातें हुई उनको ही सोच रहे हो या बातों का हल सोच रहे हो? कई बातों को ही सोचते रहते हैं, यह हुआ यह हुआ। लेकिन करें क्या, संगठन को कैसे मजबूत बनायें। कोई हैं जो खुद के लिए सोचते रहते हैं लेकिन संगठन को, क्लास को एक उमंग में उठावें वह कम हैं। दुनिया में अभी बुराईयां बढ़ती जा रही हैं, ऐसे टाइम में आप लोगों को खुशी में रहने की कोई न कोई बातें निकालनी चाहिए। जैसे मानों आप योग शिविर रखते हो, उसमे थोड़े टाइम के लिए शान्ति का अनुभव करते हैं। ऐसे अनुभव कराओ।

संगमयुग 100 साल का, अभी 23 साल उसमें बाकी है, उसके बाद परिवर्तन की रूपरेखा क्या होगी?

यह अति में जाना, यह अति ही अन्त लायेगा। सब तंग हो जायेंगे, क्या हो रहा है, क्या हो रहा है...। हल दिखाई नहीं देगा फिर सोचेंगे कहाँ जायें। कोई सहज साधन चाहिए। सहज साधन ढूढंते आप लोगों के पास आयेंगे और आप लोग मन्सा सेवा का कंगन बांधो। राखी बांधी है ना। तो यह राखी जो है वह मन्सा सेवा का बंधन है।

जयन्ती बहन से:- हर एक बड़े देश जो हैं, वहाँ चक्र लगाके मन्सा सेवा के कोर्स कराके उन्हों में आदत डालके आओ। आप जाओ या कोई भी जाये, लेकिन मन्सा सेवा क्या है, उस पर अटेन्शन दिलाओ। अपने-अपने क्लासेज़ में भी मन्सा सेवा का अभ्यास कराओ। व्यर्थ संकल्प अभी बहुत बढ़ गये हैं क्योंकि मन फ्री है और मन को बिजी रखने का तरीका नहीं आता है, लोग समझते हैं कुछ मिले, कुछ मिले। तो जैसे कामेन्ट्री कराके योग कराते हो, ऐसे यह भी कराओ। उसी रीति से यह अनुभव कराओ। मन बिजी हो, नहीं तो व्यर्थ बहुत चलता है।

(फिर दादी ने अपने हाथों से टोली खिलाई, यज्ञ का ब्रह्मा भोजन खाया और सभी से विदाई ली)

<u>फिर दादी गुल्जार वतन से वापस आई और बापदादा का जो मधुर सन्देश सुनाया वह इस प्रकार है:</u>

ओम शान्ति्। आज तो बाबा ने कहा, दादी का दिन है ना आज तो दादी को खूब बहलाओ। जो भी टाइम है ना, आज दादी का है। तो आप सभी ने दादी से मुलाकात की? और दादी क्या चाहती है? (मन्सा सेवा करो) क्योंकि मन्सा सभी की बहुत खराब हो रही है ना। तो मन्सा सेवा करने से आपकी मन्सा पावरफुल का वायब्रेशन उन्हों की मन्सा में भी जायेगा। हमारा राज्य स्थापन होना है ना! तो हमारे राज्य में तो मन्सा बहुत पावरफुल है। तो बाबा ने कहा आज मैं ज्यादा नहीं बोलूंगा। आज दादी का दिन है। तो आप सभी ने दादी से मनाया। हाथ उठाओ। (खूब मनाया)

कहते भी हैं दादी का दिन है। तो बाबा ने भी कहा दादी का दिन है। दादी कहती है, मेरा जन्म तो हो गया लेकिन रोज़ अमृतवेले हम सर्विसएबुल ग्रुप बाबा के पास जाते हैं। 4 बजे रोज़ जाते हैं, मुख्य जो भी निमित्त हैं वह सब वहाँ इकट्ठे होते हैं और बाबा कोई न कोई कार्य हम लोगों को देता है। अभी यह करो, अभी यह करो और हम सब मिल करके आपस में इकट्ठे होके प्लैन बनाते हैं और फिर बाबा को रिजल्ट सुनाते हैं। कभी बाबा कहते हैं, भ्रष्टाचार के ऊपर अटेन्शन दो, कभी बाबा कहता है यह बिल्कुल अशान्ति फैलती रहती है, उसके ऊपर कर्मेन्द्रियों के विजय के ऊपर अटेन्श्न दो। कभी क्या कहता, कभी क्या कहता। तो हम उसमें बिजी रहते हैं। 12-14 का ग्रुप है वह सभी इकट्ठे होते हैं और बाबा जो होमवर्क देते हैं, वह हम करते हैं। भले हम अभी छोटे हैं लेकिन हमारी आत्मा में तो संस्कार हैं। वह होमवर्क जो बाबा देता है, वह कोई न कोई टाइम निकालके करते हैं। सोते हैं, नहाने जाते हैं, तो माँ बाप को तो पता नहीं पड़ता है। ऐसे टाइम पर हम टाइम निकालते हैं जो उन्हों को पता भी नहीं पड़ता है कि यह क्या करते हैं! अगर कुछ पूछते हैं तो उनको हाँ में हाँ कर देते हैं। लेकिन वह अच्छे हैं, ऐसे टोकने वाले नहीं हैं। वह भक्त हैं लेकिन पहले नम्बर के भक्त नहीं हैं। (आज सण्डे है इसलिए दादी यहाँ बहुत समय रही)

मतलब दादी को मधुबन बहुत याद है। आप दादी को बहुत याद करते हैं। जानकी दादी कहती है, एडीशन करती है। एकता होनी चाहिए। एक ने कहा दूसरे ने किया, इसको कहते हैं एकता। जहाँ एकता है, एक की याद है, वहाँ सफलता हुई पड़ी है। तो क्या करेंगे? दादी ने कहा मन्सा सेवा। मन्सा सेवा के ऊपर अटेन्श्न दो और यह दादी (जानकी) कहती है, एकता के ऊपर अटेन्शन दो। (दादी जानकी ने कहा - आप सदा मेरा साथ देती हो, यह हमारा जो स्नेह है वह औरों को खींचेंगा)

अभी हर मास इसकी रिपोर्ट अपनी टीचर को देना कि क्या किया, एक ने कहा दूसरे ने माना। एक दो के विचारों को समझके एक दो को साथ देना। बाबा ने बहुत बहुत याद प्यार दिया और बाबा ने कहा जो आज दादी ने कहा, वह करना ही है। तभी दादी को रिपोर्ट देंगे, सेन्टर्स से रिपोर्ट आयेगी और दादी को देंगे। अच्छा। ओम शान्ति्।

ओम शान्ति्